कथा-संसार

८३७ कथाक सम्पूर्ण कथासार

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १ · खिड़कीक गमला

जिला शिक्षा कार्यालयमे पैंतीस बरख बितौने शशिभूषण बाबू सेवानिवृत्तिक निकट छथि। कार्यालयक खिड़की पर राखल सदाबहारक गमला हुनकर रोजक देखरेख सँ जीवित अछि। अन्तिम दिन कार्यालयक जरूरी काजक कारण विदाइ समारोह छोट भऽ जाइत अछि। नव लिपिक नीरजक कहला पर ओ गमला घर लऽ अनैत छथि। घरमे दिवंगत पत्नी मालतीक खाली कुर्सी, पुरान दिनचर्या आ आगाँक अनिश्चित समय हुनका सोझाँ अबैत अछि। दोसर दिन कार्यालय फोन करबाक इच्छा रोकि ओ गमला मालतीक कुर्सी पर राखैत छथि। एहि छोट परिवर्तनमे नौकरीक बाहरी परिचयसँ अलग एक नव जीवनक आरम्भक आभास अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २ · छुट्टीक आवेदन

विद्यालयमे निरन्तर जिम्मेदारी निभबैत शिक्षिका प्रभा मिश्राक माए अस्वस्थ छथि, मुदा विद्यालयक काजक चिन्तामे ओ तीन दिनक छुट्टी घटबैत एक दिनक कऽ दैत छथि। माएक घर पहुँचि ओ हुनकर देखभाल करैत छथि। बरखाक साँझ माएक सहज प्रश्नसँ प्रभाक भीतर दबायल पति अरुणक मृत्युजनित एकाकीपन बाहर अबैत अछि। माए हुनका बुझबैत छथि जे ककरो दुःख जानब आ ओहि दुःखक बात सुनब अलग-अलग बात अछि। विद्यालय घुरलापर प्रभा फेर दू दिनक छुट्टी माँगैत छथि, जखन कि माए आब स्वस्थ छथि। ई निर्णय अपन मन आ सम्बन्ध लेल समय निकालबाक दिशा मे हुनकर परिवर्तन अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ३ · देरि सँ आयल चिट्ठी

शारदा देवीकेँ पुरान सन्दूकमे पति हरिनारायण बाबूक नाम लिखल बीस बरख पुरान बन्द चिट्ठी भेटैत अछि। ओहि समय बेटा मनोज अपन पसिनक विवाहक प्रसंगमे पितासँ विवाद कऽ दिल्ली गेल छल। दुनू पति-पत्नीकेँ शंका होइत अछि जे चिट्ठी मनोजक हो सकैत अछि। ओकरा खोलब कि नहि, एहि दुविधामे ओ सभ पुरान मौन, तिक्तता आ एक-दोसरासँ नहि कहल चिन्ताक चर्चा करैत छथि। मनोजक संग वर्तमान सम्बन्ध सामान्य भऽ चुकल अछि, मुदा पुरान प्रश्न अनुत्तरित अछि। अन्तमे चिट्ठी बिना पढ़नहि दुनू संग बैसि चाह पीबैत छथि; चिट्ठीक रहस्यसँ बेसी महत्त्वपूर्ण हुनकर साझा उपस्थिति बनि उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४ · बरखा रुकलाक बाद

बाढ़िक पानि उतरला पर रामलोचन यादव आ बिन्देश्वर मिश्रक खेतक बीचक मेड़ बहि जाइत अछि। पहिने एहि सीमा लेल दुनूक बीच कटु विवाद भऽ चुकल छल। मुदा बाढ़ि आ घर-खेतक क्षतिसँ जूझैत दुनू पड़ोसी एक-दोसराक सहायता करैत छथि। नव मेड़ बनबैत काल पुरान नाप आ वर्तमान जरूरतक बीच फेर प्रश्न उठैत अछि। धीरे-धीरे दुनूक व्यवहारमे कठोरताक स्थान पर परस्पर चिन्ता अबैत अछि। स्पष्ट क्षमा वा मेल-मिलापक घोषणा बिना ओ सभ अपन-अपन घर घुरैत छथि। रामलोचनकेँ अन्तमे बिन्देश्वरक कुदारिक ढीला मूठ ठीक करबाक बात मोन पड़ैत अछि; ई स्मृति टूटल सम्बन्धक सम्भावित मरम्मतिक सङ्केत बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५ · साँझक बस

निरंजन झा पदोन्नतिक समाचारक संग चारि बरख बाद गाम घुरि रहल अछि। बसमे ओकर भेट पुरान शिक्षक रमेश्वर सरसँ होइत अछि, जे छात्र, गाम आ लोकक छोट-छोट जरूरत सभ मोन रखने छथि। निरंजन अपन सफल व्यावसायिक जीवनक तुलना शिक्षकक सरल, सम्बन्धमय संसारसँ करैत अछि। बात-बातमे ओकरा विद्यालय, पुरान सहपाठी आ छूटि गेल लोकक स्मृति घेरैत अछि। बससँ उतरि घर जाएबाक बीच ओ पुरान विद्यालय देखबाक निर्णय करैत अछि। ओकर पदोन्नति नहि बदलैत अछि, मुदा सफलताक अर्थ ओकरा लेल विस्तृत भऽ जाइत अछि—ओहि लोकसभक स्मरण धरि, जे जीवनक यात्रामे पछड़ि गेलाह अथवा एखनहुँ ओकर नाम मोन रखने छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ६ · खाली पलंग

बेटी अनुपमाक विवाहक बाद कौशल्या देवी ओकर खाली कोठली आ नीला फूलवला चादर देखैत छथि। बेटी घरसँ दूर अपन नव जीवनमे बसबाक प्रयास कऽ रहल अछि, मुदा माएक लेल ओकर अनुपस्थिति घरक प्रत्येक वस्तुमे उपस्थित अछि। पति महेश्वर बाबू, पड़ोसी आ बेटी सँ भेल बातचीत बीच कौशल्या बुझैत छथि जे अपन खालीपन बेटी पर थोपब उचित नहि। अनुपमाक सामान, पुरान सूची आ कोठलीक उपयोगक प्रश्न हुनका बारम्बार बेटी दिस घुरबैत अछि। अन्तमे ओ तुरन्त घरक काजमे नहि दौड़ि, खाली पलंग लग किछु क्षण बैसैत छथि। ई मौन बेटीकेँ स्वतंत्र छोड़बाक आ अपन विरहकेँ स्वीकार करबाक साधना बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ७ · पेंशनक दिन

सेवानिवृत्त भुवनेश्वर बाबू पेंशनक नब प्रविष्टि देखबा लेल बैंक जाइत छथि। मोबाइलक सूचनासँ बेसी हुनका पासबुकक छपल हिसाब पर विश्वास अछि। बैंकमे प्रतीक्षा, परिचित लोकक भेट आ पेंशनधारी शम्भुनाथसँ बातचीत हुनका अपन बदलैत दिनचर्याक बोध करबैत अछि। घर घुरि ओ पड़ोसक किशोर सोनूक आवेदन देखबाक काज करैत छथि आ पुरान कार्यालयक सहकर्मी सँ फोन पर बात होइत अछि। पेंशनक राशि खातामे आबि चुकल अछि; तथापि अगिला मासक सात तारीख हुनका मोन रहैत अछि। लाल कलमक संग नील कलम राखबाक छोट क्रियामे हिसाब-किताबसँ आगाँ उपयोगी बने रहबाक आ नव दिनचर्या खोजबाक भाव प्रकट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ८ · दू अक्षर

सुधांशु बाबूक घरमे छओ बरख सँ मित्र रमाकान्त चौधरीक पुरान धूसर छाता टाँगल अछि। ओकर मूठ पर खोंचल दू अक्षर मित्रक स्मृति सँ जुड़ल अछि। बरखाक दिन अपन छाता खराब भेला पर सुधांशु ओहि छाताक उपयोग करैत छथि। विद्यालय आ बाटमे भेल छोट प्रसंगसभ हुनका रमाकान्तक संग पुरान सम्बन्ध आ अन्तिम भेट मोन पाड़ैत अछि। मित्रक बीमारीक समय अपन व्यस्तताक कारण हुनका पर्याप्त संग नहि देबाक पछतावा पुनः उभरैत अछि। स्मृति केँ बदलल नहि जा सकैत, मुदा ओ मृत मित्रक परिवार दिस फेर हाथ बढ़ा सकैत छथि। अन्तमे ओ रमाकान्तक परिजनक समाचार लेबाक सन्देश पठबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ९ · चाबी सौंपबाक दिन

रामचरित काका बरखों सँ विद्यालयक फाटक, कोठली आ घण्टी सँ जुड़ल छथि। सेवा समाप्तिक दिन हुनका एगारह चाबीक पुरान गुच्छा दोसर व्यक्तिक हाथमे सौंपबाक अछि। विद्यालयक दैनिक स्वर, विद्यार्थी आ शिक्षकसभक अपनापन हुनकर जीवनक अभिन्न हिस्सा बनि चुकल अछि। औपचारिक विदाइ भेलापर हुनका घरक निस्तब्धता आ काल्हि सँ विद्यालय नजेबाक सत्यक सामना करय पड़ैत अछि। डायरीमे ओ लिखैत छथि जे विद्यालय चलैत रहत आ ओ घरमे रहताह। ई दुनू वाक्यक बीच ओ अपन नब अस्तित्व खोजैत छथि। अन्तमे घरक ढीला किवाड़ ठीक करबाक लेल पेचकस खोजब हुनकर काज करबाक स्वाभाविक प्रवृत्तिक निरन्तरता देखबैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा १० · दू कप चाय

देवकी देवीक घरमे एक साँझ फेर तीन कप चाह राखल जाइत अछि, मुदा परिवारक भीतर पुरान सहजता नहि अछि। ताराकान्त बाबूक आगमन आ हुनकर बातक बीच देवकी आ हरिनाथक सम्बन्धमे जमल मौन स्पष्ट होइत अछि। हैदराबादसँ आएल पारिवारिक समाचार, पुरान सूटकेस आ अलग-अलग ढङ्ग सँ परोसल चाह हुनका सभकेँ नहि कहल बातक स्मरण करबैत अछि। दिन बीतैत दुनू बीच आवश्यक घरेलू बातचीत चलैत रहैत अछि, मुदा भावनात्मक दूरी एकाएक नहि मेटाइत अछि। अन्तिम दृश्य मे दुनू चाह पिबैत छथि आ पुरान सूटकेस धूरिसँ भरल पड़ल रहैत अछि। कथा घरेलू निकटता, दूरी आ अधूरा संवादक सूक्ष्म चित्र अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११ · सड़कक ओहि पार

तीन बरख सँ असगरे रहैत शिवकान्त बाबूक ओसारा मुख्य सड़क दिस खुलैत अछि। सड़कक ओहि पारक घर आ ओकर रोशनी हुनकर दिनचर्याक परिचित हिस्सा बनि गेल अछि, यद्यपि ओतयक लोकसँ खास परिचय नहि अछि। ओहि घरक गतिविधिमे परिवर्तन हुनका बेचैन करैत अछि। घरक भीतरक एकाकीपन आ दोसरक जीवनक प्रति संकोच बीच ओ कखनो फाटक धरि जाइत छथि, कखनो प्रश्न मनमे रोकि लैत छथि। धीरे-धीरे सड़कक दुनू कातक लोक एक-दोसराक उपस्थितिक महत्त्व बुझैत अछि। अन्तमे अपन ओसाराक बत्ती जरैत छोड़ि देब शिवकान्त बाबूक छोट, किन्तु अर्थपूर्ण उत्तर बनैत अछि।

कथा १२ · नाम कटबाक सूचना

रघुनाथ मिश्रक मृत्युक आठ मास बाद घरक सरकारी अभिलेखसँ हुनकर नाम हटेबाक प्रक्रिया शैलेन्द्रकेँ पूरा करय पड़ैत अछि। कागज पर ई साधारण संशोधन अछि, मुदा घरमे पिताक कुर्सी, लाठी आ स्मृतिसँ जुड़ल वस्तु सभ ओहिना पड़ल अछि। प्रमाणपत्र, कार्यालयी प्रश्न आ परिवारक सदस्यसभक नव सूची बनबैत शैलेन्द्र केँ अनुभूति होइत अछि जे अभिलेखमे ककरो नाम कटब आ जीवनसँ ओकर उपस्थिति मेटा देब एक्के बात नहि। नव सूचीमे कमला देवी आ परिवारक अन्य सदस्य बचैत छथि। कथा समाप्त होइत अछि ओसारामे जरैत बत्ती आ दीवार पर पड़ल लाठीक छायाक संग।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा १३ · कापीक अन्तिम पन्ना

शिक्षिका सुधा मिश्रकेँ एक छात्रा पल्लवीक कापीक अन्तिम पन्नामे ओकर घरक कठिनाई आ पढ़बाक इच्छाक लिखल पाँति सभ भेटैत अछि। छोट भायक देखरेख, गृहकाज आ विद्यालयक जिम्मेदारी बीच पल्लवी अपन पढ़ाइ बचबैत अछि। सुधाकेँ एहि पाँति सभसँ अपन बचपनक अनुभव सेहो मोन पड़ैत अछि। ओ पल्लवीसँ बात करैत छथि, ओकर परिस्थिति बुझबाक प्रयास करैत छथि आ अधूर काजो आनि देबाक साहस दैत छथि। कापी जाँचबाक मामूली काज बालिकाक मौन संघर्ष बुझबाक अवसर बनैत अछि। कथा शिक्षाक भीतर अंकसँ आगाँ सुनबाक, समय देबाक आ भरोसा जगएबाक महत्त्व देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४ · आमक सूखल डारि

मालती पैतृक घरक बिक्रीक पूर्वसन्ध्या पर पहुँचैत अछि आ आँगनक आमक पुरान डारि कटल देखि दुखी होइत अछि। भाइ प्रभाकर बतबैत अछि जे डारि भीतरसँ खोखर भऽ खतरनाक भेल छल। घरक सामान समेटैत दुनू केँ माए-बाबूक जीवन, बाल्यकाल आ अपन-अपन स्मृति मोन पड़ैत अछि। घर राखबाक व्यावहारिक जिम्मेदारी उठेबा लेल मालती तैयार नहि अछि, मुदा घर बेचब स्वीकारब सेहो सहज नहि। घरक रजिस्ट्रीक बाद ओ माएक लोहेक छोट डिब्बा अपन संग लऽ जाइत अछि। पछाँ नहि मुड़बाक ओकर निर्णय घरक स्मृतिसँ मुक्ति नहि, बदलल जीवनक कठोर सत्य स्वीकार करबाक सङ्केत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५ · बेरोजगार दुपहरिया

अनिरुद्ध बेरोजगारीक दिनसभ चौकक लखनक चाह-दोकान पर बितबैत अछि। नौकरीक परीक्षा, परिणामक प्रतीक्षा आ घरक अपेक्षा ओकर आत्मविश्वासक परीक्षा लैत अछि। दोकानपर बातचीत आ एक बालिका निधिक पढ़ाइ सँ जुड़ल प्रसंग ओकरा अपन उपयोगिता पर फेर सोचय लेल बाध्य करैत अछि। ओ जानैत अछि जे असफलताक भय वास्तविक अछि, मुदा ओकर कारण रोजक प्रयास छोड़ि देब समाधान नहि। दुपहरियाक अन्तमे नौकरीक स्थिति अथवा परिणाम नहि बदलैत अछि। तथापि ओ चाह-दोकान सँ उठि सड़क पार करैत पुस्तकालयक बाट पकड़ैत अछि। एहि मामूली निर्णयमे ठहरल जीवनक भीतर आगाँ बढ़बाक इच्छा भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा १६ · फोन नहि आयल

मधुबनीमे असगरे रहैत गोपाल बाबू प्रत्येक रविवार बेंगलुरुमे बसल बेटा नीरजक फोनक प्रतीक्षा करैत छथि। एक दिन निर्धारित समय पर फोन नहि अबैत अछि, तऽ हुनकर पूरा दिन प्रतीक्षा आ आशङ्कामे बीतैत अछि। पत्नी शैलजाक मृत्यु बाद बेटाक साप्ताहिक बातचीत हुनकर दिनचर्याक आधार बनि गेल अछि। धीरे-धीरे ओ घरक पिछुआरिमे पौधा आ माटिसँ जुड़ल काजमे ध्यान लगबैत छथि। अगिला रविदिन फोन बजैत अछि, मुदा ओ पहिने अमरूदक पौधाक मेड़ पूरा करैत छथि, तखन फोन उठबैत छथि। प्रतीक्षासँ परे अपन दिनक अर्थ खोजबाक एहि परिवर्तनमे कथा सम्पन्न होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७ · छोट पुरस्कार

शशिकान्त मिश्रकेँ स्थानीय साहित्य परिषद्सँ साहित्य-सम्मान भेटबाक समाचार अबैत अछि। पुरान लेखनक मान्यता हुनका प्रसन्न करैत अछि, मुदा समारोहक औपचारिकता, भाषण आ तसवीरक बीच ओ अपन लिखनाइ लगभग छोड़ि देबाक सत्य अनुभव करैत छथि। बादमे एक बच्चीक सरल प्रश्न—ओ आब किएक नहि लिखैत छथि—हुनका पुरस्कारक प्रशंसासँ बेसी भीतर धरि छूबैत अछि। घर घुरि ओ डायरीमे एहि प्रश्नक उल्लेख करैत छथि आ बहुत दिन बाद एक नब पाँति लिखैत छथि। पाँति हुनका पूरा पसिन नहि पड़ैत, मुदा ओ ओकरा काटैत नहि छथि। पुरस्कार लेखकीय जीवनक अन्तिम मोहर नहि, पुनः आरम्भक प्रेरणा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८ · नव पड़ोसी

सरस्वती देवीक बगलमे पाँच बरखसँ बन्द घरमे अभिनव आ नीलिमाक परिवार आबि बसैत अछि। आरम्भिक संकोचक बाद रोजक छोट-छोट सहायता, बीमारीक समय दवा आनब, बगियाक धनियाँ आ घरेलू बातचीत सँ परिचय अपनापनमे बदलैत अछि। सरस्वती देवीक अपन सन्तान दूर अछि, आ नब पड़ोसीसँ बनल सम्बन्ध हुनकर एकाकी दिनमे नब गति अनैत अछि। किछु मास बाद ओ परिवार फेर घर खाली कऽ चलि जाइत अछि। फाटक फेर बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा सरस्वती देवीक बगियामे रोपल-पालल हरियर पात रहि जाइत अछि। कथा अस्थायी पड़ोसक स्नेह आ बिछोहक शान्त अनुभूति अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९ · कुर्सीक चरमराहट

रामलोचन यादव पुरान नाली-योजनाक कागजक बहाने पंचायत भवन पहुँचैत छथि। असलमे एहि भवन आ ओतयक पुरान कुर्सी सँ हुनकर सार्वजनिक जीवनक कतेको स्मृति जुड़ल अछि। बदलबैत व्यवस्था, नव जिम्मेदार व्यक्ति आ पुरान परिचित भोला-रघुनन्दन सँ बातचीतमे ओ अनुभव करैत छथि जे समयक संग अपन स्थान बदलैत अछि। कुर्सीक चरमराहट हुनका पुरान अधिकार आ ओहि पदसँ दूर होएबाक अनुभूति दैत अछि। ओ धीरे-धीरे अपन बात कहबाक बदला दोसरक बात ध्यानसँ सुनय लगैत छथि। अन्तिम दृश्य मे भोलाक कथन फेर सुनबाक हुनकर आग्रह एहि आन्तरिक परिवर्तनक सङ्केत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा २० · सबेरे सात बजे

सेवानिवृत्त शिक्षक रघुनाथ झा एखनहुँ पहिने जकाँ भोरमे उठैत छथि। बरखों तक सबेरे सात बजलाक अर्थ विद्यालयक दिशा मे निकलनाइ छल। आब घरक ओसारा, चाह, साइकिल, घरेलू काज आ पत्नी कमला देवीक संग बितल क्षण हुनकर नव दिनचर्या बनबय लगैत अछि। बीच-बीचमे विद्यालयक घंटी आ पुरान विद्यार्थीसभक स्मृति हुनका अपन पुरान भूमिकामे घुरा लैत अछि। ओ घरक छोट-छोट वस्तु आ समय कें ध्यान सँ देखबाक सीखैत छथि। अन्तमे सात बजैत घंटी सुनि हुनकर पएर क्षणभरि दरबज्जा दिस बढ़ैत अछि, मुदा ओ घड़ी देखबा नहि उठि चाहक कप हाथमे बैसि रहैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा २१ · दू टिकट

रामविलास चौधरी बसमे प्राय: संग-संग दू टिकट किनैत छथि, यद्यपि यात्रा असगरे करैत छथि। महेश टिकट-विक्रेता सहित आन लोक एहि आदतक कारण बूझि नहि पबैत अछि। एक दिन पटना मेडिकल जाएवाली एक स्त्री आ ओकर बीमार बच्चाकेँ सीट चाही, तखन रामविलास अपन दोसर टिकट ओकरा दैत छथि। यात्रामे ओ बहुत पहिनेक एक अनजान स्त्रीक सहायता स्मरण करैत छथि, जकर कारण एक बालिकाक भविष्यक बाट खुलल छल। एहि अनुभवक स्मृतिमे ओ दोसर सीट किनबाक आदत बनौने छथि। अगिला मास फेर दू टिकट माँगैत छथि; बगलमे कियो एखनहुँ नहि अछि, मुदा सम्भावना खुलल अछि।

कथा २२ · कंगनक डिब्बा

मालती देवी मृत्युसँ पहिने बेटी सुमित्राकेँ नीला मखमलक डिब्बा दऽ गेलीह आ कहलनि जे नन्दिनीक विवाहसँ सात दिन पहिने खोलब। डिब्बाक रहस्यक खोज सुमित्राकेँ हरिलाल लग पहुँचबैत अछि। ओतय बुझाइत अछि जे माए आ बाबू रमेश्वर झा बरखों धरि किस्त जमा कऽ कंगन बनबौने छथि। माएक मृत्यु बादो बाबू ओहि संकल्पकेँ पूरा करैत रहलाह। विवाहक दिन कंगन नन्दिनीकेँ भेंटैत अछि। डिब्बामे बचल रसीदसभ पर माता-पिताक अलग-अलग हस्ताक्षर हुनकर साझा स्नेह आ दीर्घ त्यागक साक्षी बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३ · एक रुपैया कम

बरही बजारक पुरान किराना-दोकानक मालिक गिरीश साह हिसाबक एक-एक पाई मिलबय लेल प्रसिद्ध छथि। फुलकली देवीक नाम पर बाकी एक रुपैयाक प्रविष्टि हुनका व्यथित करैत अछि। बही, खुदरा आ ग्राहकसँ भेल बातक बीच ओ एक रुपैयाक अन्तर बुझबाक प्रयत्न करैत छथि। छोट रकमक विवाद हुनका व्यावसायिक कठोरता आ मानवीय स्मृतिक सम्बन्ध पर सोचय लेल बाध्य करैत अछि। हिसाब अन्ततः पूरा होइत अछि, मुदा एहि घटनासँ हुनका बुझाइत अछि जे बहीक अंकसँ बेसी महत्त्वपूर्ण लोकक संग जोगायल विश्वास आ स्मृति अछि। खाली खुदरा-कटोरी देखि हुनका अपन पुरान व्यवहार नव ढङ्ग सँ बुझाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४ · फोटो स्टूडियो

बेंता चौकक ‘ज्योति फोटो स्टूडियो’क मालिक पंकज झा मोबाइलक समयमे फोटो खिंचबाक बदलैत जरूरत देखैत छथि। पुरान ग्राहक अनिरुद्ध आ शैल देवीक फोटो बनबैत हुनका अनुभव होइत अछि जे तसवीर केवल चेहरा ठीक करबाक वस्तु नहि, व्यक्तिक जीवनक साक्ष्य सेहो अछि। ककरो चिह्न, चश्मा वा झुर्री हटबैत चित्र सुन्दर बनि सकैत अछि, मुदा ओकर अपन पहिचान कमि सकैत अछि। एहि अनुभूतिक प्रभाव पंकजक अपन परिवार पर पड़ैत अछि। अन्तमे ओ अपन बाबूक फोटो हुनकर वास्तविक चश्मा, उज्जर केश आ माथक रेखासहित खींचैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५ · लाल स्वेटर

महिला बुनकर सहकारीमे उषा देवी तैयार स्वेटरसभक नाप आ गुणवत्ता जाँचैत छथि। लाल स्वेटरक नाप पर्चीसँ छह इंच कम निकलला पर ओ ओकरा अस्वीकार करैत छथि, मुदा बनौनिहार गीता अपन पक्ष पर अडिग रहैत छथि। ग्राहक सुलेखा देवी अपन बेटा चन्दनक संग एला पर नापक पाछाँक वास्तविक आवश्यकता सामने अबैत अछि। नियम, कारीगरक अनुभव आ ग्राहकक देहक बीचक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। उषा देवी मानैत छथि जे एहि प्रसंगमे गीता पर्चीसँ बेसी ठीक बुझने छलीह। अन्ततः अभिलेखमे नब पाँति जुड़ैत अछि; कथा नियमक उपयोगिता संग मानवीय सुनबाक आवश्यकता देखबैत अछि।

कथा २६ · चाबी

चौदह बरख सँ एक घरमे रहैत कमला देवी आब सामान बान्हि दोसर ठाम जाए रहल छथि। ओहि घरमे घरेलू जीवनक संग बच्चासभक साँझक पढ़ाइ सेहो चलैत रहल अछि। घरमालिक हरिमोहन बाबू आ कमलाक बातचीतमे पुरान सहायताक स्मृति उभरैत अछि। कमला अपन निवास छोड़ैत छथि, मुदा पढ़ाइक क्रम समाप्त नहि होए, एहि लेल चाबी आ कापी नव हाथमे पहुँचबैत छथि। अन्तमे छोट कोठलीमे रिंकी बच्चीसभक संग पढ़ाइ शुरू करैत अछि आ नब तारीख लिखैत अछि। मुख्य फाटक बन्द होइत अछि, मुदा गलीक छोट दरबज्जा खुलल रहैत अछि—साझा काजक निरन्तरताक रूपमे।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७ · दस मिनट

ललिता देवी दरभंगा स्टेशन पर पटना जाएवाली गाड़ी पकड़य दौड़ैत छथि। भानजी रेणुक कागज सत्यापन लेल पहुँचेनाइ अत्यन्त जरूरी अछि। प्लेटफॉर्म, सीढ़ी, झोरा आ समयक भाग-दौड़मे हुनकर भेट युवक शशांकसँ होइत अछि, जे अपन कागज लऽ ओही गाड़ी दिस जा रहल अछि। छोट-छोट सहायता आ बातचीतमे दुनू यात्राक उद्देश्य स्पष्ट होइत अछि। अन्तिम क्षणमे जरूरी लिफाफा सही हाथमे पहुँचैत अछि, आ ट्रेन अपन समय पर चलि जाइत अछि। दस मिनटक हड़बड़ीमे अनजान लोकक बीच भरोसा आ सहयोगक सम्बन्ध बनैत अछि; अन्तमे दुनू हलुक झोरा आ खाली हाथक भिन्न अनुभूति संग धीरे चलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८ · अन्तिम ग्राहक

रामसेवक ठाकुर अपन पुरान केश-कर्तन दोकान बन्द करबाक अन्तिम दिन सामान समेटैत छथि। पुरान कंघी, कैंची, आइना आ दोकानक बोर्ड हुनकर दीर्घ श्रमजीवनक साक्षी अछि। शिष्य नन्दू एहि वस्तु सभक भावी उपयोगक चिन्ता करैत अछि। दिनक अन्तिम ग्राहक मोन्टूक बाल काटैत समय गुरु-शिष्यक सम्बन्ध आ सेवा-कौशलक स्मृति उभरैत अछि। रामसेवक अन्तिम दिनो तय शुल्क बदलैत नहि छथि। दोकानक शटर बन्द होइत अछि, मुदा नन्दूक हाथमे बचल उज्जर कपड़ाक गठरी सँ बुझाइत अछि जे एक व्यवसाय बन्द भेलाक बादो ओकर हुनर आ अपनापन दोसर हाथमे जीवित रहि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९ · टूटल घड़ी

माधवी केँ घरमे एक एहन पुरान घड़ी भेटैत अछि जकर काँटा आ अंक उलटा चलैत अछि। पहिने ई ओकरा टूटल वा गलत बनावट बुझाइत अछि। घड़ीक कारीगर बद्री साह आ परिवारक लोकसँ बात कएला पर पता चलैत अछि जे ओकरा विशेष प्रयोजनसँ एना बनाओल गेल छल। बीमार नानीक ओछाओन, कोठलीक पुरान व्यवस्था आ आईनामे देखाइत प्रतिबिम्ब सँ एहि उलटा समयक कारण स्पष्ट होइत अछि। माधवीकेँ बुझाइत अछि जे कोनो वस्तुक अर्थ ओकर देखबाक दिशासँ बदलि सकैत अछि। अन्तमे दीवार पर घड़ी उलटा चलैत रहैत अछि, मुदा आईनामे समय सीधा आगाँ बढ़ैत देखाइत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ३० · मिठाइक डिब्बा

सीमा देवी घरमे अतिथि लेल एक सुन्दर क्रीम रंगक मिठाइक डिब्बा चाहैत छथि। बेटी मृणाल कहैत छथि जे स्वाद मुख्य अछि, मुदा सीमा देहाती-सामाजिक मान-सम्मानक चिन्तामे महँग डिब्बा लैत छथि। डिब्बाक नीचाँ चिन्हित नम्बर आ ओकर जमा रुपैयाक व्यवस्था सँ ओहि देखाबाक वास्तविकता बादमे सामने अबैत अछि। बातचीतमे पड़ोसी देवकीनन्दन बाबूक अनुभव हुनका बुझबैत अछि जे सुन्दर डिब्बा घुरि सकैत अछि, मुदा सम्बन्धक मूल्य अलग अछि। अन्तमे डिब्बा दोकान घुरि जाइत अछि आ घरक तीन सदस्य बचल दू पेड़ा बाँटि खाइत छथि। सीमा देवी लेल सुनहला किनारि अपन आकर्षण हरा दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३१ · छोट विज्ञापन

निलेश झा छओ माससँ नौकरीक खोजमे दर-दर आवेदन दैत अछि। अखबारक ‘काज चाही’ विज्ञापन देबाक विचार पहिने ओकरा संकोच करबैत अछि। छोट विज्ञापन छपलापर लोक हुनका फॉर्म भरबाक, आवेदन लिखबाक आ कागज सम्हारबाक काज लेल सम्पर्क करय लगैत अछि। ओ प्रत्येक काजमे समय लगबैत अछि आ अपन श्रमक मूल्य नब ढङ्ग सँ बुझैत अछि। फोटोकॉपी-दोकानदार जावेदक संग ओकर काजक सम्भावना बनैत अछि। ओकरा नियमित नौकरी एखन नहि भेटल अछि, मुदा अखबारक छोट काटल विज्ञापन आब असफलताक प्रमाण नहि, अपन हुनरसँ बाट बनएबाक पहिल चिह्न अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३२ · नील पेन

छात्रवृत्ति नवीकरणक फॉर्ममे ममता अपन माए फूलकुमारी देवीक हस्ताक्षर लऽ अबैत अछि, मुदा विद्यालयक पुरान अभिलेखमे माएक अँगूठाछाप दर्ज अछि। लिपिक विनोद झा दुनू चिह्नक अन्तर पूछैत छथि। एहि प्रश्नक संग स्पष्ट होइत अछि जे फूलकुमारी वयस्क उमेरमे धीरे-धीरे अक्षर सीखलनि आ नील पेनसँ अपन नाँव लिखबाक अभ्यास कएलनि। विद्यालयमे जाँच होइत अछि आ हुनकर पहिचान मानल जाइत अछि। फूलकुमारी अपन लिखल नामक संग पुरान अँगूठाछापक सीमा पार करैत छथि। कथा साक्षरताकेँ केवल औपचारिक शिक्षा नहि, आत्मसम्मान आ अपन पहिचान लिखबाक अधिकारक रूपमे देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ३३ · काठक घोड़ा

आँगनबाड़ी केन्द्रक सुशीला एक टुटल-फुटल काठक झुलनिहार घोड़ा मिस्त्री धर्मनाथ लग मरम्मति लेल अनैत अछि। घोड़ाक पुरान रंग, टूटल कान आ ढीला पाटा देखिकए ओकर अनुपयोगी होएबाक आशङ्का होइत अछि। धर्मनाथ पुरान बनावट बुझि आवश्यक मरम्मति करैत छथि। बच्चासभ फेर एक-एक कऽ घोड़ा पर बैसय लगैत अछि। कारीगरकेँ बुझाइत अछि जे पुरान वस्तु केवल संग्रहमे रखबाक लेल नहि, उपयोगमे घुरबाक लेल सेहो होइत अछि। अपन बहीमे ओ वस्तुक इतिहासक विस्तार लिखबाक बदला ‘फेर चलल’ लिखैत छथि। एहि छोट वाक्यमे श्रम, स्मृति आ नब जीवन जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३४ · सिलाइ मशीन

पुरान दर्जी शिवनाथ ठाकुरक सम्मान करबाक निर्णय व्यापारी संघ लैत अछि। सभ लोक हुनकर नाम आ दोकानक प्रसिद्धि जानैत अछि, मुदा मशीन चलबैत रहलीह हुनकर पत्नी सावित्री। समारोहक तैयारीमे ई अनदेखल श्रम सामने अबैत अछि। शिवनाथ स्वीकार करैत छथि जे ग्राहक सँ बात, नाप आ कटाइ हुनकर जिम्मामे छल, मुदा सिलाइक मुख्य श्रम सावित्रीक छल। सार्वजनिक सम्मानमे पत्नीकेँ उचित स्थान देबाक निर्णय होइत अछि। दोकानक पट्ट पर अन्ततः दुनूक नाम जुड़ैत अछि। नीरा मशीन चलबय सीखैत अछि। कथा स्त्रीक अदृश्य श्रमक पहिचान आ परम्परागत कौशलक अगिला पीढ़ी धरि पहुँचनाइ देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३५ · एक जोड़ी जूता

महिला छात्रावासक नव अधीक्षिका मधु झा पुरान सामानक सूची बनबैत एक जोड़ी कारी जूता पबैत छथि। परिचारिका विमला दीदी बतबैत छथि जे ई जूता बरखों सँ जरूरतमन्द छात्रासभक बीच घूमैत रहल अछि। निशा परीक्षा अथवा नौकरीक प्रयोजनसँ ओकर उपयोग करैत अछि आ फेर घुरा दैत अछि। निरीक्षणक समय एकरा ककरो निजी सम्पत्ति मानबाक बदला साझा सामग्रीक रूपमे दर्ज कएल जाइत अछि। जूताक मालिकक नाँव अज्ञात रहब आब समस्या नहि रहैत अछि। अन्तिम दृश्य मे जूता अगिला जरूरतमन्दक प्रतीक्षा करैत अछि; कथा गरिमा, सहयोग आ वस्तुक साझा उपयोगक अर्थ उभारैत अछि।

कथा ३६ · खोआइल पर्स

बस-पड़ावक साइकिल-मिस्त्री रघुवीर मंडलकेँ एक पर्स भेटैत अछि। ओकर भीतर रुपैया आ परिचयपत्रक संग अनेक छोट-छोट कागज पर लोकक नाम आ रकम लिखल अछि। पर्सक मालिक बस-परिचालक देवेन्द्रक खोज करैत रघुवीर बुझैत अछि जे ई पर्चीसभ साधारण उधारीक हिसाब नहि, लोकक परस्पर विश्वासक स्मृति अछि। हिसाब मिलबैत ओकरा अपन देबाक बाकी रुपैयाक बातो मोन पड़ैत अछि। पर्स सही मालिककेँ घुरि जाइत अछि। बादमे रघुवीर छोट रकमक एक नब पर्ची बनबैत कहैत अछि जे पाइ छोट भऽ सकैत अछि, मुदा मोन रखबाक बात छोट नहि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३७ · किरायाक कमरा

दरभंगाक शारदा देवीक घरक छोट किरायाक कमरा अनेक विद्यार्थिनीक अस्थायी आश्रय रहल अछि। बेटी किरण नील रजिस्टरमे किराया आ खाली भेल दिनक हिसाब देखैत अछि। पूर्व किरायेदार रीता अपन बचल दू दिनक किराया आगाँक परीक्षार्थी लेल छोड़ि गेल छलीह। एहि क्रममे शिक्षक-परीक्षा देबा आएल सोनमकेँ एक रातिक आश्रय भेटैत अछि। रजिस्टरमे नाम आ तारीख जुड़ैत अछि, मुदा ओहि रातिक किराया दोबारा नहि लेल जाइत अछि। कथा देखबैत अछि जे किरायाक कोठली केवल लेन-देनक स्थान नहि, अजनबी लोकक बीच भरोसा आ अवसर बाँटबाक ठाम सेहो बनि सकैत अछि।

कथा ३८ · बिना नामक पार्सल

माए कौशल्या देवीक मृत्यु बाद अरुण झाक पीयर फाटकवला घरमे बिना भेजनिहारक नामक एक पार्सल पहुँचैत अछि। अरुण आ नीलिमा ओकर भीतरक बन्हन, नाम आ पुरान कागजक सहारे पड़ोसक लोकसभसँ जुड़ल कथा बुझय लगैत छथि। पता चलैत अछि जे कौशल्या देवी अनेक घरक बीच सामान, किताब आ छोट आवश्यक वस्तु भरोसाक आधार पर पहुँचबैत रहलीह। पार्सल कोनो रहस्यमय उपहार नहि, ओहि अधूरा आवागमनक कड़ी अछि। अरुण-नीलिमा बाकी सामान सही लोक धरि पहुँचेबाक जिम्मेदारी लैत छथि। अन्तमे माएक खाली झोरा हुनका कमी नहि, दोसरक लेल बचल जगहक प्रतीक बुझाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ३९ · तस्वीरक पाछाँ

विजयकान्त झाक घरमे टाँगल पुरान पारिवारिक तस्वीरकेँ सभ एक संग जुटल परिवारक स्मृति मानैत अछि। फ्रेमक मरम्मतिक समय ओकर पाछाँक अभिलेख आ नरेश फोटो-सर्विसक पुरान रजिस्टरसँ खुलैत अछि जे तस्वीर अलग-अलग ठाम खिंचल अनेक फोटोक जोड़ि बनाओल गेल छल। पहिने एहि सत्यसँ परिवारक सदस्यसभ विचलित होइत छथि। स्रोत तसवीरसभ देखलापर ओ सभ गौरी देवीक ओहि इच्छाकेँ बुझैत छथि, जाहिसँ दूर-दूर बसल लोक एक चित्रमे संग रहि सकथि। तस्वीर ऐतिहासिक रूपेँ एक बेरक जुटान नहि, अलगावक बीच पारिवारिक एकताक सचेत रचना बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४० · दू दीप

पीपरवला गलीमे पक्का बाट आ कच्चा टोला बीच अन्हारक अन्तर अछि। दीपावलीक अवसर पर मंगला काकीक कहला अनुसार एक दीप घरक चौखट पर आ दोसर गलीक मोड़ पर राखल जाइत अछि। नयन पहिने एहि व्यवस्थाकेँ अनावश्यक बुझैत अछि, मुदा अन्हारमे बाट चलनिहार लोकक कठिनाई आ मोड़क इजोतक आवश्यकता ओकरा स्पष्ट होइत अछि। दीपक लेल तेल, बाती आ छोट खर्चक व्यवस्था साझा चिन्ताक विषय बनैत अछि। बादमे मोड़क दीप केवल पर्वक सजावट नहि रहैत अछि। राति घनगर भेलापर कियो ओकरामे फेर तेल दैत अछि; कथा सार्वजनिक बाटक सामूहिक जिम्मेदारी पर केन्द्रित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४१ · पछिला पंगति

बिजुली-मिस्त्री माधवकेँ सुरेश बाबूक बेटी अंजलीक विवाहक निमन्त्रण भेटैत अछि आ सजावटक विद्युत्-व्यवस्थाक काज सेहो सौंपल जाइत अछि। समारोहमे ओ कखनो अतिथि, कखनो मजदूर बुझल जाइत छथि। प्रकाशक खराबी ठीक करबाक कारण भोजनक व्यवस्था आ सम्मानक प्रश्न आरम्भ होइत अछि। निमन्त्रण-पत्रक उपस्थिति आ मजदूरीक पावतीक बीच हुनकर सामाजिक स्थान अलग-अलग गिनल जाइत अछि। अन्ततः माधव अपन श्रमक मूल्य लऽ चलि जाइत छथि। हुनकर झोरामे निमन्त्रण आ मजदूरीक पावती एक संग रहैत अछि। कथा विवाहक उजासक पाछाँ श्रमिकक अदृश्य श्रम आ अतिथि-श्रमिकक भेद पर प्रश्न उठबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४२ · चारि हाथ कपड़ा

विद्यालयक नव सत्रमे नेहाक पोशाक लेल चारि हाथ कपड़ा किनबाक सूची अबैत अछि। रमा देवी बाजारमे कपड़ाक मोल आ नाप मिलबैत छथि, मुदा अलग-अलग चौड़ाइक थानमे एक्के ‘चारि हाथ’ बराबर वस्त्र नहि दैत अछि। दर्जिन विमला, दोकानदार बद्री साह आ विद्यालयक अभिभावक-सभामे एहि अन्तर पर चर्चा होइत अछि। पता चलैत अछि जे पोशाकक पुरान निर्देश ओहि कपड़ाक चौड़ाइ पर आधारित अछि जे आब सभ ठाम समान नहि। सूची आ रसीदक हिसाब नब ढङ्ग सँ बुझल जाइत अछि। रमा दू भिन्न नापक रसीद सूची संग राखैत छथि, जाहिसँ अगिला बेर भ्रम नहि हो।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४३ · बाँटल छाँह

फुटपाथ पर रामसागर आ नसीमा खातूनक लगलग ठेला अछि। घामसँ बचबाक लेल साझा जाल लगबैत दुनूकेँ राहत भेटैत अछि, मुदा नगर निकायक आवंटित सीमा पार करबाक नियम सँ जाल हटेबा पड़ैत अछि। लोकहित लेल सार्वजनिक छाँह बनेबाक आवेदन आ कार्यालयी जाँच चलैत अछि। नियमक पर्ची जालकेँ अवैध कहैत अछि, आ साझा उपयोगक सत्यापन सेहो अधूरा रहैत अछि। सरकारी जाल ठेलाक नीचाँ सुरक्षित रहि जाइत अछि, जखन कि बीचक बाट पर घाम ओहिना पड़ैत अछि। कथा कागजी सीमारेखा आ वास्तविक सामूहिक आवश्यकताक बीचक विरोधाभास देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ४४ · एक दिनक छुट्टी

सुधा झा घरेलू कामगार मालती देवीक मासिक मजूरीमे कटौती करैत छथि, कारण ओ एक दिन काज पर नहि अयलीह। मुदा मालतीक कार्यदिवस, अतिरिक्त काज आ बदलीमे कएल श्रमक हिसाब स्पष्ट नहि अछि। सुधा आ मालती बातचीत कऽ ओहि दिनक वास्तविक स्थिति मिलबैत छथि। ई प्रश्न उठैत अछि जे घरक कामगारक समय आ छुट्टीकेँ कोन शब्दमे दर्ज कएल जाए। अन्ततः मजूरी आ अनुपस्थितिक व्यवहार स्पष्ट करबाक लेल लिखित पंजी बनैत अछि। मालती अगिला बुध दिनक लेल ‘छुट्टी’ चुनैत छथि, बदली दिन नहि। दूनू अभिलेखमे एक्के अर्थ सँ ‘मंजूर छुट्टी’ लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ४५ · जमानतक टीन

साइकिल-मिस्त्री नसीम अंसारीक दोकानमे गोविन्दक पुरान हरियर टीनक बक्सा चारि माससँ जमानत जकाँ राखल अछि। बक्साक ऊपर नाम आ रकम लिखल अछि, मुदा ओकर भीतरक वस्तु आ मालिकक वास्तविक परिस्थिति सभकेँ स्पष्ट नहि। गोविन्द अन्ततः पत्नी आ बच्ची संग घुरैत छथि। बक्सा वापस लेबाक समय पुरान लेन-देनक संग मानवीय भरोसाक बात सामने अबैत अछि। नसीम परिवारकेँ सामान लऽ जाएबामे सहायता करैत छथि। बसक छत पर हरियर टीन लदैत अछि आ दोकानमे ओकर पड़ल ठाम पर साफ चौकोर निशान बचैत अछि। कथा गरीबीक बीच विश्वास आ जमानतक अर्थक सूक्ष्म चित्रण अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४६ · आधा बोरा

बटाइदार रामलोचन यादव आ खेतमालिक शशिभूषण झाक बीच धानक उपज आधा-आधा बाँटबाक समझौता अछि। खलिहानमे तराजू पर बोरा तौलल जाइत अछि, मुदा भीजल आ सुखल धानक वजनक अन्तर सँ बराबरी कठिन होइत अछि। तुलसी साहक हिसाब आ दानाक नमी देखैत दुनू पक्ष फेर गणना करैत छथि। माप सही रखबाक ई प्रयासमे श्रम, भरोसा आ प्राकृतिक परिस्थितिक प्रश्न उठैत अछि। अन्ततः धान बाँटल जाइत अछि। खलिहानक बचल छोट हिस्सा मुर्गीसभकेँ देल जाइत अछि; तराजू हटि गेलाक बाद ओतय पहिल बेर कोनो काँटा नहि हिलैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ४७ · दोसर दर

आशा आरोग्य केन्द्रमे निःशुल्क स्वास्थ्य-शिविरक रोगी लेल ‘दोसर दर’क संकेत लगाओल जाइत अछि, जखन कि नियमित रोगीक प्रवेश मुख्य दरसँ अछि। नीलम आ स्वास्थ्यकर्मी सभ देखैत छथि जे एहि विभाजनसँ लोकक बीच अनावश्यक भ्रम आ अन्तर बनैत अछि। एक समय दरक भेद हटला पर रोगीसभक आवागमन सहज भऽ जाइत अछि। डॉक्टर नेहा सेहो दू प्रवेशक आवश्यकतापर प्रश्न करैत छथि। तथापि अगिला शिविरक तैयारी-सूचीमे पुरान नियम दोहराओल जाइत अछि। नीलम ओहि पाँतिक बगलमे प्रश्नचिह्न लगा दैत छथि। कथाक अन्त कोनो सरल समाधान नहि, व्यवस्था बदलबाक विचारक आरम्भ अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४८ · पाँच कुर्सी

विद्यालयक बैठक लेल पाँच लाल कुर्सी पर पदाधिकारीसभक नामवला पर्ची राखल जाइत अछि। तेज बरखाक कारण निर्धारित अतिथि पहुँचि नहि पबैत छथि। बैठकक बीच उपस्थित लोक, कर्मचारी आ ग्रामवासी सभक वास्तविक आवश्यकता पदानुक्रमित आसन-व्यवस्थासँ बेसी महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। एक भीजल साड़ीक निशान कुर्सी पर रहि जाइत अछि, जकरा बादमे समेटि राखल जाइत अछि। अध्यक्षक अनुपस्थिति मे बैठक सम्पन्न भऽ जाइत अछि। प्रतिवेदन बनबैत नन्दकिशोर 'बैठक सम्पन्न' लिखैत छथि, मुदा 'बैठबाक व्यवस्था'क खाना खाली छोड़ैत छथि। कथा कुर्सीक औपचारिक प्रतिष्ठा आ मनुष्यक वास्तविक उपस्थितिक अन्तर उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४९ · धोबीक निशान

प्रभा देवी धुलल कपड़ाक गठरी खोलि साड़ी गिनैत छथि आ एक वस्तुक हिसाब पर संशय उठैत अछि। धोबीक घर, छोटनक कापी आ शशिकलाक संग भेल बातचीतमे गिनतीक गलतीक प्रश्न धीरे-धीरे विश्वासक संकट बनि जाइत अछि। कपड़ाक खोज आ पुनर्गणना होइत अछि, मुदा लोकक बीच उच्चरित शङ्का अपन अलग निशान छोड़ि जाइत अछि। अन्ततः कपड़ाक सही संख्या पाँच दर्ज होइत अछि। धोबी भोला कपड़ाक भीतर छोट नील चिन्ह लगबैत अछि, जाहिसँ आगाँ पहचानमे भूल नहि हो। मुदा कथाक अन्तिम टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे गलीमे लागल अविश्वासक निशान कपड़ाक चिन्हसँ बेसी गहिर अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ५० · मजदूरीक घंटा

निर्माणाधीन भवनक फाटक पर मजूरसभक प्रवेश-निर्गमक समय चौकीदार कैलाश लिखैत छथि। ठेकेदारक मजदूरी-पर्चीमे काजक समय अलग दर्ज भेला सँ बुधन आ आन मजदूरक मासिक मजदूरी कमि जाइत अछि। फाटक पर पहुँचनाइ, औजार लेबाक पाँतिमे ठाढ़ रहनाइ आ वास्तविक काज शुरू होएबाक बीचक मिनट सभ गणनामे कतय जाएत, एहि पर विवाद उठैत अछि। दू अलग रजिस्टर आ मालिक-विनोद साहक संग बातचीत सँ पुरान व्यवस्था पर प्रश्न होइत अछि। नब हिसाबमे मजदूरक समयक पहचान स्पष्ट कएल जाइत अछि। भवन बनबाक संग ओकरा बनौनिहार लोकक अदृश्य समय सेहो मान्यता पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५१ · लाल मुहर

विधवा शकुन्तला देवी पेंशनक आवेदन लेल आवश्यक कागज नील खोलमे राखि प्रखण्ड कार्यालय पहुँचैत छथि। प्रमाणपत्र आ आवेदन सभ उपलब्ध रहितहुँ लाल मुहरक आवश्यकता हुनका एक मेजसँ दोसर मेज धरि दौड़बैत अछि। बेटी पायल हुनकर यात्राक खर्च आ औषधिक हिसाब देखैत अछि। अधिकारीसभक पूछताछक बीच प्रक्रिया आगाँ बढ़ैत अछि आ आवश्यक मुहरक स्थिति स्पष्ट होइत अछि। मुदा कागज पूरा होएब पेंशन भेटि जाएबाक समान नहि अछि। घर घुरला पर शकुन्तला कहैत छथि जे पहिल पेंशन एला परहि शेष हिसाब बुझल जाएत। पायल खर्चक रेखाक नीचाँ खाली जगह छोड़ि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५२ · साझा मेड़

बरखाक बाद गोपाल यादव आ रघुनन्दनक खेतक बीचक मेड़ पर घास कटबाक प्रश्न उठैत अछि। मेड़ सीमा सेहो अछि, मुदा ओकर दूब, माटि आ पानिक उपयोग दुनू खेतसँ जुड़ल अछि। घास पर अधिकारक चर्चा धीरे-धीरे सीमा, श्रम आ जिम्मेदारीक बहस बनैत अछि। छोट-छोट नाप आ पुरान बातक बीच दुनू अपन-अपन भूल बुझबाक प्रयास करैत छथि। अन्तमे मेड़ पर उगल घासक प्रश्न निस्तेज पड़ैत अछि आ माटिक साझा उपयोगिता सामने अबैत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे अलग खेतक बीचक मेड़ दुनू पक्षक पानि सम्हारैत साझा जिम्मेदारी सेहो बनैत अछि।

कथा ५३ · एक थारी भात

‘जनक भोजनालय’क मालिक जगदीश साह थारीक दाम आ उधारीक हिसाब कठोरतासँ रखैत छथि। एक जरूरतमन्द ग्राहक मुरलीक भोजनक प्रश्न हुनका पुरान नियम पर फेर सोचय लेल बाध्य करैत अछि। मुरली सेहो अपन कापीमे हिसाब रखैत अछि, ई जानि जगदीश समझैत छथि जे सहायता गरिमा बचौने सेहो दऽ सकैत अछि। ओ निश्चित सीमाक भीतर बाकी रकम लिखि भोजन देबाक व्यवस्था करैत छथि, मुदा अभिलेखमे ओकर उल्लेख अनिवार्य रखैत छथि। अन्तमे भोजनालयक बहीमे सभ थारी स्पष्ट दर्ज रहैत अछि। कथा दान आ उधारीक बीच श्रमजीवीक आत्मसम्मान आ व्यवस्थित सहयोगक स्थान देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ५४ · किरायाक ठेला

सरिता देवी प्रतिदिन भोला साहसँ पाँच नम्बरक ठेला किराया पर लैत छथि। ठेलाक दैनिक सत्तर रुपैयाक किराया हुनकर व्यापारक समय आ कमाइक हिसाब प्रभावित करैत अछि। एक दिन ठेला दोसर व्यक्तिकेँ देल जाएबासँ सरिता आ भोला बीच प्रश्न उठैत अछि जे पूरा दिनक किराया देलाक बाद खाली समयक अधिकार ककरा अछि। बातचीत आ गिनती सँ ठेलाक उपयोगक समय बाँटबाक सम्भावना बनैत अछि। बहीमे नब ढङ्ग सँ हिसाब रखबाक आरम्भ होइत अछि। एक्के चारि चक्का आ एक्के उज्जर पाँच नम्बर रहितहुँ सरिताक लेल समयक आर्थिक मूल्य आब स्पष्ट भऽ उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५५ · तीन गिलास पानी

निजी चिकित्सालयमे रोगी आ सहचर लेल पानि निःशुल्क अछि, मुदा स्टीलक गिलास लेल बीस रुपैयाक जमानत देब पड़ैत अछि। सीमा देवीकेँ तीन गिलासक उपयोग आ जमानत घुरेबामे अनेक मेज पर जाए पड़ैत अछि। कतार, पर्ची आ समयक गिनती सँ निःशुल्क सुविधाक वास्तविक कठिनाई सामने अबैत अछि। ओ एहि व्यवस्थाक उलझनक प्रश्न उठबैत छथि। बादमे व्यवस्था एना बदलैत अछि जे गिलास घुरौने पर रुपैया लेबाक प्रक्रिया सरल होइत अछि। अन्तिम दृश्य मे सीमा बुझैत छथि जे पानि पहिनो निःशुल्क छल; असल परिवर्तन जमानत घुरेबामे लगैत अनावश्यक श्रम आ समयक कमी अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५६ · नामक पाँति

बाढ़ि-शिविरक उपस्थितिपंजी घरक मुखियाक नाम पर सदस्यसभक संख्या दर्ज करैत अछि। मंजरी देवी राहत वितरणक दौरान बुझैत छथि जे कुल गिनतीमे हुनकर अपन नाम उचित स्थान पर नहि अछि। परिवारक सूची, सदस्यक पहचान आ स्थायी अभिलेख बदलएबाक प्रश्न हुनका अनेक कार्यालयी चरण पार करबैत अछि। अस्थायी राहत-पाँजिमे हुनकर नाँव लिखल रहितहुँ स्थायी घर-पाँजिमे जगह बनेबामे बेसी समय लगैत अछि। बाढ़िक पानि बहुत पहिने उतरि गेलाक बादो अभिलेखक सुधार चलैत अछि। कथा देखबैत अछि जे राहतक गिनतीमे उपस्थित मानल जाएब आ अपन नामसँ दर्ज होएब अलग अधिकार अछि।

कथा ५७ · फसलक नमूना

धान-खरीद केन्द्रमे किसानसभक बोरा पहिने निबन्धन, फेर गुणवत्ता-जाँच आ तौलसँ गुजरैत अछि। नमूना लेबाक क्रम आ तौलसँ पहिने दाना निकालबाक ढंग पर किसान किरण प्रश्न उठबैत छथि। केन्द्रक कर्मचारी शशिभूषण आ अन्य लोकक संग चर्चा होइत अछि जे नमूनाक वजन कोन पक्षक हिस्सा मानल जाए। नियम बदलि नमूना तौलक बाद लेबाक व्यवस्था बनैत अछि। साँझ धरि नब क्रममे खरीद होइत अछि। धान, कटोरी, परखी आ तराजू वएह रहैत अछि, मुदा मुट्ठीभरि दानाक समय बदलला सँ किसानक हिस्साक हिसाब न्यायसंगत बनबाक सम्भावना बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५८ · छोट छज्जा

किरायेदार ममता देवी अपन कोठलीक दरबज्जा पर बरखाक पानि रोकबाक लेल छोट टीनक छज्जा लगबबैत छथि। घरमालिक शिवकान्त अनुमति आ दीवारक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। पेचक स्थान, पानिक ढलान, पलस्तर आ नालीक दिशा जाँचला पर बुझाइत अछि जे किरायेदारक सुविधा आ मकानक सुरक्षा एक-दोसरासँ अलग नहि। मिस्त्रीक सहायतासँ सुधारक बाट निकलैत अछि। छज्जा ममताक सामान रहैत अछि, दीवार शिवकान्तक सम्पत्ति; मुदा बरखाक पानि दुनूक जिम्मेदारी जोड़ि दैत अछि। कथा स्वामित्वक सीमा आ साझा रखरखावक व्यावहारिक सचाई उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५९ · साबुनक टिकिया

महिला छात्रावासमे प्रत्येक छात्राकेँ मासमे एक टिकिया नहबाक साबुन भेटबाक नियम अछि। वितरणक हिसाब मिलबैत एक टिकियाक कमी सामने अबैत अछि, आ आरम्भमे प्रश्न उठैत अछि जे साबुन के लऽ गेल। अधीक्षिका कौशल्या देवी, परिचारिका आ छात्रासभ सूची जाँचैत छथि। जाँचसँ स्पष्ट होइत अछि जे वस्तु चोरी वा गुम नहि भेल छल; एक छात्राक नाम वितरणपंजीमे छूटि गेल छल। नब छात्राक उपस्थितिक संग कुल गिनती सुधरल जाइत अछि। कथा नियमक बराबरी आ अभिलेखमे व्यक्तिक सही स्थानक सम्बन्ध रेखांकित करैत अछि—उनचास नाम लिखब टिकियाक संख्या जतेकहि आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ६० · हिसाबसँ बाहर

शरद हाट समाप्त होएबाक राति मसाला-दोकानदार रामलोचन साह आमदनी आ खर्च जोड़ैत छथि। परिवारक सदस्य सुषमा, माया देवी आ आन लोक दुकान सम्हारब, सामान सजाएब आ घरक काज करबामे श्रम देने छथि, मुदा नगद बहीमे ओकर मूल्य नहि देखाइत अछि। बहस होइत अछि जे जे श्रमक अलग मजदूरी नहि देल गेल, ओहि श्रमकेँ लाभक हिसाबसँ बाहर रखब उचित अछि कि नहि। अन्ततः नगद बचतक पाँतिक संग पारिवारिक श्रमक सूची सेहो लिखल जाइत अछि। पेटीक रुपैया कम नहि होइत, मुदा लाभक संख्या अपन पाछाँक अदृश्य श्रम सँ आब अलग नहि रहैत अछि।

कथा ६१ · भित्तिक दोसर जनम

बरखासँ पहिने रामदुलारी देवीक घरक पुरान भित्ति मरम्मतिक आवश्यकता देखबैत अछि। भित्ति पर बनल परम्परागत चित्र उतारल गेल तऽ स्मृति नष्ट होएबाक चिन्तासँ अनुपमा विचलित होइत छथि। ओ पहिने चित्रक मुख्य रूप, रंग आ रेखासभक अभिलेख बनबैत छथि। तकर बाद मिस्त्री चन्देश्वर पुरान गील लेप हटबैत छथि आ भित्तिक पुनर्निर्माण होइत अछि। रामदुलारी देवी अनुपमाकेँ केवल पुरान रूप नकल करबाक बदला अपन हाथसँ नब चित्र बनएबाक उत्साह दैत छथि। नब भित्तिक चित्र पूरा भेलाक बाद अनुपमा बचल खाली स्थानमे फोटो देखबा बिना रेखा खींचय लगैत छथि। परम्परा संरक्षणक संग नब सृजन बनि उठैत अछि।

कथा ६२ · दू रंगक सूत

बुनकर नीरा अठारह हाथ नील कपड़ा बुनलाक बाद देखैत अछि जे नवम हाथक बाद रंगक गहराइ बदलि गेल अछि। एक्के नामसँ मँगाओल सूतक खेप वास्तवमे रंगमे समान नहि। ग्राहकक निर्धारित बीस हाथक आदेश, मजदूरी आ वस्त्रक गुणवत्ता पर प्रश्न उठैत अछि। सावित्री देवीक सलाहसँ नीरा कपड़ाक भिन्न हिस्सामे चिन्ह लगबैत अछि आ नियम सुधारबाक बात करैत अछि। तत्काल आदेशक पूरा पारिश्रमिक नहि भेटैत, मुदा भविष्यक लेल धागाक खेप पहिनहि जाँचबाक व्यवस्था बनैत अछि। कथा देखबैत अछि जे दोष भेटलाक बाद चिन्ह लगेनाइ मात्र पर्याप्त नहि; काज शुरू करबासँ पहिने स्रोतक अन्तर बुझब आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६३ · बगियाक बाट

पिताक मृत्यु बाद शशिधर झार्कें भेटल बगियामे गाछक बीच एक टेढ़-मेढ़ पुरान बाट अछि। फल ढोएबाक सुविधाक लेल ओ बाट सोझ करबय चाहैत छथि। माप आ नब समतलीकरणसँ किछु दिन सुविधा भेटैत अछि, मुदा बरखा, जड़ि आ पानिक बहाव नब बाटक कमजोरी देखबैत अछि। माए शारदा देवी बुझबैत छथि जे पुरान बाट ऋतु, गाछ आ लोकक आवागमनसँ धीरे-धीरे बनल छल। अन्विता एहि अनुभवक आधार पर नब नक्सा बनबैत छथि। अन्तमे बगियाक टेढ़ापन त्रुटि नहि, पर्यावरण आ उपयोगक दीर्घ अनुभवसँ उपजल ज्ञान बुझाइत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ६४ · बिनु नाँवक चित्र

विद्यालयक पुरान ओसाराक उज्जर भित्ति पर मंजरी आ रेणु मिलि चित्र बनबैत छथि। धूपक बदलैत चौकोर आकार, गाछ आ छाँह सँ प्रेरित एहि चित्रमे दुनूक रेखा आ रंग परस्पर मिलल अछि। विद्यालयक अभिलेखमे कलाकारक नाम एकटा लिखबाक व्यवस्था हुनकर साझा श्रमकेँ ठीकसँ दर्शा नहि पबैत अछि। चित्रक भूमिका, संशोधन आ सहयोग दर्ज करबाक नब ढंग खोजल जाइत अछि। अन्तमे भित्ति पर बनल इजोत स्थिर रहैत अछि, वास्तविक इजोत आगाँ बढ़ि जाइत अछि। पाँजिक खाली पाँति एहि अन्तर जकाँ सृजनक ओहि हिस्साक स्मरण करबैत अछि जकरा एक नाममे नहि समेटल जा सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ६५ · सात मिनटक आवाज

सौरभ प्रत्येक बातचीत लेल कापीमे सात विषयक छोट गोल बनबैत अछि। दूर रहनिहार माए रमा देवीसँ फोन पर बात करबाक समय सीमित अछि, ताहि लेल ओ गणित, नानीक स्वास्थ्य, अपन जूता आ रोजक छोट प्रश्न व्यवस्थित करैत अछि। बातचीतक संग-संग ओकरा माएक काज, रेलयात्रा आ व्यस्तताक एहन पक्ष बुझाइत अछि जे पहिने प्रश्न-सूचीमे नहि अटैत छल। मौन सेहो संवादक हिस्सा बनैत अछि। सौरभ सातम गोलमे कखनो चुप्पीक उल्लेख करैत अछि, कखनो खाली छोड़ि दैत अछि। कथा समय-सीमा सँ घेरल मातृ-पुत्र सम्बन्धमे सुनबाक, प्रतीक्षाक आ शब्दसँ बाहरक स्नेहक अर्थ खोजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ६६ · माटिक कटोरा

कुम्हार दीपककेँ शहरक भोजनालय लेल सय एक्के आकारक माटिक कटोरा बनएबाक आदेश भेटैत अछि। हाथसँ बनल कटोरामे स्वाभाविक अन्तर रहैत अछि, जखन कि ग्राहककेँ ढेरी लगबैत आ परोसैत समय सुविधा चाही। दीपक आ दादा रामचरण माप, पियाली आ आकारक अनेक प्रयोग करैत छथि। धीरे-धीरे दुनू बुझैत छथि जे हूबहू रूपक नकलसँ बेसी आवश्यक अछि उपयोगक सीमा आ क्षमता समान रखब। आदेश पूरा होएबाक बादो घरक पुरान कटोरा अपन अलग रूपक कारण निष्फल नहि अछि। कथा हस्तकला, मानकीकरण आ वस्तुक वास्तविक प्रयोजन बीच सन्तुलन खोजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६७ · छतक तारा

अदिति विज्ञानक अभ्यासमे बीस दिन धरि साँझ एक्के समय आकाशक तारा देखबाक आ अवलोकन लिखबाक संकल्प लैत अछि। मुदा घरक साझा छत पर पापड़, कपड़ा, अचार आ लोकक आवागमन ओकर दृष्टि रोकैत अछि। पहिने ओ एहि व्यवधानसँ चिढ़ैत अछि, तकर बाद परिवारक दैनिक उपयोग, सूर्यक दिशा आ बदलैत समयक सेहो लेखा बनबय लगैत अछि। मंजुला देवीक संग बातचीतमे वैज्ञानिक अवलोकन आ घरक श्रम एक्के छत पर जगह पबैत अछि। अन्तमे अदिति तय करैत अछि जे पहिने पापड़ देखत, फेर तारा; मेघ रहत तऽ मेघ लिखत। कथा जिज्ञासाक विस्तारित दृष्टि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६८ · पातर परदा

विवाहक बाद ललिता अमरेशक संयुक्त परिवारमे अबैत छथि। निजता लेल लगाओल पातर परदा घरक ओसारा, दादी सरस्वती देवीक चलबाक बाट आ कोठलीक इजोत बदलि दैत अछि। परदाक ऊँचाइ, किनारी, हवा आ प्रकाशक प्रश्न घरेलू मर्यादा तथा सुविधा सँ जुड़ि जाइत अछि। ललिता आ घरक लोक बेराबेरी नाप-जाँच कऽ एहन व्यवस्था खोजैत छथि जाहिमे नव दम्पतिक अपन स्थान रहय आ बुजुर्गक आवागमन बाधित नहि हो। अन्तमे बच्ची पिहू नब खुलल बाटसँ भीतर अबैत अछि, आ इजोतक रेखा नहि टूटैत अछि। कथा घरेलू सीमाक परस्पर सहमतिसँ फेर बनबाक प्रक्रिया चित्रित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६९ · छाँहक नाप

विद्यालयक पुरान नीमक गाछ भवनक भित्ति मे फाट आ जड़िक दबावक कारण विवादक विषय बनैत अछि। छात्रसभ गाछक छाँह बचाबय चाहैत अछि, जखन कि अभियन्ता आ प्रधानाध्यापिका सुरक्षा आ देवालक मरम्मतिक प्रश्न उठबैत छथि। गाछ, छाँह, जड़ि आ विद्यालयक उपयोगक अलग-अलग नाप लेल जाइत अछि। अन्ततः सुरक्षा-सम्बन्धी निर्णयक संग नब छाँह आ गाछ-पौधा लेल व्यवस्था होइत अछि। मधुरा पुरान नीमक ठाम मात्र नहि तकैत, सूर्यक दिशा आ नब बनैत छाँह केँ देखैत अछि। नापक पट्टी पर लिखल रहैत अछि जे छाँह फेर नापल जाएत। कथा प्रकृतिक संरक्षण आ सामूहिक सुरक्षाक कठिन सन्तुलन देखबैत अछि।

कथा ७० · दूनू घरक दीप

चित्रक कक्षामे अन्वीकेँ ‘हमर घरक दीप’ विषय पर चित्र बनएबाक अछि। ओकर जीवन माए आ बाबूक दू अलग घरक बीच बँटल अछि, ताहि लेल एकटा घर चुनब ओकरा उचित नहि लगैत अछि। कार्तिकक पर्वमे ओ दुनू घरक रीति, सफाइ, अरिपन आ दीपक अनुभव करैत अछि। अपन सम्बन्धकेँ कोनो एक घरक विरोधमे देखबाक बदला ओ दूनूक स्थान स्वीकार करैत अछि। अन्ततः चित्रमे बाम घरक दुआर पर अरिपन, दहिना सीढ़ी पर दीप आ बीचमे खुलल राह रहैत अछि। ई राह अन्वीक ओहि दुनू घरक बीच आवागमन आ अपनापनक प्रतीक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ७१ · ओसाराक पाठ

पुरान प्रधानाध्यापकक घरक ओसारा सप्ताहमे दू दिन पढ़बाक सामूहिक ठाम बनैत अछि। स्थानीय इतिहासक एक पुस्तकमे बाढ़ि, राहत आ विद्यालयक निर्माणक वर्णन पढ़ैत स्त्रीसभ प्रश्न उठबैत छथि जे भोजन बनेनिहार, सामान सम्हारनिहार आ दिन-रात श्रम देनिहार लोकक नाम कतय अछि। सुरमा देवी, फुलकली काकी, जमुना देवी आ रीतू विभिन्न गवाहक बात लऽ मूल पाठक पूरक रूपमे काजक विवरण बनबैत छथि। पुरान पुस्तक फाड़ल वा अस्वीकार नहि होइत; ओकर बगलमे नब काज-पात राखल जाइत अछि। कथा इतिहासक लिखल वाक्यक संग छुटल लोकक आवाज जोड़बाक अभ्यास अछि।

कथा ७२ · खिलौनाक तल्लामे नाँव

‘माधव खिलौना-घर’मे काठक घोड़ा, बैलगाड़ी आ आन खिलौना अनेक हाथक श्रमसँ बनैत अछि। पुरान खिलौनाक पहचान आ निर्माता-नामक प्रश्न उठला पर ईरा देखैत अछि जे काठ काटब, रूप देब, रंग करब आ पहिया जोड़ब अलग-अलग कारीगरक काज अछि। एक खिलौनाकेँ एक्के व्यक्तिक नाम दऽ देब ओकर निर्माणक पूरा इतिहास नहि बतबैत। कार्यशालामे तल्ला पर क्रम-अंक आ अभिलेखमे ज्ञात कारीगरसभक भागीदारी दर्ज करबाक व्यवस्था बनैत अछि। जे जानकारी उपलब्ध नहि ओकरा अनुमानसँ भरबाक बदला खाली छोड़ल जाइत अछि। अन्तमे खिलौनाक तल्लामे ओकर निर्माणक बाट सुरक्षित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ७३ · टूटल सुर

मृणालिनी अपन दादी जानकी देवीक पुरान गीत अभिलेखित करय चाहैत छथि। हारमोनियमक बीचक एक सुर खराब अछि, ताहि कारण धुन कखनो घूमि जाइत अछि, कखनो अधूरी बुझाइत अछि। बाजा ठीक करबाक संग ई प्रश्न उठैत अछि जे पहिले गाओल भिन्न धुनकेँ गलत कहि मेटा देब उचित अछि कि नहि। दादी आ नातिन गीतक अलग-अलग प्रस्तुतिकरण रिकॉर्ड करैत छथि। नचिकेता सेहो सुरक फर्क पर ध्यान दैत अछि। अन्तमे तीनू ध्वनि-दर्ज ‘बीचक गीत—तीन बाट’ नामसँ सुरक्षित राखल जाइत अछि। बाजा सुधरैत अछि, मुदा पहिल गायनक स्मृति मेटाओल नहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ७४ · नदीक दोसर नाँव

विद्यालयक नब नक्शामे नन्दिनी अपन गाम लगक नदीकेँ एक नीला रेखा आ एक आधिकारिक नामसँ देखैत अछि। घर आ घाट पर ओहि धारक अलग-अलग स्थानीय नाँव सुनाइत अछि। शिक्षकक सहायता सँ नन्दिनी नाविक, वृद्ध आ नदीक कात रहनिहार लोकक बात नोट करैत अछि। ओकरा स्पष्ट होइत अछि जे किछु नाँव मौसमी जलरूप, किछु धारक विभाजन आ किछु नाविकक पहिचान सँ जुड़ल अछि। स्थानीय नामसभकेँ एक-दोसराक पर्याय मानब गलत होयत। अन्तमे नक्शाक रेखा ओकरा गलत नहि लगैत; केवल बुझाइत अछि जे नक्शा आ बहैत नदीक अपन-अपन काज अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ७५ · दू किसिमक बीआ

अभय खेतीमे नब किसिमक बीआक प्रयोग करय चाहैत अछि, जखन कि दादी लग पुरान बीआक पोटरी सुरक्षित अछि। डीह आ चउरक अलग माटि, बरखाक अनिश्चितता आ पानिक ठहराव दुनू किसिमक बीआक परीक्षा लैत अछि। अभय खेतीक नाप, समय, उपज, स्वाद आ दानाक व्यवहार कापीमे लिखैत अछि। दादीक अनुभव ओकर गणनाक आवश्यक पूरक बनैत अछि। फसलक बाद ओ अगिला बरख लेल दुनू किसिमक बीआ अलग रखैत अछि। प्रश्न केवल ‘कोन बीआ नीक’ नहि रहैत, बल्कि ‘कोन खेतमे, कोन मौसममे आ ककर उपयोग लेल’ बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ७६ · पुस्तकक भीतरक पात

नगर पुस्तकालयमे पुरान पोथीसभक सफाइ करैत एक किताबक भीतर दबाओल सुखायल पात आ पाठकक टिप्पणी भेटैत अछि। पुस्तकपाल रामलोचन झा आ सहयोगीसभ प्रश्न करैत छथि जे पुस्तककेँ नमीसँ बचाबय पात निकालल जाए, मुदा पाठकक स्मृति कोना सुरक्षित रहय। प्रवेश-अंक, पृष्ठ-संख्या आ भेटबाक समय दर्ज कऽ पात अलग खोलमे राखल जाइत अछि। नब पाठकक टिप्पणी लेल सेहो एहन व्यवस्था बनैत अछि जाहिसँ मूल पन्ना खराब नहि हो। अन्तमे पुरान पात आ नब टिप्पणी सुरक्षित अलग रहैत अछि, आ पुस्तक फेर पढ़बाक लेल खुलल। कथा संरक्षण आ पाठकीय स्मृतिक संगति स्थापित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ७७ · छतक बाँटल समय

चारि-मंजिला आवासीय भवनक साझा छत पर कपड़ा सुखेब, टहलनाइ, खेल आ सौर-पट्टक देखरेख सभ चलैत अछि। एहि उपयोगसभक बीच जगह आ समय लेल विवाद होइत अछि। रश्मि आ निवासीसभ नाप, खड़िया आ बातचीतसँ अलग-अलग गतिविधिक समयक व्यवस्था खोजैत छथि। स्थायी रेखासँ समस्या पूरा हल नहि होइत, कारण दिनक घाम, लोकक जरूरत आ मौसम बदलैत रहैत अछि। अन्ततः लचीला व्यवस्था बनैत अछि; छत पर स्थायी बाँट नहि कएल जाइत। रश्मि बुझैत छथि जे साझा स्थानक बाट लिखल नियमसँ बेसी परस्पर ध्यान आ समायोजनसँ चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ७८ · अधूर नाटक

विद्यालयक वार्षिक नाट्य-सन्ध्या लेल छात्र-छात्रासभ नाटकक अभ्यास करैत छथि। कथा एक एहन दृश्य पर अटकैत अछि जतय मीरा नामक पात्रक प्रतिक्रिया स्पष्ट लिखल नहि। शिक्षिका मालती झा, रितु, रेणु आ आन विद्यार्थी विभिन्न अभिनय-सम्भावना आजमबैत छथि। संवाद, मौन, हाथक गति आ मंच पर ठाढ़ होएबाक ठाम बदलला सँ दृश्यक अर्थ बदलैत अछि। विद्यार्थीसभ अधूर स्थानकेँ एक मनमाना वाक्यसँ भरबाक बदला ओकर भिन्न रूपक अभ्यास लिखैत छथि। अन्तमे पटकथाक खाली पाँति ओहिनहि रहैत अछि, मुदा ओकर चारूकात नब चौठम सम्भावनाक बाट खुलैत अछि। कथा रचनात्मक सहयोग आ खुलल अर्थक पक्षमे अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ७९ · चन्द्रमाक हिस्सा

सँकरी गलीक दू घरक बीच पातर खुलल आकाशसँ नैना आ रितु चन्द्रमा देखैत छथि। एक घरपर नब पानिक टंकी आ पाइप लगबाक योजना एहि दृश्यकेँ रोकि सकैत अछि। घरक उपयोगी जल-व्यवस्था आ बच्चीसभक आकाश देखबाक रुचि बीच परिवारसभ चर्चा करैत अछि। टंकीक जगह आ पाइपक लम्बाइ बदलि दूनूक जरूरत सम्हारबाक समाधान निकलैत अछि। बादमे चन्द्रमा अपन चालसँ गलीक फाँकक बाहर चलि जाइत अछि, मुदा आकाशक बाट खुलल रहैत अछि। अन्तिम भाव ई जे आकाशक छोट टुकड़ा ककरो व्यक्तिगत सम्पत्ति नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ८० · नब आँगन

पुनर्वास-भवनक बीचक पक्का खुलल स्थल कागजमे केवल ‘मध्य खुलल स्थल’ अछि। अलग-अलग महलाक निवासी ओतय चलैत, बच्चासभ खेलैत आ स्त्रीसभ अपन घरेलू काज सम्हारैत छथि। ईशा, नीतू आ अन्य बच्चा आँगनमे सामूहिक आकृति बनबैत छथि, मुदा बीचमे जानि-बुझि खाली जगह छोड़ैत छथि। प्रशासनिक नियम आ लोकक वास्तविक उपयोग बीच चर्चा होइत अछि। धीरे-धीरे निवासीसभ बुझैत छथि जे साझा आँगनक अर्थ कोनो एक परिवारक अधिकार नहि, सभक आवागमन लेल ठाम बचाओल अछि। अन्तमे ईशा सीढ़ी उतरि लोकक बीच पहुँचैत छथि; कियो विशेष स्थान नहि बनाएने अछि, तइयो हुनका लेल जगह अछि।

कथा ८१ · एकतीसम खाट

महिला रात्रि-आश्रयक फाटक पर तीस खाटक संख्या लिखल अछि। चम्पा देवी खाटसभक अवस्था आ ओकर उपयोग करनिहार लोककेँ नीकसँ चिन्हैत छथि। आश्रयक काज करनिहार चम्पाक अपन राति विश्रामक व्यवस्था मुदा एहि तीस खाटमे शामिल नहि अछि। अतिरिक्त आवश्यकता उठला पर अधिकारी अभिलेख जाँचैत छथि आ छुटल गिनतीक प्रश्न सामने अबैत अछि। अन्ततः एक मोड़ल खाट अलग राखल जाइत अछि, जकरा जरूरत भेला पर उपयोग कएल जा सकैत अछि। चम्पाकेँ ओहि राति ओकरा पर सुतबाक आवश्यकता नहि पड़ैत, मुदा खाट ३१क उपस्थिति ककरो दयासँ नहि, संस्थाक गिनतीमे सुधारसँ सम्भव भेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ८२ · पाछाँक सीढ़ी

‘अमलतास भवन’क मुख्य प्रवेश पर उठान-यन्त्र अछि, मुदा घरेलू कामगार सविता देवी आ आन सेवाकर्मी लेल पाछाँक ‘सेवा-पथ’ निर्धारित अछि। ओहि सीढ़ी पर अन्हार, रखल सामान आ सफाइक अभाव रोजक जोखिम बढ़बैत अछि। सविता एहि कठिनाइकेँ मालिक आ भवनक जिम्मेदार लोकक सोझाँ रखैत छथि। दोसर मंजिलक अवरोध हटैत अछि, बत्ती बदलल जाइत अछि आ खिड़की साफ कएल जाइत अछि। सुधारक बादो सविता जानैत छथि जे रोज चलल जाएवला बाटक देखरेख एक बेरक जाँचसँ पूरा नहि होइत। अन्तमे हुनका सीढ़ीक मोड़ पर अन्हारमे देवाल टटोलबाक जरूरत नहि पड़ैत अछि।

कथा ८३ · रातिक पर्ची

जिला अस्पतालमे राति मुख्य आगन्तुक-पंजी बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा रोगीक परिजन, दवा आ आवश्यक सामान लेल लोकक आवागमन चलैत रहैत अछि। देवनाथ रातिक पर्चीसँ एहि लोकसभक गिनती आ पहिचान सम्हारैत छथि। पर्ची पर लिखल अंक, आगमनक समय आ एक्के रोगी लेल अबैत अनेक लोकक हिसाब सँ कठिनाई होइत अछि। कर्मीसभ बातचीतसँ तय करैत छथि जे आवश्यक सूचना सुरक्षित रहय, मुदा अनावश्यक कागज पर निर्भरता नहि बढ़य। निर्मला देवी सहित परिजनसभक रातिक आवागमन दर्ज होइत अछि। अन्तमे देवनाथकेँ ककरो चेहरा मनमे राखि अपनहि हिसाब चलएबाक आवश्यकता नहि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ८४ · दू बटन

विवाह-भवनमे सेवा करनिहार मजदूरसभकेँ उज्जर कुरता देल जाइत अछि, आ घुरबैत समय कोनो दोष देखल गेल तऽ मजूरी कटबाक नियम अछि। सुरेशक कुरतामे दू अलग रंगक बटन देखिकए दोषक आरोप उठैत अछि। सिलाइ करनिहार कमला देवी पुरान मरम्मतिक चिन्ह देखबैत छथि, मुदा ठेकेदारक पाँजिमे कपड़ाक पहिल अवस्था दर्ज नहि। बातचीतक बाद कुरताकेँ संख्या देल जाइत अछि आ लेबाक समयक अवस्था लिखबाक नब क्रम शुरू होइत अछि। आब पुरान बटनक कारण नब मजदूर पर कटौती नहि होएत। कथा देखबैत अछि जे वस्तुक इतिहास दर्ज नहि रहला पर श्रमिकक अधिकार प्रभावित होइत अछि।

कथा ८५ · बन्द खिड़कीक भाड़ा

सुनयना किरायाक कोठलीमे सिलाइक काज करैत छथि। खिड़की सँ अबैत उजास हुनकर सुई-सूतक काज लेल आवश्यक अछि। घरमालिकक नब भण्डार बनेलासँ ओ खिड़की आ प्रकाश बाधित होइत अछि। सुनयना भाड़ाक रकमसँ आगाँ रहबाक सुविधा आ काजक वास्तविक शर्तक प्रश्न उठबैत छथि। खिड़कीक जाली, सुरक्षा आ छज्जाक व्यवस्था पर बातचीत होइत अछि। अस्थायी रूपेँ उजास घटबाक कारण भाड़ामे छूट दर्ज होइत अछि, आ सुधारक बाद पुरान भाड़ा घुरैत अछि। सुनयनाकेँ बुझाइत अछि जे घरक मूल्य ईंट-देवालक संख्या नहि, ओकर भीतर जीबि आ काज कऽ सकबाक परिस्थितिसँ सेहो बनैत अछि।

कथा ८६ · ईंटक निशान

ईंट-भट्ठा पर कौशल्या गील ईंटक कोन पर बनल दू तिरछा रेखा चिन्हैत छथि। ई निशान पहिने रघुनीक टोलीक काज चिन्हबैत छल, मुदा बरख बदलैत रहलापर एक्के निशानक आधार पर मजदूरी आ बकायाक हिसाब जोड़ल जाए लागैत अछि। कौशल्या पुरान खेप, तारीख आ कारीगरक भिन्नता जाँचबाक आग्रह करैत छथि। अभिलेखक प्रमाण भेटला पर किछु देनदारी स्वीकार होइत अछि आ आधारहीन प्रविष्टि हटैत अछि। नब चिन्हक संग तारीख, खेप आ काज करनिहारक नाम अलग-अलग लिखबाक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि। कथा श्रमिकक पहिचानकेँ भट्ठाक एक चिह्नक भीतर स्थायी रूपेँ कैद करबाक विरोध करैत अछि।

कथा ८७ · जेबक हिसाब

कुसुम धोबीघरमे झुनिया देवी कपड़ा धोएबासँ पहिने जेब जाँचैत छथि। कपड़ामे भेटल सिक्का, कागज आ निजी वस्तु दर्ज करबाक पुरान नियम अछि। मुदा अभिलेखमे वस्तुक विवरण आ ओकर सम्भावित अर्थ बीच भेद नहि रखल गेल अछि, जाहिसँ ग्राहकक निजता पर प्रश्न उठैत अछि। रविक कपड़ासँ भेटल मोड़ल कागजक प्रसंग बाद धोबीघर वस्तुक प्रकार, जेब आ खोलक अंक अलग-अलग लिखबाक व्यवस्था बनबैत अछि। झुनिया पुरान नियम ‘जे भेटल से लिखू’क नीचाँ ओकर सीमा सूचित करनिहार वाक्य जोड़ैत छथि। अन्तमे हिसाब वस्तुक रहैत अछि, व्यक्तिक निजी मनक नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ८८ · साँझक कुर्सी

औषधि-दोकानक बाहर ‘ग्राहक लेल’ लिखल हरियर कुर्सी पर बैसबाक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। गोविन्द देखैत अछि जे थाकल ग्राहक, दवा बनेबाक प्रतीक्षा करैत वृद्ध आ दोकानमे काज करनिहार लोकसभक जरूरत अलग-अलग समय पर बदलैत अछि। स्थायी कुर्सीक जगह आ बीचक बाटक बाधासँ विवाद होइत अछि। दीवाल पर मोड़ायल आसन लगबैत उपयोगक नव व्यवस्था बनैत अछि। कखनो ग्राहक, कखनो गोविन्द आ कखनो आन लोक ओहि आसनक उपयोग करैत अछि। अन्तमे कुर्सी ककर, एहि प्रश्नसँ बेसी जरूरी बनैत अछि जे एखन के थाकल अछि आ ककरा बैसबाक जरूरत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ८९ · पाँचम बाल्टी

चारि आवासवला ‘सारदा सदन’मे पानिक किल्लत होएबापर चारि घरक हिसाबसँ बाल्टी बाँटल जाइत अछि। मुदा गेट लगक कोठलीमे रहनिहार देखरेखिया बासुदेव, पत्नी सीता आ बेटी रूपाक पानिक जरूरत एहि गिनतीसँ बाहर अछि। बासुदेव दया नहि, नियममे अपन स्थान माँगैत अछि। पीबाक पानि, घरक अधिकार आ साझा काजक बीचक भेद पर चर्चा होइत अछि। अन्ततः पाँचम बाल्टी आ ओहि परिवारक गिनती अभिलेखमे ठाम पबैत अछि। साँझक खाली लाल बाल्टी भले सीढ़ी लग उलटल पड़ल अछि, मुदा ओकरा कारण तीन लोक आब कागज पर अदृश्य नहि रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९० · रद्दी परिचय-पत्र

पैकिंग कारखानामे चन्दा देवी आ आन बारह ठेका-मजदूरक काज एक्के साँझ समाप्त भऽ जाइत अछि। हुनकर परिचय-पत्र रद्दी मानि जमा करबाक निर्देश अछि। मुदा अन्तिम मजूरी आ देनदारीक हिसाब एखन बाकी अछि, आ फाटक पर प्रवेशक अधिकार समाप्त भेलासँ कागज जाँचबा आ बकाया पाबय कठिन होइत अछि। मजदूरसभ एहि अन्तरकेँ उठबैत छथि। नब पर्ची आ नामवार अनुमति सँ ओ सभ लेखा-कक्ष पहुँचि अन्तिम भुगतानक प्रक्रिया पूरा करैत छथि। पुरान परिचयपत्र जमा भऽ सकैत अछि, मुदा ओहि अवधि कएल श्रमक देनदारी समाप्त नहि होइत। कथा श्रमिकक पहचान आ मजदूरीक अधिकार बीचक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९१ · आधा हस्ताक्षर

नगर-परिषदक पुरान गोदामक छाजन मरम्मतिक ठेकामे जगरनाथ पासवान आ रेहाना सहित अनेक मजदूर काज करैत छथि। औजार टूटबाक आरोप आ मजदूरी कटौतीक समय ककर जिम्मेदारी अछि, से पाँजिमे स्पष्ट नहि। जगरनाथ अधूर हस्ताक्षर करैत रुकैत छथि, कारण ओ बिना प्रमाण गलत हिसाब स्वीकार नहि करय चाहैत छथि। अभियन्ता अनामिका झा आवश्यक विवरण अलग लिखबाक बात उठबैत छथि। मजदूरक काज, औजारक हिसाब आ कटौतीक कारण लेल अलग अभिलेख बनैत अछि। भुगतानक प्रक्रिया कने लम्बा होइत अछि, मुदा मनमानी कटौती पर रोकक बाट खुलैत अछि। जगरनाथकेँ अपन आधा लिखल नाम मोन रहैत अछि—रुकि प्रश्न करबाक अधिकारक रूपमे।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९२ · बन्द पेटी

बस-पड़ावक ‘हरायल वस्तु’ कोठरीमे बहुत दिनसँ जमा सामानक नीलामीक तैयारी चलैत अछि। मालती सहित समिति पुरान पेटीक भीतर कपड़ा, औजार, निजी छायाचित्र आ चिट्ठी देखैत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे सार्वजनिक रूपेँ बेचबाक योग्य वस्तु आ ककरो निजी स्मृतिक कागज एक्के नियमसँ कोना निपटाओल जाए। खोजबीनमे एक औजारक थैलाक मालिक भेटैत छथि, जकरा थैला गुम भेला सँ आर्थिक हानि उठाबय पड़ल छल। वस्तु घुरेबा आ निजी सामग्री सुरक्षित रखबाक नियम सुधरल जाइत अछि। पेटी पर ताला फेर लगैत अछि, मुदा ओकर भीतरक वस्तु आ बाहरी मालिक बीच नब अभिलेखी बाट खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९३ · किरायाक इजोत

रातिक हाटमे ठेलावला लोकसँ बिजुली आ देखरेखक नाम पर समान शुल्क लेल जाइत अछि। सरोजा सहित विक्रेता प्रश्न उठबैत छथि जे सबहक बत्ती, यन्त्र आ उपयोगक समय एक समान नहि। निजी तार, साझा बाटक प्रकाश आ विद्युत्-दरक हिसाब जाँचबाक बाद अलग-अलग व्यवस्था बनैत अछि। निजी जोड़ पर शुल्क ओकर वास्तविक उपयोगसँ जुड़ैत अछि, जखन कि बीचक सार्वजनिक बत्ती सभ लेल जरैत रहैत अछि। प्रयोगक बादो किछु कठिन प्रश्न बाकी अछि, मुदा विक्रेता आब निजी उजास खोलब-बन्द करबाक अलग अधिकार पबैत छथि। कथा कागजी बराबरीक बदला मापनीय आ न्यायपूर्ण हिस्सेदारीक खोज अछि।

कथा ९४ · छोट ताला

‘माधवी आवास’क साझा भवनमे अनेक परिवार छोट-छोट बन्द पेटीमे निजी कागज आ वस्तु राखैत छथि। एक सन्देहक बाद पेटी खोलबाक माँग होइत अछि, मुदा ओकर भीतर भाड़ा-वृद्धिक पत्र, गहना आ व्यक्तिगत सामग्री सेहो अछि। निवासी रश्मि, रीना, सकीना आ आन लोक प्रश्न उठबैत छथि जे साझा चाबी रहला सँ बिना मालिकक उपस्थितिमे निजी पेटी खोलबाक अधिकार नहि भेटैत। समाधान लेल चाबी, ताला, खोलबाक कारण, समय आ गवाहक लिखित नियम बनैत अछि। ताला ओहिना छोट रहैत अछि, मुदा आब ओकरा खोलबाक प्रत्येक क्रियाक संग अभिलेखक पाँति जुड़ैत अछि। कथा सुरक्षा आ निजताक सन्तुलन पर केन्द्रित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९५ · दू मिनटक देरी

भोजन पहुँचौनिहार नवलकेँ एक ग्राहक धरि भोजन पहुँचबामे कथित दू मिनटक देरीक कारण बीस रुपैया कटौतीक सामना करय पड़ैत अछि। भवनक फाटक पर पहुँचनाइ, उठान-यन्त्र धरि जाएब, घंटी देब आ ग्राहकक भोजन लेब—एहि सभक समय अलग-अलग पाँजिमे अछि। सरोज आ मृणालिनी सहित लोकसभ रजिस्टरक अन्तर जाँचैत छथि। समय दर्ज करबाक ढंग बदलैत अछि आ नवलक कटौतीक रुपैया घुराओल जाइत अछि। कथा अन्तमे एक्के भोजनक दू प्रविष्टि रखैत अछि, ताकि दोष अनुमानसँ नहि, वास्तविक हस्तान्तरणक आधार पर तय हो। दू मिनट छोट समय अछि, मुदा ओकर अर्थ न्याय लेल पैघ बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९६ · गील धानक तौल

बरखाक बाद धान गील रहिते रामलोचन आ मजदूर फुलमतिक बीच मजदूरीक बोरा तौलबाक प्रश्न उठैत अछि। भीजल धानक वजन सुखलाक बाद घटि जाइत अछि; जँ दुनू पक्ष अलग अवस्थामे तौल लेत, बराबरीक हिसाब भ्रामक बनत। फुलमति एक्के शर्त पर तौल करबाक आग्रह करैत छथि। खेत, खलिहान आ गोदामक जरूरत मिलबैत गील तथा सुखायल वजन अलग-अलग दर्ज होइत अछि। अन्तमे बोरा पर तिथिक संग ‘गील’ शब्द लिखल रहैत अछि। अठारह किलो अठारहे अछि, मुदा ओकर माप कखन लेल गेल, एहि आवश्यक सत्यक उल्लेख आब संग अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ९७ · खाली थारी

विवाह-मण्डपक पाछाँ भानसघरमे अतिथिसभक भोजन बनबैत लोक दिन-रात श्रम करैत छथि। भोजक गिनतीमे अतिथि लेल सभ व्यवस्था अछि, मुदा रसोइया, परोसनिहार आ सफाइकर्मीक अपन भोजन प्रायः पाछाँ छूटि जाइत अछि। मालती आ अन्य कर्मी एहि अभाव पर प्रश्न करैत छथि। भोजनक लागत, समय आ पाँजिमे श्रमिकक नाम दर्ज करबाक नव व्यवस्था बनैत अछि। अन्ततः गणेश सहित श्रमिकसभ लेल भोजनक थारी अलग गिनल जाइत अछि। कथाक अन्तमे एक थारी खाली अछि, कारण ओकर उपयोगकर्ता जा चुकल अछि, नहि कि ओकर भोजनक अधिकार बिसरल गेल। थारी खाली रहैत अछि, गिनती नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९८ · तीन रुपैयाक पर्ची

बस-पड़ावक सार्वजनिक शौचघरमे उपयोगक शुल्क तीन रुपैया अछि। परिचारिका सरोजा पबैत छथि जे वसूली आ पर्चीक गिनतीमे अन्तर अछि। जाँचमे खुलैत अछि जे कतेको उपयोगकर्ताक रुपैया पर्ची बिना जमा भेल अथवा पर्चीक हिसाब अलग पड़ि गेल अछि। रमेश बाबू आ अन्य कर्मी रुपैयाक गिनती, छुट्टा-पाइ, पर्ची आ घुरल रकमक अलग अभिलेख बनबैत छथि। ओ सभ व्यवस्था एना सुधारैत छथि जे प्रत्येक रकमक चिह्न रहय आ अनावश्यक कटौती वा संशय नहि हो। अन्तिम पर्ची ‘मिलल’ लिखि सुरक्षित राखल जाइत अछि। छोट शुल्कक पारदर्शिता श्रमिकक विश्वासक प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–१

कथा ९९ · पछिला बत्ती

बस-पड़ाव पर अन्तिम बस गेलाक बादो सफाइकर्मी कमलीक काज समाप्त नहि होइत अछि। बसक कचरा हटेब, फाटकक सुरक्षा आ रातिक बत्ती बन्द करबाक समय बीच अन्तर अछि। ठेका-पत्रक घड़ी अनुसार कमलीक अतिरिक्त श्रम स्पष्ट नहि देखाइत। सीमा झा, रघुनाथ आ अन्य कर्मी समयक पाँजि जाँचि अन्तिम बस तथा अन्तिम काजक भेद दर्ज करैत छथि। आवश्यकता अनुसार बत्ती जरेबाक व्यवस्था सेहो सुधरैत अछि। अन्तिम दृश्य मे अनावश्यक बत्ती बुझि जाइत अछि, मुदा खुलल बाटक प्रकाश रहैत अछि। पाँजिमे कमलीक अन्तिम काजक समय ओकर अपन नामक संग सुरक्षित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०० · गिनतीक बाहर

बाढ़िक बाद क्षतिक सर्वेक्षणमे मकान आ परिवारक गिनती एक्के मानल जा रहल अछि। मुदा एक मकानमे कतेको किरायेदार, अलग रसोई करनिहार परिवार आ अस्थायी रूपेँ रहनिहार लोक होइत छथि। मृणालिनी आ सर्वेक्षण-दल घर-घर जा कऽ वास्तविक स्थिति देखैत छथि। देवालक क्षति, मालिकक अधिकार आ प्रभावित परिवारक आवश्यकताकेँ अलग-अलग दर्ज करबाक प्रस्ताव बनैत अछि। गिनतीमे छुटल लोकक ठाम जोडला सँ भवन आ परिवारक संख्या अलग होइत अछि। अन्तमे एक्के ठामक दू गिनती—संरचना आ रहनिहार परिवार—दुनू सही मानल जाइत अछि। बाढ़िक रेखासँ संग कागज पर लोकक उपस्थितिक नब रेखा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०१ · बाँधक ओहि पार

बाँधक कारण पुरनका बहुअरा उजड़लाक चौदह बरख बाद नव बहुअरामे देवस्थान बनेबाक प्रश्न उठैत अछि। रघुनन्दन झा आ आन लोक देवस्थानक ठाम आ अधिकारपर बहस करैत छथि। देवकली देवीक सुरक्षित राखल ‘दीप-बारी’ पाँजि हुनकर पोता चन्दन केँ बुझबैत अछि जे पुरान देवस्थान कोनो जाति वा कुलक एकाधिकार नहि, सभ घरक साझा जिम्मेदारी छल। नव आ पुरान परिवारक नाम जोड़ि खुला चबूतरा बनैत अछि। मधुबाला आ हुनकर बेटी रानी पहिल दीप जरबैत छथि। पुरनका ठामक स्मृति आ नव गामक सामूहिक जीवनक निरन्तरता एहि दीपमे जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०२ · रिक्त पद

बेलाही स्वास्थ्य केन्द्रमे चिकित्सकक पद पाँच बरखसँ खाली अछि। केन्द्र खोलनिहार जमुना देवी चिकित्सक नहि भेटलासँ घुरि जाएवाला प्रत्येक रोगीक स्मृतिमे रस्सी पर एक गाँठ बान्हैत छथि। निरीक्षणक दिन दोसर केन्द्रसँ चिकित्सक आनल जाइत छथि, मुदा अगिला दिन फेर कुरसी खाली रहि जाइत अछि। सीता, फूलो आ गामक लोक गाँठदार रस्सी जनसुनबाइमे लऽ जाइत छथि; दू सय चौदह गाँठ प्रशासनिक उपेक्षाक वास्तविक पीड़ा सामने अनैत अछि। सप्ताहमे दू दिन चिकित्सक पठेबाक व्यवस्था शुरू होइत अछि। जमुना पुरान गाँठ नहि खोलैत छथि, कारण भेल कष्ट मेटाओल नहि जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०३ · जमीनक आवाज

हरिहरपुरक सदा टोलीसँ मुख्य सड़क जाएवाला ‘बीचक बाट’ घेरबाक लेल धनेश्वर साह अपन जमीनक नक्शा देखबैत छथि। टोलीक लोकक जीवन, बरखाक आवागमन आ रोगी लऽ जाएबाक आवश्यकता ओहि बाटसँ जुड़ल अछि। जसोदा सदा आ वृद्धा कुसुमी सदा पुरान इनारक स्मृति आ रास्ताक घुमावक प्रमाण आगाँ रखैत छथि। नापी, स्थानीय गवाही आ सामूहिक आग्रहक बीच निजी स्वामित्व आ लोकप्रयोगक टकराव खुलैत अछि। अन्ततः चलैत आएल बाट बचेबाक उपाय निकलैत अछि; जमीनक आवाज कागज मात्र नहि, ओकरा पर चलैत लोकक पएर सेहो अछि।

कथा १०४ · आधा समोसा

बस-पड़ाव पर मजूरीक प्रतीक्षामे बैसल जीबछ आ बासोक लग एकटा समोसाक मात्र दाम अछि। समोसा आधा करिते दुनू बराबरीक प्रश्नमे उलझि जाइत अछि। टुकड़ाक आकार, आलू, खस्ता भाग, वजन आ फेर सँ बाँटबाक अनेक उपाय सभ विवाद बढ़बैत अछि। दोकानदार, तरकारीवाली आ आन लोकक सलाहो अन्तिम फैसला नहि दैत। मजूरीक काज भेटला पर दुनू हँसैत समोसा खा लैत अछि। अगिला दिन दूटा समोसा किनलाक बादो पैघ के अछि, से प्रश्न फेर उठैत अछि। कथा भूखक बीच दोस्ती आ बराबरीक हास्यपूर्ण जिद देखबैत अछि।

कथा १०५ · बरामदाक विश्वविद्यालय

पुरान डाकघर लगक ओसारामे बेरोजगार नवल, रमाकान्त, सदन आ परमानन्द सभ विषयपर बहस करैत ‘विश्वविद्यालय’ चलबैत छथि। रमाकान्त केँ साक्षात्कारक पत्र भेटैत अछि, मुदा बस-भाड़ाक अभाव ओकर उत्साह रोकैत अछि। चारू मिलि मेहनतिक काज करैत छथि, अर्जित धनसँ यात्राक व्यवस्था होइत अछि आ मालती काकीक चाहक उधार सेहो घटैत अछि। व्यवहारिक श्रम हुनका सभकेँ ओ शिक्षा दैत अछि जे लम्बा भाषण नहि दऽ सकल। ओसाराक चूऔत छप्पर सेहो ओ सभ स्वयं सुधारैत छथि। रमाकान्त घुरला पर मित्रसभ फेर चाह संग जुटैत छथि; बहस आ काजक बीच नव सम्बन्ध बनैत अछि।

कथा १०६ · प्रेमक उधार

रामदेव साहक किराना-दोकानक उधार-पाँजिमे रकमक संग गाहकक ‘कहल बात’ सेहो दर्ज होइत अछि। बेटी कुसुम एहि पाँजिमे साइकिल-मरम्मतक मजदूर माधवक उधार आ ओकर स्वाभिमानी, हँसोड़ वाक्य लिखैत जाइत अछि। माधव अपन बीमार माएक सामानक दाम चुकाबय चाहैत अछि, दया नहि। धीरे-धीरे कुसुम आ माधवक बीच उधारक हिसाबसँ भिन्न आत्मीयता उपजैत अछि। मजदूरी भेटला पर आर्थिक ऋण शून्य भऽ जाइत अछि, मुदा पुरान पाँजिक बात सभ बचल रहैत अछि। नव पाँजिक खाली पन्ना आ अनकहल प्रेम ओकर सम्बन्धक अगिला सम्भावना बनैत अछि।

कथा १०७ · एक कप मुफ्त चाय

बेलवा चौकक बुधन साह प्रतिदिन एक कप मुफ्त चाह ‘अचिन्हार’ लेल रखैत छथि, शर्त ई जे ओ चाहक सच्ची राय देत। अनजान पिबनिहारक टिप्पणीसँ दोकानक बेंच, सफाइ आ धुआँक व्यवस्थामे सुधार होइत अछि। सड़क बन्द रहला पर कोनो नव लोक नहि अबैत आ राखल चाह ठंढा पड़ि जाइत अछि। अन्तमे सोनबरसा जाएवाली एक युवती पूछैत छथि जे चाह पहिनेसँ भरि किएक राखल जाइत अछि। हुनकर सलाह पर बुधन खाली कप राखबाक आ अचिन्हार अएलाक बादे ताजा चाह देबाक नियम बनबैत छथि। ई कथा आलोचना सुनबाक विवेक आ आतिथ्यक सहजता देखबैत अछि।

कथा १०८ · बूढ़ा आ रेडियो

बरदाहाक महेश्वर झा साँझ-साँझ रेडियो पर उद्घोषक शिवनाथ मिश्रक आवाज सुनैत छथि आ विश्वास करैत छथि जे उद्घोषक हुनका व्यक्तिगत रूपसँ चिन्हैत छथि। पोता नीलू एहि विश्वासपर प्रश्न करैत अछि। रेडियोक विद्युत-कोष समाप्त भेला पर बूढ़ काका दोसर घर जा कऽ प्रसारण सुनबाक प्रयत्न करैत छथि। बादमे उद्घोषकक ओरसँ आएल पातीमे हुनका प्रणाम आ मचियाक उल्लेख भेटैत अछि। नीलू केँ ई पहिल ठोस प्रमाण बुझाइत अछि, मुदा महेश्वरक लेल अपनापन पहिनेसँ आवाजक भीतर छल। कथा अनदेखल सम्बन्ध, सुनबाक संवेदना आ पीढ़ीक अलग-अलग दृष्टिक संगम अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०९ · छाता साझा

सकरी हाटसँ घुरैत जूता-सिलाइ करनिहार लखनक छाता खराब भऽ जाइत अछि। बरखामे सलीम नामक बोझा ढोअनिहार युवक ओकरा संग छाता सम्हारैत चलैत अछि। दुनू छाताक छाँह बराबर बाँटबाक खेलमे भीजैत, हँसैत आ एक-दोसराक जीवन बुझैत आगाँ बढ़ैत अछि। सलीमक डोरीसँ छाताक घेरा बाँधि जाइत अछि। पीपर मोड़ पर अलग भेला समयो छाता के लऽ जाएत, एहि पर दुनूक उदारताक टकराव होइत अछि। अगिला हाटमे छाता ठीक भऽ गेलाक बादो दुनू संग चलैत अछि; आब छाता नहि, मित्रता संग चलबाक कारण अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा ११० · पाँच रुपैयाक राजा

नओ बरखक गोपी साग बाँधबामे मायक सहायता करबाक मजूरीमे पाँच रुपैयाक एक सिक्का पाबि स्वयं केँ राजा बुझय लगैत अछि। सिक्काक अर्धचन्द्राकार खरोंच ओकर ‘राजचिन्ह’ बनैत अछि। माय छुट्टा लेल सिक्का उधार लैत छथि; ओ सिक्का सीतो काकी, दूधवाला, मिस्त्री आ डाकबाबूक हाथ घूमैत फेर गोपी लग पहुँचैत अछि। एहि यात्रासँ बालक धनक आवागमन, उधार आ अपन अधिकारक वास्तविक अर्थ बुझैत अछि। अगिला भोर सीतो काकी फेर छुट्टा माँगैत छथि तँ गोपी मुस्कुरा कऽ सिक्का दैत अछि, मुदा साँझ धरि ओकर खबरि चाहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १११ · भातक सुगन्ध

दरभंगामे पढ़ैत माधव किरायाक कोठरीमे रहैत अछि, मुदा पढ़ाइ आ अभावक कारण अपन चूल्हि प्रायः नहि जरबैत। पड़ोसिन कमला काकीक हाँड़ीसँ उठैत भातक सुगन्ध ओकरा माएक घर याद दिअबैत अछि। कमला काकी ओकर स्वाभिमान बचबैत अपन चूल्हिक बचल आँचपर माधवक चाउर पकाबय लगैत छथि। माधव लकड़ीक टहनी आनिक अपन हिस्सा जोड़ैत अछि। एक चूल्हि पर दू हाँड़ीक ई व्यवस्था धीरे-धीरे पारिवारिक स्नेह बनि जाइत अछि। गामसँ आएल नवधानक भातमे दुनू घरक सुगन्ध मिलैत अछि। छुट्टीमे माधव गाम जाइत अछि, मुदा छोट हाँड़ीक ठाम सुरक्षित रहैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा ११२ · प्रेम-पत्रक व्याकरण

दीपक अपन प्रेमिका सुगनी केँ पत्र लिखबाक लेल गुरुजी रमानन्द झाक लग व्याकरण सुधरबय अबैत अछि। गुरुजी देखबैत छथि जे चान-सितारा, जीवन-मरण आ अनन्त प्रेमक अतिशयोक्ति लिखबाक अपेक्षा अपन देखल-सुनल साँच कहब बेसी आवश्यक अछि। दीपक पत्रमे सुगनीक धीरज, पुस्तकालयमे भेल भेट आ अपन प्रेमक स्पष्ट स्वीकृति रखैत अछि। ओ उत्तर देबाक हुनकर स्वतन्त्रता सेहो मानैत अछि। प्रेम-पत्र भाषाक अभ्याससँ सम्मानपूर्ण संवाद बनि जाइत अछि। सुगनीक उत्तरक बाद रविदिन पाँच मिनट भेटबाक प्रसंग गुरुजीक हाटक सूचीमे सेहो दर्ज भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११३ · पानवाला दार्शनिक

पीपर चौकक पानवाला बदरी साह लोकक चिन्ता सुनि तुरन्त उपदेश नहि दैत छथि। पान बनबैत-बनबैत ओ पूछैत छथि जे एहि घड़ी कएल की जा सकैत अछि। गाहक सभ एहि सरल प्रश्नसँ अपन समस्या छाँटि लैत अछि। मुदा घरमालिक सत्रह बरख पुरान दोकान खाली करबाक सूचना दैत छथि तऽ बदरी स्वयं असमंजसमे पड़ैत छथि। परिचित लोकक सहयोगसँ नव ठाम भेटैत अछि, आ हुनका बुझाइत अछि जे पाँच मिनटमे उत्तर नहि, आगाँ बढ़बाक साहस भेटैत अछि। नव दोकान पर परीक्षा सँ डेरायल किशोर केँ ओ पढ़बाक लेल घर पठबैत छथि।

कथा ११४ · किरायाक कुकुर

दर्जी महेन्द्रक घरमे गाहकक कपड़ा आ सिलाइ-मशीन सुरक्षित रखबाक चिन्ता अछि, मुदा पहरेदार कुकुर किनबाक साधन नहि। अब्दुल चाचा अपन कालू नामक कुकुर रातिमे महेन्द्रक ओसारामे सुतबाक लेल देबाक प्रस्ताव रखैत छथि; बदलामे ओकरा सप्ताहमे एक बेर नहायब पड़त। कालू अपन पुरान बोरा संग दूनू घरक बीच नियमित आवागमन करय लगैत अछि। कखनो बकरी रोकबामे असफल, कखनो फाटक खसलासँ पहिने भुकि कऽ सावधान करैत अछि। बादमे महेन्द्र अपन कुकुर किनि सकैत छथि, मुदा कालू संगक आत्मीय व्यवस्था नहि तोड़ैत। ओकरा दू घर आ दूनू परिवारकेँ सहयोग भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा ११५ · खाली जेबक भोज

ललनक प्रशिक्षण परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक खुशीमे चारि मित्र भोज करबाक निश्चय करैत छथि, मुदा सभक जेब खाली अछि। ललन, फेकन, जमील आ भोला बिना माँगने अपन श्रमसँ भोजन जुटाबय चाहैत छथि। फलविक्रेताक खसल अमरूद समेटबाक बदला अमरूद आ ठेलाक चक्का निकालबाक बदला भुजल चना भेटैत अछि। ओ नगरक सफाइकर्मीक टोकरी सेहो उठाबैत छथि। पोखरि लग अमरूद, चना, नून आ सार्वजनिक नलक पानिसँ भोज होइत अछि। शून्य खर्चक एहि उत्सवमे मित्रता, परिश्रम, आत्मसम्मान आ साझी हँसीक समृद्धि देखाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११६ · टूटा छाता संघ

बरखामे फँसल दर्जी शिवनाथ, साइकिल-मरम्मतक करीम आ बोरा तौलनिहार जगदीश लग तीनटा अलग-अलग खराब छाता अछि। एकर कपड़ा, दोसरक डाँटी आ तेसरक डण्डा जोड़ि ओ सभ एकटा हरियर-नील छाता बनबैत छथि। मुदा एक छाता नीचाँ तीन लोकक बराबर ठामक प्रश्न उठैत अछि। भीजैत-हँसैत ओ सभ बीस-बीस डेग पर पकड़नी बदलबाक नियम बनबैत छथि। पछिला दिन 'टूटल छाता संघ'क मरम्मत आ स्वामित्वक चर्चा होइत अछि। अन्तमे छाता ककरो अकेलाक वस्तु नहि रहैत; आवश्यकता पड़ला पर सभक उपयोगक साझा साधन बनैत अछि।

कथा ११७ · भुलक्कड़ प्रेमी

नन्दू केँ अपन स्मृतिपर बहुत भरोसा अछि, मुदा मधुरीक जन्मदिन सत्ताइसमक बदला सत्रहम सुनि लैत अछि। ओ दस दिन पहिने जलेबी आ मोट जिल्दवाली नस्ती-पुस्तिका लऽ बधाइ देबाक लेल पहुँचि जाइत अछि। मधुरी आ हुनकर माय हँसि कऽ भूल समझबैत छथि। मधुरी पुस्तिकामे नन्दूक बेठीक तिथि आ अपन सही जन्मदिन लिखि दैत छथि। सत्ताइसम केँ नन्दू फेर पहुँचैत अछि, एहि बेर बिना उपहार, मुदा सही तिथिक संग। खीर, हँसी आ पुस्तिकाक पाँति सभ प्रेममे याददाश्तसँ बेसी ध्यान, विनम्रता आ सत्यापनक महत्त्व देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११८ · निःशुल्क हजाम

मंगल हजाम अपन पुरान मित्र धीरूक बाल मुफ्त काटबाक जिद करैत अछि। धीरू दाम देबय चाहैत अछि, आ मंगलक धीमा, बारीक काज तथा लगातार ‘दर्शन’ पर ठट्ठा करैत अछि। मंगल विशेष ध्यानसँ दहिना घुमरी आ पुरान दाग ढाँपैत केश सँबारैत अछि। धीरू बदलामे दोकानक ढीला कुर्सीक बाँह कसि दैत अछि, मुदा दुनू एहिकेँ ग्राहक-मजूरीक हिसाब नहि मानैत। धीरू प्रशंसा करैत अछि, आ पछिला दिन आन गाहको मंगलक कला सराहैत छथि। मित्रताक बेदाम सेवा, श्रमक गौरव आ चुहलसँ दोकान गुञ्जैत रहैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा ११९ · दादीक मोबाइल

धनवंती दादी मोबाइलक चिन्ह आ बटन नहि बुझि पबैत छथि; पोती अनिमा हुनका बारम्बार सिखबैत छथि। दादी फोनक संख्या गनबाक गुणसँ बेसी लोकक आवाज, चिन्ता आ परस्पर पूछताछक महत्त्व बुझैत छथि। एक दिन मोबाइल बन्द भऽ जएबासँ परिवार आ परिचित लोक एक-दोसरासँ सम्पर्क करय लगैत छथि, आ संवादक नव अवसर बनैत अछि। नव तार लगलाक बाद दादी मानैत छथि जे मोबाइल लोककेँ जोड़ैत अछि, मुदा कखनो ओकर चुप रहबो आवश्यक होइत अछि। संचारक साधन आ सजीव सम्बन्धक बीचक अन्तर हलुक हास्यमे उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १२० · एक प्लेट पकौड़ी

हाटक बाद रामचरितक दोकान पर जुटल पाँच मित्र एक प्लेट पकौड़ी मँगबैत छथि। एगारहम पकौड़ी के खायत, एहि प्रश्नपर सभ एक-दोसरक पुरान उपकार गनाबय लगैत छथि। कियो दोकान सम्हारने छल, कियो बच्चार्कें पढ़ौने, कियो असुखमे सहायता कएने छल। धन्यवादक एहि हिसाबमे पकौड़ी ठंढा होमय लगैत अछि। रामचरितक बेटी गुड़िया व्यावहारिक बुद्धिसँ बात सुलझबैत अछि। दोसर प्लेटमे जानि-बुझि एगारह पकौड़ी राखल जाइत अछि आ अतिरिक्त पकौड़ी गुड़ियाक लेल अलग कऽ देल जाइत अछि। मित्रताक मूल्यक गणना असम्भव होएब कथाक विनोदी आशय अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १२१ · चप्पलक जोड़ी

शिवमन्दिरमे पूजा करबाक लेल आएल नन्दकिशोर आ रामबिलासक परिवार अनजान होइतो लगभग एक्के रूपक कारी चप्पल रखैत अछि। बरखा आ भीड़मे दुनूक चप्पल आपसँ बदलि जाइत अछि। नील सूत आ तलक गोल दाग चिन्हि जोड़ी घुराओल जाइत अछि। छज्जा तर बरखा थमबाक प्रतीक्षामे दुनू परिवारक परिचय होइत अछि। एक मास बाद हाटमे फेर भेंट होइछ; आब चप्पल पर अलग रङक धागा बान्हल अछि। चप्पलक भ्रम दूर होएबाक संग अपरिचित लोक परिचित बनि जाइत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२२ · घरक सबसँ धनी आदमी

पुरान पोथीक जिल्द बनौनिहार जगदीश झाक आमदनी सीमित अछि, मुदा हुनकर घरमे बाटक अतिथि, विद्यार्थी आ परिचित लोकक आबाजाही रहैत अछि। बेटी मुनिया ‘घरक सभसँ धनी आदमी’ विषयपर लिखबाक लेल धनक अर्थ पूछैत अछि। घरमे भोजन कम रहितो अतिथि सभ अपन-अपन सामग्री आ श्रम जोड़ि सामूहिक भोजन बनबैत छथि। मुनिया देखैत अछि जे चारि थारीवाला घर अनेक लोककेँ आश्रय दैत अछि। ओकर निबन्धमे बाबूक उदारता धनक नव माप बनैत अछि। अन्तमे एकटा आओर यात्री रात्रि बिताबय अबैत छथि, आ ओसाराक चटाइ फेर बिछैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२३ · हँसीक बचत

सरिता केँ विद्यालयसँ घरक बचतपर निबन्ध लिखबाक काज भेटैत अछि। दादा रामलोचन मिश्रक पुरान पाँजिमे औषधि, बेटी-विवाह आ छप्परक खर्चसँ जमा धन फेर-फेर समाप्त भेलाक इतिहास अछि। दादी सुरजी आ दादा नव छोट बचत शुरू करबाक निश्चय करैत छथि। सहकारी खाताक चर्चा आ पित्तरिक डिबियामे धीरे-धीरे रुपैया जमा होइत अछि। सरिता अपन निबन्धमे देखबैत अछि जे पैसा घटि-बढ़ि सकैत अछि, मुदा घरक साझा हँसी पहिने सँ बचल अछि। दादा-दादीक बचतमे आर्थिक सावधानी आ जीवट दुनू रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १२४ · चाबी

सात बरख किरायाक घरमे रहि चुकल माधव झा परिवार संग नव ठाम जाय लगैत छथि। पुरान कोठरीमे राखल तालाबन्द काठक सन्दूक आ ओकर अनजान चाबी सदिखन रहस्य बनल छल। घरमालिक शशिधर बाबू बतबैत छथि जे सन्दूक दिवंगत पत्नीक स्मृति अछि; भीतरक सामान पहिने बाँटल जा चुकल अछि। विदाक समय ओ सन्दूक आ चाबी माधवकेँ दऽ दैत छथि। नव घरमे माधवक बेटी मीरा पहिल वस्तुक रूपमे अपन चित्रक कापी ओहिमे रखैत अछि। रिक्त सन्दूक पुरान घरक स्मृतिसँ नव परिवारक स्मृति धरि सेतु बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १२५ · दस मिनट

अविनाश प्रशिक्षणक लेल रेल पकड़बाक प्रतीक्षामे अछि, मुदा जन्मतिथिक सुधारल प्रमाण-पाती गुरुजी आनबाक छथि। स्टेशनपर दस मिनट बचल अछि। ओतहि कौशल्या देवी अपन बेटाक बाट तकैत छथि। दुनू एक-दोसरक सामान आ चिन्ताक रखवारी करैत समय बितबैत छथि। गुरुजीक अबैत काल तक प्रतीक्षा, रेलक सीटी आ चढ़बाक आपाधापी एक्के संग बढ़ैत अछि। आवश्यक पाती आ यात्राक सामान सम्हारि अन्तिम घड़ीमे यात्रा सम्भव बनैत अछि। कथा देखबैत अछि जे दस मिनटक अल्प समयमे अनजान लोकक बीच सहयोगक स्थायी स्मृति बनि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२६ · अन्तिम ग्राहक

दोकान बन्द करैत जयराम हजाम लग शशिकान्त नामक युवक अन्तिम ग्राहक बनि पहुँचैत अछि। ओकर बटुआ हेरायल अछि, मुदा जयराम दाम बिना दाढ़ी बना दैत अछि आ कहैत अछि जे अवसर भेटला पर दोसराक छोट काज मुफ्त करिह। पछिला दिन जयरामकेँ अपन आवश्यक नस्ती सँ सम्बन्धित कार्यालयक काज पड़ैत अछि। ओतहि शशिकान्त भेटि कागजक मोड़ खोलि उचित प्रक्रियासँ काज बढ़बैत अछि। युवक पाछाँ दाम देबय चाहैत अछि, मुदा जयराम सेवा केँ परस्पर हिसाब नहि बनबय दैत। अन्तिम दृश्य मे फेर कम पैसा लऽ आएल गाहक केँ ओ बैसा लैत अछि।

कथा १२७ · टूटल घड़ी

अमरेश माधवीक बन्द पड़ल पुरान कलाई-घड़ी दीनानाथक दोकानमे सुधारबय लऽ जाइत अछि। घड़ी पाँच बजि सोलह मिनट पर रुकल अछि। धीरे-धीरे पता चलैत अछि जे ओहि क्षण माधवीक बाबू रघुनाथ पहिल बेर अमरेश केँ बाहरी अतिथि नहि मानि भीतरक खूँटी पर छाता टाँगबाक अनुमति देने छलाह। एहि छोट स्वीकृतिकेँ माधवी प्रेम-विवाहक बाट खुलबाक संकेत बुझि घड़ी जानि-बुझि रोकि देने छलीह। सुधारल घड़ीक खरोंच अमरेश नहि हटबैत अछि। रघुनाथक घरमे विवाहक चर्चा शुरू भेला पर पाँच सोलहक स्मृति नव अर्थ पबैत अछि।

कथा १२८ · मिठाइक डिब्बा

शैलजा विशेष शुभकामनाक अवसरपर निर्मलाक घर लेल महँग केसर-मखान मिठाइक सजल डिब्बा किनैत छथि। डिब्बा बिना खोलने उपहारक रूपमे एक घरसँ दोसर घर घूमैत अन्ततः शैलजाक घरे घुरि अबैत अछि। निर्मला आ शैलजा पहचानैत छथि जे बाहरी चमक आ उपहार देबाक प्रतिष्ठाक बीच मिठाइ खेबे नहि भेल। अन्ततः डिब्बा खोलि सभ मिलि मिठाइ खाइत अछि। बेटी ईरा खाली डिब्बा सूत रखबाक लेल लऽ लैत अछि। घुमन्तू उपहारक हास्यमय प्रसंगमे वस्तुक वास्तविक उपयोग, स्नेह आ दिखावटक अन्तर खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२९ · छोट विज्ञापन

निरंजन काजक खोजमे कम रुपैयाक छोट समाचार-पत्र विज्ञापन छपबैत अछि। शब्द घटेबाक बाध्यतामे ओकर कामक विवरणो कटैत अछि। विज्ञापन पढ़ि पुरान मित्र हरिनाथ ओकरा भेटय अबैत अछि। आठ बरख पहिने निरंजन हरिनाथक प्रशिक्षण-शुल्क लेल अपन जमा रुपैया देने छल। आब हरिनाथ ओही ऋणक रकम घुरबैत अछि आ पुरान सम्बन्ध फेर जुड़ैत अछि। निरंजन फेर काजक विज्ञापन छपबय जाइत अछि, मुदा बूझि चुकल अछि जे छोट विज्ञापन केवल रोजगार नहि, बिसरल मित्रता आ ऋणक स्मृति सेहो खोजि अनने अछि।

कथा १३० · नील पेन

परीक्षाक दिन मिथिलेश घबरा रहल अछि। मित्र राघव अपन ‘भाग्यशाली’ नील पेन ओकरा दैत अछि, जाहिसँ ओ पहिने सफल भेल छल। पेनक इतिहासमे मिथिलेशक सहायता आ दूनूक साझा अभ्यास निहित अछि। परीक्षा समय पेनमे खराबी आ ओकर सुधारक प्रसंग देखबैत अछि जे वस्तुसँ बेसी महत्त्व मेहनत आ भरोसाक अछि। परिणाममे मिथिलेशक चयन होइत अछि। राघव फेर पेन देबय चाहैत अछि, मुदा मिथिलेश कहैत अछि जे पेन एक अंक लिखने छल, बाकी उत्तर ओ स्वयं लिखने अछि। सौभाग्यक आड़मे मित्रक सहयोग आ अपन श्रम उजागर होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३१ · काठक घोड़ा

बढ़ई भोलनाथ अपन पुत्र संतोष लेल कटहरक काठक घोड़ा बनबैत अछि, जाहिमे एक नीमक चक्का अलग आवाज करैत अछि। भोलनाथ बीमार पड़ला पर औषधि किनबाक लेल संतोष घोड़ा हाटमे हबीब मियाँ केँ बेचि दैत अछि। पिता बेटाक त्याग बुझैत छथि, मुदा काजक उचित दाम लेबाक बातो सिखबैत छथि। बादमे हबीब मियाँ चारि लट्टूक बदलामे ओ घोड़ा घुरबैत छथि। संतोष घोड़ाकेँ घरक औजारक पेटीपर सम्हारि रखैत अछि आ आन बच्चाकेँ सेहो खेलेबैत अछि। श्रमक मूल्य, परिवारक आवश्यकता आ स्मृतिक आकर्षण एहि खेलौनामे जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३२ · सिलाइ मशीन

लीला सिलाइ-मशीन चलाकऽ घरक आय जुटबैत छथि। पति हरिनारायणक जन्मदिनपर उपहार, मशीनक मोटर आ तत्काल धनक अभावसँ एक उलझन उपजैत अछि। लीला चालू मशीन बन्धक रखि धनक व्यवस्था करैत छथि, आ पुरान बेकार मशीनक पुर्जा सम्बन्धी सौदा सेहो होइत अछि। हरिनारायण आरम्भमे चकित छथि, मुदा सिलाइ सँ अर्जित धन द्वारा मशीन फेर छुड़ाओल जाइत अछि। बद्री मिस्त्री मोटर लगबैत छथि आ पएरक पैडल पर निर्भरता घटैत अछि। लाल किनारीक गमछा, बन्धकक पावती आ मशीनक आवाज दाम्पत्यक साझा परिश्रमक साक्षी बनैत अछि।

कथा १३३ · एक जोड़ी जूता

नवल अपन बहिन मृणालक महाविद्यालय नामांकन लेल आवश्यक धन जुटाबय अपन पुरान कारी जूता बेचि दैत अछि। जूताक नील सियाहीक अर्धचन्द्राकार दाग ओकर पहचान अछि। मृणाल नामांकनक बाद ई त्याग जानि लेत अछि आ छात्रवृत्तिसँ भेटल धनक एक हिस्सासँ रहीमक दोकानसँ ओही जूता घुरा अनैत अछि। भाई पहिने चप्पल पहिरि काज चलबैत रहल छल। जूताक लौटब केवल वस्तुक पुनर्प्राप्ति नहि, बहिनक पढ़ाइ आ भाईक प्रेमक परस्पर सम्मान अछि। नील दाग दूनूक साझा स्मृति बनि रहैत अछि।

कथा १३४ · हेरायल पर्स

रिक्शाचालक रघुवीरक चालन-पत्र मरम्मतक कमी कारण रोकल गेल अछि; घरमे बेटी अनुष्काक शुल्कक चिन्ता सेहो अछि। एक यात्रीक हेरायल पर्स घुरेबा समय पता चलैत अछि जे ओ अधिकारी अशोक झाक अछि, जिनकर कार्यालयमे ओकर कागज अटकल अछि। रघुवीर पर्सक बदला न विशेष लाभ चाहैत अछि, न पैघ पुरस्कार; ओ नियमअनुसार मरम्मत आ जुर्माना पूरा करैत अछि। अधिकारी सेहो पक्षपात बिना चालन-पत्र घुरबैत छथि आ बाँकी पाँच टाकाक रिक्शा-भाड़ा चुकबैत छथि। ईमानदारी केँ लाभक सौदा नहि बनेबाक आत्मसम्मान कथा मे प्रकट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३५ · कियायाक कमरा

शिक्षक-प्रशिक्षणक विद्यार्थी सुमन मंडल तीन बरखसँ हरिमोहन ठाकुरक कोठरीमे भाड़े रहैत अछि। भाड़ाक हिसाबक एक अतिरिक्त रकमपर शंका आ आर्थिक दबावसँ ओ नव कोठरीमे चलि जाइत अछि। परीक्षा-शुल्क जमा करबाक समय पता चलैत अछि जे हरिमोहन ओकरा लेल धन सुरक्षित राखि शुल्क भरि देने छथि। भलमनसाहत भेलो पर बिना पूछने कएल व्यवस्था सुमनक निर्णयक अधिकार कैँ ठेस पहुँचबैत अछि। दूनू अपन-अपन भूल बुझैत छथि। सुमन परीक्षा उत्तीर्ण भऽ भविष्यक शुल्कक अलग बचत शुरू करैत अछि।

कथा १३६ · बिना नामक पार्सल

शिवकान्त मिश्रक घरमे भेजनिहारक नाम बिना उपयोगी वस्तु भरल पार्सल आबय लगैत अछि। परिवारमे आश्चर्यक संग संदेह सेहो फैलैत अछि, कारण पार्सलमे घरक भीतरक आवश्यकताक चीज रहैत अछि। अन्तमे शिवकान्त दरभंगा मालघरमे राति-पालीमे काज करनिहार पुत्र नन्दू केँ पहचानैत छथि। नन्दू अपन कमाइ सँ माय लेल चादर, घरक मरम्मतक सामान आ आन सामग्री पठबैत रहल, मुदा गरीबी आ अनिश्चित काजपर अनावश्यक प्रश्नसँ बचबाक लेल नाम नहि लिखने छल। पिता बुझैत छथि जे पुत्रक देर धरि सुतब आलस्य नहि, रातिक श्रमक परिणाम अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १३७ · तस्वीरक पाछाँ

पुरान घरक सामान छाँटैत उदयन आ स्वर्णलता केँ एक छायाचित्रक पाछाँ लिखल पाँति भेटैत अछि। वृद्ध फुआ विमला बतबैत छथि जे बाढ़िक राति कौशल्या नामक स्त्री नावसँ आबि प्रसवमे सहायता कएने छलीह, जाहिसँ हुनकर माय आ नवजात हरिनारायण दुनूक प्राण बचल। परिवारक इतिहासमे ओ स्त्रीक स्थान लगभग बिसरल गेल छल। कौशल्याक परिवार संग सम्पर्क होइत अछि, आ छायाचित्र बेचल नहि जाइत। ओसारमे तस्वीरक संग हुनकर नाम आ योगदान प्रकाशित होइत अछि। घरक मरम्मतसँ पहिने स्मृतिक सुधार होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३८ · दू दीप

दीपावली पर नितिन बचल मजूरीसँ दू माटिक दीप किनैत अछि। एकटा घरक दुआर लेल, दोसर श्मशान घाटक एकान्त चौकीदार लेल, जकर लालटेन टूटल अछि। घाटपर जा कऽ ओ देखैत अछि जे चौकीदार वास्तवमे ओकर बाबू रघुनाथ छथि, जिनकर रातिक कठिन काजक बात परिवार खुले रूपमे नहि करैत रहल। नितिन बाबूक परिचय बुझि हुनकर श्रम आ संकोचक अर्थ नव रूपमे देखैत अछि। माय मालती पहिने सँ ई बात जनैत छथि। दुआर आ घाटक दू दीप घरक उजास आ अनदेखल श्रमक सम्मानक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३९ · उधारक साड़ी

शैलबाला भानजीक विवाहमे नीक देखेबाक लेल चारि हजार दू सय टाकाक लाल किनारीवाली साड़ी किस्तपर किनैत छथि। विवाह बीतलाक बादो साड़ीक ब्याज आ बाकी रकम घरक औषधि, भोजन आ पढ़ाइक खर्चपर बोझ बनि रहैत अछि। तीन बरखमे साड़ी बहुत कम पहिरल जाइत अछि; विवाहक फोटोमे सेहो ओकरा कियो खास याद नहि करैत। अन्तमे शैलबाला बिना निमन्त्रण वा उत्सवक दिन साड़ी पहिरि बजार जाइत छथि। दोसराक नजरिक लेल किनल वस्तु पर अपन अधिकार फेर स्थापित करबाक ई शान्त निर्णय कथा केँ पूर्ण करैत अछि।

कथा १४० · पाँच धुर जमीन

पैतृक पाँच धुर जमीनक बाँटपर रघुनाथ आ जयनाथ भाइमे विवाद अछि। मुख्य बाट लगक एहि छोट टुकड़ाक दाम बढ़लासँ नापी, ईंट आ अदालतक चर्चा शुरू होइत अछि। तखने सड़क चौड़ीकरणक अधिसूचना अनुसार लगभग पूरा जमीन बाटमे जाएबाक बात स्पष्ट होइत अछि। दुनू भाइ मिलि कागज आ क्षतिपूर्तिक प्रक्रिया सँ जुड़ैत छथि। जमीनपर दुकान खोलबाक सपना देखनिहार दीपक लेल जयनाथ अपन दोसर ठाम प्रस्तावित करैत छथि। पाँच धुरक स्वामित्वक झगड़ा मेटैत भाइचारा धीरे-धीरे घुरि अबैत अछि।

कथा १४१ · मेजबान

गाममे प्रतिष्ठित रघुनाथ चौधरी अपन नव ओसारक अवसरपर पैघ भोज देबाक निर्णय करैत छथि। पिता द्वारा देल पुरान भोजक कीर्ति निभेबाक इच्छामे अतिथिक गिनती आ खर्च बढ़ैत जाइत अछि। भोजनक बाद रसोइया आ मजदूरक मेहनताना पहिने चुकाओल जाइत अछि, मुदा बचेबाक बदला घरपर उधार चढ़ैत अछि। रघुनाथ खर्चक नील पाँजि बनाकऽ किस्त चुकबय लगैत छथि। बादमे आन मेजबान हुनकासँ सलाह माँगैत छथि तँ ओ अपन सामर्थ्य अनुसार निमन्त्रणक बात कहैत छथि। एक दिनक प्रतिष्ठा आ महीनासभक आर्थिक भारक अन्तर कथा मे खुलैत अछि।

कथा १४२ · नव मोबाइल

विद्यार्थी अनिरुद्ध अपन पुरान मोबाइलपर मित्रसभक हँसीसँ लजा कऽ घरसँ आएल आवश्यक धन द्वारा नव मोबाइल किनि लैत अछि। मोबाइलक किस्त आ आयमे देरीक कारण परीक्षा-शुल्क जमा नहि भऽ पबैत अछि। निर्धारित दिन खिड़की बन्द भऽ जाइत अछि आ ओ परीक्षा दऽ नहि सकैत अछि। पिता लग पहिने बात नुकाबय चाहैत अछि, मुदा अन्ततः सभ सच कहि दैत अछि। पिता आगाँक अवसर ताकबाक सलाह दैत छथि। अनिरुद्ध नव यन्त्र बेचि अगिला परीक्षाक शुल्क अलग राखैत अछि आ पुरान मोबाइल फेर उपयोग करय लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४३ · दहेजक पंखा

मधुक विवाहमे मायकेसँ आएल ठाढ़ पंखाक नीचाँ ‘मधु विवाह’ लिखल कागज चिपकल अछि। एहि चिन्हक कारण पंखा घरक उपयोगी वस्तुसँ अधिक दहेज आ प्रतिष्ठाक स्मरण बनि जाइत अछि। पंखाक मरम्मत, मायकेक ऋण आ ससुरालक अभिमानपर बात बढ़ि दुनू परिवारक सम्बन्धमे दूरी अनैत अछि। बादमे मधु उमसभरि रसोइघरमे पसीना बहबैत सासु शान्ति देवी लेल ओही पंखा लऽ जाइत छथि। कागज रहलो पर पंखाक हवा सभक साझा आवश्यकता बनैत अछि। कथामे वस्तुक उपयोग मनमुटावसँ पैघ सिद्ध होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४४ · बड़का दरवाजा

नन्दकिशोर यादव घरक आगाँ ऊँच, भव्य फाटक बनबैत छथि, जखन कि पुरान छत चूऐत अछि। नव फाटकक नीचक सीमेंटक पट्टी बरखाक पानिक निकास रोकि दैत अछि; आँगनमे जलजमाव आ घरमे चुहानी बढ़ैत अछि। पत्नी विमला आ बेटी गौरीक चिन्ता सुनि नन्दकिशोर क्रमशः छत आ नालीक काज करबैत छथि। अन्तमे फाटकक सजावट अधूरी रहैत अछि, मुदा छत सुधरैत अछि आ पानिक बाट खुलैत अछि। बाहरी प्रदर्शनक तुलनामे घरक वास्तविक सुरक्षा आ उपयोगिता महत्त्वपूर्ण ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४५ · सम्मान-पत्र

लेखक महेन्द्रनाथ झा केँ साहित्य-सम्मानक निमन्त्रण भेटैत अछि, मुदा समारोह, स्मारिका, यात्रा आ भोजनक व्यय हुनकासँ भराओल जाइत अछि। कार्यक्रममे सम्मान-पत्र भेटैत अछि, तैयो नव कथा पढ़ैबाक अवसर नहि भेटैत आ प्रकाशित परिचयमे पोथीक नामक वर्तनी बिगड़ि जाइत अछि। घर घुरला पर ओ देखैत छथि जे सम्मान-पत्र टाँगबाक देबालमे सीलन अछि आ छत ठीक करब बाकी अछि। ओ कारीगरक बकाया चुकबैत छथि आ फेर नव कथाक संशोधनमे लगि जाइत छथि। बाहरी सम्मानक चमकसँ बेसी लेखकक वास्तविक साहित्यिक साधना केन्द्रमे रहैत अछि।

कथा १४६ · एक प्लेट कम

सुचित्राक विवाह-भोजमे एकटा पात जानि-बुझि पाँतिसँ हटाओल गेल अछि। भतीजी मैथिली एहि कमी कें देखैत अछि, आ सामाजिक दूरीक असमान व्यवहार सतहपर अबैत अछि। रातिक बरखामे अस्थायी रसोईक देबाल झुकि पड़ला पर जे लोक आ बच्चा संकटमे पड़ैत छथि, हुनकर रक्षा आ सहयोग पुरान भेदक अर्थ बदलैत अछि। बादमे चारि पात एक पाँतिमे बिछैत अछि आ भोजन परोसल जाइत अछि। भोरमे मैथिली पूछैत अछि जे काल्हि एक प्लेट कम कएल गेल छल ने। रामलोचन गिनती फेर सँ करबाक बात मानैत छथि।

कथा १४७ · नगरक पता

नगरमे रहनिहार अमरेश अपन गाम सोनबरसाक विस्तृत पता लिखबामे संकोच करैत अछि। रोजगारक आवेदनमे वर्तमान आ स्थायी दुनू पता ‘विद्यापति नगर’ भरि दैत अछि। सत्यापनक समय कागजक विसंगति सामने अबैत अछि आ संशोधन समयपर नहि भेला सँ एक अवसर छुटि जाइत अछि। गाम घुरला पर पूरा ठेगानावाली चिट्ठी ओकरा सही पहुँचित अछि। ओ बुझैत अछि जे पहचान नुकाएबासँ लाभ नहि, बाधा होइत अछि। अगिला आवेदनमे ओ गामक स्थायी पता आ शहरक वर्तमान पता दुनू स्पष्ट लिखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १४८ · फोटोमे मुस्की

पिता विनोद बाबूक निधनक बाद चारू सन्तान श्राद्धक समय मुस्कुराइत एक सामूहिक छायाचित्र खिंचबैत छथि। सामाजिक माध्यमपर फोटो ‘आदर्श पारिवारिक एकता’क चिह्न बनैत अछि। मुदा घरक चाबी, सम्पत्ति आ देखभालक जिम्मेदारीपर हुनका सभमे मतभेद अछि। छोट बेटी सुधा पिता बीमारीक अन्तिम बरखमे घर रहि सेवा कएने छलीह, मुदा ओकर समयक गिनती धनक हिसाबमे नहि छल। बादमे देखभालक उपस्थितिक अलग लेखा शुरू होइत अछि। तस्वीरक मुस्की पाँच क्षणक छल; सम्बन्धमे न्यायपूर्ण बातचीतक आवश्यकता ओकर बादो बनल रहैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १४९ · कर्जक भोज

जगेसर मण्डलक निधनक बाद तेरहमीक भोजक सामाजिक दबावमे पुत्र हरिनारायण कर्ज लैत छथि आ बहिन नीलिमाक पढ़ाइ लेल रखल रुपैया खर्च भऽ जाइत अछि। भोजक प्रशंसा किछु दिन चलैत अछि, मुदा नीलिमाक सवारी-भाड़ा आ अध्ययनक साधन नहि जुटला सँ ओकर एक सत्र छूटि जाइत अछि। हरिनारायण धानक अग्रिम आ किस्तद्वारा कर्ज चुकबैत छथि। नीलिमा फेर बचत शुरू करैत अछि, तखन पढ़ाइ आगाँ बढ़ैत अछि। सामाजिक प्रदर्शनक अस्थायी यश आ एक विद्यार्थिनीक स्थायी शैक्षिक हानि कथा केँ मार्मिक बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५० · किरायाक कार

रविक विवाहमे प्रतिष्ठा देखेबाक लेल नन्दकिशोर चमचम करैत महँग किरायाक मोटरगाड़ी सजबैत छथि आ वाहन-सेवाक चिन्ह ढाँपि दैत छथि। बारातक बाटमे गाड़ी बिगड़ि जाइत अछि। समय बचाबय साधारण जीप आनल जाइत अछि, जाहिपर किरायाक सेवा साफ लिखल अछि। विवाह निर्विघ्न होइत अछि, आ किछु समय बाद केओ गाड़ीक चर्चा नहि करैत। उलटे पट्टी ढाँपबाक कारण सफाइक अतिरिक्त शुल्क लगैत अछि। नन्दकिशोर अन्तमे सहजतासँ साधारण जीप स्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १५१ · सोना जेकाँ

पुरान सन्दूकमे सुनहर आभूषण भेटला पर रघुनाथ झा आ हुनकर परिवार ओकरा माएक असली सोना बुझैत अछि। गहना सुरक्षित रखबाक चिन्तामे चाबी, ताला आ बँटवाराक संदेह बढ़ैत अछि; पत्नी पुष्पापर निराधार शंका सेहो उठैत अछि। जाँचमे पता चलैत अछि जे गहना असली सोना नहि, पुरान नकली आभूषण अछि। परिवार बुझैत अछि जे चमकक लोभमे विश्वासक कतेक हानि भऽ गेल। अन्तमे एक हार विद्यालयक नाटक लेल देल जाइत अछि, बच्चा सभ कंगन सँ खेलैत अछि, आ डिबिया फेर खुलल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५२ · दस किलो चाउर

पंचायतक दस किलो चाउर सहायता-वितरणमे मालती देवी आ आन परिवारक छायाचित्र एक्के बोरा हाथमे देलाक बाद खींचल जाइत अछि। फोटो बनिते बोरा फेर लऽ लेल जाइत अछि; बदला केवल ‘प्राप्त’ पर्ची भेटैत अछि। बालक छोटू बोरा पर नील सूतक चीरा चिन्हैत अछि आ ओकरा सँ खसल पाँच दाना बचौने अछि। शिक्षक रमानन्दक सहयोगसँ फोटो आ गोदामक पाँजिक अन्तर खुलैत अछि। जाँचमे सामने अबैत अछि जे वास्तविक वितरण बिना कागजपर पूर्ण सहायता चढ़ा देल गेल छल। बालकक सूक्ष्म अवलोकन सरकारी प्रदर्शनक असत्य उद्घाटित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५३ · महँग जूता

रामबाबू पदोन्नतिक साक्षात्कार लेल दू हजार आठ सय टाकाक चमकैत नव जूता किनैत छथि, कारण हुनका कहल गेल जे पहिल प्रभाव पएरपर पड़ैत अछि। साक्षात्कारमे मुदा पुरान प्रशिक्षण-प्रमाणपत्रक मोहर अस्पष्ट रहला सँ सत्यापित प्रति मँगाओल जाइत अछि। ओ दूर प्रशिक्षण-केन्द्र दौड़ि आवश्यक कागज अनैत छथि, मुदा प्रविष्टिमे देरीसँ हुनकर नाम पदोन्नति-सूचीमे नहि अबैत। महँग जूता एड़ी काटैत अछि आ सन्दूकमे पड़ल रहि जाइत अछि। नियम, कागज आ वास्तविक कामक मूल्यक सामने बाहरी चमक निरर्थक सिद्ध होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १५४ · खाली लिफाफा

बेटी गौरीक विवाहक उपहारक लिफाफा गनैत हरिनाथ कें रामविलासक खाली लिफाफा भेटैत अछि। परिवारमे शंका उठैत अछि, मुदा बादमे ज्ञात होइत अछि जे विवाहक राति विद्युत-व्यवस्था बचाबय हरिनाथ स्वयं ओहिसँ तीन हजार टाका निकालने छलाह आ हिसाब लिखब बिसरि गेल छल। आन किछु लिफाफा सेहो तत्कालीन आवश्यकतामे खोलल गेल छल। ओ परिवारकेँ अनुमानसँ रकम नहि भरबाक बात कहैत छथि। रामविलास कें घटना न बतबैत हरिनाथ पाँजिमे वास्तविक व्यय लिखैत छथि। खाली लिफाफा उत्सवक चमकपाछाँक खर्च आ स्मृतिक अनिश्चितताक चिह्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५५ · निमंत्रण

सौम्याक विवाहक निमन्त्रण सभ पड़ोसीकेँ भेटैत अछि, मुदा परिवारक पुरान घनिष्ठ शशिभूषण आ मालती केँ नहि। हुनका सभकेँ अपन सम्बन्ध उपेक्षित लगैत अछि। विवाहक आयोजन बाहरी प्रबन्धकक हाथमे अछि; छपल कार्डक सूचीमे अतिथि आ आयोजकक भेदसँ कतेको आत्मीय लोक छुटि जाइत छथि। मदनमोहन बादमे स्वयं आनि क्षमा माँगैत छथि। मालती बुझैत छथि जे छपल कार्ड सम्बन्धक पूर्ण प्रमाण नहि, तथापि अनदेखीक चोट वास्तविक अछि। ओ नव कार्ड पुरान स्मृतिक बक्सामे ‘भूल’क रूपमे राखि दैत छथि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १५६ · छतरीवाला

रामनारायणक घरमे अतिथि-सत्कारक लेल नव सजल बैठक अछि। पुरान सेवक रघुनाथ बरखामे भीजल पएर आ पैबन्दवला छाता संग पहुँचैत अछि, ताहि लेल ओकरा भीतर बैसबामे संकोच कराओल जाइत अछि। वर्षाक पानि छतसँ चूअब शुरू भेला पर रघुनाथ अपन पुरान छाताकेँ उल्टा टाँगि पानि बाल्टीमे उतारबाक उपाय करैत अछि। बैठकक अधिकांश सामान बचि जाइत अछि। घरक लोक ओकरा भीतर सादर बजबैत छथि। अगिला दिन ओकर छाता बाहरी देबालक सहारे नहि, बैठकक भीतरक नव खूँटी पर टाँगल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५७ · नम्बर प्लेट

रमाकान्त अपन नव गाड़ी लेल विशेष ‘७७७७’ नम्बर पाबय अनौपचारिक अतिरिक्त धन खर्च करैत अछि। ई चारि अंक ओकर प्रतिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि। बरखामे गाड़ीसँ दुर्घटना भेलाक बाद ओ रुकि घायल वृद्धक सहायता करबाक बदला भीड़सँ डेरा कऽ चलि जाइत अछि। विद्यार्थी नीरज गाड़ीक अलग नम्बर मोन रखैत अछि आ पुलिसक सामने गवाही दैत अछि। नम्बरक आधार पर गाड़ी आ चालक चिन्हल जाइत अछि। जे अंक प्रदर्शन लेल चुनल गेल छल, ओही जवाबदेहीक प्रमाण बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५८ · गामक मंच

विद्यालयक मैदानमे ‘गाम एक, मान एक’ लिखल मंच सजैत अछि। बाँसक काज करनिहार फेकन आ ध्वनि-व्यवस्था सम्हारनिहार हुनकर बेटा केदार आयोजनमे परिश्रम करैत छथि। मुदा भोजक समय मजदूर आ नदी-पारक बस्तीक लोककेँ देबालक पाछाँ अलग पाँतिमे बैसाओल जाइत अछि। केदार अपन परिवारक संग भोजन करैत अछि आ मंचक एकताक नारा आ व्यवहारक भेदक विरोधाभास देखैत अछि। साँझ मंच खोलबाक समय ओ भोजनक पाँति बाँटनिहार रस्सी ‘गाम एक, मान एक’वला पट्टीक चारू कात लपेटि दैत अछि।

कथा १५९ · खिड़की लग बैसल लड़की

पन्द्रह बरखक माधवीक पढ़ाइ आठम कक्षा बाद रोकि देल गेल अछि, कारण नव विद्यालय तीन कोस दूर अछि। ओ खिड़कीसँ सहपाठी लड़कीसभकेँ साइकिलपर विद्यालय जाइत देखैत रहैत अछि। पाती पहुँचौनिहार रघुनाथक सहयोगसँ ओ अपन पुरान प्रधानाध्यापिका केँ नामांकनक उपाय पूछैत लिखैत अछि। उत्तर अबैत अछि आ पिता धीरे-धीरे ओकर पढ़ाइ जारी रखबाक अनुमति दैत छथि। प्रमाणपत्र लऽ पिता संग चलैत माधवी केँ रघुनाथ पूछैत छथि जे आइ खिड़की खाली किएक अछि। ओ कहैत अछि जे आइ ओ बाटपर अछि।

कथा १६० · परदेसियाक बेटी

सीमापार विराटनगरक गोदाममे काज करनिहार हरिनारायण घर कम अबैत छथि, मुदा बेटी कुसुम कैँ पाती पठबैत रहैत छथि। कुसुम केवल रुपैयाक खबरि नहि, पिताक श्रम, गोदामक लोक आ हुनकर जीवनक कथा जानय चाहैत अछि। ओ पिता लिखल कथापर प्रश्न करैत अछि; उत्तरमे पात्रक नाँव, अनुभूति आ श्रमिकक स्वाभिमानक नव विवरण जुड़ैत जाइत अछि। पिता घुरला पर दूनू कथा लिखबाक सहयात्री बनैत छथि। सीमाक अलग-अलग माटि छूबैत दू जूताक कथा पिता शुरू करैत छथि आ आगाँ लिखबाक ठाम कुसुम लेल छोड़ैत छथि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १६१ · अधूरा गीत

गामक पुरान रोपनी-गीत कौशल्या दादीक स्मृतिमे जीबैत अछि, मुदा गीतक दोसर स्वर देनिहार झुनकी आब नहि छथि। पोती मृणाल एहि गीतकेँ नव ढंगसँ सजाबय चाहैत अछि। दादी ओहि जगहक खालीपन भरबाक लेल मनगढन्त शब्द जोड़बाक विरोध करैत छथि, कारण गीत दू स्त्रीक मिलल स्वर छल। मृणाल पहिने मूल धुन आ ओहिमे पड़ैत मौन सुरक्षित करैत अछि, तकर बाद अपन पीढ़ीक स्वर अलग जोड़ैत अछि। एहि तरहें अधूरापन मिटाओल नहि जाइत, बल्कि बीतल समय आ वर्तमानक बीच संवादक जगह बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६२ · नदीक पाती

बाढ़िक बाद नदीक बदलल धार माधवी आ सुधा केँ एक-दोसरासँ दूर कऽ दैत अछि। दुनू सहेली नदीक कात पुरान घैल लग माटिक टुकड़ापर लिखल पाती छोड़ि अपन सम्पर्क बनौने रखैत अछि। एक बेर टुटल पातीमे ‘हम आब नहि’ मात्र बचलासँ आशंका जन्मैत अछि, जखन कि पूरा बात छल—‘हम आब नहि डेराइत छी’। नदी फेर किनार बदलैत अछि तँ दुनू बिनु खतरा उठौने पाती राखबाक नव सुरक्षित ठाम खोजैत छथि। पाती सम्पर्कक साधन रहैत अछि, मुदा एक-दोसराक वचन पूरा बुझबाक सावधानी सेहो सिखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६३ · छोट नौकर

एक घरमे छोट बालक ईशानक बढ़ैत कद नापि काठक चौखटपर चिन्ह लगाओल जाइत अछि। ओही घरमे काज करनिहार हमउमेर कन्हैया अपन कद दोसर कात चिन्हित करैत अछि। घरक लोक पहिने केवल ईशानक चिन्ह पर ध्यान दैत छथि; कन्हैयाक बढ़ैत देह, परिश्रम आ बचपन ओझराएल रहैत अछि। घरक चौखट बदलल जाएबाक समय दुनू कातक चिन्ह सामने अबैत अछि। पुरान काठक टुकड़ा सुरक्षित राखल जाइत अछि आ दुनू बालकक बढ़बाक कथा एकसंग देखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६४ · माएक बक्सा

ललिता देवीक निधनक बाद हुनकर तीन बेटी मंजरी, रेणु आ तारा माएक पुरान बक्सा खोलैत छथि। ओहिमे राखल अलग-अलग अधूरा पातीमे माँ अपन तीनू बेटी लग किछु अनकहल बात, अपन चूक आ स्नेह प्रकट करबाक प्रयास कएने छलीह। बहिनसभ पहिने एहि अधूरा शब्दक अर्थ अलग-अलग बुझैत छथि, फेर माएक जीवन आ आपसक दूरी पर बातचीत शुरू करैत छथि। कियो पातीक छुटल पाँति अपन दिससँ पूरा नहि करैत अछि। बक्सामे भेटल अधूरापन हुनका सभकेँ जीवित सम्बन्धमे बाँकी रहल बात कहबाक अवसर दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६५ · पाठशालाक आँगन

कम विद्यार्थी रहबाक कारण गामक पाठशाला बन्द करबाक प्रस्ताव अबैत अछि। शिक्षक रत्नेश्वर विद्यालय बचाबय चाहैत छथि, मुदा नामांकन घटल अछि। गामक सुभद्रा देवी साँझक कक्षामे अपन नाम लिखब सीखैत छथि आ परिवारसभसँ बच्चाकेँ पाठशाला पठेबाक बात करैत छथि। नव नामांकन बढ़ैत अछि, विद्यालय बन्द करबाक प्रस्ताव रुकैत अछि। पाठशालाक आँगन केवल बच्चाक पढ़ाइ तक सीमित नहि रहैत; ओतय प्रौढ़क अक्षर-परिचय आ गामक सामूहिक जिम्मेदारी सेहो स्थान पबैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १६६ · सिंदूरक डिबिया

रेवती अपन दादी कमला देवीक पुरान सिन्दूरक डिबिया पबैत अछि आ ओकरा देखिकऽ जिज्ञासु होइत अछि। दादी पति मरलाक बाद सिन्दूर हटेबाक ओहि दिनक स्मृति सुनबैत छथि, जखन हुनकर नन्ही बेटी मालती बदलल रूप देखिकऽ अपन माएकेँ चिन्हबामे ठमकि गेल छलीह। विधवापनक सामाजिक नियम आ माए-बेटीक आत्मीय परिचयक बीचक पीड़ा एहि डिबियामे संचित अछि। दादी एहि स्मृति केँ छिपबैत नहि छथि; रेवतीक संग बाँटैत छथि, जाहिसँ डिबिया चुप्पीक वस्तु नहि, पीढ़ीक बीच समझक सेतु बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १६७ · गाछक झूला

कुसुम अपन बेटी मानसी कैँ लऽ मायके अबैत अछि तँ पुरान आमक गाछपर झूलबाक स्मृति जागैत अछि। मुदा गाछक कमजोर भऽ चुकल डार आ जड़ लोकक सुरक्षाक लेल संकट बनल अछि। शारदा दादी पुरान झूला आ गाछ सँ जुड़ल याद सुनबैत छथि, मुदा ओकरा बचाबय लेल जोखिम उठेबाक पक्षमे नहि छथि। गाछ हटाओल जाइत अछि, आ परिवार नव पौधा लगबैत अछि। झूलाक रस्सी सुरक्षित राखल जाइत अछि, जे भविष्यक हरियर छाँह आ अगिला पीढ़ीक खेलक प्रतीक्षा करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १६८ · माटिक बाँसुरी

कुम्हारक बेटा नीलू माटिक बाँसुरी बनबैत अछि, मुदा ओकर एक स्वर प्रचलित नापसँ अलग सुनाइत अछि। संगीतक गुरु देवव्रत पहिने ओकरा त्रुटि बुझैत छथि। नीलू फूँक आ अंगुरीक भिन्न प्रयोगसँ ओही बाँसुरीमे इच्छित धुन निकालि देखबैत अछि। गुरु सीखैत छथि जे साधनक बनावट मात्र नहि, कलाकारक सुनबाक शक्ति आ प्रयोग सेहो महत्त्व रखैत अछि। बाँस आ माटिक बाँसुरीक आदान-प्रदानसँ परम्परागत ज्ञान आ बालकक नव प्रयोग एक-दोसराकेँ समृद्ध करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १६९ · एकटा नाम

दत्तक बालक अंशु केँ अपन पुरान आश्रयगृहमे कहल जाएवाला नाम ‘कुश’क पता लगैत अछि। ओ बुझय चाहैत अछि जे अपन पहिल नामक स्मृति राखब नव परिवारसँ प्रेममे कोनो कमी तँ नहि अनैत। माँ शैलजा पहिने एहि प्रश्नसँ असहज होइत छथि, कारण हुनका डर रहैत अछि जे दू नाम हुनका अपनत्वमे दूरी ने आनय। बेटाक सहज जिज्ञासा हुनका बुझबैत अछि जे पूर्व जीवनक स्मृति मेटौने बिना वर्तमान सम्बन्ध सुदृढ़ रहि सकैत अछि। अन्तमे माँ ओकरा ‘कुश’ कहिकऽ बजबैत छथि; अंशु अपन दुनू नाम संग स्वीकारल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १७० · साँझक पाठ

नयन अपन दादी सरयूक मुँहसँ सुनल ‘छाँह खोजैत चिरैयाँ’क कथा लिखबाक प्रयास करैत अछि। दादी चाहैत छथि जे घटनाक संग हुनकर बोली, विराम आ स्वरक अर्थ सेहो बचल रहय। साँझक एहि पाठमे भूमिका बदलैत अछि; नयन दादीकेँ अपन नाम लिखब सिखबैत अछि आ दादी ओकरा मौखिक कथाक बारीकी बुझबैत छथि। स्लेटपर दुनू पीढ़ीक नाम आ कथाक शब्द एकसंग अबैत अछि। पढ़ब-लिखब आ कथा सुनब परस्पर सम्मानक साझा सीख बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७१ · सीमाक मेला

जनकपुरक मेलामे रानी नामक छोट बच्ची भीड़मे मायेसँ बिछुड़ि जाइत अछि। मञ्जु, देवेश आ बेटी गौरी ओकरा भेटैत छथि; बादमे भारतक दिससँ आएल सविता, रमेश आ हुनकर बेटा अभय सेहो खोजमे जुड़ैत छथि। बच्चीक घरक पहचान ओकर स्मृतिमे बचल दू गाय, लाल देबाल आ उज्जर फूलक निशानसँ होइत अछि। दुनू परिवार ओकरा घर पहुँचा दैत अछि। नेपालक गौरी आ भारतक अभयक संग बैसल रानी अपन परिचय ‘हम एतयक’ कहिकऽ दैत अछि। सीमाक दुनू दिसक अपरिचित लोकक सहयोगसँ बच्ची सुरक्षित घर घुरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७२ · नीमक छाँह

घरक काज करनिहार जमुना काकी ज्वरक कारण किछु दिन नहि अबैत छथि तँ परिवार हुनकर प्रतिदिनक श्रमक वास्तविक विस्तार बुझय लगैत अछि। नीमक छाँहमे बैसि ओ घरक बच्चासभक चिन्ता सुनैत छलीह, कम अंकक कागज देखैत छलीह आ छोट-छोट बात सम्हारैत छलीह। अनुपस्थितिमे घरक लोक काज बाँटब सीखैत छथि। घुरलापर हुनका पूरा मासक मेहनताना देल जाइत अछि, कारण लिखल काजसँ बाहर हुनकर योगदानक हिसाब नहि बनि सकल। जमुना काकी परिवारकेँ अपन जिम्मेदारी बाँटने रखबाक आग्रह करैत छथि। नीमक छाँह साझेदारी आ सम्मानक ठाम बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७३ · कागजक नाव

माएक निधनक बाद भाई नरेश आ बहिन सुधा पुरान घरक हिस्सा बाँटैत छथि। आँगनमे तनल डोरी आ नालीक बाँट पर विवाद उठैत अछि। बरखाक पानिमे बहैत कागजक नाव हुनका सभकेँ बचपनक ओहि छोट पुलक याद दियबैत अछि जे दुनू मिलि बनौने छलाह। स्मृति जमीनक हिसाब समाप्त नहि करैत, मुदा साझा बाटक महत्त्व फेर सामने अनैत अछि। दुनू अमीनसँ नव नापी करबा कऽ बीचमे छह हाथ सार्वजनिक बाट आ पानिक निकास छोड़बाक सहमति करैत छथि। अलग घरक बीच पानिक साझा बाट बाँचि जाइत अछि।

कथा १७४ · चुप्पी

सरोजिनी देवी आ पुत्रवधू रीता एक्के घरमे रहितो अपन बात मनोजक माध्यमसँ कहैत छथि। दैनन्दिन आलोचना आ संकोचसँ हुनका बीच चुप्पीक देबाल बनि गेल अछि। रीताक बेटी अदिति बीमार पड़लापर अस्पतालमे दुनू स्त्रीकेँ राति भरि एकसंग ओकर देखभाल करय पड़ैत अछि। डर, थकान आ चिन्ताक बीच पहिल बेर ओ सीधे एक-दोसरासँ बात करैत छथि। अदितिक स्थिति स्थिर होइत अछि आ दुनू घर घुरैत छथि। पुरान दूरी तुरन्त नहि मिटैत, मुदा आब छोट-छोट प्रश्न लेल मनोजक मध्यस्थता आवश्यक नहि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १७५ · पोस्टकार्ड

विद्यालयक बच्चासभ वृद्ध-निवासक लोककेँ पोस्टकार्ड लिखैत अछि। नयनक भेजल पाती गोमती देवी धरि पहुँचैत अछि, जिनकर नाम सुनि नयनक दादी भवानी देवीक पुरान सम्बन्धक स्मृति जागैत अछि। दुनू स्त्री बरखोंसँ एक-दोसरासँ दूर छलीह। नयनक माध्यमसँ भवानी देवी स्वयं काँपैत हाथसँ पाती लिखैत छथि, आ अन्तमे दुनूक भेंट होइत अछि। ओ दुनू नयनकेँ पोस्टकार्डपर ‘बाट भेटि गेल’ लिखि पठबैत छथि। हाथसँ लिखल किछु शब्द पुरान चुप्पी तोड़ि सम्बन्धक बाट फेर खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७६ · झरोखाक फूल

विद्यालय जाएवाला दिवाकर प्रतिदिन पुरान घरक झरोखामे राखल फूल देखैत अछि आ फूलक रंगसँ अपन दिनक अर्थ जोड़ि लैत अछि। भीतर रहनिहार वृद्धा कमला देवी पहिने ओहि अनजान बालकक जिज्ञासा देखैत छथि। फूल नहि भेटलाक दिन दिवाकर चिन्तित होइत अछि आ क्रमशः दूनूक परिचय बढ़ैत अछि। झरोखाक पाछाँसँ शुरू भेल बातचीत वृद्धाक एकान्त घटबैत अछि। एक दिन फूल झरोखाक बदला दुआरिक पीढ़ापर रहैत अछि, कारण कमला देवी एखन ओतय धरि चलि सकैत छथि। दिवाकर एहि छोट परिवर्तनक आनन्द बुझैत आगाँ बढ़ि जाइत अछि।

कथा १७७ · पहिल कमाइ

पोथीक दोकानमे बारह दिन काज कऽ मंजरी केँ पहिल कमाइक एक हजार छओ सय अस्सी रुपैया भेटैत अछि। ओ माए सुलोचना देवी लेल नव चप्पल किनय चाहैत अछि, मुदा माए अपन पुरान चप्पलक केवल खराब पट्टी बदलबैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे बेटीक महाविद्यालयक नामांकन आ पोथी लेल रुपैया पहिले सुरक्षित रहय। मंजरीक मनमे उपहार देबाक इच्छा आ आगाँक पढ़ाइक आवश्यकता एकसंग अछि। माएक चुनल छोट मरम्मत आ बेटीक झोरामे राखल पोथी दुनू पहिल कमाइक अर्थ बनैत अछि।

कथा १७८ · लौटैत गीत

सात बरख बाद परदेससँ गाम घुरल राघव बदलिएल बाट, घर आ पोखरि देखि अपन परिचित संसारसँ अपरिचित भऽ जाइत अछि। धान फटकैत फुलकुमारी काकीक मुँहसँ सुनल पुरान रोपनी-गीत ओकरा बालपनक अधूरा पाँति याद दियबैत अछि। काकी आ राघवक माए मिलि गीतक अलग-अलग पाँति सुधारैत आ हँसैत छथि। राघव गाममे बसबाक कोनो निर्णय नहि करैत, मुदा बुझैत अछि जे भौतिक बाट बदललाक बादो लोकक स्वर आ उत्तर देबाक ढंग स्मृतिमे बचल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७९ · सीमाक कागज

सीमा पार कऽ बेटीक घरसँ बेटाक घर घुरैत वृद्धा देवकी देवी केँ परिचयक कागज नहि भेटलासँ चौकीपर रोकल जाइत अछि। बेटी मुनिया दोसर दिस, बेटा शम्भू एहि दिस पहुँचैत छथि; पुरान कागज जुटेबामे कठिनाइ होइत अछि। स्थानीय परिचय आ अभिलेख जाँचलाक बाद देवकी देवी केँ पार जाएबाक अनुमति भेटैत अछि। हुनकर आँचरमे दुनू घरक चाबी छल, मुदा ओहि कागजकेँ एक ठाम रखबाक प्रश्नपर बेटा चुप भऽ जाइत अछि। सीमा दुनू दिशाक घर आ सम्बन्धकेँ कागजक एकरेखीय परिचयसँ अलग देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८० · बाढ़ि शिविर

बाढ़िसँ बेघर भेल रतना अपन बेटी चुनमुन संग राहत शिविरमे रहैत छथि। मंचपर स्त्री-सुरक्षाक घोषणा होइत अछि, मुदा वितरण-पर्चीक बहाने स्वयंसेवक हरिनन्दन हुनका एकान्त गलियारामे रोकि अभद्र व्यवहार आ यौन उत्पीड़न करैत अछि। रतना विरोध करैत बाहर निकलैत छथि आ नीलम, सुगनी तथा आन स्त्रीक सहयोगसँ शिकायत सामने रखैत छथि। हरिनन्दन केँ कार्यसँ हटाओल जाइत अछि; रोकल गेल पर्ची भेटैत अछि। शिकायत पेटीक ठाम, प्रकाश, वितरणक निगरानी आ खुला गलियाराक व्यवस्था बदलैत अछि। सुरक्षा घोषणासँ नहि, उत्तरदायी व्यवहारसँ बनैत अछि।

कथा १८१ · लाल कम्बल

दंगाक राति चिकित्सालयमे मृत भेटल अचिन्हार बालकक देह लाल कम्बलसँ ढाकल अछि। दू मुहल्लाक लोक ओकरा अपन-अपन हरायल बच्चा बुझि दाबी करैत छथि आ कम्बलक सिलाइक चिन्हसँ पहचान जोड़य लगैत छथि। मंगला देवी आ सीता मुसहरिन बतबैत छथि जे ई कम्बल नगरपालिकाक एक्के खेपमे बनल अनेक कम्बलमे सँ एक अछि। बालकक वास्तविक पहचान नहि भेटैत अछि, तेँ ओकर देह कोनो पक्षकेँ नहि सौंपल जाइत। अपन-अपन बेटा खोजैत दू माँ चिकित्सालयक दुआरि लग एक-दोसरासँ रोटी बाँटैत छथि। सामुदायिक दावाक बीच अचिन्हार बच्चाक मनुष्यत्व बचल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८२ · नाम पूछू नहि

रेलगाड़ीक दुर्घटनाक बाद अस्थायी उपचार-ठाममे परिचारिका प्रज्ञा देवी घायलक नाम पूछबाक पहिने साँस आ चोट जाँचबाक आग्रह करैत छथि। बाहर नाम, धर्म आ मृतकक अप्रमाणित संख्या पर अफवाह फैलि रहल अछि। भीतर दीपक रक्तसमूहक आधारपर दाता आ रोगीकेँ जोड़ैत अछि; रमजान अंसारी हरिशंकर पासवान लेल रक्त दैत छथि, मुदा दूनू एक-दोसराक परिचय नहि जनैत। परिजन खोजबाक सूचीमे नाम सत्यापित होइत जाइत अछि। उपचारक क्रम आ परिचयक खोज अलग रखलासँ असली सहायता सम्भव होइत अछि आ अफवाहक विभाजनक विरोधमे मानवीय आवश्यकता अग्रणी बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १८३ · रजिस्टर

देवकी महतो घरसँ निपत्ता भेला पर माए भवानी देवी आ भाइ जोगेन्द्र थाना पहुँचैत छथि। पाँजिमे देवकीक सम्बन्ध गलत ढंगसँ ‘जोगेन्द्रक पत्नी’ लिखल जाइत अछि; काजक ठामक मालिकक एकपक्षीय बयान दर्ज होइत अछि, मुदा गालक चोट आ मजदूरीक विवाद उपेक्षित रहैत अछि। स्त्री-आश्रयमे सुरक्षित भेटल देवकी स्वयं अपन बात दर्ज करय चाहैत अछि। ओकर प्रश्नपर पुलिस पूर्व टिप्पणीक एकपक्षीय होयब लिखैत अछि आ नव सूचनामे ओकर वास्तविक परिचय जोड़ैत अछि। पाँजिक खाली स्थानपर अधिकार पाबब देवकी लेल अपन आवाज पुनः पाबब अछि।

कथा १८४ · खुलल दरवाजा

नगरमे काजक बहाने लऽ जाएल रेखा चौदह मासक शोषणक बाद मुक्त भऽ परिवार लग घुरैत अछि। घरक लोक ओकरा बचाबय चाहैत छथि, मुदा पड़ोसीक प्रश्न, घरक चुप्पी आ ओकर स्वतंत्रतापर आशंका ओकर घुरबाक अर्थ कठिन बनबैत अछि। रेखा कहैत अछि जे ओकर लौटब लुकेबाक बात नहि, मुदा सभ प्रश्नक उत्तर देबो आवश्यक नहि। ओ पुरान सिक्कीक डलिया बनेबाक काज फेर शुरू करैत अछि आ मालती काकीक सहयोगसँ हाट जाइत अछि। दुआरि खुलल होयबाक अर्थ ओकरा अपन पएर सँ बाहर जा फेर स्वेच्छासँ घर घुरबाक अधिकार भेटब अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १८५ · तीन मिनट

हाटमे ठेला आ साइकिलक मामूली टक्करक बाद भीड़ बढ़ैत अछि आ ‘मारलक’ सन अपुष्ट बातसँ हिंसाक सम्भावना बनैत अछि। गुड्डूक हाथमे ईंट आबि जाइत अछि आ किछु लोक चल-दूरभाषपर दृश्य उतारय लगैत अछि। नथुनी काका चुपचाप साइकिल उठाबय लगैत छथि; हुनकर हस्तक्षेपसँ भीड़क गोल टूटैत अछि, ईंट नीचाँ पड़ैत अछि आ मूल पक्षक बात सुनाइत अछि। बादमे तीन मिनटक चलचित्रमे आरम्भक धक्का आ पूरा स्पष्टीकरण नहि होयब काका देखबैत छथि। अधूरा दृश्य आ अफवाहक बीच एक साधारण हस्तक्षेप दू युवकक जीवन बदलि देबासँ रोकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८६ · कपड़ा

बाढ़ि राहत शिविरमे स्त्रीसभ लेल वस्त्रक गठरी तँ पहुँचैत अछि, मुदा कपड़ा बदलबाक गोपनीय ठाम नहि अछि। रूपकला देवी एहि अभावक दिस ध्यान देबैत छथि। अधिकारीक हिसाबमे आड़ बनेबाक अलग मद नहि रहितो ओ नाप नहि मिलल साड़ीसभ जोड़ि टूटल कोठरीमे परदा बना दैत छथि। सुलेखा आ आन स्त्री आब मर्यादाक संग कपड़ा बदलबैत छथि। वितरणक पाँजिमे कपड़ाक संख्या अछि, मुदा कपड़ासँ बनल आड़ केवल वस्तु नहि, स्त्रीक गरिमा आ निजी स्थानक आवश्यकता प्रकट करैत अछि।

कथा १८७ · स्टेशनक कोठरी

दरभंगा स्टेशनपर सात बरखक रवि भीड़मे परिवारसँ बिछुड़ि जाइत अछि। कुली बंशी आ रेलवे कर्मचारी रामविलास ओकरा सुरक्षित कोठरीमे रखैत छथि। बाहर लोक अनुमानक आधारपर ओकर अलग-अलग नाम आ परिचय जोड़ैत छथि, मुदा रवि अपन नामपर अडिग रहैत अछि। राति भरि खोजलाक बाद माए-पिता आ नन्ही बहिन राधिका भेटि जाइत छथि। रवि बहिन लेल बचौने मठरीक टुकड़ा ओकरा दैत अछि। परिवारक पुनर्भेंटमे बच्चाक अपन नाम आ अनुभवक महत्त्व अनुमानसँ ऊपर सिद्ध होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १८८ · मौन गवाही

न्यायालयमे कुसुम एक आघातजनक घटनाक सम्बन्धमे गवाही देबाक लेल अबैत अछि। ओकर कम बाजबाकेँ आन लोक अपन-अपन ढंगसँ भय वा साहसक नाम देबय चाहैत छथि। सुनबाइक बीच कुसुम प्रश्नक उत्तर अपन गतिसँ दैत अछि आ लिखल बयानमे ‘बहुत भयभीत’ सन ओहि शब्दकेँ हटेबैत अछि जे ओ स्वयं नहि कहलने अछि। बाहर संवाददातासँ ओ कहैत अछि जे एहि विषयमे जे कहबाक छल, न्यायालयमे कहि देलक। माए सेहो सीखैत छथि जे बेटी अपन बात कहबाक अधिकार स्वयं रखैत अछि। मौन ओकर आवाजक अभाव नहि, चयनक अधिकार अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८९ · दू शव

बाढ़िक बाद गाम लग दू अचिन्हार मृतदेह भेटैत अछि। लाल सूत, कारी डोरी आ भेटल स्थानक आधारपर लोक हुनकर धर्म आ टोल अनुमान करैत छथि। नाविक जमीर बुझबैत अछि जे उलटैत बाढ़िक धारसँ देहक मूल दिशाक अनुमान नहि लगाओल जा सकैत। स्वास्थ्यकर्मी रेखा कुमारी आ आन लोक पहचानक निश्चित जानकारी भेटय धरि दुनू देह सुरक्षित राखबाक पक्षमे छथि। अन्तमे दुनू मृतदेह शीतगृह पठाओल जाइत अछि, धर्मक कोठरी खाली रहैत अछि। अज्ञातकेँ जल्दबाजीमे गलत परिचय देबाक बदला सावधानी आ सम्मानक निर्णय होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९० · कर्फ्यूक दूध

निषेधाज्ञाक तीन दिन बाद दू टोलामे बच्चासभ लेल दूधक अभाव बढ़ैत अछि। बद्री ग्वाला अपन पुरान ग्राहकसभक घर दूध पहुँचाबय चाहैत अछि, मुदा दुनू दिसक लोक ओकर आवागमनपर सन्देह करैत छथि। महेश्वर साहक नतिनी लेल दूध लऽ जाइत बद्रीपर खबरि ढोएबाक आरोप लगैत अछि। ओ स्पष्ट करैत अछि जे ओ दूध बेचैत अछि आ लोकसभ एक बाटकेँ दू भागमे बाँटि देने अछि। अल्प छूटमे दूध बाँटल जाइत अछि। घरमे उत्तर आ दक्खिन टोलाक नाप-पात्र अलग राखल अछि, मुदा दूधक घैल एक्के अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९१ · टूटा चप्पल

चौकपर भगदड़िक बाद पत्रकार अरुण झा सड़कपर पड़ल टूटल नील चप्पल आ लाल दाग देखिकऽ स्त्रीक मृत्यु सम्बन्धी अनुमान लिखि दैत अछि। जीवित शकुन्तला देवी समाचार पढ़ि ओकरा प्रश्न करैत छथि। ओ बतबैत छथि जे लाल दाग रक्तक नहि, कुचल टमाटरक अछि; पुरान चप्पलक पट्टी भागैत समय टूटल छल। अरुण तथ्य जाँचि सुधार छपबैत अछि आ चप्पल घुरबैत अछि। शकुन्तला ओकर मरम्मत कऽ फेर अपन ठेला लगबैत छथि। पत्रकारकेँ बुझाइत अछि जे वस्तुक छायाचित्रसँ ककरो पूरा जीवन वा मृत्यु घोषित नहि कएल जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९२ · बन्द कमरा

सिलाइक काज आ मजदूरीक आशा देखाकऽ नीलम, मालती आ रुखसाना केँ शहरक एक कोठरीमे बन्द राखि श्रम कराओल जाइत अछि। नीलम प्रत्येक दिनक हिसाब धागाक गाँठमे राखैत अछि। उद्धारक बाद बाहरक भीड़ आ छायाचित्र लैत लोक हुनका सभक निजी अधिकारपर फेर अतिक्रमण करय चाहैत छथि। आश्रयगृहमे नीलम अपन सुविधा अनुसार दुआर आध खोलैत आ फेर भीतरसँ बन्द करैत अछि। पुरान कैदक दुआर आ नव सुरक्षित कोठरीक दुआरक अन्तर चाबीक अधिकारमे अछि। दिनक गाँठसभ ओ सुरक्षित राखैत अछि, किएक तँ बितल अनुभव मेटाओल नहि जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९३ · दाग

हिंसाक शिकार बिमला देवीक बाँहिपर लागल दागक चिकित्सकीय विवरण आ बयान पहिनेसँ दर्ज अछि, तइयो सहायता-कक्षमे ओकरा फेर देखेबाक माँग उठैत अछि। किछु लोक प्रमाण आ सहानुभूतिक नामपर देहक चिह्न सार्वजनिक करय चाहैत छथि। बिमला कहैत छथि जे आवश्यक साक्ष्य देल जा चुकल अछि, सभक उत्सुकता न्याय नहि होइत। सभामे सेहो ओ अपना बारेमे बोलबाक अधिकार अपने रखैत छथि। बादमे दर्जिन नसीमा लग बाँहिक नाप दैत समय दागक चर्चा मात्र कपड़ाक सुविधा लेल होइत अछि। एहि साधारण व्यवहारमे बिमलाकेँ गरिमा भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९४ · रातिक ट्रक

काज छूटल बाइस प्रवासी मजदूर रातिमे घर घुरबाक लेल ललित साहक व्यवस्था कएल ट्रकपर निर्भर होइत छथि। भाड़ा, सीमा-पारक नियम आ सुरक्षित यातायातक प्रश्नपर चालक बद्री, कर्मचारी जयकान्त, मजदूर सीतो आ बिचौलियाक बीच टकराव होइत अछि। मजदूरक विवशताकेँ ‘सहायता’ कहिकऽ महँग भाड़ा लेल जाइत अछि। सीमा पैदल पार करय पड़ैत अछि, फेर ट्रकपर चढ़बाक बाध्यता रहैत अछि। तिरपालमे साँस लेबाक फाँक छोड़ि देल जाइत अछि। नियम, व्यापार आ दयाक अलग-अलग अर्थक बीच मजदूरक थाकल देह यात्राक असली मूल्य देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९५ · पहचान-पर्ची

उपद्रवक बाद चिकित्सालयमे अचिन्हार मृतदेहक कलाईपर ‘सम्भवतः पच्छिम टोला’ लिखल पर्ची लागैत अछि। सलमान आ जाहिरा अपन बहिन नसीम कैँ पहचानैत छथि आ अनुमानक आधारपर बनेल गलत विवरण बदलय कहैत छथि। नसीमक नाम आ परिचय सत्यापित कऽ नव पर्ची लगाओल जाइत अछि; पुरान अनुमान आधिकारिक रूपसँ वापस लेल जाइत अछि। मुदा सत्यक सुधारसँ गामक भय तुरन्त नहि मिटैत। परिवार लेल नसीमक परिचय मात्र सामुदायिक गणना नहि, हुनकर सिलाइ, अधूरा काज आ माएक संगक जीवन अछि।

कथा १९६ · बच्चाक प्रश्न

बजारमे आगजनीक बाद राहत लेल जुटल लोककेँ पंचायतक आँगनमे बाँसक चटाइसँ दू भागमे राखल जाइत अछि। नौ बरखक नयन ‘ओ लोक’ सुनि-सुनि प्रश्न करैत अछि जे ओकर सहपाठी साहिल अचानक पराया कोना भऽ गेल। पैघ लोक पहिल पाथर, धर्म आ दोषक अलग-अलग बात कहैत छथि, मुदा कोनो एक उत्तर निश्चित नहि अछि। नयन अपन छोट बहिन रिन्नीकेँ साहिलक नाम आ परिचय कहैत अछि। ओ माएसँ पूछैत अछि जे दुनू दिसक लोक अपना केँ ‘हम’ कहैत अछि तँ ‘ओ’ के अछि। माए ओकरा जल्दी निष्कर्ष नहि बनेबाक सीख दैत छथि।

कथा १९७ · गवाहीक मूल्य

भट्ठापर दुर्घटनासँ जुड़ल गवाही देबाक लेल लखन सदा अदालत पहुँचैत अछि। मुंशी भुवनेश्वर ओकरा धमकी देने अछि जे सत्य कहला पर परिवारक तीनू सदस्यक काज छूटि जाएत। न्यायालयमे लखन बतबैत अछि जे क्षतिग्रस्त बाँस बदलबाक बदला काज जारी रखबाक आदेश देल गेल छल। ओकरा प्रश्नक कठघरामे अपमान आ रोजगारक भय झेलय पड़ैत अछि। अगिला दिन भट्ठाक कामक सूचीसँ ओकर आ भाइ हरिनाथक नाम हटा देल जाइत अछि, पत्नी बुधनीक नाम रहैत अछि। गवाही दर्ज भऽ जाइत अछि, मुदा ओकर आर्थिक आ मानवीय मूल्य देबाक क्रम एखन समाप्त नहि होइत।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १९८ · नदी पार

बागमतीक बाढ़िमे बाँध कटि गेलाक बाद बंसी सहनीक नाव लोकसभकेँ ऊँच सड़क धरि पहुँचा रहल अछि। रामनारायण झा, झगरू पासवान, सकीना बीबी, फैजान आ वृद्ध महावीर मण्डल एक-दोसराकेँ सम्हारि नावसँ उतरैत छथि। राहतक ठाम एक्के कटोरीसँ पानि पिबैत हुनका सभमे जाति-धरमक प्रश्न नहि उठैत। सुरक्षित जमीनपर पहुँचला बाद लोक फेर अपन-अपन सामाजिक घेरा बना लैत अछि। दोसर खेप लेल बंसी केँ नावक पानि निकालबाक लोटा चाही तँ रामनारायण ओकरा देलनि। संकटमे बनल साझेदारी आ सामान्य जीवनक विभाजन दुनू एहि नदी-पारक यात्रामे उपस्थित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–२

कथा १९९ · कुर्थीक दालि

रामलोचन आ सरस्वतीक घरमे कम कुर्थी अनाज अछि, मुदा बीमार जगमायाकेँ चिकित्सालय लऽ जाएबाक खर्च जुटेबाक आवश्यकता अछि। घरक भोजन, बीया आ बेचबाक हिस्सा अलग करैत दम्पतीकेँ कठिन निर्णय लेबय पड़ैत अछि। उपचार लेल अनाज बेचला बाद अगिला बोआईक बीया घटि जाइत अछि आ बजारमे ओकर दाम बढ़ि जाइत अछि। ओ सभ बचल कुर्थीक बीया विरल कऽ बोइत छथि आ खाली पट्टीमे मड़ुआ लगबैत छथि। जगमाया स्वास्थ्यलाभ करैत छथि। एक भोजन, एक बोआई आ एक रोगीक उपचारक बीच किसान परिवारक जीवनक जटिल हिसाब खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०० · एक बीघाक सपना

पाँच बरखसँ बटाईपर एक बीघा जमीन जोतनिहार शिवनाथ ओकरा किनबाक सपना देखैत छथि। मालिक देवनाथ चौधरी जमीन बेचबाक प्रस्ताव दैत छथि, मुदा खरीदक अगाऊँ रकम आ बेटी रमाक पढ़ाइ-छात्रावासक खर्च एक्के समय सामने अबैत अछि। रमा अपन पढ़ाइ टारबाक बात कहैत अछि, मुदा शिवनाथ अन्ततः ओकर शुल्क भरैत छथि। जमीन दोसर खरीदार किनि लैत अछि। नव मालिक फेर ओही खेत बटाईपर देबाक प्रस्ताव करैत अछि; शिवनाथ बीया आ खादक खर्च साझामे बाँटबाक शर्तपर स्वीकार करैत छथि। एक बीघा अपन नहि भऽ सकल, मुदा बेटी आगाँ पढ़ैत अछि आ शिवनाथ नव शर्तपर खेती जारी रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २०१ · खाली थैला

बीया बेचि जीवन बितौने गोपीनाथ साह पुरान थैला, तराजू, बटखरा आ हिसाबक पाँजि लऽ हाट जाइत छथि। हुनकर बेटी मंजू आब ग्राहक सम्हारब, वजन करब आ उधारक हिसाब रखब सीखि गेल अछि। गोपीनाथ धीरे-धीरे सभ सामान ओकर हाथमे सौंपि दैत छथि। घर घुरला पर थैला खाली अछि, मुदा एहि खालीपनमे जीविकाक समाप्ति नहि, उत्तराधिकारक हस्तान्तरण अछि। अगिला हाटक दिन ओ मंजूकेँ तिरपाल बान्हबाक डोरी दऽ घरहि रहि जाइत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०२ · रौदक एक टुकड़ा

जाड़क दिन जगदीश महतो छातीक कष्ट सँ आ बसन्ती देवी घुँट्ठीक पीड़ा सँ परेशान छथि। चिकित्सक दुनूकेँ रौदमे बैसबाक सलाह देने छथि, मुदा साँघुर आँगनमे रौदक छोट टुकड़ामे दू मचिया नहि अँटैत अछि। एक-दोसरकेँ रौद छोड़बाक चेष्टामे दुनू लगातार मचिया खिसकबैत छथि। अन्तमे पटिया बिछा एकसंग बैसैत छथि आ झुकैत रौदकेँ बाँटि लैत छथि। रौद समाप्त भेलापर एक-दोसरक हाथ पकड़ि भीतर जाएब हुनकर निःशब्द स्नेहक चरम क्षण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०३ · नाव बान्हल रहल

नदीक दोसर पार मेला आ विद्यालयक समारोह अछि। नाविक रघुनाथ सहनी भोरसँ यात्रिकेँ ओतय पहुँचबैत छथि; हुनकर पत्नी फूलो आ बेटी सुनीता सेहो कार्यक्रममे जाएत छथि। सुनीताक गीत तीन बजे अछि, मुदा रघुनाथ नाव घुरा कऽ अपन घाट पर बान्हि दैत छथि। मेला आ तालीक आवाज नदी पारसँ सुनाइत रहैत अछि, बेटीक गीतक शब्द स्पष्ट नहि होइत। राति घुरनिहार सभ लेल घाट आ नाव सुरक्षित रखबाक दायित्व हुनका ओहि पारक उत्सवसँ दूर राखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०४ · फ्रिजक आवाज

बिजली कटला पर पुरान फ्रिजक आवाज बन्द होइतहि नरेश आ मीनाक घरक मौन आ दबायल आर्थिक चिन्ता उभरैत अछि। लोहेक छोट दोकानक घटैत बिक्री आ कर्जक कारण नरेश फ्रिज बेचबाक सोचैत छथि। मीना दूध-दही आ घरक रोजक खर्चक हिसाबमे ओकर उपयोगिता देखबैत छथि। फ्रिज फेर चलैत अछि, मुदा ओकरा राखब कि बेचब, एहि विषयक विवाद तुरन्त समाप्त नहि होइत। दूनू भोरक दूधक मात्रा तय करैत छथि आ खर्चक पाँजि एक-दोसरक आगाँ खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २०५ · किरायाक महीना

अमरक गोदामक दू दिनक मजूरी छुटि गेल अछि आ बेटी रुचिक औषधिमे सेहो खर्च भेल अछि। मासक किराया चुकबैत समय ओ आ पत्नी ज्योति मकान-मालिक शशिकान्त बाबूसँ अपन कठिनाइ कहबामे संकोच करैत छथि। पुरान रसीद डगमग मेजक पाँय तर दबायल अछि; नब रसीदमे पाँच सय रुपैया बाकी रहि जाइत अछि। बातचीतक बाद शेष रकम स्पष्ट लिखल जाइत अछि। अमर पुरान रसीद मेजक नीचाँ सँ निकालि सुरक्षित रखैत अछि। अभाव बनल रहैत अछि, मुदा ओकरा लुकायब छोड़ि हिसाबक रूप देबाक शुरुआत होइत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २०६ · नीला मग

रसोइमे प्रदीपक कोहनी लगलासँ सरिताक नीला मग टूटि जाइत अछि। टूटल साधारण वस्तुक बदला नब मग किनबाक खर्च, घरेलू निर्णय आ एक-दोसरक बात सुनबाक अधिकार पर पुरान असहमति खुलैत अछि। दूनू स्टीलक गिलास सँ चाह पीबैत छथि आ सत्तर रुपैयाक हिसाब पर बातचीत करैत छथि। सरिता अपन चुनल माटि-रंगक नब मग अनैत छथि। मग आ गिलासक अदला-बदलीक छोट क्षणमे कड़वाहट कने ढील होइत अछि। विवाद पूरा नहि सुलझैत, मुदा मगक खर्च आब आपत्ति नहि, स्वीकारल आवश्यकता बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २०७ · चार्जर

घरक एकमात्र चार्जर अपन कीलसँ गायब देख मनोज बेटी नीरा आ पत्नी कुसुमक झोरा पर सन्देह करैत छथि। नीरा मना करैत रहितो ओ ओकर निजी सामान खोलि देखैत छथि। बादमे चार्जर तख्ताक पाछाँ खसल भेटैत अछि। वस्तु भेटलापर असल प्रश्न चार्जरक नहि, विश्वास आ निजी सीमाक बनि जाइत अछि। मनोज नीरा सँ बिना अनुमति ओकर झोरा नहि खोलबाक वचन दैत छथि। बरखामे झोरा भीजबाक आशंका भेलापर सेहो ओ पहिने नीराक स्वीकृति लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०८ · कपड़ा सुखेबाक तार

बरखाक बाद कपड़ा सुखेबाक पुरान तार पर शारदा देवी आ पड़ोसिन कमली देवीक बीच झगड़ा उठैत अछि। तार दूनू आँगनक सीमाक कात तनल अछि; ओकरा सँ जुड़ल पुरान बाढ़ि, उज्जर चादर आ अनबुझल अपमानक स्मृति फेर खुलैत अछि। परिवारक नव पीढ़ी दुनूक अलग-अलग अनुभव सुनैत अछि। समाधानमे एकटा नब तार तनैत अछि, मुदा पुरान तार हटाओल नहि जाइत। दूनू तार अलग-अलग हिलैत छथि, तइयो सीमा-देबालक पुरान काँटा साझा रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २०९ · बन्द नल

भोरमे घरक नल बन्द अछि आ पानिक प्रबन्धक पूरा भार कल्याणी देवीक माथ पड़ैत अछि। पति दीनेश, बेटी माधवी आ पुत्र चन्दन अपन-अपन समयक चिन्ता करैत छथि, जखन कि कल्याणीक सिलाइक ग्राहक सेहो प्रतीक्षा करैत छथि। पानि देर सँ अबैत अछि; एहि बीच परिवार बुझैत अछि जे घरेलू श्रम अपने-आप नहि होइत। नल खुललापर दीनेश पानि भरब आ नल बन्द करबाक जिम्मा लैत छथि। कल्याणी फेर सिलाइ-कल पर बैसि सकैत छथि, बिना एक-एक आवश्यकताक लेल सभकेँ हुनकेँ पुकारबाक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २१० · आधा किलो चाउर

मालती देवीक भाँड़मे रातिक भोजन लेल बस मुट्ठीभरि चाउर बचल अछि। शशिकान्त आधा किलो चाउर किनबाक बात पर उधार-पाँजिमे अपन नाम देखय सँ लजाइत छथि। पत्नी अपन सिलाइक कमाइ सँ घरक जरूरत सम्हारैत छथि आ पति सँ साफ हिसाब साझा करैत छथि। दुकानदार बासुदेव साहक पाँजि गरीबीक अपमान नहि, बाकी रकमक अभिलेख बनि सकैत अछि—ई बात शशिकान्त धीरे-धीरे स्वीकार करैत छथि। अन्तमे ओ फेर चाउर अनैत छथि, उधार दर्ज होइत अछि आ एहि बेर झोरा लुकबैत नहि छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २११ · बालकोनीक गमला

बालकोनीमे रौदक अधिकतासँ अड़हुलक पौधा मुरझा रहल अछि। रजनी आ विनय पौधाक ठाम बदलबाक बहाने अपन घरक स्थिति आ रहबाक दोसर सम्भावनापर बातचीत शुरू करैत छथि। विनय दू घरक भाड़ा आ सुविधा देखल छथि, मुदा रजनीकेँ पूरा जानकारी पहिने नहि देल गेल अछि। दूनू घर देखबाक समय तय करैत छथि, खर्च जोड़ैत छथि आ पौधाकेँ रौदक पाटीसँ हटा दैत छथि। पौधा तुरन्त हरियर नहि होइत, घर बदलबाक फैसला सेहो तत्काल नहि होइत; मुदा निर्णयक सभ कागज आब दूनूक आगाँ खुलल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २१२ · गलत नम्बर

पत्नी-वियोगक बाद हरिनारायण झाक दिनचर्या अनिश्चित भऽ गेल अछि। एक गलत नम्बर सँ सरोज देवी लेल स्वास्थ्य-स्मरणक फोन अबैत अछि आ हुनकर दिनमे निश्चित समय, दूध, भोजन आ प्रतीक्षाक क्रम फेर बनैत अछि। फोन कखनो बजैत, कखनो नहि, मुदा अजनबीक नामक संग आबि रहल अपन नियमिततामे ओ एक विचित्र सहारा पबैत छथि। बादमे बेटी संध्या एहि बातसँ परिचित होइत अछि। अन्तिममे फेर सरोज देवीक नामसँ गलत फोन अबैत अछि। हरिनारायण ओकरा स्वीकारि घड़ी नहि देखैत, चाह आ अखबारक संग अपन बिहान आगाँ बढ़ा दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २१३ · पुरान परदा

पुरान किरायाक घर छोड़बाक समय रुचि एक बेरंग हरियर परदा फेंकि देबाक पक्षमे अछि, जखन कि माला आ सुधीर ओकर घिसल फाँस आ पुरान उपयोग याद करैत छथि। नब घरमे खिड़कीक ओट, माप आ सुविधा बदलि जाइत अछि। परदाकेँ फेंकबाक बदला अस्थायी रूपेँ राखल जाइत अछि आ ओकर उपयोगक नव सम्भावना देखल जाइत अछि। रुचि स्वयं ओकर फाँस देखैत अछि। अन्त धरि परदा ने केवल स्मृतिक पूजनीय वस्तु बनैत अछि, ने रद्दी; ओ अगिला निर्णयक प्रतीक्षामे घरक वस्तु बनल रहैत अछि।

कथा २१४ · सिलिन्डर खत्म

रातिमे भोजन बनबैत-बनबैत गैस-सिलिन्डर समाप्त भऽ जाइत अछि। अनिमा, शशांक आ बेटी शुचि भोजनक उपाय खोजैत छथि, तखने घरक पेटी, सामान आ शुचिक भविष्यसँ जुड़ल अनकहल तनाव खुलैत अछि। अनिमा आ शशांकक बीच निर्णय साझा नहि करबाक प्रश्न उठैत अछि; शुचि अपन विषयमे सच सुनबाक आग्रह करैत अछि। नब सिलिन्डर आ छोट बिजली-चूल्हि सँ भोजनक व्यावहारिक संकट टरि जाइत अछि। मुदा परिवारक आगूक व्यवस्था एखन निश्चित नहि अछि। शुचि पहिने रहबाक ठामक खिड़की, ताला आ पानि देखबाक बात कहि अपन निर्णय-क्षमता देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २१५ · दू प्लेट

किरण आ सदानन्द एक अतिथिक प्रतीक्षामे मेज पर दू प्लेट सजबैत छथि, मुदा हुनकर अबबाक समय बीतैत जाइत अछि। नौकरीक सम्भावनासँ जुड़ल सदानन्दक नस्ती तीन मास बाद बाहर निकालल गेल अछि; घरक कम पाइ आ किरणक सिलाइक श्रम सेहो बातचीतमे अबैत अछि। अतिथि अन्ततः नहि पहुँचैत छथि, तइयो भोजन बेकार नहि जाइत। नब सम्पर्कसँ अगिला दिन एगारह बजे काजक भेट तय होइत अछि। किरण जरूरी छायाचित्र आ कागजक तैयारी करबैत छथि। प्रतीक्षाक अनिश्चितता बदलि निश्चित तैयारीमे परिणत होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २१६ · पड़ोसीक टीवी

मालती देवीक देबाल-घड़ी रुकल अछि; ओ पड़ोसीक टीवीक कार्यक्रम सुनि दिनक समय नापैत छलीह। टीवीक आवाज बन्द भेलापर हुनकर मखान छाँटब, भोजन आ विश्रामक पुरान क्रम बिगड़ि जाइत अछि। पड़ोसीक परिवार आ ओकर दिनचर्याक वास्तविकता सँ परिचय बढ़ैत अछि। मालती घड़ी ठीक करबबैत छथि आ अपन समय स्वयं मिलबैत छथि। टीवी आब दूरक कोठरीमे अछि, मुदा पड़ोसक हलुक आवाजसभ एखनहुँ दूनू घरक बीच पहुँचैत अछि। कथा स्वावलम्बनक संग अनौपचारिक पड़ोसी सम्बन्धक बारीक उपस्थिति देखबैत अछि।

कथा २१७ · बन्द लिफ्ट

रीना देवी पाँचम महल पर आ विनोद ठाकुर सातम महल पर रहैत छथि, मुदा वर्षोसँ केवल औपचारिक नमस्कार होइत रहल अछि। एक दिन लिफ्ट बीचमे अटकि जाइत अछि आ दुनूकेँ अपन श्रम, रोजक आवागमन, आजीविका आ समयक बाध्यता पर बातचीत करबाक अवसर भेटैत अछि। लिफ्ट मरम्मतक काल सीढ़ी पर सेहो ओ एक-दोसरक कठिनाइ बुझैत छथि। लिफ्ट फेर चालू भेलापर रीना विनोदकेँ ऊपर सँ लेबाक लेल समय दैत छथि। हुनकर संवाद छोट अछि, मुदा अपरिचयक पुरान दूरी घटि चुकल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २१८ · किराना पर्ची

घरमे चाउर घटलापर सुधा आ विनय किरानाक सूची बनबैत छथि। सीमित पाइमे चाउर, दालि, तेल, चीनी आ रोजक आवश्यकताक मात्रा तय करैत समय दूनूक अलग प्राथमिकता सामने अबैत अछि। दोकानदार महेश साहक आगाँ सेहो प्रश्न उठैत अछि जे अधिक मात्रा किनब सस्ता पड़त कि तत्काल बचत आवश्यक अछि। सूची पर काट-पीट आ जोड़-घटाव होइत अछि। अन्तमे दूनू अगिला खरीद सँ पहिने सूची एकसंग देखबाक बात मानैत छथि। पर्ची पर दुनूक लिखावट अलग रहितो ओकर खाली जगह साझा निर्णयक ठाम बनैत अछि।

कथा २१९ · पुरान गद्दा

रेणु आ माधव वर्षोसँ बिगड़ल रुइवला गद्दा उलटि-पलटि उपयोग करैत छथि। पीठिक पीड़ा, खर्चक डर आ ‘एखन चलि रहल अछि’ कहि असुविधा टारबाक आदत पर विवाद होइत अछि। नब गद्दा लेबाक उपाय पर विचारक संग पुरान खाटक मरम्मति सेहो कएल जाइत अछि। पुरान गद्दाक रुइ सँ छोट बैसनी बनैत अछि। नब गद्दा पर दुनू अपन-अपन कात सुतैत छथि आ बीचक समतल जगह अन्तमे भरि जाइत अछि। असुविधा स्वीकार कऽ ओकर समाधान खोजब दाम्पत्य संवादक आधार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२० · दरबज्जाक घंटी

मकान-मालिक गोविन्द बाबू रातिमे सम्भावित किरायेदार केँ घर देखेबाक सूचना दैत छथि। श्यामानन्द, कमला आ हुनकर बच्चासभ घंटी बजबाक प्रतीक्षामे अपन सामान्य जीवन रोकि दैत छथि। एहि लम्बा रातिमे बढ़ैत भाड़ा, नब घरक खोज, बच्चाक पढ़ाइ आ परिवारक अलग-अलग डर-बात खुलैत अछि। घंटी गलत दबायल रहैत अछि; अपेक्षित अतिथि नहि अबैत। मुदा एहि प्रतीक्षामे परिवार वास्तविक समस्या पर बात कऽ सकैत अछि। अन्तमे श्यामानन्द विद्यालय लग सम्भावित घर सहित तीन विकल्पक सूची फेर खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२१ · बचल तरकारी

निर्मला देवीक कड़ाहीमे बचल तरकारी पुरान इस्पातक डिब्बामे राखल जाइत अछि, जाहि पर खुरचल ‘म’ आ ‘र’ अक्षर घरक बँटल सम्बन्धक स्मृति जगबैत अछि। भोजन राखबाक छोट काज सँ परिवारक अलग-अलग चूल्हि, हिसाब आ साझा वृद्ध माएक देखभालक प्रश्न खुलैत अछि। बीना आ निर्मला अपन-अपन समय आ भोजनक व्यवस्था फेर बनबैत छथि। अन्तमे दुनूक बचल तरकारी एके डिब्बामे समाइत अछि; बेटा सोनूक प्रश्न पर निर्मला ओकरा ‘घरक’ तरकारी कहैत छथि। डिब्बाक पुरान अक्षर रहैत अछि, मुदा नब सीमा-चिन्ह नहि बनैत।

कथा २२२ · बन्द खिड़की

किरायाक कोठरीक पाछाँ मसाला-पिसबाक चक्की राति धरि चलैत अछि। आवाजक कारण रश्मिक पढ़ाइ बाधित होइत अछि; नरेश आ मीनाक्षी टूटल खिड़की बन्द करबाक अस्थायी उपाय अपनबैत छथि। घरक भाड़ा, कम मजूरी, परीक्षा-शुल्क आ पंखाक मरम्मतिक खर्चक बीच कुन काज पहिने हो, ई प्रश्न उठैत अछि। बेटी रश्मि माए-बाबूसँ कहलैत अछि जे ओ सभ ओकर चिन्ता करैत छथि, मुदा अपन आर्थिक बात एक-दोसरसँ नहि कहैत छथि। अन्तमे वेतन-पर्ची आ खर्च खुलल रूपमे राखल जाइत अछि, खिड़की बन्द रहितो संवाद खुलि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२३ · रविक दिनक कपड़ा

माय कमला देवीक हाथमे तकलीफ अछि, तेँ रविक दिन दू बहिन मालती आ सुधा हुनकर कपड़ा धोय आ तह करय अयलीह। रोजमर्राक काज करैत पुरान सिलाइ-यन्त्र बेचबाक निर्णय, फोन नहि उठेबाक शिकायत आ एक-दोसरसँ उम्मीदक अन्तर खुलैत अछि। कपड़ा तह करब दुनूक अपन-अपन स्मृति आ असहमतिसँ टकराइत अछि। ओ सभ पुरान विवादक तत्काल निपटारा करबाक बदला अगिला रविक काज बाँटि लैत छथि। मायकेक कपड़ा समेटि जाइत समय विवाद बाँकी अछि, मुदा पारिवारिक सहयोगक बाट बन्द नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२४ · सरिसो कटबाक बाद

सरिसोक कटनीक बाद भोला मंडल आ रामविलास फसलक आमदनी आ श्रमक हिसाब मिलबैत छथि। बीस वर्ष पुरान आधा-आधा साझेदारी बैल, मशीन, मजूरी आ बदलैत खेतीक कारण आब पहिनेक जकाँ सरल नहि रहल अछि। जमीनक स्वामिनी जानकी देवीक घरसँ एके आदमीकेँ खेत देबाक सुझाव अबैत अछि, मुदा ओ पुरान भागीदारीक महत्त्व चिन्हैत छथि। नब फसल सँ पहिने साझेदारीक आधार लिखि तय करबाक प्रयास शुरू होइत अछि। खाली खेतमे बीआ नहि, सम्बन्धक नब हिसाब बोएबाक तैयारी चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २२५ · चरबाहाक पगडंडी

नब पक्की सड़क बनला सँ चरबाहा बुधन पासवानक पुरान पगडंडी कटि गेल अछि। बकरी आ बाछी लऽ चौर पहुँचब कठिन आ असुरक्षित भऽ गेल अछि। पोती रुनकी बाटक रेखा नापि कापीमे उतारैत अछि; गामक लोक, सड़कक किनार आ नालाक व्यावहारिक उपयोग पर विचार होइत अछि। पशुक आवागमन लेल पटिया आ सुरक्षित पारक व्यवस्था बनैत अछि। रुनकी बुझैत अछि जे दूरी घटब आ बाट छोट होएब एक बात नहि। घासक बीच पुरान गन्तव्य दिस पगडंडी फेर उगय लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२६ · पोखरिक रखबार

कजराहा पोखरिक रखबार वंशी महतो वर्षोसँ बाँसक डाँड़ पर पानिक चढ़ान-उतारक निशान रखैत छथि। पोखरि सफा आ गहींर करबाक योजना अएलापर ठेकाक नाप आ हुनकर अनुभवमे अन्तर सामने अबैत अछि। वंशी बतबैत छथि जे कछेरक गाद, बरखाक प्रवेश-धार आ पानिक प्राकृतिक चालकेँ बिनु बुझने खुदाइ करब हानिकारक होएत। अभियन्ता अरुण हुनकर पुरान चिह्नक संग नव नाप दर्ज करबाक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि। योजना आगाँ बढ़ैत अछि आ पोखरिक देखभालक जिम्मा एक व्यक्तिसँ आगाँ नव पीढ़ी धरि पहुँचबाक सम्भावना बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २२७ · बथानक साँझ

बथानमे नरेश दूध, चारा आ खर्चक व्यवस्थित हिसाब लिखय लगैत अछि। पिता जगरनाथ बुझबैत छथि जे पशुक परिचर्या केवल दूधक संख्यामे नहि समा सकैत अछि। झुमकी, सुपती आ आन पशुक स्वभाव, बीमारीक छोट संकेत आ साँझक विश्राम सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। पिता-पुत्रक बहसक बीच पुरान अनुभव आ नब पाँजिक उपयोग एक-दोसरकेँ पूरा करय लगैत अछि। अन्तमे नरेश संख्याक संग ‘साँझ ठीक’ लिखैत अछि। बथानक शान्त साँस आ जुगाली हिसाबक ओहि रिक्त पक्षकेँ जीवन दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २२८ · आमक बगीचा

शहर सँ अमरनाथ पत्नी कविता आ बेटी ऋचाकेँ लऽ पैतृक आमक बगीचा बेचबाक लेल अबैत छथि। जमीनक दाम तय अछि, मुदा आमक फल पर पहिनेसँ भेल सौदा आ रखबार बदरीक श्रम अलग हिसाब माँगैत अछि। बगीचाक मालिकाना, फलक अधिकार आ रखबारक जिम्मेवारी एकहि वस्तु नहि अछि—ई बात बातचीतमे स्पष्ट होइत अछि। निबन्धनक कागजक संग पुरान पावती सेहो सुरक्षित राखल जाइत अछि। मालिक बदलि जाइत अछि, मुदा जेठक आम आ गाछक देखभालक सम्बन्ध तुरन्त नहि बदलैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२९ · कमलाक धार

कमला नदी अपन धार मोड़ि देलाक कारण जमीनक पुरान सीमारेखा आ वर्तमान खेतीयोग्य भाग अलग भऽ गेल अछि। सुदामा यादव आ शहर सँ आयल भतीजा नीरज नाप-जोख करैत छथि। कागजक रकबा, पुरान खूँटा आ नव पानिक धार तीन भिन्न साक्ष्य बनैत अछि। जमीनक सौदाक चिन्ता बीच नीरज बुझैत अछि जे अनिश्चित भागकेँ निश्चित दाममे समेटब ठीक नहि। ओ नापमे भिन्न अवस्था अलग-अलग लिखैत अछि आ तिरछा बाँस नहि हटबैत। नदी बहैत रहैत अछि; मनुष्य ओकर कात अपन रेखा सुधारैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३० · धानक गन्ध

सात बरख बाद कटनीक बेर गाम आएल अनिल धानक गन्धमे अपन बचपन आ घर खोजैत अछि। मुदा खेतमे हँसुआ पकड़िते ओकरा बुझाइत अछि जे स्मृति आ वास्तविक खेतीक श्रम एक नहि। राजेश, पिता आ खेतमे काज करनिहार लोकक योगदान, रुपैयाक हिसाब आ देखभालक बँटवारा पर बातचीत होइत अछि। अनिल फेर नगर घुरबाक अछि, राजेश खेती सम्हारत। ओ अपन नब पाँजिमे केवल आमदनी नहि, श्रमक दिन आ देखभालक खाँचा सेहो जोड़ैत अछि। धानक गन्ध पुरान भावुक स्मृति सँ हटि वर्तमान श्रमक साक्षी बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३१ · गाछक छाँह

विद्यालयक विस्तार लेल नव कोठरी, नल आ ढलान बनबाक अछि। अभियन्ताक नक्शामे पीपरक गाछ आ वर्षाक पानिक पुरान चालक पर्याप्त ध्यान नहि देल गेल अछि। छेदी काकाक स्मृति सँ मुख्याध्यापिका सरोजा झा आ निर्माण-दल बुझैत छथि जे गलत ढलानसँ विद्यालय डूबि सकैत अछि। नब नाप आ पानि निकासक अनुसार योजना सुधारल जाइत अछि। बरखा भेलापर नाली पानि बाहर लऽ जाइत अछि आ कोठरी सुरक्षित रहैत अछि। पीपरक छाँह नव ढलान पर पड़ैत अछि; स्थानीय अनुभव निर्माणक हिस्सा बनि जाइत अछि।

कथा २३२ · डोमक बाँसुरी

ग्राम-उत्सवक कार्यक्रममे बाहरी गायक-दल लेल समय अछि, मुदा चन्देश्वर डोमक बाँसुरी पहिने सँ सूचीमे नहि अछि। मंचक प्रतिष्ठा आ जातिगत दूरी ओकर प्रस्तुतिक बाट रोकैत अछि। सुननिहार लोक, खास कऽ शिक्षिका रेखा, एहि उपेक्षाकेँ प्रश्न बनबैत छथि। बाँसुरीक धुन धीरे-धीरे भीड़केँ सुनबाक लेल विवश करैत अछि आ कार्यक्रमक पाँजिमे चन्देश्वरक नाम आ समय दर्ज होइत अछि। अगिला बरखक सूची सभक सहभागितासँ बनबाक बात उठैत अछि। सम्मानक अर्थ मंच पर नाम लिखब मात्र नहि, सुनबाक जगह देब होइत अछि।

कथा २३३ · झोपड़ीक नक्शा

फुलबसिया देवीक झोपड़ीक भीतर सँ सरकारी नालाक लाल नाप-रेखा गुजरैत अछि। परियोजनाक कागजमे पुरान घर मानो खाली जमीन अछि। फुलबसिया आ हुनकर परिवार पानिक प्राकृतिक ढलान देखबैत छथि; अभियन्ता शैलेन्द्र फेर नाप करैत छथि आ नालाक मोड़ बदलैत छथि। पहिल तेज बरखामे नब नाली सँ पानि सुरक्षित बहैत अछि। कार्य-नक्शामे घर ‘वर्तमान आवास’ रूपमे चिन्हित होइत अछि, मुदा जमीनक कानूनी स्वत्व एखन तय नहि। फुलबसिया एकरा आधा उपलब्धि मानैत छथि—घर कम सँ कम कागजक खालीपनसँ बाहर आएल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २३४ · गोरूक घंटी

मोहन बैल हिरना आ कजरू कैँ बेचि जुताइ-यन्त्र पर निर्भर होएबाक विचार करैत अछि। खर्चक पाँजिमे चारा, औषधि आ बैलक दाम लिखल अछि, मुदा बेचनक मजूरी, धानक हिस्सा आ वर्षोक मानवीय सम्बन्ध पूरा स्पष्ट नहि। बैल बिकैत अछि, बथान खाली होइत अछि आ बेचनक अगिला रोजी-रोटीक प्रश्न सामने अबैत अछि। मोहन नव हिसाब बनबैत अछि; नीलू पुरान पित्तरिक घंटी बजबैत अछि। यन्त्रक आगमन लाभकारी भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर संग जीबैत लोकक जीवन सेहो बदलैत अछि—कथा एहि अनगिनल हिसाबकैँ सामने अनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३५ · कच्ची सड़क

गाममे नियमित बस सेवा शुरू भेला सँ छात्र, बाजार जाएवला आ वृद्ध सभकेँ सुविधा भेल अछि। मुदा कच्ची सड़कक नीचाँ बरखाक पानि जमा होइत अछि आ बसक चक्का धँसबाक संकट बनैत अछि। लोक पहिने ईंट-माटि भरैत छथि, फेर बुझैत छथि जे पानिक निकास बिना स्थायी समाधान नहि। निजी खेत, सड़कक चौड़ाइ आ बस चलबाक जरूरत पर मतभेद उठैत अछि। नलिका बनलापर पानि नीचाँ सँ बहैत अछि आ बस ऊपर सँ निकलैत अछि। सड़क एखन कच्ची अछि, मुदा सामूहिक रखरखावक उत्तरदायित्व स्पष्ट होमय लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३६ · पथारक रक्षक

दुखन महतो बीस वर्षसँ साझा पथारक बाट, मेड़ आ चरनिहार पशुक हिसाब स्मृतिमे रखैत छथि। पथारक एक भाग घेरि निजी चारा-व्यवस्था करबाक प्रस्ताव अएलापर वास्तविक उपयोगक विस्तृत अभिलेख चाही। दुखन पशुक आगमन, ऋतु आ पानिक संग बदलैत चरवाही लिखय लगैत छथि। बैसारमे कियो तत्काल भूमि घेरबाक अनुमति नहि दैत, ने प्रस्ताव स्थायी रूपेँ खारिज करैत। दू मासक निरीक्षण आ लागतक अलग हिसाब पर सहमति बनैत अछि। पथार खुलल रहैत अछि, आ मनुष्यक स्मृतिमे रहल ज्ञान सार्वजनिक निर्णयक प्रमाण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३७ · धान रोपनीक गीत

धान रोपनीमे सोनमती आ आन स्त्रीसभ गीतक लयमे एकसंग पाँति बनबैत छथि। पवन रोपनी-यन्त्र अनैत अछि, जाहिसँ कमरक श्रम घटैत अछि आ काज जल्दी होइत अछि। मुदा स्त्रीसभक मजूरी, आगामी काज आ पारस्परिक लय पर एकर प्रभाव देखाइत अछि। मशीनक सीधा कतार आ हाथसँ रोपल घुमावदार कोना अलग अनुभव देत अछि। कोनो यन्त्रकेँ पूर्ण दोष नहि दैत, ने बिना प्रश्न प्रशंसा करैत। साँझमे अधूरा गीत हवा संग रहि जाइत अछि; मेहनतक बदलैत रूपमे गीतक भविष्य एखन खुलल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३८ · बरगदक नीचाँ रजिस्टर

मुनिलाल बरगदक नीचाँ पुरान पाँजिमे नहरक पानि केकर खेत धरि पहुँचल, से वर्षोसँ लिखैत छथि। सरकारी अभिलेखमे पानि छोड़बाक दिन दर्ज अछि, मुदा नीचला सत्रह खेतक सूखल रहब ओहिमे देखाइत नहि। शिक्षिका सुधाक सहयोग सँ अधिकारी नहरक तेसर मोड़ पर गादक बाधा देखैत छथि। सरकारी जाँचमे वास्तविक पहुँच आ निर्णयक अनिश्चितता दर्ज होइत अछि। मुनिलाल पूरा निजी पाँजि सौंपबाक बदला केवल नहर-सम्बन्धी पन्नाक प्रति दैत छथि। दुनू अभिलेख अलग रहितो आब एक-दोसरक समक्ष सत्यक प्रश्न राखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३९ · बाढ़िक निशान

घरक पश्चिम देबाल पर चूना उतरबैत समय तीनटा बाढ़िक पुरान जल-रेखा भेटैत अछि। निखिल सभसँ ऊपरक निशानक आधार पर नव कोठरीक तल तय करय चाहैत अछि, मुदा दादी शारदा देवी बतबैत छथि जे तीनू बाढ़िक समय घरक ऊँचाइ आ रूपो बदलल छल। परिवार पुरान घटना, श्रम आ हानिक स्मृति जोड़ि नब सुरक्षित कोठरी बनबैत अछि। ओतय औषधि आ जरूरी कागज राखल जाइत अछि। देबाल फेर पोतल जाइत अछि; निशान आँखिसँ ओझल भऽ गेलो हुनकर सीख घरक नब रचनामे बाँचि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४० · पहिल ट्रैक्टर

नरेश ऋण लऽ गामक पहिल ट्रैक्टर अनैत छथि। जगेसर वर्षोसँ हुनकर परिवारक बैल जोतैत आबि रहल छथि आ माटिक चालक गहींर अनुभव रखैत छथि। मशीनक गति आ किरायाक तारीखक हिसाब कएक बेर भीजल जमीनक वास्तविकतासँ टकराइत अछि। नरेश धीरे-धीरे जगेसरक सावधानी स्वीकार करैत छथि; जगेसर सेहो मशीनक उपयोग बुझैत छथि। पुरान ‘हलवाहा’क पहचान बदलि दुनूक बीच ज्ञानक आदान-प्रदानक सम्बन्ध बनय लगैत अछि। ट्रैक्टर चलैत अछि, मुदा खेतक माटि दुनूकेँ एक-दोसरसँ सीखय लेल बाध्य करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४१ · सिमानक खूँटा

नयन झा अपन आँगनक सीमा पर देबाल बनबय चाहैत छथि, मुदा पड़ोसी रामेश्वर मंडल एक इंच जमीनक विवाद उठबैत छथि। पुरान साल-काठक खूँटा सीमा मात्र नहि, दुनू परिवारक बच्चासभक ऊँचाइ मापबाक स्मृतियो रखैत अछि। मिस्त्रीक नाप आ पुरान कागज सँ अन्तिम सरल उत्तर नहि भेटैत अछि। निर्मलाक सुझाव पर साझा देबाल, साझा खर्च आ ऊपर खुलल जाली बनैत अछि। खूँटा साझा दरबज्जा लग फेर गाड़ल जाइत अछि, जतय नव पीढ़ीक ऊँचाइ दर्ज होइत रहत। भूमि-विवाद पीढ़ीगत स्मृतिक साझा स्वीकारमे बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४२ · खाली बथान

गामक पशु घटि गेल अछि आ शिवनाथ झाक पुरान बथान खाली पड़ल अछि। तइयो ओ सभ भोर ओकरा बुहारैत छथि। परिवार एहि सफाइकेँ निरर्थक मानैत अछि, मुदा बथान कखनो बच्चाक खेल, कखनो अस्थायी पशु-आश्रय, कखनो टीकाकरणक ठाम बनैत अछि। घर बढ़ेबाक समय शिवनाथ बथानक एक भाग बदलय दैत छथि, बाँकी खुलल रखैत छथि। बीमारीक दिन पोता नचिकेता स्वयं झाड़ू दैत अछि। ओ बुझि जाइत अछि जे खाली जगह साफ रखब केवल अतीतक मोह नहि, भविष्यक उपयोग लेल ओकरा खुलल रखब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४३ · आखिरी कटनी

पैतृक धानक खेत बेचबाक निबन्धन सँ पहिने हरिनारायण झाक परिवार अन्तिम फसल हाथसँ काटबाक निर्णय करैत अछि। बेटी रमा आ आन परिजन शहरक जीवन छोड़ि किछु दिन लेल खेतमे उतरैत छथि। ककरो हाथ छिलैत अछि, ककरो पाँति टेढ़ होइत अछि, मुदा श्रमक संग परिवारक पुरान सम्बन्ध फेर अनुभव होइत अछि। कटनीक बाद खेतक पाँतिसँ ककर हिस्साक श्रम बुझाइ नहि पड़ैत। छायाचित्र लेल हँसुआ नीचाँ रखल जाइत अछि। कागजमे जमीनक सौदा दर्ज होइत अछि, अन्तिम कटनीक सामूहिक अनुभूति नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४४ · प्रमाण-पत्रक गाम

सोनबरसा गामक घर-घरमे सम्मान आ उपलब्धिक प्रमाण-पत्र टाँगल अछि। विद्यालयकेँ सेहो पूर्ण नामांकनक प्रशंसा भेटल अछि, मुदा शिक्षकक कमी आ वास्तविक पढ़ाइ प्रमाण-पत्रक चौखटमे नहि समायल अछि। बच्चा चन्दन सरल प्रश्न पूछि एहि अन्तरकेँ उजागर करैत अछि। गाम प्रशस्तिपत्रक प्रदर्शनक बदला विद्यालयक वास्तविक आवश्यकता दर्ज करबाक प्रयत्न करैत अछि। सरोजा झा देबाल पर शिक्षक आ विद्यार्थी सम्बन्धी संख्या फेर लिखैत छथि। चौखटा-विहीन कागज पर चन्दन शब्द पढ़य सीखैत अछि। सम्मानक मूल्य उपलब्धिक घोषणा सँ हटि अपूरा काजकेँ देखबाक साहसमे बसैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४५ · स्वच्छता दिवस

गाममे स्वच्छता दिवस पर अतिथि, पट्ट आ छायाचित्रक धूम अछि, मुदा सड़कक मोड़ पर जमा कूड़ा उठेबाक गाड़ी सप्ताहोसँ नहि आयल। सफाइ-कर्मी मालती रोज झाड़ू दैत छलीह, तइयो कूड़ा ओतहि रहैत। बच्चा सोनू वास्तविक उठावक तारीख लिखय लगैत अछि। अन्ततः गाड़ी कूड़ा लऽ जाइत अछि, आ विद्यालयक पाँजिमे ‘सफाइ भेल’ आ ‘कूड़ा उठल’क अलग खाँचा बनैत अछि। रंगीन समारोहक छवि सँ बेसी महत्त्व नियमित व्यवस्था आ सत्य अभिलेखकेँ भेटैत अछि।

कथा २४६ · पढ़ल-लिखल सभा

‘साक्षर गाम’क समारोहमे अधिकारी आ शिक्षक भाषण दैत छथि, मुदा सामान्य आवेदनक कठिन प्रश्न स्वयं नहि बुझि पबैत छथि। दीपक केँ अनुमानित संख्या लिखि सम्मानक दावा करबाक दबाव देल जाइत अछि। फुलकुमारी देवी पूछैत छथि जे पढ़ि सकब, अर्थ बुझब आ अपन आवेदन स्वयं भरब अलग-अलग बात किएक अछि। समारोहक बदला वास्तविक अभ्यासक बैठक होइत अछि। गामक लोक बैंक, विद्यालय आ अनुदानक आवेदन भरबाक अभ्यास करैत छथि। सत्यापनक बाद कम संख्या दर्ज होइत अछि, मुदा साक्षरताक अर्थ आब अपन काज स्वयं बुझब बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २४७ · आदर्श चौक

चौकक नाम बेर-बेर ‘युवा’, ‘समरसता’, ‘नवचेतना’ सँ ‘आदर्श’ धरि बदलैत रहल अछि, मुदा बीचक गहींर खाधि जसक तस अछि। जगदीश मिस्त्रीक नातिन सुमेधा पुरान पट्ट आ सरकारी पाँजि सँ बुझैत अछि जे मरम्मतिक दिन टारबामे गामक लोकक सेहो भूमिका छल। दुकान आ यातायात थोड़े समय रोकि खाधि भरबाक सामूहिक निर्णय होइत अछि। बरखामे पानि नहि जमिते काजक उपयोग स्पष्ट भऽ जाइत अछि। सुमेधा छठम नाम नहि जोड़ि खाधि भरल दिन लिखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४८ · विकासक फीता

एकहि नालीक नाम पर बेर-बेर लाल फीता कटैत अछि, जखन कि ओकर अन्तिम सात हाथ अधूर अछि। दर्जी जगमोहन आ नातिन आभा समारोहक फीता जोड़ि नापैत छथि आ वास्तविक अधूरापन देखबैत छथि। बरखाक पानि निकास रोकैत अछि, तेँ उद्घाटनक चमक निरर्थक सिद्ध होइत अछि। बादमे मिस्त्री पुरान निकास साफ कऽ शेष भाग बनबैत छथि। पानिक धार निर्बाध चललाक बाद हस्तान्तरण बिना नव समारोहक होइत अछि। लाल फीताक बदला नाप, मरम्मति आ कामक फल विकासक पहचान बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २४९ · प्रतिष्ठित परिवार

झा-परिवारक फाटक पर ‘प्रतिष्ठित परिवार’क चमकदार पट्ट लागैत अछि। घरमे पीढ़ीसभक पुरस्कार, प्रमाण-पत्र आ सम्मान सँ भरल कोठरी अछि, मुदा वृद्ध सुभद्रा देवीक लेल स्थिर निजी कमरा नहि। नातिन गौरी एहि अन्तरकेँ प्रश्न बनबैत अछि। परिवार सामान छाँटैत, पुरान सम्मान उचित ठाम पहुँचबैत आ एक कोठरी सुभद्रा देवीक स्थायी उपयोग लेल निर्धारित करैत अछि। फाटकक पट्ट बरखामे भीजैत रहैत अछि; भीतर पहिल बेर एक व्यक्तिक निजता आ सुविधा प्रतिष्ठासँ पैघ मानल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २५० · अफवाहक दिन

गामक सन्देश-समूहमे अनाम सूचना फैलैत अछि जे नल-जाँच लेल दुआर पर नीला बाल्टी राखब जरूरी अछि। लोक बिना स्रोत जाँचने सन्देश आगाँ पठबैत आ राति भरि बाल्टीक रखवारी करैत छथि। कार्यालयसँ पता चलैत अछि जे एहन कोनो जाँच तय नहि। विद्यालयक अरुण सर चारि प्रश्न सिखबैत छथि—ठाम, तिथि, स्रोत आ उत्तरदायी। अगिला बेर बिजली बन्द होएबाक अफवाह आएलापर लोक ओकरा दोहरबैत नहि, प्रमाण पूछैत छथि। गाममे डरक जगह विवेकपूर्ण प्रश्नक व्यवहार बनय लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २५१ · टॉपरक फोटो

विद्यालयक ओसारामे विज्ञान विषयमे चौरानबे प्रतिशत अंक पाबनिहार रश्मिक छायाचित्र सम्मानसँ टाँगल अछि। ओकर ठीक सामने प्रयोगशाला बन्द अछि आ भीतर पुरान परीक्षाक पेटी जमा अछि। सम्मान समारोहमे रश्मि अपन अंकक संग वास्तविक प्रयोगक अभावक बात उठबैत छथि। छात्र नैना आ शिक्षकक सहयोग सँ प्रयोगशाला साफ होइत अछि, प्रयोग-सामग्री फेर उपयोगमे अबैत अछि आ नियमित प्रयोगक समय तय होइत अछि। छायाचित्र हटाओल नहि जाइत; मुदा ओकर सामनेक खुलल दरबज्जा अंक आ शिक्षाक बीचक अन्तर देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५२ · सभसँ स्वच्छ घर

‘सभसँ स्वच्छ घर’ प्रतियोगिता जीतबाक लेल सरिता देवी अपन आँगन चमकबैत छथि, मुदा अनावश्यक कचरा पड़ोसिन जयकलीक खेतमे फेंकल जाइत अछि। मूल्यांकन-दल कचराक वास्तविक गन्तव्य पूछैत अछि। सरिता परिवारसँ संग कचरा अलग करब, जैव-खाद बनब आ पुनःउपयोग योग्य वस्तु देबाक व्यवस्था शुरू करैत छथि। पुरस्कार हुनकर घरकेँ नहि भेटैत, तइयो पड़ोसक खेत साफ होइत अछि आ सम्बन्ध सुधरैत अछि। नीतूक प्रश्न सँ स्पष्ट होइत अछि जे घरक स्वच्छता ओकर देबालक पार धरि जिम्मेदारी माँगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५३ · सम्मान समारोह

चालीस वर्षक डाकसेवाक सम्मान लेल हरिनारायण झाक नाम चुनल जाइत अछि, मुदा बैनर आ प्रमाण-पत्रमे ‘हरिनन्दन’ छपि गेल अछि। समारोहक आयोजक छायाचित्र आ प्रतिष्ठाक चिन्ता करैत छथि, जखन कि सम्मानित व्यक्तिक सही नामक प्रश्न गौण बनि रहल अछि। सुधार करब पड़ैत अछि आ प्रमाण-पत्र पर स्पष्ट पट्टी लगैत अछि। लोक छायाचित्रक रूप पर टिप्पणी करैत अछि, मुदा हरिनारायण कहैत छथि जे नाम ठीक अछि, से पर्याप्त। बादमे सही नामक साधारण सरकारी लिफाफा हुनका औपचारिक सम्मानसँ बेसी सीधा पहचान दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५४ · नकल-विरोधी भाषण

विद्यालयमे नकल-विरोधी सप्ताह लेल निर्मल झा केँ मुख्य भाषण देबाक जिम्मा भेटैत अछि। भाषणक सामग्री तैयार करैत काल ओ दोसर स्रोतसँ लेल विचारक उल्लेखक प्रश्नसँ स्वयं टकराइत छथि। छात्रा अनुपमा आ विद्यालयक चर्चा हुनका बुझबैत अछि जे परीक्षा-कक्षमे नकल रोकबाक उपदेश दैत स्वयं स्रोत लुकायब विरोधाभास अछि। भाषणक बाद स्रोत दर्ज करबाक पाँजि बनैत अछि। परीक्षाक निरीक्षणमे निर्मल बाबू छात्रकेँ बिना अपमानित कएने अनुशासन राखैत छथि। ओ अपन खोज-इतिहास मेटबैत नहि, कारण भूलक स्वीकार शिक्षा बनि गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५५ · पुस्तकालय उद्घाटन

पुस्तकालयक उद्घाटन भव्य अछि, मुदा सोलह पुस्तकक रखवारी लेल अठारह ताला लागल अछि। छात्रा नैना पुस्तक पढ़य चाहैत अछि, मुदा चाबी, पाँजि आ अनुमति ओकर बाट रोकैत अछि। गामक चर्चा सँ स्पष्ट होइत अछि जे पुस्तक सुरक्षित राखबाक नाम पर पाठककेँ दूर करब पुस्तकालयक उद्देश्यक विपरीत अछि। अतिरिक्त ताला हटैत अछि, पुस्तक निर्गमक सरल नियम बनैत अछि आ बच्चासभ पुस्तक घर लऽ जाइत अछि। एक बरख बाद पुस्तकक मुड़ल कोना ओकर उपयोगक प्रमाण बनैत अछि, क्षतिक नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५६ · जातिक कुर्सी

सामुदायिक घरमे अट्ठाइसटा एकसमान नीला कुर्सी अछि, मुदा बैठकमे जाति आ परिवारक पुरान पदक्रमक अनुसार लोक बैसैत छथि। बालिका नीलू कुर्सीक क्रमांक आ वास्तविक बैठकीक नक्शा बनबैत अछि। संख्या बदललापर सेहो पुरान स्थान-क्रम फेर उभरैत अछि। बातचीतमे लोक बुझैत छथि जे लिखल नियम नहि रहितो पुरखनक स्थान सभक शरीरमे बसल अछि। अगिला बैसारमे सुविधा आ काजक अनुसार लोक कुर्सी खिसकबैत छथि। नीलू लिखैत अछि जे स्थायी स्थान कोनो नहि; समान कुर्सी अन्ततः वास्तविक साझी बैठकी बनबाक अवसर दैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २५७ · डिजिटल गाम

बनकट्टा गामक प्रवेश पर ‘पूर्ण डिजिटल गाम’क चमकैत पट्ट अछि, मुदा अनेक टोलामे चल-दूरभाषक जाल नहि पहुँचैत। जनसेवा केन्द्रमे संगणक रहितो आवेदन चलब कठिन अछि। आरती अलग-अलग ठाम पर वास्तविक सिग्नल नापि नव नक्शा बनबैत अछि। अधिकारीक निरीक्षण आ बोर्डक सौर-बत्ती सेवा उपलब्धताक प्रमाण नहि बनि पबैत अछि। दक्षिण टोला एखनहुँ जालसँ वंचित अछि। आरती नक्शा अधूरा छोड़ैत अछि आ ‘पूर्ण’ शब्द लिखबासँ मना करैत अछि, कारण तकनीकी उपलब्धिक नाप वास्तविक उपयोगमे अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २५८ · गरीबक प्रमाण

कमली देवी पत्तल बनबैत आ खेतमे मजूरी करैत बेटी मीराक पढ़ाइ चलबैत छथि। छात्र-सहायता लेल गरीबीक प्रमाण-पत्र चाही, जे कागज पर निःशुल्क अछि। मुदा ओकरा बनबेबामे यात्रा, छायाचित्र, प्रतिलिपि, छुटल मजूरी आ माइक चारि दिनक श्रम लगैत अछि। मीरा वास्तविक खर्च अलग पन्ना पर लिखैत अछि। आवेदन अन्ततः स्वीकार भऽ जाइत अछि। फेर प्रमाण बनबेबा अबैत पड़ोसिनकेँ कमली शून्य शुल्कक पाँति संग वास्तविक खर्चक हिसाब देखबैत छथि। सरकारी ‘निःशुल्क’ आ गरीबक अनुभवक अन्तर कथा उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५९ · मौन समिति

महिला सिलाइ सहकारी केन्द्रमे मजूरी कम लिखल जाएबाक शिकायत अछि, मुदा शिकायत पेटीक ‘गुप्तता’क नाम पर स्त्रीसभकेँ चुप रहबाक सलाह देल जाइत अछि। सुनीता आ आन कर्मी अपन बंडलक संख्या मिलबैत छथि। जाँच सँ पाँजि आ प्राप्ति संख्यामे अन्तर सामने अबैत अछि। समिति शिकायतकर्ताक नाम सुरक्षित राखैत तथ्य सार्वजनिक रूपेँ जाँचबाक व्यवस्था करैत अछि। पेटीक बगलमे विषय आ प्रगतिक पट्टी लगैत अछि। अन्तमे समितिक मौन लोककेँ दबेबाक नहि, ओकर बात सुनबाक मौन बनैत अछि।

कथा २६० · आदर्शविवाह

शशिभूषण झा दहेज-विरोधी अभियान चलबैत छथि, मुदा अपन पुत्र अनिरुद्धक विवाहक तैयारीमे सामान, पलंग, स्कूटर आ उपहारक नाम पर अपेक्षा धीरे-धीरे उभरैत अछि। कोमल पाँच प्रश्नक द्वारा घोषित आदर्श आ घरेलू व्यवहारक अन्तर चिन्हैत छथि। मृणालिनी अपन नव जीवन आ खर्चपर निर्णयक अधिकार चाहैत छथि। समारोहक नाराक स्थान पर परिवारक वास्तविक प्रश्न चर्चा बनैत अछि। विवाहक बाद दम्पती अपन पाइ सँ पलंग किनैत छथि। घरक ‘दहेज-मुक्त’ कथन सरल प्रमाण-पत्र नहि रहि स्वयं जाँचबाक प्रक्रिया बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २६१ · सभक विचार

पंचायतक बैसारमे सभ लोक एक स्वरमे कहैत अछि—‘हम सभ स्वतंत्र सोचैत छी’। मुदा निर्णय पहिनेसँ तय ढर्रा आ प्रभावशाली आवाजक अनुसार बनैत अछि। कनक अलग मत लिखबाक आग्रह करैत अछि। मतदानक पर्ची, मतक संख्या आ निर्णयक कारण अलग-अलग दर्ज होमय लगैत अछि। सबकेँ पूर्ण पसिन्न नहि भेलो मतभेद खुले रूपमे स्वीकार होइत अछि। पट्ट सँ सामूहिक ‘स्वतंत्र सोच’क वाक्य हटैत अछि, केवल ‘खुलल विचार बैसार’ बचैत अछि। अगिला बैठकमे एक स्वरक बदला अनेक स्वर सुनाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६२ · पुरस्कारक पात्र

नवल कुमार गामक लोकक आवेदन भरैत सहायता करैत अछि। वृद्ध सरयू काकाक सामाजिक सेवाक नामांकनमे सम्पर्कक खाँचा भरैत समय नवल अपन नाम लिखि दैत अछि। पुरस्कार ओकरा भेटि जाइत अछि, जखन कि वास्तविक काज सरयू काका करैत छथि। न्यासक नियम नाम बदलय नहि दैत। नवल बुझैत अछि जे कागजक सुविधा श्रेयक अन्याय बनि सकैत अछि। अगिला नामांकनमे ओ सेवा करनिहार सुषमा देवीक नाम स्पष्ट लिखैत आ स्वयंकेँ मात्र आवेदन भरनिहार चिन्हित करैत अछि। भेटल पुरस्कारक पित्तरि-पट्ट ओकर मेज पर कागज दबेबाक साधन बनि जाइत अछि।

कथा २६३ · नया नियम

सहकारी बीआ-भण्डारमे किसानक भीड़ सम्हारबाक लेल लगातार नब नियम लिखल गेल अछि। तथापि दुआर लग पाँति अटकैत अछि। नीलिमा पुरान आदेश आ वास्तविक बाट देखैत बुझैत छथि जे एक आलमारी प्रवेशमे बाधा बनल अछि। नियम अठारह, उन्नैस आ बीस बदलला सँ बेसी उपयोगी आलमारी हटेनाइ सिद्ध होइत अछि। दुआर खुलिते वितरण सुचारु होइत अछि। पुरान आदेश फेंकल नहि जाइत; ओकर ऊपर सीखक पर्ची राखल जाइत अछि—नब नियम बनबय सँ पहिने वास्तविक बाधा देखू।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६४ · भीतरक आलमारी

घरक भीजल देबाल मरम्मत करबाक लेल भीतरक लोहेक आलमारी हटेनाइ आवश्यक अछि। आलमारी खोलिते कागजक बँटवारा, मूल आ प्रति, वृद्ध कमलाक दस्तावेज आ सुषमाक अपने स्वास्थ्य-संबन्धी पत्रक उपेक्षा सामने अबैत अछि। परिवार नस्ती अलग करैत, तिथि लिखैत आ चाबीक अधिकार बाँटैत अछि। एक तह खाली छोड़ल जाइत अछि। सुषमा पुरान रक्त-जाँचक सलाह देखिकऽ अपने स्वास्थ्य केन्द्र जाएबाक निर्णय करैत अछि। कागज फेर राखल गेलो घरक देखभालक सारा भार आब ओकर अकेल जिम्मा नहि रहैत।

कथा २६५ · छत परक दू घंटा

बरियातमे सभ गेल अछि; घरमे घुट्ठीक पीड़ासँ रुकल शैलजा देवी आ बहू कनक छथि। जेठक राति छत पर बिताओल दू शान्त घंटा दुनूकेँ पहिल बेर बिना बाधा एक-दोसरक रुचि, थकान आ अनकहल अपेक्षा सुनबाक अवसर दैत अछि। सासि समझैत छथि जे कनकक फोन देखब उपेक्षा नहि; कनक बुझैत अछि जे शैलजाकेँ पढ़बाक अपन समय चाही। बादमे पुस्तकालय जाएबाक समय निकलैत अछि आ घरक काममे बातचीतक नब अवकाश बनैत अछि। दुनू बुझैत छथि जे सभ काज तत्क्षण पूरा करब आवश्यक नहि।

कथा २६६ · बहूक कमरा

नब घर बनलापर सासि सुधा देवी बहू माधवीकेँ अलग कमरा देबाक वचन पूरा करबाक चाहैत छथि। मुदा ओ कोठरी धीरे-धीरे घरक बक्सा, रजाइ आ भंडार-सामानसँ भरि जाइत अछि। माधवी अपन लेखन-बैसकीक ठाम चाहैत अछि। परिवार बहसक बाद ताखक किछु जगह खाली करैत अछि आ चौकी राखैत अछि। कमरा तत्काल पूरा निजी नहि बनैत। मुदा एक दिन सुधा देवी नब कम्बल भीतर राखबासँ पहिने माधवी सँ पूछैत छथि। एतबे छोट प्रश्न कमराक वास्तविक अधिकारक शुरुआत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६७ · मायकेक चाबी

अनिमाक चाबी-गुच्छामे मायकेक पुरान चाबी विवाहक बादो अछि। पति अजीत सहित परिवारक लोक एहि चाबीकेँ बदलैत घरक सम्बन्धक दृष्टिसँ देखैत अछि। मायकेक फाटक पर नव घंटी लगलापर चाबीसँ बिना पूछने भीतर पहुँचबाक पुरान अभ्यासो बदलैत अछि। अनिमा अपन ‘घर’ शब्दक अर्थ पर विचार करैत अछि। अन्तमे ओ चाबी सँ खाली मायकेक दुआर बन्द करैत अछि। घंटी बाहरी अतिथिक संकेत रहैत अछि, चाबी हुनकर अपन थैलामे। अपनापन समाप्त नहि होइत, मुदा ओकर रूप बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६८ · सिलाइ खर्च

सुधाक सिलाइ-कल घरक खर्च चलबैत अछि, मुदा हुनकर कमाइकेँ छोट आ अनिश्चित मानल जाइत अछि। प्रमोदक वेतन, घरक बीमा, बच्चाक आवश्यकता आ सिलाइक ग्राहकक खर्च एकहि घरेलू हिसाबमे मिसि गेल अछि। सुधा अलग नाप-पाँजि बना देखबैत छथि जे अपन काजक पाइ कतय-कतय गेल। परिवार धीरे-धीरे सिलाइकेँ वास्तविक आर्थिक योगदान मानब सीखैत अछि। बेटी रागिनी देखैत अछि जे शब्द बदलनाइ धीमा अछि, मुदा हिसाब पहिने बदलि सकैत अछि। छोट धागाक रील भरनाइ एही अदृश्य श्रमक ठोस रूप बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २६९ · परीक्षा फार्म

रागिनीक विज्ञान स्नातकक परीक्षा-फार्मक अन्तिम तारीख बारह सितम्बर अछि आ भाइ रौशनक कोचिंगक किस्त तेरह सितम्बर देबाक अछि। परिवारक पाइ सीमित अछि, मुदा आरम्भमे रौशनक खर्चकेँ बेसी जरूरी मानल जाइत अछि। रागिनी अपन अधिकारक लेल स्पष्ट आवाज उठबैत अछि; परिवार शिक्षा-सम्बन्धी प्राथमिकता फेर देखैत अछि। रागिनीक फार्म समय पर भरल जाइत अछि आ रौशन अपन किस्तक तारीख आगाँ सरकबैत अछि। देबालक कैलेंडरमे दुनू तारीख अलग चिन्हित होइत अछि। दू सन्तानक भविष्य आब एक-दोसरक बाट रोकैत नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७० · रसोइक दरबज्जा

रामबागक घरमे रसोइक दरबज्जा भोरसँ सभक आदेश सुनैत अछि। किरण एकहि समय ऋतुक विद्यालयक डिब्बा, शैलेशक रोटी, हरिमोहनक दलिया आ घरक आन आवश्यकता पूरा करैत अछि; संगमे काज करयवाली फूलोक समय सेहो छूटैत अछि। देरी भेलापर दोष किरणक माथ अबैत अछि। खड़ियासँ समय-सूची बनला पर सभकेँ बुझाइत अछि जे प्रत्येक काजक आपन सीमा अछि। फूलो सेहो अपन चाहक समय लिखैत अछि। खुलल दरबज्जा आब केवल आदेशक नहि, परस्पर समय बुझबाक ठाम बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २७१ · लाल बक्सा

भागीरथी देवीक लाल लोहेक बक्सा वर्षोसँ बन्द अछि। घरक लोकक उत्सुकता, बहूक दीर्घ सेवाक अधिकार-बोध आ पोती अदितिक निजीपनक विचारक बीच बक्सा विवादक विषय बनैत अछि। भागीरथी कखन, ककरा आ की देबाक, एहि पर अपन निर्णय सुरक्षित राखैत छथि। परिवार बुझैत अछि जे ककरो सेवा करब ओकर सभ निजी वस्तु पर अधिकार नहि दैत। अन्तमे दादी बक्सा नहि खोलैत छथि; पोतीकेँ छोट बटनक थैलीसँ चुनबाक अवसर दैत छथि। बन्द बक्सा ककरो हारक प्रतीक नहि रहैत।

कथा २७२ · बहिनक फोन

घरमे सभक फोन बजेबाक अपन-अपन समय अछि, मुदा बेटी मृणालिनीक रातिक फोन पर प्रश्न उठैत अछि। विद्यालयमे शिक्षिका मृणालिनी एक छात्रा काजलक संकटमे सहायता करैत अछि, जखन कि ओकर देर रातिक सम्पर्क परिवारक नजरिमे सन्देहक विषय बनैत अछि। काजलक असुविधा आ सुरक्षाक आवश्यकता सामने अएलापर फोनक उपयोगक अर्थ बदलैत अछि। मृणालिनीक कमरामे चार्जिंगक व्यवस्था बनैत अछि। अन्तमे काजलक साधारण सन्देश अबैत अछि, मुदा परिवार ओकर परिचय नहि पूछैत। फोन ओकर निजता आ उत्तरदायित्व दुनूक साधन बनैत अछि।

कथा २७३ · किरायेदार कन्या

अनामिका अस्पतालक नर्स अछि आ रातिक पालीक कारण देर सँ किरायाक घर घुरैत अछि। मकान-मालकिन रामप्यारी देवी फाटकक साँकल, पड़ोसक निगाहि आ स्त्रीक आवागमनक पुरान नियम सँ जकड़ल छथि। अनामिकाक काज आ सुरक्षित प्रवेशक आवश्यकता पर बातचीत सँ चाबीक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। ओकरा बाद आन स्त्रीसभक रातिक आवागमन सेहो मोहल्लाक साधारण जीवनक हिस्सा देखाइत अछि। अनामिका घर छोड़ला पर रामप्यारी देवी साँकलक प्रतीक्षा करैत छथि, मुदा अन्ततः पड़ोसी फाटकक खनक सुनि उठैत नहि छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७४ · उपहारक साड़ी

रेणु दीदी स्नेहसँ मधुलिकाकेँ नील साड़ी उपहार दैत छथि। मुदा ओकरा कहिया, कोना पहिरब, सिलाइ-बचत कपड़ा केना उपयोग करब—एहि सभ पर उपहार देनिहारक अपेक्षा बनल रहैत अछि। मधुलिका कृतज्ञता आ अपन रुचिक बीच असमंजसमे पड़ैत अछि। बातचीतक बाद रेणु बुझैत छथि जे उपहार देनाइ वस्तुक उपयोग पर स्थायी अधिकार नहि। मधुलिका साड़ीक बचल कपड़ासँ चूड़ीक थैली बनबाक सोचैत अछि। एहि बेर कैंची उठेबासँ पहिने ओकरा ककरो अनुमति लेबाक बोध नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७५ · भोजनक मेज

घरमे चार कुर्सीवला भोजनक मेज अएलापर सबकेँ लगैत अछि जे पुरान पीढ़ा-वाला व्यवस्था बदलि गेल। मुदा भोजनक बारी, पुरुष-स्त्रीक बैठकी आ घरक श्रमक पुरान क्रम मेजक संगहि जीवित रहैत अछि। बच्चाक चित्र आ परिवारक रोजक व्यवहार सँ एहि अन्तरक प्रश्न खुलैत अछि। धीरे-धीरे मेज पर बैसबाक अधिकार बदलैत अछि। अन्तमे आयुष अपन चिन्हल कुर्सी पर माधवीकेँ बैसल देखि अतिरिक्त मोड़ल कुर्सी खोलि लैत अछि। चार कुर्सीक मेज पाँच लोकक संग बदली सामाजिक व्यवस्थाक चित्र बनैत अछि।

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २७६ · चुप्पीवाली मामी

घरक सभ लोक शारदा मामीकेँ चुप रहनिहार आ सहज मानि लेने छथि। नातिन अन्वी हुनकर मौनक भीतर दबायल इच्छा देखैत अछि। परिवार नीमक गाछ आ आँगनक व्यवस्था पर मामीक पक्ष पूछने बिना निर्णय करैत अछि। अन्वीक संग बातचीतमे मामी बतबैत छथि जे जखन आन लोक पहिनहि ककरो इच्छा तय करि दैत अछि, तखन अपन बात कहब कठिन भऽ जाइत अछि। धीरे-धीरे परिवार हुनकर उत्तरक प्रतीक्षा करय लगैत अछि। अन्तमे तुलसीक गमला कतय राखब, एहि प्रश्न पर मामी स्वयं ‘एतय’ कहैत छथि आ हुनकर निर्णय मानल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७७ · पार्लरक शीशा

विवाहसँ पहिने सुरभि पार्लरक पैघ शीशा आगाँ बैसैत छथि। मालती हुनका सजावट चुनबाक लेल पूछैत छथि, मुदा परिवार आ परिचित लोकक अनेक पर्ची हुनकर चेहराक रंग, केश आ रूप पहिनहि तय करबाक प्रयास करैत अछि। सुरभि अपन रुचि स्पष्ट करैत छथि, किछु सुझाव स्वीकार करैत आ किछु काटैत छथि। विवाहक बाद ओ छोट शीशामे थकान, हँसी, काजरक दाग आ अपन चुनल सजावट एकसंग देखैत छथि। बाहरी चौखट हटिते हुनका अपन चेहरा बेसी सम्पूर्ण लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७८ · नौकरीक पहिल महीना

संजनाक पहिल नौकरी घरमे उत्सव जकाँ शुरू होइत अछि। वेतन अएलापर परिवारक विभिन्न सदस्य ओकर पैसाक उपयोग अपन-अपन हिसाबसँ तय करय चाहैत छथि। संजना घरक खर्चमे योगदान देबाक इच्छाकेँ स्वीकार करैत अछि, मुदा अपन सम्पूर्ण कमाइ पर दोसरक आदेश नहि चाहैत। ओ बस-पास, निज खर्च आ घरक हिस्सा अलग लिखैत अछि। पहिल मासक अनुभव सँ घरमे आर्थिक बातचीतक नब सीमा बनैत अछि। दोसर वेतन-पर्ची रखैत समय संजना बुझैत अछि जे ओकर तनखाह घरक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अछि, मुदा पूरा घरक पर्याय नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७९ · पुरान पेटीकोट

बरखासँ पहिने पुरान कपड़ा छाँटैत समय सुधा देवीक घिसल पेटीकोट सामने अबैत अछि। ओकर सीवन, अलग रंगक टाँका आ बारम्बार जोड़ल कपड़ा परिवारक वर्षोंक अभाव आ अनदेखल घरेलू श्रमक साक्ष्य अछि। नब पीढ़ी पहिले ओकरा रद्दी मानैत अछि, बादमे एक-एक सीवनक कथा सुनैत अछि। पुरान कपड़ाकेँ रखब कि फेर उपयोग करब, एहि पर सहज निर्णय नहि होइत। अन्विता अन्तमे नव पीयर टेढ़ टाँकाकेँ देखैत बुझैत अछि जे परिवारक इतिहास केवल उत्सवमे नहि, घिसल कपड़ाक अदृश्य मरम्मतिमे सेहो रहैत अछि।

कथा २८० · अतिथि कमरा

देवकी देवीक पैघ घरमे चारि सुतबाक कोठरी अछि, मुदा हुनकर अपन स्थिर कमरा नहि। परिवारक सदस्य आ अतिथिक सुविधानुसार हुनकर बिछाओन बेर-बेर बदलैत रहैत अछि। पोती ईशा एहि स्थिति पर प्रश्न उठबैत अछि। देवकी धीरे-धीरे अतिथि-कोठरीमे अपन वस्तु राखि एकटा निश्चित ठाम बनबैत छथि। कोठरीक दुआर पर ‘अतिथि’क पट्टी एखनहुँ अछि, मुदा भीतर हुनकर घड़ी टाँगल जाइत अछि। ओ पहिल बेर राति सुतबाक ठामक अनिश्चिततासँ मुक्त होइत छथि। निजी अधिकारक आरम्भ घरक नब निर्माण नहि, पुरान जगहक नब उपयोग सँ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २८१ · गुप्त बचत

मालती देवी अपन आपातकालीन बचत घरक कोनो एक बक्सामे नहि राखैत छथि। किराना, दूध, औषधालय आ तरकारीवालाक पाँजिमे छोट-छोट अग्रिम रकम हुनकर अदृश्य सहारा अछि। परिवारमे संकट अएलापर एहि बचतक उपयोगिता सामने अबैत अछि, संगहि पति जगदीश बाबूक प्रश्न उठैत अछि जे बचत पर निर्णयक अधिकार ककर। मालती स्पष्ट करैत छथि जे घरक खर्च सम्हारि बचल रकम पर हुनकर अपन अधिकार अछि। साझा आपातकालीन लिफाफा बनैत अछि, मुदा ओ अपन छोट बचतक क्रम बनौने रहैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८२ · फोटोमे नहि रहल स्त्री

परिवारक पचासीम जन्मदिनक छायाचित्र-प्रदर्शन बनबैत ईशानीकेँ अचरज होइत अछि जे मंजरी देवीक चेहरा पुरान अलबममे नहि अछि, जखन कि सभ घटनाक तारीख, वस्तु आ व्यवस्था हुनकेँ मालूम। मंजरी परिवारक प्रत्येक अवसर सम्हारैत रहल छथि, मुदा स्वयं कैमरा पाछाँ रहि गेलीह। ईशानी हुनकर अनुपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। नब पारिवारिक छायाचित्रमे मंजरीक चेहरा स्पष्ट समाविष्ट होइत अछि। पाछाँ हुनकर नाम कोनो सेवा वा हिसाबक परिचय बिना लिखल जाइत अछि। परिवारक इतिहासमे ओ पहिल बेर केवल अपन व्यक्तित्वक आधार पर उपस्थित छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८३ · नामक प्लेट

फाटकक ढीला नाम-पट्ट पर केवल सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक श्रीधर झाक नाम अछि। ओकर मरम्मति करैत परिवारकेँ पुरान पट्टक पाछाँ शैलजा देवीक लिखल तारीख, पेचक आकार आ देखभालक निशान भेटैत अछि। घरक काममे स्त्रीक योगदान रहितो बाहरी पहचान केवल पुरुषक नाम सँ जुड़ल अछि। नब पट्ट बनबाक चर्चा सँ सभ सदस्यक नामक प्रश्न उठैत अछि। अन्तमे श्रीधर, शैलजा, नवीन आ अर्चनाक नाम एके पट्ट पर लगैत अछि। बरखामे शैलजा ओकरा एक छोरसँ दोसर छोर धरि पोंछैत छथि—आब नामसभ बराबरीसँ देखाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-शतत्रयी · खण्ड–३

कथा २८४ · तीसरी सीढ़ी

केदार मिश्रक घरक ओसारा पर सदिखन दू पायदान रहल अछि। एक राति पत्नी गिरिजा देवी लाठी टेकैत तेसर सीढ़ीक अनुभव करैत छथि, मुदा दिनमे ओ गायब अछि। परिवारक आन सदस्य सेहो कखनो असम्भव अतिरिक्त पायदान देखैत वा छूबैत छथि। गिनती आ नाप सँ निश्चित उत्तर नहि भेटैत अछि। गिरिजाक घुट्ठीक असुविधा देख परिवार मिस्त्रीसँ ढलुआ बाट बनबबैत अछि। सीढ़ी फेर सामान्य देखाइत अछि, मुदा गिरिजाक लाठीक टोंक पर माटिक तीन छोट घेरा रहि जाइत अछि। अनिश्चित घटनाक बीच वास्तविक सुविधा स्थायी बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८५ · उल्टा कैलेंडर

पुरान घर बेचि नब घर जाएबाक तारीख तय अछि। सामान छाँटबाक समय नीलमणि झार्कें दिन-पाँजिमे ‘एकतीस सितम्बर’ आ फेर ‘बत्तीस सितम्बर’ जकाँ असम्भव तारीख देखाइत अछि। समयक एहि अजब विस्तारमे घर छोड़बाक पूर्वक अधूर निर्णय, पुरान कुर्सी, तुलसीक चौरा आ स्मृतिक सामान अलग-अलग सामने अबैत अछि। परिवार अन्ततः घर बदलैत अछि, मुदा अतिरिक्त पन्नाक रहस्य नहि सुलझैत। नब घरमे सामान्य तारीख चलैत अछि, असम्भव पन्ना पाछाँ दबा रहैत अछि। घर छोड़बाक मनोवैज्ञानिक समय कैलेंडरक सीधा गणनासँ भिन्न बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८६ · बन्द कमराक हवा

मरम्मतिक कारण तीन मास सँ बन्द कोठरीक महीन फाँकसँ अनोखी हवा अबैत अछि। बाहर कार्तिक रहितो भीतरक हवा कखनो फागुनक मंजरिक गन्ध, कखनो जेठक गरमी, कखनो सावनक नमी आ कखनो जाड़क अनुभूति दैत अछि। शिवकान्त, मालती, मीरा आ मिस्त्री कारण खोजैत छथि; दुआर खोलिते ओ विशेष ऋतु समाप्त भऽ जाइत अछि। मरम्मतिक बादो ई घटना रहैत अछि। मालती एक जाड़क राति बन्द काठक फाँकसँ गरम हवा अनुभव करैत छथि, मुदा दुआर नहि खोलैत। रहस्यक अस्तित्व ओकर अनिश्चिततामे सुरक्षित रहैत अछि।

कथा २८७ · बिना मालिकक छाया

मधुबनीक बजारमे दुपहरिया एक मानव-जेकाँ छाया नियमित रूपेँ चलैत देखाइत अछि, मुदा ओकरा संग कोनो देह नहि। सुलोचना आ आन दुकानदार ओकर दिशा, गति आ धूप-छाँहक संग ओकर व्यवहार देखैत छथि। छाया वस्तु पर चढ़ैत नहि, कखनो उजासक टुकड़ामे टुटि फेर जुड़ैत अछि। लोक पहिने ओकर मालिक खोजैत आ डरैत छथि, बादमे ओकर बाट चिन्हि दैनिक व्यवहार बदलैत छथि। ओकरा बुझब जरूरी नहि रहि जाइत। बजारक सभ परिचित देहक छायामे एक एहन छाया जुड़ि जाइत अछि जे अपनहि बाट चलैत अछि।

कथा २८८ · स्टेशन जे नक्शामे नहि

अभिलेखागारक लिपिक प्रभाकर मिश्र रेलक नियमित यात्रामे दू परिचित स्टेशनक बीच कदम्बबारी नामक अपरिचित स्टेशन देखैत छथि। रेलक नक्शा, पूछताछ आ आन यात्रिक अनुभव ओकर अस्तित्व सिद्ध नहि करैत। आश्चर्य ई जे स्टेशन केवल एक डिब्बाक चौठ खिड़कीक विशेष फाँक सँ देखाइत अछि; कैमरा ओकरा पकड़ि नहि पबैत। बादमे ओही डिब्बा रेल-अहातामे स्थिर रहितो ओहि खिड़की सँ कदम्बबारी देखाइत अछि। प्रभाकर नक्शामे बनाओल स्टेशनक बिन्दु काटि खिड़कीक छोट आयत बनबैत छथि। ठाम नक्शासँ बेसी दृष्टिक अजीब सीमामे उपस्थित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८९ · आधा बजल घड़ी

देवानन्द मिश्रक घरक देबाल-घड़ी कखनो पूरा घंटी नहि बजबैत, बीचमे अटकैत अछि। एहि अधबजल क्षणमे घरक मामूली क्रिया—दरबज्जा बन्द करब, धागा खींचब, पान मोड़ब वा पानिक बूँद खसब—अधूरा रहि जाइत अछि, फेर घंटी पूरा भेलापर गति फेर चलैत अछि। परिवार समयक ई अनोखा खण्ड गिनि आ लिखि देखैत अछि। घड़ीक मरम्मतिक विचारसँ सेहो अनुभवक रहस्य नहि मिटैत। वैदेही अपन पाँजिमे सामान्य तारीखक बदला ‘आधा बजल’ लिखैत अछि। कथा समयक माप आ अनुभूतिक बीचक विचित्र फाँक खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९० · दोसर दरबज्जा

महेन्द्र झाक किरायाक फ्लैटक पश्चिम देबालमे एक दिन अपने-आप दोसर दरबज्जा उगि अबैत अछि। ओकरा खोलिते घरक जे कोठरी ओहि समय खाली अछि, से देखाइत अछि; कियो ओतय प्रवेश करिते दृश्य बदलि जाइत अछि। परिवार पहिने कौतूहलसँ ओकर उपयोग करैत अछि, मुदा निजी कोठरी पर अनचाहल नजरि पड़बाक समस्या सेहो उठैत अछि। घर बदलबाक समय सामान हटिते खाली कोठरीसभ ओहि दरबज्जामे देखाइत रहैत अछि। परिवार नब घर चलि जाइत अछि, मुदा पुरान खाली फ्लैटमे रहि गेल एहि दरबज्जाक दृष्टिक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९१ · नाम बदलैत गली

मधुबनीक एक गलीक नीला नाम-पट्ट सभ भोर बदलि जाइत अछि—कखनो नीम गली, कखनो कमला पथ, कखनो शीतल वा चाँदनी गली। पट्ट ढाँपि मुहर लगेलो नाम बदलैत अछि। इरा झा बदलैत नामक पाँजि रखैत अछि, मुदा लोकक स्मृतिमे काल्हिक नाम सेहो धीरे-धीरे अस्पष्ट होमय लगैत अछि। घरक संख्या आ गलीक वस्तु स्थिर अछि; नाम आ ओकर आवाज अनिश्चित। इरा स्थानक छोट रेखाचित्र बनबैत अछि, कारण केवल नाम सँ ठामक अनुभव नहि बाँचैत। रहस्यक बीच गली अपन साधारण दिनचर्या चलबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९२ · एक अतिरिक्त खिड़की

वैदेही आ नीलाभ अपन तीन खिड़कीवला पुरान घर बेचबाक निर्णय लैत छथि। दलालक छायाचित्र आ बिक्रीक पुस्तिकामे अचानक चारिम खिड़की देखाइत अछि, जखन कि वास्तविक देबालमे तीनिए अछि। छवि आ घरक अन्तर खरीदारसभकेँ उलझबैत अछि। कखनो खींचल नव चित्रमे तीन खिड़की देखाइत, पुरान छपल प्रति चारि रखैत अछि। घर अन्ततः दोसर परिवारक होइत अछि आ वैदेही छोट घरमे चलि जाइत छथि। बेटी अपर्णा दुनू छवि संग राखि बीचमे खाली कागज छोड़ैत अछि। दृश्य आ वास्तविकताक विरोध अनुत्तरित रहैत अछि।

कथा २९३ · आवाजक कमरा

किरायेदार गेलाक बाद रघुनाथ झाक घरक कोठरी खाली भऽ जाइत अछि। ओतय सँ एहन संवाद सुनाइत अछि जे वास्तवमे किछु दिन बाद नव किरायेदारक मुँहसँ निकलयवला अछि। आश्चर्य ई जे कोनो वाक्य पहिने सुनि लेलापर ओकर वास्तविक समयमे ओहि सुननिहारकेँ ओ बात फेर सुनाइ नहि पड़ैत। रघुनाथ भविष्यक आवाज पूरा सुनबाक लोभ आ वर्तमानक अनुभव गुमेबाक डरक बीच निर्णय लैत छथि। नव परिवार आबिते ओ अधूर वाक्यक शेष भाग पहिने नहि सुनैत। अन्तमे कोठरी वास्तविक लोकक आवाजसँ भरैत अछि आ ओ वर्तमानक पूरा बातचीत सुनि सकैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९४ · बस संख्या शून्य

अस्थायी नौकरी समाप्त भेला पर इशानी मिश्र रातिक पुरान बस-पड़ावमे ठाढ़ अछि। मायके घुरब, सहकर्मीक लग रुकब कि पूर्णियाक नब नौकरी स्वीकार करब—तीन बाट खुलल अछि। ओ समय ‘शून्य’ संख्या लिखल विचित्र बस अबैत अछि, जकर पड़ाव यात्रीक अस्पष्ट आ स्पष्ट निर्णयसँ बदलैत जेकाँ लगैत अछि। आन यात्रिक अनुभव सँ इशानी बुझैत अछि जे बस निर्णयक भार नहि उठबैत। ओ एक पड़ाव पर उतरि अपन अगिला काज स्वयं करबाक सोचैत अछि। नब नियुक्तिक उत्तर एखन बाँकी अछि, मुदा गन्तव्यक प्रश्न सँ ओ भागैत नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९५ · कागजक वर्षा

बरखाक पहिल बादरमे लहेरियासराय पर पानिक बदला कागज बरसय लगैत अछि। लोकक काटल, सुधारल आ अस्वीकारल वाक्य पन्ना बनि आकाशसँ खसैत अछि। भयवश लोक गलती काटब छोड़ि दैत छथि, फलतः लेखन आ निर्णय दूषित होमय लगैत अछि। बादमे वास्तविक बरखा कागजक ढेरकेँ भिजबैत अछि। छापाखानाक नन्दू एक गलत तारीख काटि सही लिखैत अछि, जखन कि विभा ओकरा सुधार करबाक लेल प्रोत्साहित करैत छथि। कागज फेर खसैत अछि, मुदा सुधार रोकल नहि जाइत। पुरान भूलक दृश्य डर सच्चाइ सुधारबाक कर्तव्य सँ पैघ नहि रहैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९६ · नक्शाक पोखरि

नगरक पुरान जमीन-नक्शामे मटियाही पोखरि अछि, मुदा वर्तमान मैदानमे ओकर चिन्ह नहि। नालीक योजना बनबैत मृदुला कर्ण देखि पबैत छथि जे नक्शाक नीला पोखरि आ धरतीक पानिमे विचित्र सम्बन्ध अछि। नक्शाक कोन फीका होइतहि मैदानक ओहि भागमे पानि प्रकट होमय लगैत अछि। अधिकारी आ स्थानीय लोक पानिक आवागमन सँ अपन व्यवहार बदलैत छथि। अन्तमे मूल नक्शाक दक्षिणी भाग उज्जर होइत अछि आ चाह-दोकान पाछाँ माटिमे छोट पोखरि उगि अबैत अछि। कागज आ धरती एक-दोसरक रूप बदलैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९७ · उलटल प्रतिबिम्ब

मीरा एक भोर शीशामे देखैत अछि जे ओकर प्रतिबिम्ब वास्तविक शरीरक उलट वा अलग क्रिया करैत अछि। धीरे-धीरे बुझाइत अछि जे प्रतिबिम्ब तत्काल नकल नहि, कखनो अधूरा पुरान काज समय बाद पूरा करैत अछि। परिवार ढाँपि, जाँचि आ प्रतीक्षा कऽ एहि अजीब व्यवहारकेँ देखैत अछि। महीना पहिनेक विदाइक हाथ हिलेनाइ प्रतिबिम्बमे बहुत बाद पूरा होइत अछि। मीरा मुस्कराइत भीतर चलि जाइत अछि, मुदा शीशामे ओकर मुस्की एखन बाँकी रहैत अछि। आत्मछविक समय वास्तविक जीवनक समयसँ अलग भऽ गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९८ · गायब बुधदिन

सुधांशुक परिवार मंगल राति पाँचू कुर्सी पर भोजन करैत अछि, तकर बाद भोर सीधे बृहस्पति दिन होइत अछि; बुधदिन घरक अनुभवसँ गायब, जखन कि बाहरी लोक लेल ओ बीति चुकल अछि। जाँच सँ घरक लोक बुझैत छथि जे मंगल राति मेजक एक कुर्सी खाली रखलापर बुधदिन फेर सामान्य अबैत अछि। ओ सभ बेराबेरी पीढ़ी पर बैसि जगह खाली रखय लगैत छथि। समयक क्रम फेर चलैत अछि। ऋचा बुझैत अछि जे संकट बुधक खाली कुर्सीक नहि, मंगल राति सभ स्थान भरि देबाक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९९ · पाँचम कोना

सरोज मिश्रक पुश्तैनी घरक कागजवाली कोठरी बाहरसँ चौकोर अछि, मुदा भीतर एक असम्भव पाँचम कोना धीरे-धीरे बढ़य लगैत अछि। घर बँटबाक चर्चा, पुरान वस्तु आ अधिकारक हिसाबक बीच परिवार नाप करैत अछि। भित्ति बाहरसँ सीधा अछि, भीतरक कोण सरकैत अछि। परीक्षण सँ बुझाइत अछि जे कोनामे कोनो मनुष्य बैसल रहला पर ओकर बढ़ब रुकैत अछि। सरोज अन्तमे नापबाक चाक छोड़ि ओहि कोनामे पीढ़ी खिसका बैसैत छथि आ पुस्तक खोलैत छथि। अपारिभाषित जगहकेँ गिनबाक बदला ओहि मे रहबाक निर्णय कथा सम्पन्न करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३०० · अपरिचित अपन घर

तीन दिन बाद घर घुरल विनय झा देखैत छथि जे सभ परिचित वस्तु अपन-अपन जगहसँ बदलि गेल अछि। चाबी, ताला आ घर ओही अछि, मुदा बिछाओन, मसालाक डिब्बा, कुर्सी आ आलमारीक क्रम अजनबी लगैत अछि। ओ राति-राति बदलाव नापि दर्ज करैत छथि आ बुझैत छथि जे किछु व्यवस्था परिवारक दोसर सदस्यक पुरान चाह आ स्मृतिसँ मेल खाइत अछि। घर केवल हुनकर व्यक्तिगत आदतक प्रतिरूप नहि। अन्तमे ओ नब तरहें राखल कुर्सी पर बैसैत छथि आ खाली कुर्सी कने आगाँ खिसकबैत छथि। अपन घरकेँ अनिश्चितता सहित अपनायबाक शुरुआत होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ००१ · आवाज नहि देनिहार घंटी

लहेरियासरायक पैतृक घर बेचबाक तैयारीमे माधवी आ हुनकर बेटी ईरा कें दुआरक एक विचित्र घंटीक रहस्य बुझाइत अछि। ई घंटी बजैत नहि, मुदा एक बेर बटन दबिते घरमे जीयल कोनो घटना दुनूक स्मृतिसँ लुप्त भऽ जाइत अछि। उल्टा लगल टाइल, नानाक सहारा लेल लगल छड़ आ मायक सिनेहक प्रसंग क्रमशः अपरिचित होमय लगैत अछि। लिखि राखल विवरण घटनाक सूचना तँ बचबैत अछि, ओकर अनुभूति नहि। घंटी खोलि राखलापर गायब भऽ जाइत अछि आ फेर अपन ठाम प्रकट होइत अछि। अन्तमे माधवी ओकरा दबेबाक बदला दुआर पर तीन बेर ठोकैत छथि। एही आवाजसँ बचपनमे मायक दुआर खोलबाक एक जीवित स्मृति फेर जगि उठैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ००२ · उल्टा रास्ता

सड़कक नापजोख करनिहार अर्चना झा बेनीपुर लग बाढ़िक समय वैकल्पिक रास्ताक जाँच करय निकलैत छथि। मुदा जतय जाएबाक प्रयास करैत छथि, सड़क घुमा-फिरा हुनका पैतृक घरक फाटक पर पहुँचा दैत अछि। दूरी-मापक, नाप-पोथी आ चूनाक चिन्ह सभ ठीक रहितो घटनाक व्याख्या नहि दैत अछि। अनुभवी चालक जितन मियाँ सेहो संगमे एहि असम्भव घुमावक अनुभव करैत छथि। रेल आ खेतक मेड़ सँ अर्चना बाहर पहुँचि जाइत छथि, मुदा घरसँ सड़क द्वारा निकलनाइ फेर विफल होइत अछि। अन्ततः ओ बुझैत छथि जे ई उलझन हुनकर यात्राक अछि, सभक नहि। घर आबय लेल सड़क आ बाहर जाएबाक लेल पाछाँक मेड़ हुनकर अपन अलग-अलग बाट बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ००३ · रातिक दोसर आकाश

विद्यालयक रातिक पहरेदार कैलाश मण्डल आधा रातिक किछु मिनट लेल आकाशमे अपरिचित नक्षत्र देखैत छथि। ध्रुव आ सप्तर्षिक परिचित विन्यासक बदला झुकल हँसिया आ सात ताराक घेरा देखाइत अछि। बालिका रागिनी हुनका बात पर विश्वास कऽ नियमित अवलोकन आ लेखा राखय लगैत अछि। शिक्षक लोकनि सेहो घटना देखैत छथि, मुदा दूरबीन आ मोबाइलमे साधारण आकाशे रहैत अछि। पोखरिक पानिमे प्रतिबिम्ब सेहो नहि बदलैत अछि। रागिनी पढ़ाइ लेल दरभंगा चलि गेलापर दू ठामसँ फोन पर जाँच करैत अछि; कैलाशक आँखिक आकाश अलग अछि, दुनूक यन्त्रमे एक्के। कथा देखल सत्य, मापल प्रमाण आ दू पीढ़ीक साझा विश्वासक बीचक दूरी केँ अनुत्तरित छोड़ैत अछि।

कथा ००४ · प्याज काटैत स्त्री

रसोइक पुनर्निर्माणक पहिने सरोजा देवी पुरान पाटी पर प्याज काटैत अपन जीवनक ओ निर्णय सभ स्मरण करैत छथि, जे परिवारक चर्चामे प्रायः बिसरा गेल। रसोइक खिड़कीक स्थान बदलनाइ, बेटीक परीक्षाक समय बच्चासभ संग अकेले रहनाइ, अपन नामसँ बैंक खाता खोलब आ महिलासभक बचत-समूह आरम्भ करब हुनकर निजी पहल छल। पोती अनु अपन नानीक जीवनक पाँच महत्त्वपूर्ण घटना लिखय चाहैत अछि। एहि बहाने सरोजा पहिल बेर अपन छोट बुझल काजसभक महत्त्व स्वयं स्वीकार करैत छथि। पुरान काटबाक पाटी हटैत अछि आ नव पाटी पर पहिल चक्कूक निशान पड़ैत अछि। नब रसोइक आरम्भ हुनकर ओहि आत्मपहिचानक संग जुड़ि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ००५ · बसक शीशा

साँझक बसमे घर घुरैत माधव झा खिड़कीक शीशामे अपन प्रतिबिम्ब देखि विचलित होइत छथि। चेहरा हुनकरे अछि, मुदा ओ अपन भीतरक पहिचानसँ ओकरा मिलाबि नहि पबैत छथि। कार्यालयक पहिचान-पत्र लेल खिचाओल सजायल छायाचित्र आ बसक असंवारल प्रतिबिम्बक बीच भिन्नता हुनका परेशान करैत अछि। घरक दर्पणमे सेहो ओ अनायास केश आ ठोढ़ ठीक करय लगैत छथि। धीरे-धीरे हुनका बुझाइत अछि जे अपन चेहरा सेहो ओ सदिखन दोसराक दृष्टिक अनुरूप बना रहल छलाह। फेर बसमे ओ प्रतिबिम्ब केँ बिना सुधारने देखैत छथि आ पत्नीसँ बिना पूर्वसूचनाक छायाचित्र खींचबाक आग्रह करैत छथि। हुनका लेल सहज हँसी बनल-बनाओल छविसँ बेसी अपन लगैत अछि।

कथा ००६ · पानि भरबाक बेर

मंजरी सरकारी अभिलेख-संरक्षणक तीन मासक प्रशिक्षण लेल चुनल गेल अछि, मुदा घरमे पानि भरब, भाइ अंशुक तैयारी आ अस्वस्थ मायक देखभालक कारण प्रवेश छोड़बाक सन्देश लिखि रहल अछि। नलक पाँतिमे अपन पीयर बाल्टी देखैत ओकरा बुझाइत अछि जे घरक सभ जिम्मेदारी ओकर अकेलेक नहि। ओ काजकेँ अलग-अलग बाँटि पिताक पानि भरब, भाइक अपन टिफिन सम्हारब, औषधिक बेर बदलनाइ आ पड़ोसिनसँ सहायता लेबाक उपाय सोचैत अछि। परिवारक आरम्भिक अनिच्छा धीरे-धीरे सहयोगमे बदलैत अछि। अन्तमे पिता स्वयं बाल्टी लऽ पाँतिमे जाइत छथि आ मंजरी बसक समय बुझय निकलैत अछि। ओकर स्थान घरक काज छोड़ने बिना प्रशिक्षणमे सुरक्षित रहबाक संभावना बनैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ००७ · खाली कॉपी

सेवानिवृत्त शिक्षक गोविन्दकान्त झा केँ विद्यालयक शताब्दी-स्मारिका लेल अपन शिक्षक-जीवनक पहिल दिन लिखबाक निमन्त्रण भेटैत अछि। खाली कॉपी हुनका ओहि बेर असहज करैत अछि, कारण प्रमाणित नियुक्तिक तारीख आ वास्तवमे शिक्षक बनबाक अनुभव एक नहि। पुरान पञ्जी, स्मृति आ भूतरंगक छात्रक प्रसंग हुनका शिक्षणक अभ्यस्त निर्णायक दृष्टि पर प्रश्न उठबैत अछि। ओ आरम्भमे लाल कलमसँ अपन लिखल पाँति काटैत-परखैत छथि, फेर स्वीकार करैत छथि जे खाली कॉपीक कारण बुझब शून्य अंक देबासँ कठिन अछि। अन्तमे ओ साफ-सुथरा आत्मप्रशंसात्मक लेख नहि, काटल-जोड़ल पन्नासहित अपन कॉपी पठेबाक निश्चय करैत छथि। एहि अपूर्णतामे हुनका अपन असल शिक्षकीय अनुभव भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ००८ · टूटल कंघी

घरक रंग-रोगन लेल पुरान सामान छाँटैत शैलजा केँ मायक टिनमे तीन दाँत टूटल करिया कंघी भेटैत अछि। कंघी देखि बचपनमे माय द्वारा केश कंघी कए देबाक एक दृश्य याद पड़ैत अछि। मुदा माएसँ बात कएलापर ज्ञात होइत अछि जे ओ करिया कंघी केश लेल नहि, चादरक किनारक धागा सुलझेबाक लेल राखैत छलीह; केशमे लाल कंघी चलैत छल। शैलजा बुझैत अछि जे स्मृति अलग-अलग घटनाकेँ मिला सकैत अछि। ओ टूटल कंघीक सहायतासँ पुरान चादरक फुँदना ठीक करय लगैत अछि। अन्ततः कंघी संग्रहक निष्क्रिय वस्तु नहि रहि, नव काजक उपकरण बनैत अछि; टूटल दाँतक खाली ठामो उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ००९ · तरकारी चुनैत हाथ

रामलोचन झा सत्ताइस वर्षसँ तरकारीक ढेरीमे प्रत्येक भंटा, टमाटर आ परोर बहुत सावधानीसँ चुनैत आयल छथि। बजारक एहि आदति पर विचार करैत हुनका अपन बेटा अमरेशक पढ़ाइ सहित अनेक पारिवारिक निर्णय मोन पड़ैत अछि, जतय ‘तोहर निर्णय’ कहितो अपन तर्कसँ दोसरक विकल्प सीमित कऽ देलनि। एहि बेर ओ दागवला टमाटर आ टेढ़ लौकी लेबाक साहस करैत छथि। पत्नी मालती संग बातमे हुनका बुझाइत अछि जे खराब निकलबाक सम्भावना रहितो चुनाव अपना हाथमे लेब आवश्यक अछि। धीरे-धीरे ओ वस्तुक पूर्णता खोजबाक बदला अपन इच्छाक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत छथि। तरकारीक सूची पाछाँ लिखल ‘हमर मन’ एहि सूक्ष्म परिवर्तनक चिह्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०१० · जाड़क धूप

जानकी देवी जाड़क धूपक खिड़कीसँ सरकैत पट्टी देखि दिनक समय पहचानैत छथि। पोती काव्या विद्यालयक प्रयोग लेल भुइँ पर धूपक स्थान आ घड़ीक बेर अंकित करैत अछि। दादी ओकर सहायता करैत छथि, मुदा एक अवलोकन छूटि जाइत अछि आ दोसर बेर बादर धूप छिपा दैत अछि। सही-सही समय पकड़बाक चिन्ता हुनका अपन पाँच मिनट आगाँ चलाओल पुरान देवाल-घड़ीक स्मरण करबैत अछि। बच्चीक प्रयोग सँ हुनका ज्ञात होइत अछि जे धूप नहि देखायलाक बादो समय चलैत रहैत अछि; प्रत्येक क्षण कें दर्ज करब आवश्यक नहि। साँझ भुइँक चिन्ह पोछि देल जाइत अछि। जानकी देवी रातिक स्वतन्त्र अस्तित्व सेहो अनुभव करैत छथि, केवल अगिला बिहानक प्रतीक्षा नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०११ · दूध उफनल

प्रमिला देवीक घरक सभ काज पर एहन पकड़ अछि जे दूध कखन उफनत, ककर वस्तु कतय अछि आ ककर आवश्यकता कहिया पड़त, सभ हुनका बुझल रहैत अछि। एक दिन दूध उफनि जाइत अछि आ घरक लोक अचम्भित होइत अछि। एहि छोट दुर्घटनासँ हुनका अपन ‘कहियो चूक नहि करनिहार’ छविक भार अनुभव होइत अछि। ओ बुझैत छथि जे पति आ सन्तानक काज स्वयं सम्हारि लेबाक हुनकर आदति दोसराक सीखबाक अवसर सेहो घटबैत रहल। चाह बनेबाक आ दूध देखबाक जिम्मेदारी क्रमशः बाँटल जाइत अछि। दोसर दिन मीरा दूध उफनय सँ रोकि दैत अछि, मुदा प्रमिलाक भीतर राहतक संग अपन अपरिहार्यता घटबाक हलुक पीड़ा सेहो उठैत अछि। ओ एहि भावकेँ स्वीकार कऽ खाली हाथ किछु क्षण शान्त बैसब सीखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०१२ · लिफाफा खोलबाक पहिने

सुधा झा केँ महाविद्यालयक अभिलेख शाखासँ एक पत्र भेटैत अछि, जकरा खोलबासँ ओ डरैत छथि। जवानीमे संगीतक पढ़ाइ छोड़बाक निर्णयक जिम्मेदारी ओ सदिखन पिताक एक वाक्य पर रखैत आयल छलीह। पुरान राग-परिचयक कॉपी आ महाविद्यालयक अभिलेख खोजैत हुनका बुझाइत अछि जे घटना ओतेक स्पष्ट नहि जतेक हुनकर बरखोंक स्मृति बतबैत अछि। पत्र खुललापर सेहो पिताक रोकब आ हुनकर अपन डरक बीचक सत्य निर्णायक रूपेँ स्पष्ट नहि होइत अछि। बेटी इरा संग बातचीतमे सुधा पहिल बेर मानैत छथि जे हुनका ठीक-ठीक मोन नहि। ओ संगीतक कॉपी आ अभिलेखक पत्र अलग राखैत छथि। निर्णयक अधूरा इतिहासकेँ ओ आब एकटा निश्चित आरोपमे नहि बदलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०१३ · शीशामे सफेद केश

माधवी झा अपन माथमे पहिल सफेद केश देखि चौंकैत छथि। सासुरक परिवार हुनका प्रायः ‘छोटकी’, ‘माए’ वा दोसर सम्बन्धक नामसँ बजबैत अछि। बजारमे अपरिचित दुकानदार जखन हुनका ‘माधवी जी’ कहैत अछि, तखन अपन व्यक्तिगत नाम सुनब असाधारण अनुभव बनैत अछि। सफेद केशक प्रसंग एहि बुझाइकेँ गहींर करैत अछि जे शरीर आ व्यक्तित्व केवल परिवारक भूमिका सभसँ निर्धारित नहि होइत। ओ केश उखाड़ब वा रंगब नहि चाहैत छथि। पति अरुणक मुँहसँ अपन नाम सुनि हुनका अलग आनन्द भेटैत अछि। अन्तमे घरक दैनिक क्रम पूर्ववत् रहितो ‘माधवी’ नाम हुनका लेल फेर अपन स्वतन्त्र अस्तित्वक परिचय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०१४ · खाली कटोरी

नओ वर्षक अंशु केँ नील किनारवाली अपन कटोरी प्रिय अछि। ओहि कटोरीमे भात-दालि खैत ओकरा आरम्भमे केवल स्वाद आ पेट भरबाक चिन्ता होइत अछि। मुदा ठेकेदारसँ पिताक मजूरीक पैसा नहि पहुँचला पर घरमे चाउरक अभावक आशंका उत्पन्न होइत अछि। अंशु बुझय लगैत अछि जे दोकानमे चाउर उपलब्ध होएब आ ओकरा किनि सकब दू अलग बात अछि। घरमे बचल दानाक नाप, अगिला दिनक भोजन आ विद्यालयक गणितक घटाव ओकर मनमे नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। खाली कटोरी भोजन समाप्त होएबाक चिह्न मात्र नहि रहैत; ओ आनेवला दिनक अनिश्चितताक माप बनैत अछि। अंशु भूख आ अभावमे अन्तर करब सीखैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०१५ · खिड़की पर चिड़ै

प्रभा झाक घर-गृहस्थी निश्चित समय आ क्रम पर चलैत अछि। रसोइक खिड़कीक जालीक छोट उघड़ल कोन सिलबाक काज ठनैत-ठनैत टरैत रहैत अछि। एक चिड़ै खिड़की लग आबि ओहि कोनक संग खेलैत अछि आ प्रभाक दृष्टि अपन दिनचर्याक कठोर नियम दिस घुमबैत अछि। बेटी नैना द्वारा बनाओल कागजमे सेहो हुनकर परिचय प्रायः काज करनिहार ‘माए’क रूपमे अछि। प्रभा सोचैत छथि जे व्यवस्था आवश्यक अछि, मुदा ओकर प्रत्येक क्षणकेँ अनिवार्य नियम बना देब जरूरी नहि। ओ जाली आवश्यकते भरि सिलैत छथि, भोजन पाँच मिनट देरीसँ परसैत छथि आ राति एकटा साफ कटोरी सुखेबाक लेल छोड़ि दैत छथि। छोट-छोट एहि विरामसभमे हुनका अपन समयक नब अवकाश भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०१६ · एक शब्द गलत

आँखिक शल्यक्रियाक बाद पैघ बहिन सरोज वसुधाक घर रहय अबैत छथि। बचपनमे माता-पिताक मृत्यु बाद सरोजे वसुधाक पालन-पोषण आ पढ़ाइ सम्हारने छलीह। बातचीतमे सरोजक मुँहसँ ‘आधार’क बदला ‘उधार’ शब्द निकलिते वसुधा अपन सम्बन्धकेँ ऋण, त्याग आ हिसाबक दृष्टिसँ देखय लगैत छथि। पुरान शुल्क, सरोजक चूड़ी, पैसाक चिन्ता आ नव निर्भरताक प्रसंग फेर सामने अबैत अछि। धीरे-धीरे वसुधा बुझैत छथि जे प्रेमक भीतर भय, खर्च, आदति आ सहायता सभ रहि सकैत अछि; एक शब्द ओकर पूरा अर्थ नहि धऽ सकैत। ओ बहिनक प्रति अपराध-बोधक बदला हुनकर मानवीय कठिनाइकेँ बुझैत छथि। पुरान खर्चक लेखा रहैत अछि, मुदा ‘दीदी’ नामसँ नव हिसाब नहि खोलल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०१७ · नव चप्पल

उर्मिला झा पुरान घिसल चप्पल फेर सिलबेबाक लेल दोकान जाइत छथि, मुदा दुकानदार बतबैत अछि जे बामा तलवा एक कात बेसी घिसल अछि। नव चप्पल पहिरलापर हुनका अपन चाल, घरक सँकर गलियारा आ बासनक टोकरी सँ बचय लेल देह मोड़बाक आदति ध्यानमे अबैत अछि। ओ बुझैत छथि जे देह केवल बाट नहि चुनैत, रास्ताक बाधासभक अनुसार स्वयंकेँ बदलैत सेहो रहैत अछि। नव चप्पलमे चलनाइ हुनका धीरे-धीरे अपन गति पर ध्यान देब सिखबैत अछि। पुरान चप्पल पाछाँक काज लेल राखल जाइत अछि। अन्तमे ओ गलियारामे अपन देह टेढ़ करबाक बदला टोकरीकेँ सरका दैत छथि। छोट परिवर्तनसँ हुनकर चालक संग अपन ठाम बदलबाक सम्भावना खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०१८ · दुपहरियाक मौन

रविवारक भोजनक बाद घरक सभ लोक सुति जाइत अछि, मुदा सौम्या कैँ नींद नहि अबैत अछि। पढ़बाक प्रयास विफल भेलापर ओ घरक अलग-अलग ठाम घुमैत अन्ततः बैसारक खाली भुइँ पर पड़ि जाइत अछि। पंखाक आवाज, भुइँक ठंढक आ दीवानक नीचाँ पड़ल नीला बटनक बीच ओ एहन मौन अनुभव करैत अछि, जाहिमे ओकरा ककरो लेल किछु करबाक वा तुरन्त उत्तर देबाक आवश्यकता नहि। ई मौन ओकरा विद्रोही नहि बनबैत; केवल अपन इच्छा बुझबाक क्षण दैत अछि। साँझ घरक काज पूर्ववत् चलैत अछि, मुदा अगिला दिन पढ़ाइ सँ पहिने आराम करबाक बात ओ स्पष्ट कहि पबैत अछि। ‘किछु नहि’ सेहो ओकरा लेल अपन एक अर्थपूर्ण समय भऽ उठैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०१९ · टूटैत नख

विद्यालयक लिपिक विभाक दहिना हाथक तर्जनीक नखमे दरार पड़ैत अछि। लिखनाइ आ घरेलू काजमे असुविधा भेला पर ओ बामा हाथक उपयोग करय लगैत छथि। माएसँ बातचीतमे ज्ञात होइत अछि जे बचपनमे विभा बामा हाथसँ लिखैत छलीह, मुदा अभ्यास करबा कऽ हुनका दहिना हाथसँ लिखब सिखाओल गेल छल। साफ अक्षरक पुरान दक्षता आ बिसरल सहजताक बीच ओ अपन पहिचान पर विचार करैत छथि। ओ परिवारकेँ दोष नहि दैत छथि, बल्कि अभ्यास आ स्वभावक परस्पर सम्बन्ध बुझैत छथि। विद्यालयमे एक नव बच्चा बामा हाथसँ नाम लिखैत अछि आ ओकर पिता ओकरा रोकैत नहि। विभा अपन दुनू हाथक अलग-अलग काज देखैत नव दृष्टिसँ पाँजि लिखय लगैत छथि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०२० · फल काटबाक गन्ध

अनिरुद्ध झा दोहाक श्रमिक-आवासमे साथीसभसँ अनन्नास काटब सीखैत छथि। घरमे रहैत फल प्रायः माए वा पत्नी नीलिमा काटि दैत छलीह, मुदा परदेसमे साझाक रसोइ, श्रमक थकान आ मित्रताक बीच ई छोट काज हुनकर अपन अभ्यास बनैत अछि। गाम घुरलापर अनन्नासक गन्ध हुनका पैतृक आँगन नहि, दोहाक साथी, पंखा आ साझा थाल याद करबैत अछि। हुनका बुझाइत अछि जे घर केवल जन्मस्थान नहि; संग रहनिहार लोक, श्रम, जिम्मेदारी आ पुनरावृत्त छोट काजसँ सेहो बनैत अछि। माए, नीलिमा आ ईशानक बीच फल काटैत ओ तीन नहि, चारि ढेरी बनबैत छथि। अन्तिम हिस्सा पड़ोसक बच्चाक लेल रहैत अछि, आ साझा भोजन हुनकर अनेक ठामक स्मृतिकेँ जोड़ि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०२१ · पंखाक नीचे

ज्वरक कारण बिछान पर पड़ल जयनारायण मिश्र दिन भरि छतक पंखाक एक पाँख पर लागल नील दाग गनैत छथि। प्रत्येक चक्कर एक्के जेकाँ बुझाइत अछि आ दिनसभक अन्तर मेटायल लगैत अछि। मुदा पत्नी शारदा हुनका याद करबैत छथि जे प्रतिदिनक औषधि, भोजन, सहाराक आवश्यकता आ स्वास्थ्यक छोट प्रगति अलग-अलग अछि। पुत्र नचिकेताक आबबाक प्रतीक्षा सेहो पंखाक समान घुमावमे नब अर्थ जोड़ैत अछि। स्वास्थ्य सुधरला पर ओ ओसारा धरि चलैत छथि आ बाहरक हवा अनुभव करैत छथि। फेर बिछान पर लौटि पंखा देखैत छथि, मुदा आब प्रत्येक चक्कर गनबाक बाध्यता नहि रहैत अछि; पुनरावृत्तिक भीतर परिवर्तन हुनका देखाय लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०२२ · अधलिखल नाम

बरखासँ बचय नगर वाचनालयमे घुसल रेणुका मिश्र सदस्यता-पत्र भरबाक समय अनायास पहिने अपन बेटी अदितिक नाम लिखय लगैत छथि। घरमे बरखों धरि बेटीसभक विद्यालय, प्रतियोगिता आ आवेदन भरबाक अभ्यास हुनकर हाथक गति बनि गेल अछि। अधलिखल ‘अदि’ काटि अपन पूरा नाम लिखैत ओ अपन व्यक्तिगत रुचि दिस फेर ध्यान दैत छथि। बेटीकेँ अपन कागज स्वयं सँभारेब सिखाओलाक बादो रेणुकाक हाथ पुरान आदति छोड़ि नहि सकल छल। ओ पुरान आवेदन आ हस्ताक्षरक भिन्न अर्थ सोचैत छथि। अन्तमे वाचनालयमे अपन नामसँ सदस्य बनि अपरिचित लेखकक पुस्तक चुनैत छथि। काटल नामवला पन्ना हुनका लेल चूकसँ बेसी जीवनक पुरान सम्बन्धक चिन्ह रहैत अछि।

कथा ०२३ · दीप मिझेबाक पहिने

पैतृक घरक बँटबाराक कागज पर खींचल रेखा आँगनमे चूनाक रेखा बनि उतरैत अछि। नरेश आ महेशक परिवार आर्थिक स्पष्टताक लेल सहमत छथि, मुदा कुसुमकेँ धीरे-धीरे बुझाइत अछि जे रेखा केवल भूमि नहि, साझा बैठकी, बच्चाक पढ़ाइ आ रातिक दीपक उजास सेहो बाँटि रहल अछि। देबालि बनेलापर दुनू भागक आवागमन सीमित होइत अछि। कुसुम आ परिजन एक-दोसराक आवश्यकताक किछु बाट खुलल रखबाक उपाय खोजैत छथि। नीचाँक तीन ईंटक खाली भागसँ पानि बही सकैत अछि, देबालिक माथ पर तन्वीक पुस्तक राखल जा सकैत अछि। दीप मिझिते बँटल घर अन्हारमे रहैत अछि, मुदा साझा जीवनक किछु सम्बन्ध बंद नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०२४ · लाल धूर

नयन छत पर नील पतंग उड़ा रहल अछि, जखन नीचाँ ओकर बाबू नन्दकिशोर आ रमानन्दक बीच खेतक सीमा नापबाक विवाद बढ़ैत अछि। अमीनक डोरी आ लोकक झगड़ासँ लाल धूर उठैत अछि, जाहिमे पतंगक डोरी उलझि जाइत अछि। नयन अपन पतंग खोजय खेत उतरैत अछि; ओकरा भूमि-अधिकारक अलग-अलग दाबी पूर्णतः बुझाइत नहि। पतंगक डोरी खेतक कतेको भाग पार कऽ ओकरा फाटल नील कागज धरि पहुँचा दैत अछि। पतंग टूटल अछि, मुदा बाँसक एक काँटी आ डोरी बचल अछि। घर घुरि नयन नव पतंग बनेबाक लेल डोरीमे गाँठ दैत अछि। धूरक रंग ओहि दिनक विवादक अनिश्चित चिन्ह बनि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०२५ · तीन मिनटक जुलूस

शिवमठक सँकर गलीमे एक जुलूस मात्र तीन मिनट लेल प्रवेश करैत अछि, मुदा ओकर धक्का आ भीड़सँ दूध खसैत, सकीना चाचीक अमरूद कुचलाइत आ नलक जोड़ टूटैत अछि। रामसेवक बढ़ई, नसीम, सकीना आ झिलमिल गलीमे भऽ गेल हानिक अलग-अलग हिसाब सम्हारैत छथि। एक बालकक छूटल चप्पल आ गलीमे रहि गेल कागज घटना कैँ देर धरि उपस्थित रखैत अछि। झिलमिल घड़ीक अन्तर बतबैत अछि—जुलूस तीन मिनटमे गेल, ओकर बादक काज बहुत देर चलैत रहल। साँझ नल ठीक होइत अछि, मुदा दूधक कमी, कुचल अमरूद, अनाथ चप्पल आ दाग देखबैत अछि जे अल्पकालिक राजनीतिक प्रदर्शनक असर लोकजीवनमे कतबा काल रहि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०२६ · फाटल ढोल

सोनबरसाक फागुनी उत्सवमे पुरान ढोल गणेशी पासवानक जिम्मामे अछि। बेटा मोहन ढोलक कमजोर चाम बदलबाक आग्रह करैत अछि, मुदा गणेशी पुरान बाजाक स्वर बचाबय चाहैत छथि। उत्सवमे रस्सी आ अनेक हाथक खिंचावक बीच चाम फाटि जाइत अछि। तुरन्त अलग-अलग समूह एक-दोसरापर दोष रखय लगैत अछि। गणेशी ढोल वापस लऽ जाइत छथि; बादमे फाटल चाम सिलि विद्यालयमे बिना दोषीक नामक टाँगल जाइत अछि। बच्चासभ ओकर घटना पर अलग-अलग प्रश्न करैत अछि। नव चामक ढोल फेर बजैत अछि, मुदा सिलल पुरान चाम स्मरण करबैत अछि जे फाटनाइ अचानक होइतो ओकर पाछाँ पुरान तनाब जमा रहैत अछि।

कथा ०२७ · रातिक ट्रक

बाढ़िक राति राहतसामग्री लऽ चलैत ट्रक पर बैसल प्रत्येक यात्रीक चिन्ता अलग अछि। चालक सरोज सड़कक कटानसँ डरैत अछि; धनौती काकी घरमे छूटल बकरी लेल बेचैन छथि; रंजना कागज आ स्याही बचबैत अछि; दोसर लोक परिवार, कमाइ आ राहतक हिसाब सम्हारैत अछि। ट्रकक चक्का धँसबाक भय भेला पर किछु बोरा उतारल जाइत अछि आ बुधन बाँससँ बाट टटोलैत आगाँ बढ़ैत अछि। सभक सहयोगसँ ट्रक कटान पार करैत अछि। बरहमपुरमे राहत बाँटल जाइत अछि, किछु बोरा अगिला चक्कर लेल रहि जाइत अछि। यात्रा देखबैत अछि जे एक्के आपदाक भीतर अनेक निजी भय रहैत अछि, मुदा सुरक्षित बाट सभकेँ मिलि बनाबय पड़ैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०२८ · राख पर फूल

आगिसँ धरमपुरक रामबाबू साहक घर झरि गेल अछि। सात वर्षक पोता नीरज जळल आँगनमे अपन फूटल गमला आ माटि खोजैत रहैत अछि। तेजनाथ काकाक सहायता सँ बच्चासभ राख हटबैत, माटि उलटैत, खाद मिलबैत आ बीज रोपैत अछि। तेजनाथ स्पष्ट करैत छथि जे केवल राख पड़लासँ फूल नहि होइत; परिश्रम, उचित माटि आ समय जरूरी अछि। नव घर बनबाक संग क्यारीमे गेंदा आ अनजान लाल फूल खिलैत अछि। दादीक पुरान बीजक ठाम उगल पौधाक पहिचान निश्चित नहि रहितो नीरज ओकरा उखाड़ैत नहि अछि। अग्निक नष्टकारी स्मृतिक बगलमे सावधानीसँ जीवन फेर पनपैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०२९ · लोहारक हथौड़ा

लोहार जगदीशक बेटी माधवी बचपनसँ भट्ठी, धौंकनी आ हथौड़ाक काज सीखने अछि। विवाह निश्चित भेलापर वरपक्षक अपेक्षा आ सम्भावित मोटरसाइकिलक माँगक प्रसंग परिवारमे तनाव अनैत अछि। वर राघव स्वयं लोहारखानामे पहुँचि स्पष्ट करैत अछि जे ओकरा एहन माँग नहि चाही। जगदीश ओकरा गरम लोहा पकड़बाक चिमटा दऽ अपन ढंगसँ परखैत छथि। विदाइ समय ओ बेटीकेँ ओकर पकड़क अनुसार बनाओल एक छोट हथौड़ा दैत छथि। माधवी पिताक पुरान वाक्य ‘पकड़ सीधा राखब’ स्मरण कऽ नव घर जाइत अछि। ओतय खिड़कीक ढीला कील देखिते बढ़ईक प्रतीक्षा करबाक बदला स्वयं हथौड़ा उठबैत अछि। ओ अपन अर्जित कौशल संग लऽ गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०३० · लालटेनक शीशा

बसहिया बजारमे किराना दुकानदार सुरेश साहु आ सिलाइ करनिहार रहीम अंसारीक बीच छोट-छोट तर्क रहितो बरखोंक पड़ोसी सम्बन्ध अछि। बिजली गेल राति बजारमे दंगाक अफवाह फैलैत अछि आ लोक डरि जाइत अछि। वास्तवमे अफवाहक धक्कामे ठेला उलटैत, एक वृद्ध खसैत आ किछु क्षति होइत अछि। रहीमक लालटेन बचबैत सुरेशक हाथ जरैत अछि आ पहिनेसँ दरारवाला शीशामे रेखा बढ़ैत अछि। बिहान पता चलैत अछि जे पैघ आगि वा दंगा नहि भेल, मुदा 'किछुओ नहि भेल' कहबो असत्य होएत। रहीम शीशा तत्काल नहि बदलैत छथि। साँझ लालटेनक दरारसँ निकलल उजास दुनू दोकान पर पड़ैत अछि—अफवाह, भय आ पारस्परिक साहचर्यक साझा स्मृतिसहित।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०३१ · पुलक नीचे

नव पुलक उद्घाटनक दिन ऊपर पताका, मंच आ भाषण चलैत अछि, मुदा पुलक सातम खम्भाक नीचाँ विमला, बिसेसर आ हुनकर बच्चासभ तिरपालक घरमे रहैत छथि। बिसेसर स्वयं पुल बनेबाक मजूरी कएने छथि, मुदा निर्माणक कारण उजड़ल परिवारकेँ वचन देल पुनर्वास नहि भेटल अछि। बेटी काजल परीक्षाक तैयारी करैत पुल बनेनिहार श्रमिकक नाम आ अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। उद्घाटनक लाल फीताक टुकड़ा छोटूक खेलौनाक गाड़ीमे बन्हि जाइत अछि। बिसेसर अपन नाम ठीक सँ दर्ज करय चाहैत छथि। राति पुल पर गाड़ी चलैत अछि आ नीचाँ पुरान चौखटा लगा घरक आभास बनाओल जाइत अछि। पुल किनार जोड़ैत अछि, मुदा ओकर नीचाँक लोकक जीवनक प्रश्न अधूरा रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०३२ · कागज आ लाठी

सोनबरसामे हरिनारायणक खेत आ रामविलास पासवानक विधवा सरिताकेँ देल जमीनक बीच दखल-दिहानीक विवाद भड़कैत अछि। सरकारी आदेश, पुरान पर्चा, मेड़, लाठी आ वर्तमान जोताई अलग-अलग दावा प्रस्तुत करैत अछि। पुरान विद्यालयमे सुरक्षित नक्शा आ भरि गेल पइनक चिन्ह भेटलापर पुनः नाप होइत अछि। स्पष्ट होइत अछि जे सरिताक अधिकारवाली जमीन धानक खेत नहि, दक्षिणक परती पट्टीमे पड़ैत अछि, जतय गोहालक एक भाग हटेबाक अछि। महेश गोहाल हटबैत अछि; सरिता ओकर अपमान देखबाक बदला दूर रहबाक बात कहैत छथि। अन्तमे जमीनक चिन्ह दुरुस्त होइत अछि। कागजक अधिकार जमीन पर न्यायसंगत ढंगसँ उतारबाक लेल परस्पर समझ आवश्यक सिद्ध होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०३३ · कटहरक गन्ध

बस-स्टैण्डक छोट झगड़ाक अफवाह सोनबरसाक बजारमे सामुदायिक भय बना दैत अछि। किराना दुकानदार महेन्द्र साहु आ पड़ोसी नसीम मियाँ सेहो सावधान भऽ जाइत छथि। राति नसीमक आँगन दिस आवाज उठिते लोक शंका करैत अछि, मुदा महेन्द्र कटहरक गन्ध सँ बुझैत छथि जे पाकल फल वा डालिक कारण हलचल भऽ सकैत अछि। लोक मिलि खसल डालि हटबैत अछि। भोरमे पता चलैत अछि जे विवादमे जोड़ल धर्म आ जातिक कथासभ निराधार छल। नसीमक परिवार बचल कटहर महेन्द्रक घर पठबैत अछि, आ युवक बिनोद दू घरक बीच सहायता करैत अछि। गन्ध ओही रहैत अछि, मुदा भय घटला पर ओकर अर्थ बदलि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०३४ · पाँच गोलीक अफवाह

पुरान डाकघरक गलीमे दू-तीन तेज आवाज सुनिते छोटू ‘पाँच गोली’ कहि दौड़ैत अछि। कियो संख्या छओ करैत अछि, कियो सात; अफवाह बजारमे भय, बन्द दोकान आ भगदड़ अनैत अछि। प्रत्यक्षदर्शी कहौनिहार लोक वास्तवमे आवाज सुनने छथि, गोली देखल नहि। पुलिस कें गोलीक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि भेटैत; रूपान्तरकक फ्यूज आ विवाह-घरक पटाखाक घटना सामने अबैत अछि। तइयो अफवाह अलग-अलग संख्यामे फैलैत रहैत अछि। दूधक बोतल फुटि जाएबाक चिन्ता करनिहार पवन आ औषधि किननिहार लोकक कठिनाइ एहि भयक वास्तविक परिणाम अछि। भोरमे देवाल पर लिखल अंक मेटाइत अछि, मुदा स्मृतिमे अलग-अलग ‘गोली’ बचले रहैत अछि।

कथा ०३५ · फाटल झण्डा

पुरान बजारमे शान्ति देवीक सिलाइ-दोकानमे राजनीतिक जुलूसक दिन अलग-अलग झण्डा मरम्मतिक लेल अबैत अछि। फाटल कपड़ाक संग खिंचाव, जंग लागल तार आ रंगक राजनीतिक पहचान सेहो अबैत अछि। शान्ति देवी एक पक्षक झण्डा नहि, जे कपड़ा पहिने फाटल अछि ओकर मरम्मत करैत छथि। बेटी रेखा देखैत अछि जे सुईक लेल पहिने फाटल ठाम महत्त्वपूर्ण अछि। युवकसभ पैबन्द देखाइबाक चिन्ता करैत अछि, मुदा टिकाउ सिलाइए असल काज अछि। साँझ झण्डाक शोर थमिते विद्यालयक कुरती, एप्रन आ धानक बोरा फेर महत्त्व पबैत अछि। डिब्बामे अलग-अलग रंगक उपयोगी धागा एकसंग राखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०३६ · बूटक निशान

साइकिल मरम्मत करनिहार हरिनाथ साहक घरमे पुलिस तामाक तारक चोरीक जाँच करय पहुँचैत अछि। घरक वस्तु उलट-पुलट होइत अछि, कादोमे सिपाहीक बूटक निशान पड़ैत अछि आ तुलसी लग रोपल गेंदा टूटि जाइत अछि। बारह वर्षक बेटी रेवतीक गणितक कॉपी पर सेहो बूटक छाप पड़ैत अछि। बादमे असल चोर पकड़ाइत अछि आ हरिनाथक नाम निर्दोष सिद्ध होइत अछि, मुदा लोकक आशंका आ परिवारक अपमान तुरन्त नहि मेटाइत। रेवती कादोक छापक चारूकात पेंसिलसँ रेखा खींचि सुरक्षित रखैत अछि। ओकर प्रश्न अछि—कियो फेर कहत जे किछुओ नहि भेल तखन? बरखा बाहरी निशान मेटा दैत अछि, मुदा कॉपीमे घटना नापल रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०३७ · रातिक नाव

बाढ़िक राति जगरनाथ मल्लाह अपन थाकल नाव फेर निकालैत छथि, कारण घरमे फँसल गर्भवती सुनीताकेँ तत्काल सुरक्षित ठाम पहुँचेनाइ जरूरी अछि। नावमे बैसल लोकक बीच हरिनारायणक परिवारसँ सहायता-पुकार उठैत अछि, आ नदीक तेज धारमे ककरा पहिने बचाओल जाए से कठिन निर्णय बनैत अछि। सुनीताकेँ मचान पर पहुँचेबाक बाद नाव संकेत दैत हरिनारायणक घर दिस मुड़ैत अछि आ ज्वरग्रस्त बच्चासहित परिवारकेँ बचबैत अछि। भोरमे दोसर फँसल लोकक सहायता सेहो होइत अछि। बादमे गामक लोक नाविकक निर्णय पर अलग-अलग राय दैत अछि, मुदा जगरनाथ जानैत छथि जे रातिक अन्हारमे प्रत्येक निर्णय उपलब्ध जगह, भार, धार आ समयक आधार पर बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०३८ · काँचक टुकड़ा

रातिक दुर्घटनामे हरिनाथक चश्मा-दोकानक अगिला शीशा टूटि जाइत अछि। चालकक उत्तरदायित्व, मरम्मतिक खर्च आ टूटल काँचक सुरक्षा महत्त्वपूर्ण प्रश्न बनैत अछि। आठ वर्षक बेटी मीरा पुरान मोट काँचक एक घिसायल टुकड़ामे धूप पड़िते रंगक पातर पट्टी देखैत अछि। नव शीशा लगैत अछि, क्षतिक हिसाब अलग सँ रखल जाइत अछि, मुदा सुरक्षित काँचक टुकड़ा अध्ययन लेल बचाओल जाइत अछि। मीरा कतेको दिन धूपक सही कोणक प्रतीक्षा करैत अछि। पिता बुझबैत छथि जे किछु टूटल वस्तु फेंकय पड़ैत, किछु ठीक होइत आ किछुक काज बदलैत अछि। पुरान काँच दुर्घटनाक महिमामण्डन नहि, सावधानी आ प्रकाशक अनुभवक साधन बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०३९ · राख भेल खेत

रातिक आगिमे रामलोचन यादवक गेहूँक फसल राख भऽ जाइत अछि। विनाशक भोर ओ सभसँ पहिने खेतक पुरान सीमा खोजैत छथि, कारण राखक एकरूप परतमे मेड़ आ नालीक चिन्ह मेटा गेल अछि। पड़ोसी किसानसभक संग चिन्ह स्थापित कऽ सरकारी जाँच कराओल जाइत अछि। नापमे जतेक चूक भेटैत अछि, रामलोचन ओकरा तुरन्त ठीक करैत छथि। क्षतिपूर्तिक आरम्भिक लेखामे आठ कट्ठा घटि जाए पर ओ फेर संशोधन करबबैत छथि। क्षतिपूर्ति पूरा हानि नहि भरैत, मुदा नब बीज आ खाद जुटेबामे सहायता करैत अछि। राख माटिमे पलटि नब बुआइ शुरू होइत अछि; सीमा जोगेनाइ पुनर्निर्माणक आधार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०४० · बन्दूक बिना पहरा

सहकारी बीज-भंडारक बूढ़ पहरेदार जगत साहु लग बन्दूक नहि, पित्तरिक सीटी, चाबी आ नस्ती बुझबाक अभ्यास अछि। राति किछु लोक पुरान कागज देखबैत बीजक बोरा बाहर निकालय चाहैत अछि। जगत क्रमांकक असंगति पकड़ि लैत छथि आ असामान्य ढंगसँ सीटी बजा पड़ोसक पहरेदारकेँ बजा लैत छथि। अगिला जाँचमे अनियमितता सामने अबैत अछि। समिति हुनका बन्दूक देबाक बात करैत अछि, मुदा ओ बल्ब, नाली आ दू अधिकृत हस्ताक्षरक नियम माँगैत छथि। जगतक पहरा भय नकारबाक नहि, सामुदायिक सतर्कता आ जाँचक आधार पर उत्तरदायित्व निभेबाक उदाहरण अछि। राति सीटीक प्रत्युत्तर हुनकर सुरक्षा-व्यवस्थाक वास्तविक भरोसा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०४१ · धुआँक बीच गीत

गामक पुरान धान-गोदाममे आगि लगला पर धुआँक बीच लोक बाल्टी लऽ अव्यवस्थित दौड़य लगैत अछि। सबिता देवी रोपनीक परिचित धुन गुनगुना कऽ बाल्टीक पाँतिक हाथसभकेँ एक चालमे लबैत छथि। गोदाममे फँसल छोटन केँ बचाबैत समय सेहो ओही धुनसँ ओकरा बाहरक लोकक उपस्थिति सुनबैत छथि। दिनेश आ जावेद खिड़कीक बाँस काटि छोटन केँ निकालैत छथि। भोरमे हानिक हिसाब, बीज बचेनाइ आ आगिक कारणक जाँच होइत अछि। सबिता स्पष्ट करैत छथि जे गीत आगि नहि बुझौलक, पानि आ लोकक श्रम बुझौलक; धुन केवल सहयोगक गति बनौलक। किछु दिन बाद खेतमे ओही धुन पुनः अपन सामान्य शब्दक संग सुनाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०४२ · एक मिनटक बिजली

जिलाक पुरान अस्पतालमे मुसलाधार बरखाक बीच बिजली गेलापर रोगी आ कर्मचारी अन्हारमे परेशान होइत छथि। सेविका मालती हाथक दीप आ नियमसँ व्यवस्था सम्हारैत छथि। जनित्र केवल एक मिनट लेल चलाओल जाइत अछि, जाहिमे सभ अपन खाट आ प्रियजन देखबैत छथि। फेर अन्हार होइतहि एक रोगीक खाट खाली देखाइत अछि। खोजला पर रामचरित मण्डल पानि पीबय निकलला समय खसि पड़ल भेटैत छथि। हुनका सुरक्षित लौटेबाक बाद मालती नियमित नाम पुकारि रोगी गनबाक पद्धति लागू करैत छथि। एक मिनटक उजास केवल राहत नहि, अन्हारमे छिपल सुरक्षा-कमीक प्रमाण बनैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०४३ · रक्त नहि, सिंदूर

मन्दिर-पथक हाटमे साइकिल बाँसक रैकसँ टकराएलापर मालती देवीक सिंदूरक पुड़िया फाटि पटरी लाल कऽ दैत अछि। बेटा रतनक कुहिन्नीमे मामूली खरोंच सेहो लगैत अछि। भीड़ लाल रंग केँ रक्त बुझि मारपीटक अफवाह फैलाबय लगैत अछि। घटनाकेँ देखनिहार आ केवल सुननिहार लोक अलग-अलग बात कहैत छथि। अन्ततः स्पष्ट होइत अछि जे रक्त दू बूँद मात्र छल, अधिकांश लालिमा सिंदूरक छल। साइकिलवाला क्षमा माँगैत अछि आ रैक ठीक करबाक बात होइत अछि। अगिला दिनो अफवाह सुनाइ पड़ला पर रतन ठोस तथ्यसँ सुधार करैत अछि। छोट दुर्घटनाक अर्थ शब्द बदललासँ कतबा पैघ भऽ सकैत अछि, से कथा देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०४४ · हमर महान व्यापार

पचरुखीक बुधहटियामे कथावाचक अपन ‘महान व्यापार’ आरम्भ करैत छथि—ग्राहकक गठरी नम्बर देबैत एक रुपैआमे सुरक्षित रखनाइ। पत्नी सरोजा पहिनेसँ हिसाबक कमजोरी देखैत छथि, मुदा कथावाचक अपन योजनाकेँ नवाचार मानैत छथि। बरखामे पत्तर भीजैत, नम्बर मेटाइत, गठरी गड़बड़ाइत आ एक सुराही हराइत अछि। क्षतिपूर्ति आ तिरपालक खर्चक बाद लाभक दाबी हास्यास्पद बनैत अछि। व्यापार बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा बजारक लोक अपन गठरी पर अलग चिन्ह लगाबय लगैत अछि। कथावाचक घाटाकेँ विचारक विजय घोषित करैत छथि; सरोजाक ठोस हिसाब आ हुनकर महानताक भाषणक अन्तर सँ व्यंग्य उत्पन्न होइत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०४५ · तीन बेरक बराती

अमहीमे चचेरी बहिनक विवाहमे जाए निकलल कथावाचक लाल शामियाना, पोखरि आ ढोल केँ दिशा-चिन्ह मानि बारम्बार बेठीक बराती दलमे पहुँचि जाइत छथि। बेलाही आ सोनबरसाक विवाहमे अपरिचित लोक हुनका अपन सम्बन्धी बुझि स्वागत करैत अछि; ओ परिस्थितिक संग परिचय बदलैत, भोजन आ बाजाक प्रसंगमे उलझैत छथि। अन्ततः ओ सीधे गाम आ कन्याक नाम पूछबाक महत्त्व बुझैत छथि। सही विवाहमे पहुँचला पर पहिल दू दलक परिचित लोक सेहो उपस्थित भेटैत छथि आ सभ हुनकर कथा सुनि हँसैत अछि। कथावाचक कहैत छथि जे विवाहक एक्के रंग-रूप आ सामान्य नामक भरोसापर मार्ग नहि चुनबाक चाही; अपना सम्बन्धक स्पष्ट पहचान आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०४६ · उधारक दार्शनिक

गोपाल साह दोकान पर ‘उधार बन्द’क पट्टी टाँगि उधार-विरोधी एक सय सिद्धान्त लिखबैत छथि। मुदा विपन्न ग्राहककेँ सामान दैत ओ उधारकेँ ‘सामाजिक परिस्थिति’ कहि अपन पाँजिमे लिखैत रहैत छथि। बेटी कुसुम हुनकर वाक्पटुता आ वास्तविक बकायाक बीच विरोध देखबैत अछि। थोक-विक्रेताक भुगतान अटकला पर गोपाल साह ग्राहकसभक हिसाब साफ करैत छथि आ जतेक सम्भव उधार वसूल करैत छथि। अन्तिम सिद्धान्त उधार छिपेबाक बदला स्पष्ट लिखबाक होइत अछि। पट्टी बदलि ‘उधारक हिसाब साफ राखू’ बनैत अछि। तथापि गोपाल साह ज्ञानक दाम फेर बादमे लेबाक बात कहैत छथि—हुनकर दर्शन अपन हास्य सहित जीवित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०४७ · पंचायतक विशेषज्ञ

बरदाहामे विद्यालयक सामने पानि जमबाक समस्या दूर करबाक लेल पंचायत नाली बनेबाक बैठक करैत अछि। बटेसर काका बिना मापजोख हर विषयक विशेषज्ञ बनि सलाह दैत छथि। मिस्त्री रघुनन्दन वास्तविक ढाल नापैत अछि; एही बीच बटेसरक एक पुरान नलीक स्मृति उपयोगी सिद्ध होइत अछि। बादमे विद्यालयक रसोइया मालती देवी राख फेकबाक पुरान गड्ढाक स्थान बतबैत छथि, जाहिसँ नालीक सुरक्षित मोड़ निकलैत अछि। निर्माण सफल होइत अछि, मुदा बटेसर अपन पोथीमे सभकेँ ‘विशेषज्ञता’क प्रमाण बनबैत छथि। अगिला पंचायतमे बकरीक टीकाक विषय पर सेहो ओ निष्पक्ष विशेषज्ञ बनि उपस्थित भऽ जाइत छथि। कथा अनुभवक वास्तविक उपयोग आ सर्वज्ञताक दम्भक अन्तर पर व्यंग्य करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०४८ · हमर अमीर मामा

परिवारक दृष्टिमे नन्दकिशोर मामा बहुत अमीर छथि, कारण ओ पैघ बात करैत, उदार दिस पड़ैत आ मोट हिसाब-पाँजि रखैत छथि। नानीक चुबैत छप्परक मरम्मतिक समय हुनकर वास्तविक पूँजी आ देनदारीक भेद खुलैत अछि। कथावाचक बुझैत छथि जे मोट पाँजि सदिखन समृद्धिक नहि, अधूरा हिसाबक चिह्न सेहो होइत अछि। तथापि मामा मरम्मतिक काजमे बचत, सामग्रीक पुनः उपयोग आ व्यवहारिक समझ देखबैत छथि। छप्पर बनेलाक बाद ओ अपन निजी देनदारी परिवारक सामने पढ़ैत छथि आ छोट-छोट भुगतान शुरू करैत छथि। परिवार 'अमीर मामा' कहनाइ नहि छोड़ैत, मुदा आब धनक संग विश्वास, ऋण आ सम्बन्धक विडम्बना सेहो बुझैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०४९ · हरायल बकरीक बयान

बुधनी काकीक चिन्हार बकरी धौरी खूँटासँ हराइतहि गामक लोक चोरी, सियार आ व्यापारीक षड्यन्त्रक अलग-अलग सिद्धान्त देबय लगैत अछि। बालिका मालती जमीन पर झरल चोकरक कण देखि रास्ताक संकेत पकड़ैत अछि। ओहि चिन्हक अनुसरण कऽ पता चलैत अछि जे ढीला खूँटा घिसटबैत बकरी पुरान तेलघरमे जा फँसल अछि। बकरी सुरक्षित भेटलापर सेहो सब ‘विशेषज्ञ’ अपन अनुमानकेँ सही सिद्ध करय चाहैत छथि। पंचायतक लिखल बयानमे अन्ततः केवल प्रत्यक्ष भौतिक चिन्ह आ पशुक भेटबाक बात दर्ज होइत अछि। मालतीक प्रश्न—‘चोकर कतय झरल अछि?’—बिना प्रमाणक निश्चित दावीक विरुद्ध गामक नव कसौटी बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०५० · मोबाइल गुरु

सेवानिवृत्त डाकिया रघुनाथ बाबू गामक वृद्ध लोककेँ मोबाइलक सुरक्षित प्रयोग सिखबैत छथि। हुनकर नियम अछि—पहिने पढ़ू, फेर दबाउ; अनचिन्हार सन्देश आ गुप्त अंकक प्रति सावधान रहू। एक दिन स्वयं गुरु अपन यन्त्रक कूट-अंक बिसरि जाइत छथि। विद्यार्थीसभ हुनका उपहास करबाक बदला पुरान नियम याद करबैत छथि। रघुनाथक डाक-बस्तामे सुरक्षित पुनर्प्रवेशक विवरण भेटैत अछि, जाहिसँ अधिकृत सहायता लऽ यन्त्र फेर खोलल जाइत अछि। अगिला पाठमे गुरु बिसरब स्वीकार करबाक महत्त्व सिखबैत छथि। रसीदा खाला हुनकेँ गुप्त अंक नहि देखेबाक नियम स्मरण करबैत छथि। गुरु आ विद्यार्थी दुनू दिस सीखबाक सम्बन्ध बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०५१ · विवाहक बजट

कुमुदक विवाहमे अनावश्यक खर्च रोकबाक लेल पिता नवलकिशोर झा सत्तर हजार रुपैयाक सीमा तय करैत छथि। भोजनक संख्या, मड़बा, साज-सजावट आ मिठाइक मद पर मामूली निर्णय लेल सेहो बेराबेरी पारिवारिक बैठक होइत अछि। मामा गोविन्द खर्च-पाँजि सम्हारैत छथि, फूलो काकी परम्पराक पक्ष रखैत छथि आ रसोइया नथुनी महाराज लोकक वास्तविक संख्या अनुसार भोजन बनबयक सलाह दैत छथि। अन्ततः भोजमे बर्बादी कम होइत अछि आ विवाह निर्धारित सीमाक भीतर सम्पन्न होइत अछि। मुदा हिसाब जोड़बाक अन्तिम बेर गोविन्द बैठकसभक चाह, समोसा, जलेबी आ पुआ-परीक्षणक खर्च सामने अनैत छथि। नवविवाहिता कुमुद पाँजिमे लिखि दैत अछि जे अगिला विवाहक बैठक भोजन कएलाक बाद राखल जाए। खर्च घटेबाक चर्चा स्वयं एकटा अतिरिक्त भोज बनि गेल छल।

कथा ०५२ · महान कविक पड़ोसी

कथावाचक अपन पड़ोसी बटुकनाथ झाक लम्बा कविता-पाठसँ त्रस्त छथि। बटुकनाथ अपना केँ महान कवि मानैत छथि आ दू पाँति सुनएबाक बहानासँ घण्टों पाठ करैत छथि। कथावाचक हुनका सँ बचबाक लेल गोहाल चलि जाइत छथि, मुदा कवि ओतहु पहुँचि जाइत छथि। अन्ततः श्रोता हुनकर पाठ सुनैत मटर छीलब, अरहरिमे कंकड़ चुनब आ आन घरेलू काज करब शुरू करैत छथि। पुस्तकालयक साहित्य-साँझमे कथावाचक कविकेँ दू पन्नामे सीमित रहबाक स्पष्ट अनुरोध करैत छथि। बटुकनाथ छोट, रम्य कविता सुनबैत छथि आ श्रोतासँ प्रशंसा पबैत छथि। कथावाचक अनुभव करैत छथि जे लम्बा पाठसँ बचबाक चेष्टाक बावजूद कविक कतेको पाँति हुनकर स्मृतिमे बसि गेल अछि। व्यंग्य रचनाकारक अहंकारक संग श्रवण आ साहित्यक अप्रत्याशित सम्बन्ध देखबैत अछि।

कथा ०५३ · किरायाक विद्वान

सेवानिवृत्त लिपिक गोपीकान्त झा अपना केँ हर विषयक विशेषज्ञ बुझैत छथि। हुनकर घरमे रहि स्थानीय विवाहगीत आ घरेलू श्रम पर शोध करैत नीलाम्बर झा केँ ओ बेराबेरी सलाह दैत छथि आ शोधमे अपन नाम जोड़बाक संकेत करैत छथि। हुनकर अनेक दाबी हास्यास्पद अछि, मुदा एक दिन माएक पुरान स्मृतिसँ सुनाओल ‘सातम खूँटा’ सम्बन्धी बात नीलाम्बरकेँ महत्त्वपूर्ण शोध-संकेत दैत अछि। नीलाम्बर अन्य वृद्धासभसँ ओकर स्वतंत्र पुष्टि करैत छथि आ मौखिक परीक्षामे प्रमाणसहित ओकर विवेचन करैत छथि। उपाधिक कागज पर शोधार्थीक नाम मात्र रहैत अछि, मुदा आभार-खण्डमे गोपीकान्तक सहयोग दर्ज होइत अछि। ओ एहि पाँतिक प्रति चौखटामे सजबैत छथि आ नव किरायादारसभकेँ निःशुल्क शोध-सलाह देबाक घोषणा करैत छथि; कोठरीक किराया मुदा यथावत् रहैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०५४ · गामक मौसम विज्ञानी

सोनबरसाक हरिनारायण काका चींटी, बगुला, पात आ पवन देखि मौसम बतबैत छथि, मुदा हुनकर भविष्यवाणी बहुधा गलत निकलैत अछि। तइयो गामक लोक हुनकासँ रोज मौसम पूछैत अछि। अनिरुद्ध आ मालती अनुमान, वास्तविक मौसम आ ओकर आधार पर कएल गेल काजक अलग-अलग हिसाब राखब शुरू करैत छथि। पता चलैत अछि जे काकाक गलत अनुमान सुनियोकऽ लोक अन्नक बोरा सुरक्षित करैत, नाली साफ करैत आ घरक छाजन दुरुस्त रखैत अछि। एक बेर काका बरखा नहि हेबाक घोषणा करैत छथि; सावधान गाम समय रहिते तैयारी कऽ लैत अछि, आ रातिमे सचमुच बरखा होइत अछि। काकाक ‘मौसम विज्ञान’ विश्वसनीय भविष्यवाणी नहि, मुदा सतर्कताक प्रेरक बनि जाइत अछि। मालतीक कहब अछि जे काका उत्तर नहि, प्रश्न उपस्थित करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०५५ · मुफ्त सलाह

बेलाही चौक पर महेश्वर झा मुफ्त सलाह देबाक लेल प्रसिद्ध छथि। ओ सभ विवादमे तीन प्रश्न रखैत छथि—तथ्य की अछि, अटकल की अछि आ तत्काल सभसँ उपयोगी छोट काज की भऽ सकैत अछि। मुदा अपन घरक रसोइक देवाल झुकला पर ओ एहि नियमकेँ बिसरि पड़ोसिन कलावती पर पानिक दोष मढ़ैत छथि। गामक लोक सलाहक ढेर लगा दैत अछि, जखन कि पप्पू मिस्त्री जाँचि देखैत छथि जे बन्द नाली, नीमक जड़ि आ गलत ढारक कारण पानि देवालक जड़मे जमा भऽ रहल अछि। उचित निकास बनलापर देवाल बचि जाइत अछि आ कलावतीक कोनो दोष नहि निकलैत अछि। महेश्वर अपन पट्टी पर जोड़ैत छथि जे अपन समस्या छिपौने तथ्य बदलैत नहि अछि। सलाहक सच्चा मूल्य ओकरा अपना जीवनमे आजमौलासँ स्पष्ट होइत अछि।

कथा ०५६ · चुनावक चाय

चुनावक समय चाह-दोकानदार कैलाश साहु सभ राजनीतिक दलक कार्यकर्ताकेँ चाह पियबैत छथि। अलग-अलग दलक लोक हुनकर सत्कारकेँ अपन समर्थनक प्रमाण मानि लैत अछि, मुदा कैलाश अपन मत ककरा देताह से कहबासँ मना करैत छथि। ओ प्रत्येक दलक नाम पर पियाओल गेल चाहक कप आ बकाया रकमक सुव्यवस्थित हिसाब रखैत छथि। मतदान समाप्त भऽ परिणाम घोषित भेलापर जीतनिहार आ हारनिहार दुनू गुट अपन-अपन दाबी करैत दोकान पहुँचैत अछि। कैलाश मतक रहस्य खोलबाक बदला सभक बकाया रकम सुनबैत छथि। कार्यकर्ता आपसक राजनीतिक विवाद छोड़ि हिसाब चुकबैत छथि। कथामे मतदानक निजी अधिकार आ व्यापारक सार्वजनिक लेखा बीच स्पष्ट भेदक माध्यमसँ चुनावी अवसरवाद पर व्यंग्य अछि।

कथा ०५७ · माइकवाला काका

विद्यालयक पचासम वर्षगाँठमे भुवनेश्वर काका माइक्रोफोन पर लम्बा-लम्बा घोषणा करबाक आदत छोड़ि नहि सकैत छथि। हुनकर भाषणसँ आवश्यक सूचना ओझरा जाइत अछि। प्रधानाध्यापिका निर्मला देवी घोषणा बारह शब्दक भीतर राखबाक नियम बनबैत छथि। आरम्भमे काका एहि सीमासँ असहज होइत छथि, मुदा मंचक आवश्यक सूचना, औषधि लऽ अबैत नानी आ पोता सोनूकेँ बजेनाइ जेहन प्रसंगमे थोड़ शब्दक प्रभाव अनुभव करैत छथि। कार्यक्रमक बीच माइक्रोफोनक बिजली समाप्त भेला पर विद्यार्थी बिना यन्त्रक सहारे नाटक प्रस्तुत करैत अछि। काका बुझैत छथि जे सभ ठाम आवाज बढ़ेनाइ आवश्यक नहि; ककरा की बात कहब जरूरी अछि, से बुझब अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। अन्ततः हुनकर घोषणामे प्रदर्शनक बदला स्पष्टता अबैत अछि।

कथा ०५८ · एक किलो प्रतिष्ठा

हाटमे माधव साहुक पीयर एक किलोवला बाट हुनकर दोकानक प्रतिष्ठाक प्रतीक अछि। ओ बाटक चमक आ पुरान ख्यातिक आधार पर ओकर शुद्धता पर गर्व करैत छथि। नातिन गौरीक जिज्ञासा आ प्रतिद्वन्द्वी नथुनीक टिप्पणीक बाद आधिकारिक तौल-जाँचमे पता चलैत अछि जे बाट एक किलोसँ बारह ग्राम बेसी अछि। माधव आरम्भमे एहि अन्तरकेँ मामूली मानैत छथि, मुदा ग्राहकक लेल प्रत्येक माप सही रखबाक महत्त्व स्वीकार करैत छथि। ओ पुरान बाट हटाकऽ प्रमाणित, ठीक एक किलोवला कारी बाट उपयोग करैत छथि। पीयर बाटकेँ दोकानमे स्मृतिक वस्तु बना राखैत छथि। बाहरी चमक आ प्रतिष्ठाक तुलनामे वास्तविक ईमानदारीक माप तौलमे भेटैत अछि, एही पर कथा व्यंग्य करैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०५९ · नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

पचासी वर्षक सेवानिवृत्त शिक्षक शिवनारायण झा केँ पुरान विद्यार्थीक नाम प्रायः बिसरि जाइत अछि, मुदा हुनका छात्रसभक स्वभाव, घटना आ कक्षाक दृश्य खूब मोन अछि। युवा शिक्षिका नीलम पुरान, जलसँ क्षतिग्रस्त विद्यालय-पञ्जी पुनः तैयार करबाक क्रममे हुनकर स्मृतिक सहायता लैत छथि। शिक्षकक बताओल संकेत उपयोगी सिद्ध होइत अछि, मुदा अनुमानकेँ प्रमाण मानि लिखबाक जोखिम सेहो सामने अबैत अछि। नीलम निर्णय करैत छथि जे प्रत्येक नाम कमसँ कम दूटा स्वतंत्र अभिलेखसँ मिललाक बादे अन्तिम पञ्जीमे जाएत। बाइस मामलामे अठारहक पुष्टि होइत अछि आ चारि नाम अनिश्चित छोड़ल जाइत अछि। अलग पोथीमे शिक्षकक स्मृति-संकेत सुरक्षित राखल जाइत अछि, स्पष्ट लिखल रहैत अछि जे संकेत प्रमाण नहि। स्नेहपूर्ण स्मृति आ ऐतिहासिक तथ्यक अन्तर कथाक केन्द्रीय विषय अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०६० · चन्दा विशेषज्ञ

गंगाराम साह अपन जेबिसँ चन्दा नहि देबाक कारण गाममे कंजूस कहल जाइत छथि, मुदा आन लोकसँ सहयोग जुटेबामे हुनकर असाधारण कौशल अछि। पुस्तकालयक चुबैत छप्परक मरम्मति लेल हुनका चन्दा-संग्रहक नेतृत्व भेटैत अछि। ओ ककरोसँ नगद, ककरोसँ ईंट, बाँस, श्रम अथवा गाड़ीक व्यवस्था करबैत छथि, आ सामग्रीक दाममे मोलभाव कऽ खर्च घटबैत छथि। हिसाब सार्वजनिक राखल जाइत अछि आ मरम्मति पूरा भेलापर पुस्तकसभ सुरक्षित भऽ जाइत अछि। अन्तिम लेखामे गंगारामक व्यक्तिगत आर्थिक योगदान शून्य देखाइत अछि, मुदा सभ बुझैत अछि जे हुनकर समय, परिश्रम आ व्यवस्थापन बिना काज सम्भव नहि छल। गामक लोक फेर हुनका नव सामाजिक काजक लेल चन्दा जुटेबाक जिम्मेदारी दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०६१ · मुफ्तक फोटो

बेलही पंचायतक परिवार-मिलनमे निःशुल्क पारिवारिक छायाचित्रक घोषणा सुनि कथावाचक अपन पत्नी निर्मला आ बच्चा गौरी-नवलक संग सजि-धजि पहुँचैत छथि। फोटो लेल पहिल क्रमांक भेटलापर आयोजक हुनका नाम-पर्ची व्यवस्थित करबाक जिम्मेदारी दैत छथि। बरखा, बिगड़ल क्रमांक आ लिफाफाक गड़बड़ी सम्हारैत पूरा परिवार दिनभरि दोसरक फोटो खिंचबय आ बाँटबयमे लागल रहैत अछि। अन्तमे बुझाइत अछि जे अपन औपचारिक पारिवारिक छायाचित्र खिंचबेनाइए बिसरि गेलाह। छायाचित्रकारक यन्त्रमे एकटा सहज क्षणक छवि सुरक्षित भेटैत अछि, जाहिमे चारू सदस्य काज सम्हारैत एक संग देखाइत छथि। निर्मला ओहि छविकेँ घरमे सजा दैत छथि। कपड़ा देखेबाक उद्देश्यसँ आएल परिवारक छायाचित्रमे आखिरकार साझा श्रम आ सहभागिता देखाइत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०६२ · समय पर नहि, बात पर

बेलही गाममे दोकान, विद्यालय, पंचायत आ लोकक जेब-घड़ी सभ अलग-अलग समय बतबैत अछि। सभ अपन घड़ीकेँ सही मानैत अछि आ सामूहिक काजमे देरि होइत रहैत अछि। विधवा फूलो देवीक खेतमे धानक बिचड़ा रोपबाक समय निकलि रहल अछि, मुदा लोक अपन-अपन समयक हिसाब सँ पहुँचैत आ जाए चाहैत अछि। ज्योति प्रस्ताव करैत छथि जे घंटाक आधार पर नहि, खेतक पाँति बाँटि जिम्मेदारी निश्चित कएल जाए। जवान, वृद्ध आ उपलब्ध श्रमिकक सामर्थ्य अनुसार पाँति बँटैत अछि; एक-दोसरक काजमे हाथ बँटबैत रोपनी पूरा होइत अछि। किछु दिन बाद खेतक हरियरीमे ककर रोपल पाँति छल से भेद मेटा जाइत अछि। गामक घड़ीसभ अबहो अलग समय देखबैत अछि, मुदा लोक बुझि जाइत अछि जे सामूहिक काज स्पष्ट सहमति आ उत्तरदायित्व सँ चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०६३ · हम दोषी कतय छी?

भोला झा केँ गाममे पौध-वितरणक जिम्मेदारी भेटैत अछि। कृषि-सेविका ज्योति देवी पूरा नाम, घरक क्रमांक आ उचित माटिक जानकारी लिखबाक सलाह दैत छथि, मुदा भोला अपन स्मृतिक भरोसे छोट-छोट अक्षरक संकेत बना दैत छथि। बरखामे ओ संकेत अस्पष्ट भऽ जाइत अछि आ आम, अमरूद, नीम आ आन पौध गलत परिवार वा अनुपयुक्त ठाम पहुँचि जाइत अछि। गामक लोक परस्पर चिन्हि, पौधक अवस्था जाँचि आ आवश्यक ठाम फेर रोपि समस्या सुधारैत अछि। भोला दोष अपन कहबासँ बचैत छथि, आ गलत वितरणकेँ लाभकारी परिणामक रूपमे देखेबाक चेष्टा करैत छथि। अगिला वर्ष समिति स्पष्ट पट्टी, घरक क्रमांक आ रंगीन सूतक नियम अपनबैत अछि। भोला अपन पुरान भूलसँ निकलल एहि सुझावसभकेँ ‘अनुभव’ कहैत छथि, मुदा दोष ककर छल, ताहि प्रश्नसँ फेर बाँचि जाइत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०६४ · धर्मपरायण चोर

धर्मपरायण कहल जाएवला देवकीनन्दन झा मन्दिरक काज लेल पड़ोसीक बाँस, लोटा, हथौड़ी आ आन वस्तु बिना पूछने लऽ जाइत छथि। ओ एहि आचरणकेँ चोरी नहि, ‘अस्थायी पुनर्वितरण’ कहैत छथि। एक दिन फूलमति काकीक घरक जरूरी मरम्मति लेल हथौड़ी नहि भेटलासँ अनर्थक स्थिति उत्पन्न होइत अछि। मन्दिर समितिक जाँचमे सत्ताइस वस्तुक मालिक आ अनुमति अस्पष्ट भेटैत अछि। देवकीनन्दनक अपन प्रिय छाताक प्रसंग हुनका दोसरक वस्तु पर अधिकारक अर्थ बुझबैत अछि। समिति मालिकक पूर्वस्वीकृति, वापसीक तिथि आ क्षतिपूर्तिक लिखित हिसाब अनिवार्य करैत अछि। देवकीनन्दन पुरान वस्तु सभ घुरबैत छथि आ नव काज लेल पहिने अनुमति माँगैत छथि। अन्ततः ओ स्वीकार करैत छथि जे धर्मक काजमे सेहो उधार उधारे होइत अछि, बिना अनुमति लेनाइ नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०६५ · सदाचार समिति

बरही टोलाक सदाचार समिति सार्वजनिक विवाद निपटेबाक लेल नील शिकायत-पर्ची आ क्रमांकित पाँजि बनबैत अछि। आरम्भमे सभ व्यवस्था प्रशंसनीय लगैत अछि, मुदा समितिक सदस्य वा हुनकर निकट परिवारसँ जुड़ल शिकायतसभ मुख्य पाँजिमे नहि चढ़ि अलग धूसर लिफाफामे राखल जाइत अछि। वार्षिक खुलल बैठकमे निरंजनक हिसाबसँ चौरासी पर्चीमे केवल बावन निर्णय सामने अबैत अछि। फूलमति काकी अपन छूटल पर्चीक प्रमाण देखबैत छथि, तखन बत्तीस दबाओल शिकायत भेटैत अछि। सदस्यसभ स्वीकार करैत छथि जे अपन लोक लेल अलग नियम रखनाइ सदाचार नहि। सभ पर्ची मुख्य पाँजिमे चढ़ि निष्पक्ष सुनवाई होइत अछि। अगिला बेर सचिवक बकरी द्वारा सार्वजनिक फूल खेबाक शिकायत सेहो दर्ज होइत अछि, आ सचिव स्वयं क्षतिपूर्ति तथा सुधारक निर्णय लिखैत छथि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०६६ · पवित्र पार्किंग

पिपरा शिवमन्दिरक उत्सवमे समिति सचिव रघुनन्दन झा चून सँ वाहन राखबाक चौखटा बनबा ओकरा ‘पवित्र पार्किंग’ नाम दैत छथि। ओ श्रद्धालुकेँ संयम आ दोसरक अधिकारक उपदेश दैत छथि। मुदा दानदाता महेन्द्र साह, आन प्रतिष्ठित आगन्तुक आ स्वयं नियम बनौनिहार लोक सुविधाक लेल रेखा तोड़ैत छथि; वृद्ध आ ठेलावालाक पैदल बाट बन्द भऽ जाइत अछि। प्रवचनक बाद गाड़ी निकलबाक समय अव्यवस्था स्पष्ट भऽ जाइत अछि। निरंजन आ बिन्दा काकीक प्रश्न पर समिति सबकेँ समान नियम मानय लेल बाध्य करैत अछि। दान देबाक प्रतिष्ठा सड़कक उपयोग पर विशेष अधिकार नहि दैत अछि। रघुनन्दन ‘पवित्र’ शब्द हटाकऽ स्पष्ट तख्ती लगबैत छथि—गाड़ी राखबाक ठाम, पैदल बाट खाली राखू। अगिला दिन ओ अपन मोटरसाइकिल सभसँ पाछाँ, निर्धारित चौखटामे रखैत छथि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०६७ · दानक फोटो

बेलाहीक दक्षिण टोलामे महेन्द्र साह अपन पिताक स्मृतिमे चाँपाकल लगबबैत छथि। उद्घाटनक दिन हुनकर प्राथमिक चिन्ता नाम-पट्टी, अपन साफ कुरता आ सुन्दर छायाचित्र अछि, जखन कि चाँपाकलक चारूकात कादो जमा होइत अछि आ पानिक निकास नहि बनल अछि। फोटो खिंचैत समय छोटू पएर खसका दैत अछि आ बुच्ची देवी ओकरा बचबैत छथि; महेन्द्रक कुरता पर छींट पड़ैत अछि। एहि घटनासँ हुनका वास्तविक समस्याक बोध होइत अछि। मिस्त्री सँ नाली बनबा जलनिकास ठीक कराओल जाइत अछि। बादमे छायाचित्रकारक ओ फोटो चुनल जाइत अछि जाहिमे लोक निश्चिन्त भऽ पानि भरि रहल अछि आ दाता किनारमे देखाइत छथि। महेन्द्र बुझैत छथि जे दानक मुख्य अर्थ अपन नाम देखबेनाइ नहि, सार्वजनिक सुविधाकेँ उपयोगी बनायब अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०६८ · महान त्यागी

साझा बीआ-भँड़ारक चाभी राखनिहार जगदीश चौधरी अपन प्रत्येक छोट सेवाकेँ महान त्याग कहि बहीमे दर्ज करैत छथि। गाममे धानक बीआक अभाव भेला पर साझा भँड़ारक सामग्री पर्याप्त नहि पड़ैत अछि। जगदीशक निजी कोठरीमे पाँच वर्षसँ सुरक्षित कनकजीरक बीआ अछि, मुदा ओकरा बँटबाक विचारसँ ओ असहज छथि। पत्नी विमला, मंजरी देवी आ गामक लोक हुनका पर दबाव नहि दैत छथि, केवल आवश्यकता आ उपलब्ध विकल्पक चर्चा करैत छथि। अन्ततः जगदीश स्वेच्छासँ अठारह किलो तीन सय पचास ग्राम बीआ नौ परिवारमे बाँटि दैत छथि। कटनीक बाद परिवारसभ साझा भँड़ारमे अपन सामर्थ्य अनुसार बीआ घुरबैत अछि। जगदीश पहिल बेर अपन ‘त्याग’क भाषण नहि लिखि केवल बीआक परिमाण दर्ज करैत छथि। सेवाक महत्त्व बड़बोली नहि, वास्तविक परिणाममे अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०६९ · सत्यवादी व्यापारी

मधुबनीक वस्त्र-व्यापारी बंशीधर साह दोकान पर लिखबौने छथि जे वस्तु जेहन अछि, तेहने कहल जाएत। ओ ग्राहकसँ सीधे झूठ नहि बजैत छथि, मुदा हाथ सँ बनल चित्र, छापल रेखा पर हाथक रंग आ पूर्ण यांत्रिक छापक बीचक भेद तखने बतबैत छथि जखन ग्राहक ठीक प्रश्न पूछैत अछि। ग्राहक प्रमोद झाक बेटी मैत्रेयी एहि अधूरा सत्य पर प्रश्न उठबैत अछि—जे बात ग्राहक जानिते नहि, तकर प्रश्न कोना पूछत? बंशीधर अपन पद्धतिक त्रुटि स्वीकार कऽ वस्तुसभ तीन स्पष्ट वर्गमे राखैत छथि आ पूरा जानकारी लिखैत छथि। दोकानक तख्ती पर जोड़ैत छथि जे किनबाक लेल जरूरी बात बिना पूछने बताओल जाएत। अगिला ग्राहककेँ ओ तीनू श्रेणीक अन्तर बुझा कऽ स्वेच्छासँ चुनाव करय दैत छथि। कथामे सत्यक अर्थ केवल झूठ नहि बजेनाइ नहि, भ्रामक मौनसँ बचब सेहो अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०७० · पुण्यक रसीद

सेवानिवृत्त रमानन्द चौधरी अपन भल काजक ‘पुण्यक हिसाब’ राखैत छथि। ओ वृद्धकेँ बाट पार करेनाइ सँ दान देबा धरि प्रत्येक काजक अंक, खर्च आ साक्षी दर्ज करैत छथि। मुदा अपन बनाओल चबूतरा आ नव दोकानक योजना पुरान सार्वजनिक नाला बन्द कऽ पानिक समस्या उत्पन्न करैत अछि। मिस्त्री आ वृद्ध हरिनारायण पासवान स्पष्ट प्रमाण देखबैत छथि, तइयो रमानन्द पहिने अपन निर्माण तोड़बाक निर्णय टारैत छथि। अन्ततः ओ किरायेदार गोपालक अग्रिम घुरेबाक जिम्मेदारी लैत, नव निर्माण हटबैत आ नाला पुनः खोलबैत छथि। पानि फेर सहज बहय लगैत अछि। एहि सुधारकेँ ओ पुण्य-अंक नहि दैत छथि, केवल ‘अपन देनदारी’ लिखैत छथि। अधूरा पावती-पत्रक खाली ठाम याद करबैत अछि जे अपन गलती सुधारब कोनो प्रदर्शनकारी दान नहि, सीधा उत्तरदायित्व अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०७१ · सभ्य परिवार

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक विनयकान्त झा अपन परिवार लेल सभ्य व्यवहारक सात नियम चौखटामे टाँगि रखने छथि। विवाहक चालीसम वर्षक अवसर पर घरमे जुटान होमयवला अछि, मुदा वर्षो सँ घरेलू काज करैत चन्द्रकला मण्डलकेँ सभ ‘काकी’ कहैत छथि, हुनकर पूरा नाम तक नहि जनैत अछि। पोती ईराक प्रश्नसँ परिवार अपन एहि उपेक्षाक बोध करैत अछि। चन्द्रकला सभ परिवारजनक नाम जानैत छथि आ अपन नाति निशान्तक विद्यालयी कार्यक्रममे जाएबाक लेल छुट्टी माँगैत छथि। जुटानक दिन परिवार स्वयं परोसनाइ आ व्यवस्था सम्हारैत अछि, चन्द्रकलाक नामसँ एक कुर्सी रखैत अछि। बादमे हुनका अपन नामक पर्ची देल जाइत अछि। विनयकान्त पुरान वेतन-हिसाबमे पहिल बेर हुनकर पूरा नाम लिखैत छथि। सभ्यताक नियम तखन सार्थक बनैत अछि जखन सम्मान व्यवहारमे उतरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०७२ · उपदेशक यात्री

शशिभूषण पाठक बसयात्रामे अनुशासन, पाँति, धीमा स्वर आ टिकट सम्हारबाक विषय पर सभ यात्रीकेँ लगातार उपदेश दैत छथि। ओहि बसमे वृद्धा, सहयात्री रामलोचन आ युवकसभ हुनकर नियम सुनैत छथि। अचानक शशिभूषणक अपन टिकट हराइत अछि आ निरीक्षक जाँच लेल चढ़ैत छथि। उपदेश देनिहार यात्रीक घबराहट बढ़ैत अछि, जखन कि जकरा ओ टोकैत छलाह सेहे लोक टिकट खोजयमे सहायता करैत अछि। अन्ततः पर्ची रामलोचनक गठरीक डोरीमे फँसल भेटैत अछि; सम्भवतः वृद्धाक सामान सम्हारैत शशिभूषणक जेबिसँ खसल छल। ओ अपन कट्टर स्वरक हास्य बुझैत छथि आ बादक यात्रा मे दोसरक असुविधा पर भाषणक बदला सहज सहायता करैत छथि। नियमक मूल्य कठोर उपदेशमे नहि, विनम्र आ सहयोगी आचरणमे उभरैत अछि।

कथा ०७३ · शुद्ध भोजन

शशिधर झा अपन रसोइक ‘शुद्ध अन्न, शान्त मन’ नियम पर गर्व करैत छथि। दालि, तेल, दूध आ तरकारीक स्रोत धरि लिखैत छथि, मुदा धीरे-धीरे वस्तुक शुद्धताक नियम लोकक प्रति शंका आ कठोर व्यवहारमे बदलि जाइत अछि। घरक भोजमे पत्नी मालती आ सहयोगी नीलिमाक परिश्रमक अपेक्षा शशिधर अपन व्यवस्थाक प्रशंसा करैत छथि। दुकानदार किशोर साहक देय रकम रोकलासँ ओकर बीमार माएक औषधिक व्यवस्था प्रभावित होइत अछि, जखन कि नीलिमा समय पर ओकर भुगतान करि दैत छथि। शशिधर अपन हठ स्वीकार करैत छथि आ किशोरसँ क्षमा माँगैत छथि। अपन पाँजिमे ओ पहिल बेर अन्नक गुणवत्ताक बदला अपन व्यवहारक चूक लिखैत छथि। अन्तमे ओ बुझैत छथि जे भोजनक शुद्धता पर्याप्त नहि; मनुष्यक प्रति उचित व्यवहारो ओतबे आवश्यक अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०७४ · क्षमाक समारोह

सकरीक दुग्ध-सहयोग समितिमे नमूनाक क्रमांक उलटि गेलासँ सरोजा देवी पर दूधमे पानि मिलबेबाक गलत सन्देह कएल जाइत अछि आ हुनकर दूध लेनाइ रोकि देल जाइत अछि। बादक जाँचमे त्रुटि समितिक सिद्ध होइत अछि। सचिव गौरीशंकर मिश्र क्षमा माँगबाक नाम पर सार्वजनिक समारोह रखैत छथि, जाहिमे घटना फेर सभक सामने सुनाओल जाइत अछि आ निर्दोष सरोजाकेँ माला आ प्रमाणपत्रसहित फोटो खिंचबेबाक कहल जाइत अछि। सरोजा अनुभव करैत छथि जे एहि प्रदर्शनमे हुनकर अपमान दोहराइत अछि। ओ कार्यालयमे वास्तविक आर्थिक हानि, रोकल भुगतान आ प्रक्रियागत सुधारक बात उठबैत छथि। सम्मानपत्र घर लऽ जाएबाक बदला छोड़ि दैत छथि। अगिला भोर केन्द्र पर हुनकर नामक उत्सवी पट्टी नहि, सामान्य दूधक दर टँगल रहैत अछि। क्षमा वास्तविक सुधारसँ होइत अछि, समारोहसँ नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०७५ · दयालु मालिक

वाचस्पति झा गर्वसँ कहैत छथि जे पन्द्रह वर्षसँ काज करैत सुमित्रा हुनकर घरक सदस्य समान छथि। बीमारीमे सहायता आ अवसर पर उपहारक उदाहरण दैत छथि, मुदा नव घरक नक्शा बनबैत समय सुमित्राक विश्राम अथवा निवास लेल कोनो सम्मानजनक ठाम निर्धारित नहि करैत छथि। सुमित्रा नदी-कटानक बाद अपन बेटी संग अलग किरायाक कोठरी लैत छथि आ निर्धारित समय पर काज समाप्त कऽ घुरय लगैत छथि। घरक लोक हुनकर एहि स्वाधीनतासँ असहज होइत अछि। गृहप्रवेशक राति वाचस्पति हुनका 'अपन घर' बुझि रुकबाक कहैत छथि, मुदा जतय सुमित्रा सूति सकथि, से ठाम नहि भेटैत अछि। सुमित्रा अपन कोठरीक चाभी देखबैत घुरि जाइत छथि। नव घरक नक्शामे मेटाओल 'कोठरी' शब्दक निशान मालिकक दयालुताक दाबी आ वास्तविक व्यवहारक अन्तर उजागर करैत अछि।

कथा ०७६ · सत्यक पोस्टर

कमलपुर प्रखण्ड कार्यालयमे भ्रष्टाचार-विरोधी सप्ताहक संयोजक शशिनाथ चौधरी ‘सार्वजनिक धन, सार्वजनिक हिसाब’ लिखल भित्तिपत्र टँगबबैत छथि। मुदा लेखा-सहायक मंजुला कर्ण देखबैत छथि जे अभियानक छपाईक भुगतान बिना अनुमति दोसर मदसँ करबाक चेष्टा भेल अछि आ एक्के आदेशक खर्च दू बीजकमे बाँटल गेल अछि। शशिनाथ जनहितक उद्देश्य आ व्यक्तिगत लाभक अभावक तर्क दैत छथि, मुदा जाँचकर्त्री किरण स्पष्ट करैत छथि जे सही उद्देश्य अनियमित प्रक्रियाकेँ वैध नहि बनबैत अछि। अन्ततः शशिनाथ अपन हस्ताक्षरसँ पूर्व प्रविष्टि सुधारबाक प्रस्ताव पठबैत छथि आ कारीगरक देय भुगतान नियमपूर्वक निपटेबाक बात रखैत छथि। सार्वजनिक भित्तिपत्रक कात वास्तविक खर्चक विवरणो टाँगल जाइत अछि। सत्यक प्रचारक सच्ची परीक्षा अपन काजक हिसाब सार्वजनिक करब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०७७ · भलमानुसक गवाही

बाढ़िक बाद क्षति-सत्यापनमे सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक भवेश्वर मिश्र गामक लोकक भरोसामे साक्षी बनैत छथि। रामसेवकक देवाल खसबाक घटना ओ स्वयं नहि देखलनि, मुदा ओकर सहायता होए, एहि सदिच्छासँ प्रत्यक्षदर्शी प्रमाण पर हस्ताक्षर कऽ दैत छथि। जिला-कर्मीक प्रश्न पर हुनका अपन वाक्यक असत्यता स्पष्ट बुझाइत अछि आ ओ सच कहि दैत छथि जे देवाल खसैत नहि देखलहुँ। रामसेवककेँ फेर स्थलीय जाँचक अवसर भेटैत अछि, आ वास्तविक क्षतिक आधार पर ओकर नाम सहायता-सूचीमे रहैत अछि। आन जरूरतमन्द नसीमाक दावीक सेहो उचित सत्यापन होइत अछि। भवेश्वर बुझैत छथि जे दयाक नाम पर गलत गवाही देनाइ न्यायकेँ कमजोर करैत अछि। ओ आगाँ सँ केवल ओही बात पर हस्ताक्षर करैत छथि जकर प्रत्यक्ष जानकारी हुनका अछि।

कथा ०७८ · दान पेटीक सिक्का

पिपरा गामक पुरान इनारक मरम्मति लेल साझा दान-पेटी राखल जाइत अछि। नियम अछि जे दू चाभीसँ पेटी सभक सोझाँ खुलत आ धन सामूहिक कुल रकमक रूपमे दर्ज होएत। अनाज-व्यापारी रतिनाथ चौधरी अपन एक रुपैयाक सिक्का पहिल दान कहि प्रतिष्ठा चाहैत छथि आ पर्ची पर अपन नाम लिखि पेटीमे रखैत छथि। खुलल गणनामे पर्चीसभ पेटीक भीतर क्रमसँ नहि भेटैत अछि; दानक कालक्रम सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। कोषाध्यक्ष किरण पारदर्शी हिसाब रखैत छथि, मुदा दाताक नामक सार्वजनिक श्रेष्ठता-सूची नहि बनबैत छथि। इनारक जगत आ चरखी दुरुस्त होइत अछि, बाँकी धन आगामी मरम्मति लेल बचैत अछि। रतिनाथक नामवला पर्ची अभिलेखमे रहि जाइत अछि, जखन कि इनार लग सभक योगदान संयुक्त लेखामे समा जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०७९ · सज्जन चालक

सवारी-गाड़ीक चालक नगेन्द्र झा अपना कैँ सभ्य मानैत छथि, कारण ओ कठोर बातक अन्तमे 'जी' जोड़ि दैत छथि। सड़क पर साइकिलवाला, वृद्ध आ ठेलावालाकैँ ओ अपमानजनक उपमा दैत, मुदा अपन भाषाकैँ सम्मानपूर्ण कहैत छथि। सहचालक बिजय आ बैठक संचालिका सरोजिनी हुनकर कहल वाक्यसभ जाँचि पूछैत छथि जे एहि सभमे बाटक उपयोगी निर्देश कतय अछि। नगेन्द्र बुझैत छथि जे सम्मानसूचक शब्द जोड़ि देलासँ असभ्य अर्थ नहि मेटैत अछि, आ हल्ला केलासँ सुरक्षित चाल चलबाक सूचना नहि भेटैत अछि। अगिला यात्रामे ओ छोट, स्पष्ट निर्देश देब शुरू करैत छथि—बाम कात रहू, पाछाँ गाड़ी अछि। यात्री समय पर कात होइत छथि आ शिकायत घटैत अछि। हुनकर गाड़ीक 'विनम्र सेवा' लिखल पाँति आब व्यवहारसँ मेल खाए लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०८० · चरित्र प्रमाण-पत्र

अन्न-भंडारक अस्थायी पद लेल आवेदन करैत माधव मण्डलकेँ दू प्रतिष्ठित लोकक चरित्र प्रमाण-पत्र चाही। सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक भुवनेश्वर मास्टर प्रारम्भमे बिना पर्याप्त जानकारी सहज हस्ताक्षर करए चाहैत छथि। दोसर प्रतिष्ठित रमाकान्त साह माधवसँ समितिक रसीद-पाँजिमे पिछिला तिथि लिखबबए चाहैत छथि। माधव अनुचित तिथि बदलबाक आग्रह नहि मानैत अछि, तेँ रमाकान्त अपन हस्ताक्षर काटि दैत छथि। कठिनाईक बावजूद माधव सच जननिहार व्यक्तिसँ स्पष्ट आ सीमित प्रमाण लैत अछि, आ आवेदनमे वैध कागज जमा करैत अछि। काटल हस्ताक्षरवला प्रपत्र नियुक्तिक काममे नहि अबैत, मुदा माधव ओकरा अलग सुरक्षित रखैत अछि। ओहि अस्वीकृत कागजमे ओकर वास्तविक चरित्र—दबावमे पड़िओ अभिलेख नहि बदलबाक साहस—सभसँ स्पष्ट रूपमे उभरैत अछि।

कथा ०८१ · उपवासक भोज

निर्जला एकादशीक सामूहिक आयोजनमे रामकृपाल मिश्र फलाहारक नौ प्रकार, दानदाताक आसन आ परसनाइ क्रम तय करबाक लेल अत्यन्त सजग छथि। मुदा वृद्ध सीता देवीकेँ निश्चित समय पर औषधि लेबाक अछि, आ सेवा करैत किछु स्त्री देरि धरि उपवासे रहि जाइत छथि। समारोहक फोटो, शंख आ आसनक व्यवस्थामे अटकला कारण सीता देवी भोजनक प्रतीक्षा छोड़ि चलि जाइत छथि; चम्पा काकी सेहो बहुत पाछाँ खाइत छथि। अगिला दिन रामकृपाल सीता देवी लग पहुँचि अपन चूक अनुभव करैत छथि। ओ नव व्यवस्थामे आसनक रंग वा फलाहारक संख्या सँ पहिने लोकक औषधिक समय, घरक दूरी आ सेवकक भोजनक बेरा लिखबाक निर्णय करैत छथि। उपवासक महत्त्व भूख बढ़ेबामे नहि, उपवास रखनिहार मनुष्यक आवश्यकता बुझबामे अछि।

कथा ०८२ · नम्रताक पुरस्कार

नगर पुस्तकालयमे ‘नम्रताक पुरस्कार’ घोषित होइतहि अनेक प्रतिष्ठित लोक दोसरसँ अपन नामांकन करबबैत छथि। सभ कहैत छथि जे हुनका पुरस्कारक इच्छा नहि, मुदा अपन गुप्त सेवा, श्रेय-त्याग आ पाछाँ बैसबाक छायाचित्रक विस्तृत प्रमाण जमा करैत छथि। समिति अंक देबाक क्रममे बुझैत अछि जे नम्रता नापबाक प्रतिस्पर्धा स्वयं लोकक व्यवहार बदलि रहल अछि। सचिव मृदुला प्रश्न उठबैत छथि जे स्वयं श्रेय नहि लेबाक गुणक सार्वजनिक प्रमाण कोना जुटाओल जाए। समिति एहि वर्ष पुरस्कार नहि देबाक आ राशि पुस्तकालयक चुबैत ओसाराक छाजन ठीक करबामे लगबबाक निर्णय करैत अछि। काज पूरा भेलापर व्यक्तिगत नामवला पट्ट नहि लगाओल जाइत अछि। बरखामे बच्चाक पोथी सूखल रहैत अछि, आ नम्रताक साक्ष्यवला मोट नस्ती अलमारीमे चुपचाप पड़ल रहैत अछि।

कथा ०८३ · अन्तिम पाँति

नगर वाचनालयक स्थापना-दिवस पर पुरान दानदाता रमानन्द झा आमन्त्रणमे ‘विशिष्ट’ उपाधि नहि देख असन्तुष्ट छथि। ओ मंचक नजदीक आसन आ समूह-छायाचित्रमे अपन उपस्थिति चाहैत छथि। आसन लगौनिहार रामजतन हुनका पूछैत अछि जे जखन मंच देखाइत आ आवाज सुनाइत अछि, तखन आगाँ जाएबाक एतेक आग्रह किएक। बातचीतक क्रममे रमानन्द अन्तिम पाँतिक महत्त्व अनुभव करैत छथि आ ओतए बैसैत छथि। कार्यक्रममे समयक अभावसँ सहयोगी सदस्यक अलग फोटो नहि बनैत अछि। बादमे स्मारिकामे अपन मुख नहि भेटलापर क्षणिक खटास होइत अछि, मुदा हुनका ओहि पाँतिक स्थानसँ जुड़ल पिताक स्मृति मोन पड़ैत अछि। ओ बुझैत छथि जे समारोहमे सहभागिताक मूल्य केवल मंचक निकटता वा छायाचित्रमे देखाइ देबासँ नहि मापल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०८४ · नदीक कागज

कमला नदीक धार बदलला पर बसल गढ़िया टोलामे सैंतीस परिवार रहैत अछि, मुदा सरकारी राजस्व-नक्शामे ओ ठाम ‘बसोबास शून्य’ लिखल अछि। चम्पा सहनीक बेटी पूनमकेँ छात्रवृत्तिक पता-प्रमाण नहि भेटैत अछि, आ निर्माण विभाग ओहि कथित खाली भूमिपर सामग्री रखबाक तैयारी करैत अछि। चम्पा आ पूनम परिवारसभक नाम, पुरान सरकारी पर्ची, इनार, चाँपाकल, विद्यालयी आँगन आ बाढ़िमे नाव लगबाक बाटक विवरण संकलित करैत छथि। ओ सभ स्वामित्वक अप्रमाणित दावा नहि करैत, केवल वास्तविक बसोबास देखेबाक आग्रह करैत अछि। संयुक्त स्थलीय जाँचमे सैंतीस घर दर्ज होइत अछि, निर्माण-सामग्रीक ठाम बदलैत अछि आ नक्शामे सर्वेक्षणक टिप्पणी जुड़ैत अछि। कागजक खाली ठाममे जीवनक अस्तित्व दर्ज होनाइ कथाक उपलब्धि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०८५ · ईंटक नम्बर

ईंट-भट्ठामे रामदेव मण्डलकेँ अपन नामक बदला टीनक क्रमांक ‘३१’ भेटैत अछि। मजदूरी, अग्रिम आ ईंटक गिनती सभ ओही क्रमांकसँ चलैत अछि। पाँजिक पुरान प्रविष्टिसँ ओकर माथ अठारह सय ईंटक अनुचित कटौती लगबाक स्थिति उत्पन्न होइत अछि। आधा बचल पावतीक आधार पर पता चलैत अछि जे ओ प्रविष्टि रामदेवसँ पहिने क्रमांक ३१ रहल दोसर मजदूरक छल। मालिक हिसाब सुधरबैत छथि, मुदा पुरान मजदूरक नाम तक ककरो नीकसँ मोन नहि अछि। खोजबीनक बाद सुरजन यादवक परिचय आ बाँकी मजदूरीक पता लगैत अछि। नव नियममे क्रमांकक संग मजदूरक नाम, गाम आ काज आरम्भक तिथि अनिवार्य होइत अछि। ईंटक पाँतिमे केवल अंक पर्याप्त अछि, मुदा मनुष्यक श्रमक हिसाबमे ओकर नाम आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०८६ · जंगलक रास्ता

बेलसारक सखुआवन बीचक पातर बाटसँ तीन टोलक लोक दूध-संग्रह केन्द्र, विद्यालय आ बजार जाइत अछि। वनरक्षक बटेश्वर झा नव पौधरोपण लेल बाट बन्द करबैत छथि, कारण नक्शामे ई लोक-उपयोगक मार्ग दर्ज नहि अछि। सरोजा देवी यात्रिकसभक नियमित आवागमनक गणना करबैत छथि; एक्के दिन सैकड़ों लोकक आवश्यकता सामने अबैत अछि। वन-विभागक क्षेत्र-सहायक निरीक्षण कऽ निर्णय करैत छथि जे पौधरोपण बाटक दुनू कात होएत आ पैदल तथा साइकिल यात्रीक पुरान बाट बचाओल जाएत। दुनू मुहाने खम्भा लगाओल जाइत अछि जाहिसँ मोटरगाड़ी जंगलक भीतर प्रवेश नहि करय। नव नक्शामे बाटक वास्तविक रूप दर्ज होइत अछि। वन-संरक्षण आ स्थानीय जनजीवनक आवश्यकता एक-दोसराक विरोधी नहि, उचित व्यवस्था सँ संग-संग चलि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०८७ · मजूरीक हस्ताक्षर

बेलही पोखरिक गाद-सफाइमे काज करैत धनवंती पासवान अक्षर नहि पढ़ि सकैत छथि, मुदा अपन बारह दिनक श्रमक हिसाब हुनका मोन अछि। भुगतान-पाँजिमे हुनकर नामक आगाँ साढ़े दस माप-दिन दर्ज अछि। बरखाक दिन बोरा उठेनाइ आ निकासी साफ करबाक काज ‘अन्य काज’क खाँचामे दर्जे नहि भेल अछि। धनवंती ई अन्तर पकड़ैत छथि आ आन स्त्री मजदूरक हिसाब सेहो जाँच करबबैत छथि। जाँचक बाद छूटल श्रम-दिन जोड़ल जाइत अछि। ओ बेटी सुनीतासँ अपन नाम लिखब सीखैत छथि, मुदा हस्ताक्षर करबाक पहिने प्रत्येक खाँचाक हिसाब पढ़बाक महत्त्व बुझैत छथि। बादमे ओ रामपरी आ आन मजदूरकेँ अपन दिन, माप, दर आ देय राशि देखबाक प्रेरणा दैत छथि। एतय हस्ताक्षर केवल नाम लिखनाइ नहि, श्रमक उचित मूल्य पर सजग अधिकार अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०८८ · कटान क्षेत्र

कुशहा टोल लग पत्थर खननक सुरक्षा-रेखा बारम्बार सुगिया देवीक खेत दिस बढ़ैत अछि। लाल बाँस, पीयर चिन्ह, नीला झंडा आ चूनाक रेखाक कारण हुनकर खेती बाधित होइत अछि, मुदा कर्मचारी प्रभावित भागकेँ ‘परती’ दर्ज करय लगैत छथि। सुगिया पुरान पुलिया नम्बर चारि, रोकक पर्ची आ अपन नापी-सूचना सुरक्षित रखैत छथि। आधिकारिक अमीनक नापीमे स्पष्ट होइत अछि जे पट्टा-सीमा अलग अछि आ अस्थायी सुरक्षा-चिह्नक आधार पर जमीनक स्थायी सीमा नहि बदलल जा सकैत अछि। कार्यालय खेती बाधित होबाक वास्तविक कारण दर्ज करैत अछि, अस्थायी चिन्ह हटैत अछि आ स्थिर सीमा-खूँटा फेर चिन्हित होइत अछि। सुगिया फेर मटर बोइत छथि। कथामे सुरक्षाक वैध आवश्यकता आ किसानक अधिकारक बीच प्रमाणित सीमा राखबाक आग्रह अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०८९ · राशनक दिन

सोनबरसाक बहत्तर वर्षीया सोनमती देवी मासक सातम तारीख राशन लेबाक पहुँचैत छथि, मुदा नव सरकारी सूचीमे हुनकर नाम ‘स्थानान्तरित’ भऽ गायब अछि। ओ वर्षोंसँ ओही घरमे रहैत छथि आ पुरान राशन-पर्चा पर नियमित अनाज लेबाक प्रमाण सुरक्षित अछि। कार्यालय हुनका अनेक कागज आ सत्यापनक लेल घुमबैत अछि। सोनमती निवास प्रमाण, ग्राम-सेवकक स्थलीय जाँच आ पिछिला मासक वितरण-पाँजि एक संग रखि प्रशासनसँ प्रश्न करैत छथि जे पुरान अभिलेखमे अनाज लेनिहार स्त्री अचानक अनुपस्थित कोना भऽ गेली। अन्ततः सुधारक आदेश पर ओहि मासक राशन भेटैत अछि आ अगिला सूचीमे हुनकर स्थिति ‘उपस्थित’ दर्ज होइत अछि। सोनमती सभ प्रमाण सुरक्षित रखैत छथि, कारण कागजमे दर्ज नामक अस्तित्व बारम्बार साबित करय पड़ैत अछि।

कथा ०९० · स्कूलक दूरी

कमलपुरक कंचन आठम कक्षाक बाद बेलही उच्च विद्यालयमे पढ़य चाहैत अछि, जे घरसँ दस किलोमीटरसँ बेसी दूर अछि। सरकारी साइकिल-सहायताक पात्रताक नियममे पहिने बीस दिन विद्यालयमे उपस्थित रहब आवश्यक अछि, मुदा साइकिल बिना ओ बीस दिन पहुँचबे कठिन अछि। प्रधानाध्यापिका माधवी झा पुरान नील साइकिल दुरुस्त करबबैत छथि आ ‘प्रवेश-साइकिल’ रूपमे अस्थायी रूपसँ देबाक व्यवस्था करैत छथि। कंचन रेखा आ सरिताक संग सुरक्षित यात्रा करैत उपस्थितिक शर्त पूरा करैत अछि। नव सहायता-साइकिल भेटलापर ओ पुरान साइकिल समुचित हिसाबसहित घुरा दैत अछि। तकर बाद ओही साइकिल दोसर नव छात्रा पूनमकेँ भेटैत अछि। दूरिक संख्या नहि घटैत अछि, मुदा आरम्भिक बीस दिनक बाधा साझा साधनसँ दूर होइत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०९१ · पत्थर तोड़ैत गीत

सोनबरसा बाटक कात जमुना देवी सहित बारह स्त्री पाथर तोड़ैत अपन काजक घटनाक अनुसार नित्य नव पाँतिवला गीत गबैत छथि। शिक्षिका अनुपमा सांस्कृतिक पुस्तिका लेल गीत संकलित करैत समय पानि, गाड़ी, टूटल हथौड़ी आ टोकरीक गिनतीवला पाँति हटाकऽ ओकरा सुन्दर साहित्यिक रूप दैत छथि। मजदूरीक भुगतानमे बाइस दिनक बदला अठारह दिन दर्ज भेला पर जमुना सभ गीतक पाँति द्वारा छूटल दिनक प्रसंग याद करबैत छथि। अनुपमाक मूल कापीमे सुरक्षित संकेत—मंगल हाट, लाल गमछा, पीयर गाड़ी—आ अन्य अभिलेखक मिलानसँ दिनक सत्यापन होइत अछि। अनुपमा गीतक साफ-सुथर बनाओल रूपक बदला बदलैत कामक पाँतिसभ सुरक्षित राखैत छथि। गीत केवल मनोरंजन नहि, श्रम-दिनक जीवित स्मृति सेहो अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०९२ · वनक अधिकार

सिमरबन्नीक धनमाया देवीक बाँसक बाड़ी बीचसँ वन-विभागक नव सीधी सीमा-रेखा खींचल जाइत अछि। पोती कुसुम पुरान नस्ती, स्थिर सीमा-खूँटा आ कछुआ नालाक वास्तविक मार्गक मिलान करैत अछि। प्रमाणित पुरान विवरणमे सीमा मौसमी जलधाराक संग चलबाक निर्देश भेटैत अछि, जखन कि नव नक्शामे नालाक मोड़ गायब अछि। विभागक संयुक्त जाँचमे ई भूल प्रमाणित होइत अछि आ सीमा-रेखा नालाक अनुसार सुधारल जाइत अछि। धनमायाक अधिकांश बाड़ी वन-सीमासँ बाहर निकलैत अछि, मुदा नालाक दोसर कात पड़ल सात बाँस वनभूमिमे रहैत अछि। परिवार एहि तथ्यकेँ सेहो स्वीकार करैत अछि। कथामे अधिकारक लड़ाइ तथ्यसँ चलैत अछि; सत्यापन केवल अपन लाभक बात नहि, अपन दावीक सीमा मानबो सिखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०९३ · पुलक मुआवजा

कमला नदी पर पुल बनबाक समाचारसँ बसहीक लोक प्रसन्न अछि, मुदा पुलक चढ़ानमे झुमरी देवी सहित ग्यारह घर पड़ैत अछि। सरकारी अनुमति अनुसार झुमरी घरक काठ आ फेर उपयोगी सामग्री निकालि लैत छथि। बादक मुआवजा-मूल्यांकनमे ओहि कारण घरकेँ ‘पहिने सँ आंशिक टूटल’ मानि रकम घटेबाक चेष्टा होइत अछि। झुमरी पहिल निरीक्षण, सामग्री निकासी अनुमति आ बादक मूल्यांकनक क्रमबद्ध तिथि देखबैत छथि। ओ स्पष्ट करैत छथि जे पुलक विरोध नहि, मुदा अपन घरक वास्तविक मूल्यक अधिकार चाहैत छथि। संयुक्त जाँचक बाद आकलन सुधरैत अछि। मुआवजासँ नव घर बनैत अछि आ पुरान दरवाजाक साँकल ओतय फेर लागैत अछि। पुल खुललापर यात्रा सहज होइत अछि, मुदा झुमरीक पुरान घरक स्मृति आ न्यायपूर्ण क्षतिपूर्तिक दस्तावेज संगहि बचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०९४ · मजदूरक फोटो

शिवपुरक जलनिकासी नाला बनबैत मजदूर बुधन मण्डल एक दिन तेसर खण्डसँ दोसर खण्डमे काज करय पठाओल जाइत छथि। उपस्थिति आ भुगतानक अभिलेखमे खण्ड बदलबाक जानकारी नहि मिललासँ हुनकर मजदूरी पर प्रश्न उठैत अछि। प्रगति-प्रतिवेदनक छायाचित्रमे बुधन दोसर खण्डमे हाथ-ठोकनी चलबैत देखाइत छथि। छायाचित्र पर स्पष्ट दिनांक अछि, आ औजार क्रमांक बारहक जारी-पाँजि हुनकर ओहि दिनक काजसँ मेल खाइत अछि। एहि संयुक्त प्रमाणसँ मजदूरीक हिसाब सुधरैत अछि। आगाँ लेल छायाचित्रक संग क्रमांक, दिनांक, खण्ड आ उपस्थिति-पाँजिक सन्दर्भ जोड़बाक नियम बनैत अछि, मुदा मजदूरक निजी विवरण सार्वजनिक करब आवश्यक नहि मानल जाइत अछि। चित्रमे नाम छपबासँ बेसी जरूरी अछि जे श्रमिकक नाम धरि प्रमाणित बाट उपलब्ध रहय।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०९५ · लाल कार्ड

बरैलक फुलमती देवी अपन पति हरिकिशुन आ तीन बच्चाक संग पैतृक आँगनक पाछाँ अलग गृहस्थी चलबैत छथि। चूल्हा, अनाज आ आमदनी अलग अछि, मुदा एक्के गृह-क्रमांक ‘४७’ होएबाक कारण हुनका खाद्य-सहायताक अलग लाल कार्ड नहि भेटैत अछि। काका भुवनेश्वरक परिवारक कार्ड पर फुलमतीक परिवारक कोनो नाम नहि अछि, तइयो कार्यालय दुनूकेँ एक परिवार मानैत अछि। वितरण-पाँजि आ स्थल-जाँचसँ स्पष्ट होइत अछि जे एक परिसरमे दू स्वतंत्र परिवार रहैत अछि। प्रशासन एक्के क्रमांकक भीतर ‘४७-क’ उपक्रमांक देबाक प्रावधान लागू करैत अछि। फुलमतीक पाँचू सदस्यक नाम अलग दर्ज होइत अछि आ उचित अनाज भेटैत अछि। ओ कहैत छथि जे घरक नम्बर एक छल, गृहस्थी दूटा पहिनहिसँ छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०९६ · बालू घाट

कमला नदीक सोनबरसा बालूघाट पर तीन मास लेल बालू उठेबाक अनुमति भेटैत अछि। भारी गाड़ी आ खनन-यन्त्रक काज शुरू भेला पर लगक इनारसभक पानि नीचाँ जाए लगैत अछि आ किछु इनारमे महीन बालू आबैत अछि। चाह बेचयवाली हरिप्रिया अपन इनारक रस्सीमे बान्हल गाँठक आधार पर पानिक स्तरक परिवर्तन प्रतिदिन दर्ज करैत छथि। बेटी मञ्जू आठम गाँठो जोड़ैत अछि। ग्रामीणसभक अभिलेखक आधार पर सरकारी जाँच होइत अछि; स्वीकृत खनन-पट्टी भीतर गड्ढा रहितो गाड़ी उतरबाक बाट पुरान जलधाराक निषिद्ध भाग धरि कटाओल भेटैत अछि। बाट आ सीमा सुधारल जाइत अछि, पानिक स्तर स्थिर होइत अछि। अनुमति समाप्त भेलापर हरिप्रिया आठम गाँठ नहि खोलैत छथि, कारण ओ नदीक बदलैत दशा पर सजग रहबाक स्मृति अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०९७ · अस्थायी बस्ती

कमलाक बाढ़ि सँ विस्थापित अठारह परिवारक लेल बसाओल धरहरवाक ‘अस्थायी राहत बस्ती’ तीस वर्षमे छियालीस गृहस्थीक टोला बनि गेल अछि। तइयो प्रशासनिक अभिलेखमे पुरान अस्थायी नाम यथावत् अछि, जाहिसँ सुरक्षित स्थायी जल-नलीक काज रोकल जाइत अछि। मालती देवी आ गामक लोक पहिल राहत-आदेशमे तीन वर्ष बाद पुनरीक्षणक शर्त, वर्तमान घरक गिनती, नदीक दूरी आ पानिक अवस्थाक प्रमाण जुटबैत छथि। संयुक्त नापी आ जाँचक बाद अधिकारी स्वीकार करैत छथि जे अपुनरीक्षित पुरान टिप्पणीक आधार पर मूलभूत जल-सुविधा रोकल नहि जाए। भूमिक स्वामित्वक प्रश्न अलग राखि तीन सार्वजनिक नलसहित सुरक्षित जल-नली बिछाओल जाइत अछि। ‘अस्थायी’ शब्द तखन निरीक्षणक विषय बनैत अछि, स्थायी उपेक्षाक बहाना नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ०९८ · जंगलक स्कूल

सालक जंगल बीच बेलझरियाक प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक नरेश बाबू नियमित नहि पहुँचैत छथि। विद्यालयक चाभी राखनिहार सुगनी काकी कोठरी खोलि दैत छथि आ पाँचम वर्गक फुलकुमारी छोट बच्चासभकेँ उपलब्ध पोथीक आधार पर पढ़बय लगैत अछि। रघु आ चन्दा सेहो सहयोग करैत अछि, मुदा कठिन प्रश्नसभक उत्तर नहि भेटलासँ लाल थैलीमे पर्ची जमा होइत जाइत अछि। निरीक्षणमे शिक्षा-समन्वयक सुधांशु झा देखैत छथि जे कमरा खुलल रहब आ वास्तविक पढ़ाइ होएब अलग बात अछि। व्यवस्था बनैत अछि जे दोसर विद्यालयक शिक्षक नियत दिन अओताह आ अनुपस्थितिक लेल वैकल्पिक शिक्षक पहिनेसँ निर्धारित रहताह। बच्चाक प्रश्न-पाँजि सुरक्षित राखल जाइत अछि। नव व्यवस्थामे फुलकुमारी शिक्षकक कुर्सी छोड़ि फेर अपन विद्यार्थीवला ठाम बैसैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा ०९९ · हस्ताक्षरक शक्ति

सोनबरसाक ‘अँजोर महिला बचत मंडली’क बारह महिला अपना-अपन नाम लिखब सीखने छथि। चन्द्रकला देवी हुनका सभकेँ हस्ताक्षरसँ ऊपर लिखल आशय पढ़बाक आग्रह करैत छथि। सामुदायिक धान-सुखौनी चबूतराक निर्माणक बाद ठेकेदार पक्षक ‘दोष-मुक्त’ प्रमाण पर हस्ताक्षर माँगल जाइत अछि, जखन कि चबूतरामे दरार आ जलनिकासक कमी अछि आ दोष-सुधारक अवधि बाँकी अछि। महिला मंडली नस्ती पढ़ि वास्तविक स्थिति दर्ज करबबैत अछि; जाँच आ मरम्मतिक बादे प्रमाणमे अपना देखल बात लिखैत अछि। हस्ताक्षर करबाक पहिने सभ पाँति पढ़ल जाइत अछि। मंडली निर्णय करैत अछि जे कोनो सदस्य खाली अथवा सन्दर्भसँ अलग पन्नापर हस्ताक्षर नहि करत। अक्षरज्ञान तखन अधिकार बनैत अछि जखन लिखल दायित्वक अर्थ सेहो बुझल जाए।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–१

कथा १०० · मजदूरीक आधा दिन

बेलवाड़ा सहकारी धान-भंडारमे बच्चन मण्डल सहित छओ मजदूर चारि सय अस्सी बोरा उतरबाक पूरा दिनक काज-पर्ची पर काज करैत छथि। बरखाक आशंकासँ सभ मिलि निर्धारित काज दुपहरसँ पहिने पूरा कऽ दैत छथि, आ कार्यालय बन्द भेला कारण दोसर उपस्थितिपर्ची नहि बाँटल जाइत अछि। भुगतानक समय दूनू पर्ची नहि रहबाक आधार पर मजदूरी आधा करि देल जाइत अछि। बच्चन प्रश्न करैत छथि जे जँ आधा दिनक काज भेल तऽ बाँकी बोरा के उतारलक। काज-पर्ची, माल-प्राप्ति पाँजि आ उपस्थिति-लेखाक मिलानसँ पूर्ण कार्य सिद्ध होइत अछि। अधिकारी मूल प्रविष्टि नहि मेटि सुधार जोड़बबैत छथि, आ सभकेँ पूरा मजदूरी भेटैत अछि। अगिला बेर निर्धारित काज पूरा होएबाक आधार पर पूर्ण दिन मानबाक नियम लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १०१ · चारि मुट्ठी बीआ

गोपाल आ सुनैना बटाइ पर जोतल खेतक धानसँ प्रत्येक बोरा पर चारि मुट्ठी बीआ अलग रखैत छथि। मालिकक बेटा नरेश स्वयं खेती करबाक सोचैत अछि तँ एहि बीआक स्वामित्व आ सुनैनाक छँटाइ-सुखेबाक श्रम पर विवाद उठैत अछि। सभ मिलि बीआकेँ खेतक अगिला जोतदार लेल सुरक्षित रखबाक आ उपयोगक लिखित नियम बनबैत छथि। लाल-हरियर सूतसँ बान्हल बोरा खेतक निरन्तरता आ श्रमक मान्यताक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १०२ · हलक बाट

जगेसर आ नन्दू साझा बैल-हलक आधा दिनक एक्के किराया लैत छथि। दूर खेतमे पहुँचेबाक बाट आ बैलक विश्रामक कारण मोहनकेँ नजदीकक किसानसँ कम जोत भेटैत अछि। भाइसभ अनेक पालिक वास्तविक बाट, जोत आ विश्राम नापैत छथि। किसानसभक विचारसँ जोतक अवधि आ बाटक अलग हिसाब तथा पशुक देखभालक व्यवस्था बनैत अछि। पुरान नियमकेँ बदलल परिस्थितिक अनुसार न्यायसंगत बनाओल जाइत अछि।

कथा १०३ · आधा बाँस

बिनती देवीकेँ छाजन लेल पूरा बाँस नहि, निश्चित नापक टुकड़ा चाही। बाँस बेचयवला रामचरितकेँ बुझाइत अछि जे आधा लम्बाइ आ आधा मूल्य एक्के बात नहि, कारण मोट-पातर भागक उपयोग अलग अछि। दोसर ग्राहकक माँग जोड़ि काटबाक खर्च, बचल टुकड़ा आ मजबूतीक हिसाब बनैत अछि। अन्ततः ओ ग्राहकक जरूरत पहिने नापि, टुकड़ासभक मेल बैसला पर बाँस काटबाक नब नियम अपनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०४ · गोठक पहिल दूध

सुदामाक गाय गौरी देवीक गोठमे पलैत अछि। बाछा जनमलापर पहिल दूध, बाछाक हिस्सा आ देखभालक खर्चकेँ लऽ कऽ आधा-आधा दूध बाँटबाक मौखिक समझौता उलझैत अछि। गौरी बाछाक आवश्यकता पहिने रखि चारा, उपचार, श्रम आ बचल दूधक सही हिसाब माँगैत छथि। दूनू परिवार लिखित व्यवस्था बनबैत अछि, जाहिमे बाछाक पोषण आ देखभालक जिम्मेदारीक स्पष्ट स्थान रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०५ · मचानक राति

चारि सटल खेतक रखबारी लेल किसानसभ साझा मचान बनबैत छथि। बुधन अपन बीमार माय लग गेलाक कारण पहर नहि दऽ पबैत अछि आ पशुसँ फसलक हानि भेला पर दोषक प्रश्न उठैत अछि। छूटल पहर, कमजोर बाड़ आ वास्तविक विवशताक अन्तर बुझल जाइत अछि। किसानसभ आपतकालमे बदली पहर, बाड़क मरम्मत आ श्रमक हिस्साक नब नियम बनबैत छथि। बुधन बाड़ सुधारि अपन उत्तरदायित्व निभबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १०६ · भूसाक भाग

गेहूँक दवनीमे मशीन अएलापर पुरान मजदूरी आ भूसाक हिस्साक चलन पर विवाद होइत अछि। पार्वतीक टोलीक हाथसँ कएल काज मशीनक शुल्कक भीतर अदृश्य होएबाक खतरा उठैत अछि। विचार-विमर्श पछाति मशीनक देय, मजदूरक श्रम आ भूसा बाँटबाक मद अलग कएल जाइत अछि। अगिला मौसममे काज शुरू होएबासँ पहिनहि सभ शर्त लिखल जाइत अछि, जाहिसँ नव तकनीकक बीच पुरान श्रमक मान्यता बचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०७ · पोखरिक दू घाट

गरमीमे पोखरिक पानि घटिते स्त्रीसभक कपड़ा धोअन, पशु पिआएब आ माछक बच्चा बचएबाक जरूरत परस्पर टकराइत अछि। भोला सहनी माछ लेल एक भाग रोकैत छथि तँ मालती दैनिक उपयोगक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। गामक लोक जलस्तरक अनुसार धोअन-पटिया, पशुक ढाल आ माछक शरण-ठाम निर्धारित करैत छथि। एहि व्यवस्थामे साझा पानिक संग उपयोगकर्ताक श्रम आ जिम्मेदारी सेहो बँटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १०८ · उधारक खाता

देवकी महेन्द्र साहुक दोकानसँ घरक वस्तु आ औषधि उधार लैत छथि, मुदा सभ खर्च ससुरक परिवारक एक नाममे दर्ज रहैत अछि। एहि कारण ककर जरूरत आ ककर भुगतान, से अस्पष्ट होइत अछि। देवकी साझा खर्च आ अलग सदस्यक खर्चकेँ पहिचान देबाक आग्रह करैत छथि। दोकानदार तिथि, प्रयोजन आ संबंधित व्यक्तिक अलग पाँजी राखय लगैत छथि। सही हिसाब परिवार तोड़बाक नहि, ओकर भीतरक जिम्मेदारी बुझबाक माध्यम बनैत अछि।

कथा १०९ · खेतक छोरक आम

रघुनाथक खेतक छोरक आमगाछ ठेका पर देल गेल अछि। फल तोड़निहार मजदूर पड़ोसिन रामसखी देवीक मूँगक खेत पार करय चाहैत छथि, जाहिसँ हुनकर फसलक हानि सम्भव अछि। रामसखी बिना अनुमतिक प्रवेश रोकैत छथि। गाछ-मालिक, व्यापारी आ मजदूर मिलि अलग प्रवेश-बाट आ सुरक्षित ढुलाईक व्यवस्था करैत छथि। अगिला ठेकामे फलसँ पहिने पड़ोसीक अनुमति आ मार्ग बनएबाक जिम्मेदारी लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११० · रोपनीक दू दिन

फूलमतीक रोपनीहार टोली दू दिनक ठेकापर रामचरितक खेतमे काज करैत अछि। तेज वर्षासँ दोसर दिन रोपनी रुकला पर मालिक केवल रोपल क्षेत्रक मजूरी देब चाहैत छथि। फूलमती स्पष्ट करैत छथि जे मालिकक आदेशपर प्रतीक्षा करबो मजदूरक समयक उपयोग अछि। बातचीतसँ काज शुरू होएबासँ पहिने रद्द करबाक नियम, खेत पहुँचलाक बाद प्रतीक्षाक दर आ विलम्बित निर्णयक जिम्मेदारी तय होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १११ · बाछीक देखभाल

फूलकली देवी गामक अनेक घरक बाछा-बाछी चरबैत आ देखभाल करैत छथि, मुदा पाँजिमे केवल मालिक आ पशुक चिन्ह लिखल जाइत अछि। लाली नामक बाछी बीमार पड़लापर उपचार, टीका आ सूचना देबाक वास्तविक जिम्मेदारीक प्रश्न उठैत अछि। घटनाक बाद पशुक स्वास्थ्य, खर्च, खबरक क्रम आ फूलकलीक श्रम पाँजिमे दर्ज होइत अछि। मालिकाना पुरान रहैत अछि, मुदा प्राणीकेँ सम्हारनिहार व्यक्तिक काज पहिचान पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा ११२ · तेलीघरक खली

जुगलक तेलीघरमे सरिसो पेरला पर तेलक नाप साफ अछि, मुदा बचल खलीक हिस्सा अस्पष्ट। मालती देवी अपन पशुक चारा लेल खली चाहैत छथि, जखन कि तेलीघर पुरान चलनक अलग व्याख्या करैत अछि। पेराइ शुरू होएबासँ पहिने दू स्पष्ट विकल्प बनैत अछि—पूरा शुल्क दऽ सभ खली लेब अथवा घटल शुल्क पर खलीक निश्चित हिस्सा तेलीघरकेँ देब। एहि सँ बादमे होएवला विवाद घटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११३ · चरवाहीक सीटी

साझा चरवाहीक पित्तरिक सीटी घर-घर घुमैत अछि आ प्रत्येक घरकेँ समान पालि देल जाइत अछि। मुदा सभ घरक पशुक संख्या आ देखभालक भार समान नहि। बुधनी देवी प्रश्न करैत छथि जे एक पशु आ पाँच पशु लेल श्रमक हिसाब एक्के किएक। गामक लोक पशुक वास्तविक संख्या, अनुपस्थिति आ बदली पहर अनुसार नब सूची बनबैत अछि। सीटी वैह रहैत अछि, मुदा ओकर संग जुड़ल उत्तरदायित्व बदलि जाइत अछि।

कथा ११४ · कुम्हारक आगि

चारि कुम्हार परिवार एके भट्ठीमे घड़ा, दीप आ हाँड़ी पकबैत छथि। एक खेपमे कतेको बरतन खराब भेला पर दोष एक-दोसर पर देल जाइत अछि। फुलकली सहित कुम्हारसभ लकड़ीक मात्रा, आगिक दिशा, हावाक फाँक आ बरतन राखबाक ठाम लिखैत छथि। अगिला खेपमे ठाम बदलि परीक्षण कएलापर भट्ठीक एक कात ताप कम पहुँचबाक कारण बुझाइत अछि। आरोपक बदला सामूहिक सुधारक बाट निकलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा ११५ · कियाराक पम्प

बिसुन आ नन्दलाल पटवन लेल रघुनाथ साहक डीजल-पम्प लैत छथि। इंजन चालू भेल समयसँ भाड़ा गिनल जाइत अछि, मुदा पानि खेत धरि पहुँचेबामे नालीक टूटन, मशीनक तैयारी आ आन विलम्ब भऽ सकैत अछि। श्यामा देवीक उपस्थितिमे तैयारी, पम्पक त्रुटि, नालीक चूक, वास्तविक पटवन आ बन्दीक समय अलग लिखबाक व्यवस्था होइत अछि। एखन किराया आ जिम्मेदारी एक्के अस्पष्ट घड़ी पर निर्भर नहि रहैत।

कथा ११६ · दू पसेरी मड़ुआ

फूलमतीक परिवार धनेश्वर झाक खेतमे काजक बदला दू पसेरी मड़ुआक मजदूरी तय करैत अछि। भुगतानक समय बजारभाव आ पुरान उधार काटबाक हिसाब सँ विवाद उठैत अछि। अनाजमे निश्चित मजूरी, ओहि अनाजक नकद मूल्य आ उधारक तारीख एक्के नहि, से स्पष्ट होइत अछि। पक्षसभ विनिमयक आधार आ समय पहिनहि लिखबाक व्यवस्था करैत छथि, जाहिसँ अनाजक नाप स्थिर रहलो मजदूरक हक बदलि नहि जाए।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११७ · बाँधक घास

बाँध पर उगल घासक अधिकार केवल पुरान जमीनधारी घरसभकेँ देल जाइत अछि। दू बकरीवाली भूमिहीन जमुना देवी एहि सूचीसँ बाहर छथि, यद्यपि बाँधक देखरेखमे हुनकर श्रम लगैत अछि। ओ पशुक जरूरत आ सामूहिक रखबारीक आधार पर हिस्साक प्रश्न उठबैत छथि। विचारक बाद घासक बाँटमे वास्तविक पशु, सामग्री आ देखभालक पालि पहिचानल जाइत अछि। जमुनाक श्रम आ आवश्यकता दुनूकेँ मान्यता भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११८ · सूखल कुइयाँक पाल

बेलवाक पुरान कुइयाँ सूखि गेल अछि आ ओकर पाल टूटि रहल अछि। अधिकांश लोक मरम्मत बेकार बुझैत छथि, मुदा रुक्मिणी देवी दुर्घटनाक आशंका आ जलस्रोतक दीर्घकालीन महत्त्व उठबैत छथि। पाल सुरक्षित करबाक संग निश्चित ठामसँ जलस्तर नापि नियमित पाँजी बनैत अछि। नापकेँ आसपासक जलस्तरक पूर्ण प्रमाण नहि, केवल उपलब्ध संकेत मानल जाइत अछि। सूखल कुइयाँ फेर सामूहिक ध्यानक विषय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११९ · कटनीक पछिला दिन

धान कटबाक टोलीकेँ अन्तिम दिन खलिहान समेटबाक बदला एक बोरा धान देबाक चलन अछि। आवश्यक कारणसँ नन्दू ओहि दिन अनुपस्थित रहैत अछि तँ ओकर हिस्सा पर विवाद उठैत अछि। टोली बुझैत अछि जे बोरा केवल उपस्थितिक पुरस्कार नहि, कटल धान, रस्सी, औजार आ खलिहान समेटबाक सामूहिक श्रमक बदला अछि। नन्दूक बदली काजक पालि तय होइत अछि आ ओकर हिस्सा बचैत अछि। अगिला मौसम लेल नियम शुरूहिसँ स्पष्ट कएल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२० · मेड़क नाम

जीवछ महतोक तीन बेटामे जमीन बँटला पर खेतक सीमा तँ अलग होइत अछि, मुदा पटवनक पानि पुरान साझा मेड़सँ बहैत अछि। रघुनाथ, देवकान्त आ नवल पानि रोकबाक क्रमपर विवाद करैत छथि। तीनू मेड़क ढाल, फट्टाक ऊँचाइ आ जलक वास्तविक चाल नापैत छथि। अन्ततः जमीनक व्यक्तिगत सीमा बदलने बिना जलनिकासक साझा मुँह आ ओकर रखबारीक नियम निर्धारित कएल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२१ · सूखल नहरक लेखनी

छओ वर्षसँ बन्द नहरक पुरान जलमापक रातिमे फेर रेखा खींचय लगैत अछि। हरिनाथ झा आ सहयोगीसभ बुझैत छथि जे भुलाओल सेवा-निकाससँ रातिक पानि छोड़ल जाइत अछि। खोजमे बीस वर्ष पुरान गलत जल-रपट आ बनसीलालक परिवारसँ भेल अन्याय सामने अबैत अछि। हरिनाथ दबाओल तथ्य आ अपन हस्ताक्षरक चूक स्वीकार कऽ सुधार लिखैत छथि। बादमे जल-प्रवाहक नियमित व्यवस्था शुरू होइत अछि आ मापक वास्तविक धारा दर्ज करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२२ · कुलुप पर तीन खरोंच

बालिका छात्रावासक बन्द भण्डारक कुलुप पर खरोंच देखिकऽ अधीक्षिका माधवीकेँ चोरीक शंका होइत छनि। पूर्व छात्रा वसुधा भीतर सुरक्षित पुरान व्यक्तिगत चिट्ठीसभ निकालबाक लेल अनुचित ढंगसँ प्रवेश करबाक प्रयास करैत छथि। खोजमे सत्ताइस पत्र भेटैत अछि। घटनाक कारण आ नियमभंग दर्ज होइत अछि, मुदा पत्रक निजता सुरक्षित राखि ओकरा उचित प्राप्तकर्ताक हाथ पहुँचाओल जाइत अछि। वसुधाकेँ अपन पिताक चिट्ठी भेटैत अछि।

कथा १२३ · डाकघरक तेरहम थैला

बन्द होएवला उपडाकघरमे बारह थैलाक अतिरिक्त तेरहम थैला भेटैत अछि। पूर्व डाकपाल शिवनाथ चौधरीकेँ अठाइस वर्ष पहिने गायब भेल डाक-थैला आ वाहक नारायण महतो पर उठल शंका मोन पड़ैत अछि। जाँचमे थैला बन्द रोशनदानक खोखल भागमे अटकल भेटैत अछि। शिवनाथ पहिने बिना गिनती प्रमाणित कएल आ सत्य दबाओल रहबाक चूक स्वीकार करैत छथि। पुरान निष्कर्षक पुनरीक्षण आरम्भ होइत अछि।

कथा १२४ · पनचक्कीक उलटल पाँख

पुरान पनचक्कीक पाँख उलटा घूमैत देखि बृजनन्दन साह पुरान दुर्घटनाक स्मृतिमे डूबैत छथि। जाँचसँ पता चलैत अछि जे किसानसभ खेत बचेबाक लेल नब अस्थायी जल-मार्ग बनौने छथि। एहि खोजक बीच लखनक दुर्घटना, खराब फाटक आ बदलल कार्यालयी रपट सम्बन्धी तथ्य सामने अबैत अछि। बृजनन्दन अपन गलत प्रविष्टि स्वीकार कऽ प्रमाण लिखैत छथि। वर्तमान जलक बाट दर्ज होइत अछि, यद्यपि ओकर वैधानिक स्थिति अलग जाँचक विषय रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२५ · उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु

बन्द छायाचित्रघरक उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दुसभ उभरैत अछि। वृद्ध छायाकार भुवनेश्वर झार्कें राहत-वितरणक पुरान दुर्घटना आ तखनक छवि नष्ट करबाक निर्णय स्मरण अबैत अछि। अन्विता बचल नकार-पट्टिसभक संरक्षण करैत छथि। जाँचक क्रममे घटनाक अलग-अलग दृश्य सामने अबैत अछि आ पुरान आरोपक जटिलता प्रकट होइत अछि। केवल एक छविक आधार पर पूरा घटना तय नहि करबाक विवेकसँ दृश्य-सामग्री सुरक्षित रखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२६ · कचहरीक गुम जूता-चिन्ह

जिला कचहरीक मालखानामे बन्द रैक लग जूताक चिन्ह देखाइत अछि, मुदा भीतर प्रवेशक पएर-निशान नहि। माधव मिश्र जाँच करैत छथि तँ छतक फाँकसँ बाँसक सहारे जूता दबाओल जाएबाक तरकीब भेटैत अछि। रागिनी अपन पिताक जमीनक मूल कागज खोजेबाक लेल ई उपाय कएने छथि। रैक नीचाँ मूल बिक्री-पत्र आ जप्ती-सूची भेटैत अछि। माधव अपन पहिनेक बिना देखल हस्ताक्षरक चूक स्वीकार करैत छथि; न्याय लेल जरूरी प्रमाण फेर सामने अबैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १२७ · आधा घण्टा बजैत घड़ी

पुस्तकालयक पुरान घड़ीमे घंटी हटल रहितो साढ़े बारह बजे टनकार होइत अछि। शिवनारायण मिश्र खोजैत छथि तँ पुरान आलमारी हिलेला पर तार घड़ीमे टकराएबाक कारण भेटैत अछि। आलमारीक पाछाँ सुधा अपन पिता नरेश पासवानक पुरान शिकायतक कागज खोजैत छथि। अभिलेखमे अनुचित निर्णय आ शिवनारायणक पुरान मौनक संकेत भेटैत अछि। ओ कागज बचा कऽ निर्णयक पुनःसमीक्षा शुरू करैत छथि; यान्त्रिक आवाज बन्द भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १२८ · निर्जन घाटक तानल रस्सी

पुल बनला बाद बन्द घोषित नदीघाट पर रातिमे रस्सी फेर तानल देखाइत अछि। हरिनारायण झा पहरा दैत बुझैत छथि जे सुधा आ फेकन सहनी दोसर कातक बस्तीमे रोगी आ औषधि पहुँचाबय डोंगी चलबैत छथि। सरकारी निषेधक बीच बस्तीक वास्तविक स्वास्थ्य-जरूरत अनदेखल अछि। पुरान नौका-दुर्घटनाक बदलल रपट परो जाँच होइत अछि। हरिनारायण अपन गलत गवाही सुधरैत छथि आ सुरक्षित वैकल्पिक नावक व्यवस्था शुरू होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १२९ · नीला काँचक शीशी

बन्द औषधालयक नील काँचक शीशी अलग-अलग ठाम भेटैत अछि। माधवी झा जाँच करैत छथि तँ मृणालिनीक पुरान दूषित औषधिक घटनासँ जुड़ल प्रमाण खोजबाक प्रयास सामने अबैत अछि। शीशीक सरकबाक दिशा आलमारी पाछाँक कागजक संकेत दैत अछि। आपूर्ति-पर्ची आ परिपत्र पुरान आरोप पर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा स्थानीय देरीक जिम्मेदारी सेहो रहैत अछि। माधवी शीशी आ अभिलेख सुरक्षित रखैत छथि, बिना अधूरा प्रमाणक आधार पर अन्तिम निर्णय देने।

कथा १३० · खोइछामे भेटल चाबी

घर-बँटवाराक समय पुरान आलमारीक चाबी कमलाक खोइछामे भेटिते परिवारमे शंका उठैत अछि। अनसुना रहि गेल कागज आ देविकाक प्रयासक खोजमे जानकी देवी द्वारा सुरक्षित पुरान दस्तावेज सामने अबैत अछि। एहिसँ कमलाक अधिकार आ पोखरि जाएबाक साझा बाटक प्रश्न उभरैत अछि। आलमारी खोलि वैधानिक कागजक अर्थ जाँचल जाइत अछि। अन्तिम बँटवारामे कमलाक हिस्सा आ साझा बाट स्पष्ट कएल जाइत अछि; शंकाक स्थान पर वार्ता अबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १३१ · सिझल धानक गन्ध

बरखोंसँ बन्द चाउर मिलसँ रातिमे सिझल धानक गन्ध अबैत अछि। नागेन्द्र झाकेँ मिलमे भेल पुरान अन्याय आ बिसेसर सदायक घटना स्मरण अबैत अछि। नब परीक्षणक संग पुरान हिसाब, बदलल प्रविष्टि आ दबाओल तथ्य जँचल जाइत अछि। नागेन्द्र गलत लिखल कागज मेटेबाक बदला सुधार आ वर्तमान हिसाब अलग-अलग राखबाक स्वीकार करैत छथि। मिल नब यन्त्रसँ फेर चलैत अछि; पुरान भट्ठी स्मृति आ प्रमाण लेल बचाओल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १३२ · छाजन पर तीन चोट

बन्द विद्यालयक छाजन पर रातिमे लगातार तीन चोट सुनाइत अछि। पूर्व प्रधानाध्यापक शिवनारायण झा खोज करैत छथि तँ विद्यालयक पुरान पाँजी आ रामवृक्षसँ जुड़ल दबाओल हिसाबक प्रश्न सामने अबैत अछि। चन्दा आ सहकर्मीसभक प्रयाससँ सुरक्षित कागज भेटैत अछि, जे पुरान आरोपक आधार पर पुनर्विचार करबैत अछि। शिवनारायण अपन पहिलुका जाँचक चूक लिखित रूपेँ स्वीकार करैत छथि। विद्यालयक भवन नब उपयोगमे जाएबासँ पहिने ओकर ऐतिहासिक कागज सुरक्षित होइत अछि।

कथा १३३ · काठक पेटीक ताप

संग्रहालयक बन्द कक्षमे काठक पेटी रातिमे असामान्य गरम भऽ जाइत अछि। बद्रीनारायण चौधरीक खोजमे दोहरी तली, नमीसँ कागज बचेबाक तिलोत्तमाक गुप्त उपाय आ संग्रह-वस्तुक पुरान निर्गमन-सूची सामने अबैत अछि। नियम तोड़बाक तथ्य अलग दर्ज होइत अछि; संरक्षणक नब व्यवस्था बनैत अछि। बद्रीनारायण पहिनेक देखल सत्य दबा देने रहबाक स्वीकार करैत छथि। पेटी ठंढा पड़ैत अछि, मुदा लापता प्रतिमाक सम्पूर्ण रहस्य अनसुलझल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३४ · माटिक देबालक भीतरक खटखट

माटिक पुरान देबालक भीतर खटखट सुनि निरंजन मिश्र परिवारक जमीन-बँटवाराक विवाद फेर देखैत छथि। खोजमे पुरान नापक कागज आ अनिमाक प्रयासक सुराग भेटैत अछि। पश्चिमक जमीन आ पोखरि जाएबाक साझा बाटक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। निरंजन बिना तात्कालिक फैसला सुनौने अभिलेख, वर्तमान खतियान आ मेड़ अमीनसँ जँचबैत छथि। अन्तिम निर्णय धरि विवादित बाट पर हल रोकल जाइत अछि आ कागज दुनू पक्षक पहुँचमे सुरक्षित राखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३५ · घुरैत मोहर

पंचायत कार्यालयक गोल मोहर रातिक बाद अपन ठामसँ सरकल देखाइत अछि। हरिनाथ झा जाँच करैत छथि तँ टेढ़ मेज मोहर सरकबाक साधारण कारण निकलैत अछि। मुदा एहि खोजमे रंग-बिरंगक पुरान प्रपत्र, जाली प्रमाण आ निर्गमनक असंगति सेहो सामने अबैत अछि। रचना द्वारा कएल अतिरिक्त कार्यालयी काज आ भीजल मोहरक प्रश्न दर्ज होइत अछि। जाँच जे प्रमाणित करैत अछि से स्वीकारल जाइत अछि; जे अनिश्चित अछि से खुलल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३६ · ओसक सीधा पट्टा

हरिनन्दन यादवक सरिसबक खेतमे लगातार ओस नहि पड़बाक सीधा पट्टा देखाइत अछि। रातिक खोजमे जगेसरक परिवारक लोक द्वारा पुरान साझा बाट नापबाक लेल डोरी तानल जाएबाक बात बुझाइत अछि। जमीन खरीदला बादो लोकक आवागमनक अधिकारक प्रश्न अनसुलझल रहल छल। मालतीक आग्रह पर हरिनन्दन पुरान पत्र देखैत छथि आ दिनक उजासमे साझा नाप करबैत छथि। अन्तिम निर्णय धरि चिन्हक खूँटी रहैत अछि, मुदा रातिक गुप्त डोरी हटि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३७ · टूटल दर्पणक पछिला भाग

शारदा सिलाइघरक टूटल दर्पण पाछाँ कागज सरकबाक रहस्य पुरान धन-लेनदेनक साक्ष्य धरि पहुँचबैत अछि। जनकीक पन्द्रह हजार रुपैयाक लिफाफा हराएलापर कमला पर शंका कएल गेल छल। निष्ठाक सहयोगसँ भेटल पर्ची प्रमाण दैत अछि जे नवलकिशोर एहि रकमक अस्थायी उपयोग कएने छलाह। शारदा पाँजिमे सही तथ्य जोड़ि कमलाक नामसँ निराधार आरोप हटबैत छथि। रकमक हिसाब साफ भेला परो अन्यायसँ भेल मानवीय क्षतिक प्रश्न बचल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३८ · ओसारा पर लाल सूत

पुरान विवाह-घरक ओसारामे बारम्बार लाल सूत भेटला पर शारदा देवीकेँ मृणालक टूटल विवाह स्मरण अबैत अछि। पछाति बुझाइत अछि जे सूत पूर्वक कोठरी नापबाक डोरी अछि। ऋण चुकाबय कोठरी बेचबाक योजना अछि, मुदा मृणालक हिस्साक बात हुनकासँ पहिने नहि भेल। शारदा पुरान बँटवाराक कागज देखैत छथि आ किननिहारसँ पहिने मृणालक मत लेबाक आग्रह करैत छथि। सूतक रेखा सम्पत्तिक नाप आ दबाओल पारिवारिक संवादक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १३९ · खसैत अक्षर

बन्द पड़ल मुद्रणालयक पेटीसँ धातुक अक्षर अपने खसैत देखाइत अछि। रघुनाथ झा आ नव सहयोगीसभ खोज करैत छथि तँ बगलक तेल-घानीक कम्पन आ टेढ़ पेटीक कारण भेटैत अछि। एहि विचित्र घटनासँ पुरान छपाइमे बाहर छोड़ल चारि व्यक्तिक नामक प्रसंग सामने अबैत अछि। रघुनाथ, नीरज आ कौशल पुरान अक्षरसँ ओ नाम फेर छापबाक निर्णय लैत छथि। पेटीक भौतिक चूक सुधरैत अछि, दबाओल वाक्य सेहो सार्वजनिक लिखाइमे घुरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४० · अन्तिम लालटेनक कालिख

तटबन्ध चौकीक पुरान लालटेन पर नव कालिख देखिकऽ नवलकिशोर मिश्रकेँ अठारह वर्ष पुरान बाढ़िक राति स्मरण अबैत अछि। मनोजक सहयोगसँ खतरा-सूचना देबाक वास्तविक समय आ बदली गेल कार्यालयी प्रविष्टि भेटैत अछि। नवलकिशोर दबावमे पहिल सूचनाक समय बदलल मानि लेने रहबाक स्वीकारोक्ति पुरान पाँजिक कात लिखैत छथि। भेल क्षति घुरि नहि सकैत, मुदा गलत अभिलेखकेँ सत्यक संग रहब आवश्यक अछि। कालिख जागल पहरक वास्तविक चिन्ह रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४१ · नाम-पट्टीक सात मिलीमीटर

समाज-सहायता कार्यालयमे लेखा-सहायक गोपाल झाक नाम-पट्टी भूलसँ सात मिलीमीटर बेसी ऊँच बनि जाइत अछि। आगन्तुक हुनका अनुभाग प्रभारी जेकाँ मानय लगैत छथि आ व्यवहार बदलैत अछि। मुदा काठक पट्टी वास्तविक पद वा अधिकार नहि बदलि सकैत। जाँच पछाति पट्टी सही नापमे बदलबाओल जाइत अछि। गोपाल अपन पदक भीतर रहि आगन्तुकक कागज देखैत छथि। अनावश्यक पैघ पट्टी भण्डारमे ‘अनुपयोगी’ बनि रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४२ · दू हस्ताक्षरक बीचक खाली जगह

सहकारी कार्यालयक भुगतान-पर्चीमे दू आवश्यक हस्ताक्षरक बीच एकटा अनाम खाली चौकोर अछि। कर्मचारी ओकरा काल्पनिक तेसर स्वीकृति बुझि आवेदन रोकैत छथि। नव लिपिक माधव नियम आ छपाइक इतिहास जाँचि प्रमाणित करैत छथि जे एहन कोनो अधिकारी निर्धारित नहि। हरिनारायणक भुगतानक अड़चन हटैत अछि आ नब प्रपत्रसँ चौकोर हटैत अछि। मुदा ‘कार्यालयीय उपयोग’क अस्पष्ट रेखा फेर नब उलझनक सम्भावना छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १४३ · प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

अस्पतालक नव प्रतीक्षालयमे अड़तालीस क्रमांकित कुर्सीक संग लाल शून्य लिखल पुरान नील कुर्सी अछि। रोगी ओकरा उपचारक विशेष क्रम बुझैत छथि, मुदा भण्डारमे ओकर सही अंक नहि। कर्मचारीसभ जाँचि कुर्सीकेँ उनचासम वस्तुक रूपमे दर्ज करैत छथि आ प्राथमिक-जाँचक प्रवेश-द्वार पर उपयोग करैत छथि। लोकक बोलीमे ओ ‘कुर्सी नम्बर शून्य’ रहैत अछि। वस्तुक अस्पष्ट स्थितिसँ रोगीसेवाक नब व्यवस्था विकसित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १४४ · छुट्टीक आवेदनक छुट्टी

महाविद्यालयक अवकाश-शाखामे अपूर्ण सत्यापनवला आवेदन लेल बनल अस्थायी श्रेणी निर्णय टारबाक माध्यम बनि जाइत अछि। कर्मचारीसभ स्वीकृति वा अस्वीकृतिक भार नहि लऽ आवेदनकेँ अनिश्चित रखैत छथि। सुचित्राक अनुभवसँ ई चूक उघड़ैत अछि। समीक्षा पछाति कारणसहित लंबित अवस्था, निर्धारित समयमे निर्णय आ अनधिकृत श्रेणीक समाप्तिक नियम बनैत अछि। सुचित्राकेँ अपन आवश्यक अवकाश समय पर भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४५ · खाली दराजक सूची

नगर कार्यालयक लेखा-परीक्षणमे एकटा खाली दराज पर सवाल उठैत अछि। नीलाम्बर आ शम्भुनाथ ओकर पुरान उपयोग खोजैत छथि तँ गुम भेल मानचित्र आ पोखरिक निकास-मार्गक अभिलेख भेंटैत अछि। जानकी देवीक मामलेमे नब जाँच सम्भव होइत अछि। दराजक वस्तु घुरि सुरक्षित ठाम राखल जाइत अछि आ दराज ‘प्रमाणित रिक्त’ घोषित होइत अछि। विडम्बना ई जे कागजक कमी रहितो आब कियो एहि दराजमे किछु रखय नहि चाहैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४६ · पीयर फीता वली नस्ती

कोषागारमे पीयर फीता अनौपचारिक रूपेँ तात्कालिक नस्ती पहिचानबाक संकेत बनि गेल अछि। अनुभवी बटेश्वरक निर्णय पर बहुत किछु निर्भर रहैत अछि, मुदा विशेष अग्रताक लिखित कारण नहि। माधवक प्रश्नक बाद निर्धारित पर्चीमे तात्कालिकताक कारण, तिथि आ जिम्मेदार पदाधिकारीक हस्ताक्षर अनिवार्य होइत अछि। फीताक रंग केवल पहचानक साधन रहैत अछि। विडम्बना ई जे एहि बदलावक आदेशक प्रति सभ पीयर फीतासँ बान्हि शाखासभमे पठाओल जाइत अछि।

कथा १४७ · पदनामक आधा अक्षर

कृषि विपणन कार्यालयमे उमाकान्त मिश्रक नाम-पट्टी पर ‘अवर’क पहिल अक्षर अधूरा रहला सँ ओ पैघ पदाधिकारी जेकाँ देखाइत छथि। एहि भ्रमसँ अधिकार आ किसानक अपेक्षा बीच टकराव बढ़ैत अछि। कौशल्याक तिल-भुगतानक शिकायतमे स्थानीय कार्यालयक जिम्मेदारी स्पष्ट होइत अछि। प्राथमिक शिकायतक पावती, परीक्षण आ जिला कार्यालय धरि पठेबाक नियम बनैत अछि। अधूरा अक्षर फेर पूरा कएल जाइत अछि, पद नहि बढ़ैत, मुदा सेवा स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४८ · प्रमाण-पत्रक जन्म-दिन

पुरान प्रमाणपत्रसभकेँ अंकीय अभिलेखमे चढ़बैत नरेश देखैत छथि जे अनेक कागज पर केवल जारी होएबाक वर्ष अछि। यन्त्र पूरा तिथि माँगला सँ सुविधार्थ एक जुलाई भरल गेल अछि। लक्ष्मण मण्डलक जमीनक दावामे एहि मनगढ़न्त दिनांकसँ बाधा उठैत अछि। कार्यालय मूल कागजमे जतबा तिथि उपलब्ध अछि, ओतबे दर्ज करबाक व्यवस्था करैत अछि। सैकड़ों काल्पनिक ‘जन्म-दिन’ हटाओल जाइत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १४९ · घंटीक अधिकार

उप-पंजीयन कार्यालयक घंटी लिखित नियम बिना काजक अग्रताक संकेत बनि गेल अछि। नवीनकेँ बुझाइत अछि जे घंटी बजलासँ नस्तीकेँ विशेष अधिकार भेटबाक भ्रम होइत अछि। जाँचक बाद घंटी केवल परिचर बजाबय लेल रहैत अछि; जरूरी नस्ती लेल कारणसहित लिखित पर्ची अनिवार्य होइत अछि। घंटीक उपयोगक पाँजी सेहो खुलैत अछि। नवीन बिना घंटीक संकेत एक वृद्ध किसानक सहायता करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १५० · चारि मोहरक पाँचम जगह

सहायता-पत्रमे चारि आवश्यक मोहरक बाद पाँचम खाली चौकोर छपि जाइत अछि। कर्मचारी आ आवेदनकर्ता ओकरा लेल अस्तित्वहीन कार्यालय खोजय लगैत छथि। भोलानाथक जाँचमे नियमक चारिये स्वीकृति स्पष्ट भेटैत अछि। वर्तमान कागज पर अतिरिक्त खाँचा ‘लागू नहि’ लिखि काटल जाइत अछि आ नब छपाइमे हटैत अछि। काल्पनिक पाँचम मोहरक खोजमे भेल लोकक समयक हानि कागजी चूकक वास्तविक परिणाम बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५१ · सेवा-झरोखा नम्बर नौ

रेल पार्सल कार्यालयमे आठ झरोखा अछि, मुदा शिकायतक पावती पर नवम झरोखाक उल्लेख अछि। करघाक पुर्जा लेबय आएल धनमन्ती अस्तित्वहीन झरोखा खोजैत भटकैत छथि। एहि चूकसँ कागजक मिलान आ सामान देबाक प्रक्रिया अटकि जाइत अछि। हरिनारायण सहित कर्मचारीसभ अलग सहायता-मेज आ अनसुलझल मामिलाक पाँजी शुरू करैत छथि। मुदा बिना शिकायत दर्ज करौने घुरि गेल लोकक संख्या अनजान रहैत अछि। धनमन्तीक अनुभव सेवा-व्यवस्थाक त्रुटि देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १५२ · फाटकक पासक टेबुल

भूमि-मापन शिविरमे फाटकक पास राखल टेबुल भीतर-बाहर सरकाओल जाइत अछि। पहरेदार जगेसर लग देल कागज औपचारिक प्राप्ति मानल नहि जाइत, जकरा कारण फुलपतियाकेँ बारम्बार घुरय आ मजदूरी छोड़य पड़ैत अछि। शिविरमे आवेदन लेबाक ठाम, पावती आ प्रवेश-तिथि स्पष्ट करबाक नियम बनैत अछि। फुलपतियाक निवेदन दर्ज भऽ मापनक सूचना भेटैत अछि, मुदा छूटल मजदूरी घुरैत नहि। सीमारेखाक जाँचसँ पहिने कार्यालयी प्रवेशक सीमा विवाद बनि गेल छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १५३ · लाल पेंसिलक पदोन्नति

लेखा-परीक्षण शाखाक दिनेशकेँ भण्डारसँ भूलसँ लाल पेंसिल भेटैत अछि। वरिष्ठ अधिकारीक विशेष चिन्ह बुझल जाएवला लाल घेरा स्पष्ट टिप्पणी बिना लगिते आदेश जेकाँ प्रभाव पैदा करैत अछि। सरस्वतीक भुगतान-हिसाबमे भ्रम उत्पन्न होइत अछि। दिनेश अपना बनाओल घेराक जिम्मेदारी स्वीकार कऽ कागजक कात पूरा प्रश्न लिखैत छथि। बादमे ओ रंगक भरोसा छोड़ि कारण, तिथि आ अपन नामक संग आपत्ति दर्ज करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५४ · छायाप्रतिमे हरायल गुलाबी कात

हस्तशिल्प कार्यालयक अस्थायी प्रभारक अन्तिम तिथि आदेशक गुलाबी कात पर लिखल अछि। कारी-उज्जर छायाप्रतिमे ई महत्त्वपूर्ण जानकारी गायब होइत अछि, जाहिसँ राघव चौधरीक अधिकार कखन समाप्त भेल से अस्पष्ट बनैत अछि। सुनीता देवीक देनाइ रुकैत अछि। मीरा जाँच करैत छथि आ राघव अनिश्चित अधिकारमे अन्तिम स्वीकृति नहि दैत छथि। नब आदेशमे प्रभारक तिथि मुख्य पाठमे लिखबाक व्यवस्था बनैत अछि, ताकि रंग गायब भेलो अर्थ सुरक्षित रहय।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १५५ · दिनांकक खाली खाँचा

बाढ़िमे जानकी देवीक घर एके दिन नहि, क्रमशः तीन दिनमे नष्ट होइत अछि। सहायता-प्रपत्र मुदा क्षतिक केवल एक ‘ठीक दिनांक’ माँगैत अछि। कुमुद झा रेनूक दिन-पाँजीमे बाड़ी, चूल्हि आ कोठरी टूटबाक अलग तिथि देखैत छथि। प्रक्रिया लेल बारह अगस्त मानल जाइत अछि। जानकी देवी सेहो बादमे अपन अनुभव ओही एक दिनक रूपमे कहय लगैत छथि। कथा सरकारी तिथिक सुविधासँ व्यक्तिगत स्मृति बदलि जाएबाक पीड़ा देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५६ · पाँच मिनट देरक प्रमाण

अभिलेखागारक मोहरबन्द चाबी-थैली देबामे पाँच मिनटक देरक आरोप उठैत अछि। नन्दकिशोर झा आ हरिनारायण पासवान जाँच करैत छथि तँ अलग-अलग घड़ीक समय नमिलबाक चूक भेटैत अछि। कनकलता देवीक मुआवजाक काज एहि हिसाबसँ प्रभावित होइत अछि। समय-मिलान, वास्तविक सुपुर्दगी आ हस्ताक्षरक नब पद्धति शुरू होइत अछि। चारि सेकण्डक अन्तर ‘शून्य मिनट’ लिखबाक विडम्बना रहितो चाबी देब-लेब स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १५७ · नस्तीक कपड़ाक रंग

सामाजिक सहायता कार्यालयमे नस्तीक कपड़ाक रंग शाखा पहिचानबाक मुख्य साधन बनि गेल अछि। बैंगनी कपड़ा समाप्त भेला पर विधवा-सहायताक नस्ती हरियर कपड़ामे बान्हल जाइत अछि आ गलत शाखामे पहुँचैत अछि। मैथिली चौधरी एहि चूकक श्रृंखला खोजैत छथि। नब व्यवस्थामे टिकाउ पट्टी पर शाखाक नाम आ पहिल पृष्ठक विषय पढ़ब जरूरी मानल जाइत अछि। आब कपड़ाक रंग विषयक स्थान नहि लैत अछि।

कथा १५८ · एक कार्यालय, दू नाम

लघु सिंचाइ आ जल-संरक्षणक दू शाखाक विलय भेलो कार्यालयमे दू मोहर, दू पत्र-मुख आ पुरान बैंक-परिचय चलैत अछि। प्रभाकर झा देखैत छथि जे एहि दोहरापनसँ कुंअरपुरक सिंचाइ फाटकक काज अटकि जाइत अछि। बैंक सेहो कार्यालयक विधिक पहचान पर प्रश्न उठबैत अछि। अन्ततः एक नब नाम, खाता आ मोहर मान्य होइत अछि। पुरान मोहर इतिहासक रूपमे भण्डारमे रहैत अछि, नागरिकक पत्र पर नहि।

कथा १५९ · सीढ़ीक दोसर पायदान

जिला अभिलेख भवनक सीढ़ी टूटला पर ऊपरक शाखा धरि आगन्तुकक पहुँचनाइ कठिन होइत अछि। वरिष्ठ लिपिक शम्भुनाथ जनसहायता लेल सीढ़ीक दोसर पायदान लग अस्थायी मेज राखैत छथि। एहि ठाम खतियान आ नकलक प्रश्न पर सहायता भेटय लगैत अछि। सीढ़ी मरम्मत भेला बादो मेज जनताक उपयोग कारण बचल रहैत अछि। भवनक सूचीमे ओकर सही स्थान दर्ज होइत अछि, यद्यपि लोक 'दोसर पायदान' कहि चिन्हैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १६० · अन्तिम पाँतिक अधिकारी

जिला विकास कार्यालयक पद-पाँजीमे एक खाली अन्तिम पाँतिक सोझाँ वेतन-बजट लिखल अछि। राघव चौधरी जाँच करैत छथि तँ ई पुरान सारणी-चूक निकलैत अछि, स्वीकृत पद नहि। एहि बीच वास्तविक काज करैत रुक्मिणीक अस्थायी स्थितिपर विचार होइत अछि। हुनका लेल निश्चित अवधि, काज, पदनाम आ वेतनक स्वीकृति भेटैत अछि। खाली काल्पनिक पद हटैत अछि आ वास्तविक कर्मचारीक नाम अलग सूचीमे स्पष्ट दर्ज होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १६१ · तीन ठाम उपस्थित

जगदीश पासवानक बेटी सुषमाक छात्रवृत्ति एहि कारण रोकल जाइत अछि जे समेकित पाँजी पिता केँ तीन ठाम एकहि समय उपस्थित देखबैत अछि। गाममे माय, शहरमे परिवार आ रातिक भण्डारमे ड्यूटी—तीनू विवरण अलग सन्दर्भक अछि। प्रीमलता मिलानक त्रुटि खोजैत छथि। स्थायी पारिवारिक पता, वर्तमान निवास आ कार्यगत उपस्थिति अलग होइत अछि। सुषमाक सहायता चालू होइत अछि आ आन समान मामिलाक सुधार सेहो शुरू होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६२ · बन्द कोठरीक खुलल शाखा

जिला प्रमाण केन्द्रक कोठरी सत्ताइसमे शाखा नियमित चलैत अछि, मुदा अग्नि-सुरक्षा नक्शामे ओकरा स्थायी रूपेँ बन्द देखाओल गेल अछि। निरीक्षण भेलापर भवनक कागजी स्थिति आ वास्तविक कार्यालयक विरोधाभास उजागर होइत अछि। नरेश, रेवती आ चन्दन नागरिकक काज, सुरक्षित निकास आ अभिलेखक स्थिति एक संग सम्हारैत छथि। नव सुरक्षा-नक्शा आ व्यवस्था बनैत अछि। पुरान नक्शा अधूरा अभिलेखक उदाहरण बनि सुरक्षित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६३ · उच्चारणक दोसर नाम

स्वर-आधारित उपस्थितिक यन्त्र ‘क्षेमनारायण झा’क नाम सही नहि सुनि ‘सेम नारायण झा’ लिखैत अछि। यन्त्रक सुविधा लेल वास्तविक नाम बदलबाक प्रस्ताव उठैत अछि। अन्ततः अधिकृत नाम आ उच्चारण-संकेत अलग-अलग खाँचा बनैत अछि। क्षेमनारायण यन्त्रकेँ बुझए योग्य ध्वनि बोलि उपस्थिति दर्ज करबैत छथि, मुदा सेवा-पुस्तिकामे अपन मूल नामे रखैत छथि। ऋचा कर्णकेँ ओ समझबैत छथि जे यन्त्रक कान मनुष्यक पहचानक स्वामी नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६४ · प्रपत्र जे अपन उत्तर पहिने माँगैत अछि

प्रभा देवीक सिलाइ-समूह सहायता लेल आवेदन करैत अछि, मुदा प्रपत्र जमा होएबासँ पहिने ओहि आवेदनक अन्तिम अंक माँगैत अछि। लिपिक नवलकिशोर पूर्व-अंकक बाट खोजैत छथि। आवेदन आगाँ बढ़ि पहिल किस्त भेंटैत अछि, मुदा एके मामलेक तीन अंक बनि जाइत अछि। प्रभाकेँ सभ अंकक सूची रखबाक पड़ैत अछि। बादक प्रपत्रमे पूर्व-अंक सेहो अनिवार्य भऽ नव गोलचक्कर बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १६५ · आधा दिनक कर्मचारी

शान्ति देवी भोर छओ सँ दस बजे धरि सफाइ करैत छथि, मुदा सरकारी प्रणालीमे 'आधा दिन' दुपहरिया पालि मानल गेल अछि। दुर्घटना-रपट आ चिकित्सकीय विश्रामक अधिकार एहि चूकसँ अटकैत अछि। वास्तविक चारि घण्टा आ निश्चित घड़ीक समय अलग दर्ज करबाक निर्णय होइत अछि, जाहिसँ हुनकर मजूरी सुरक्षित होइत अछि। नब परिचय-पत्र पर फेर गलत दुपहरक समय छपि जाइत अछि। पहरेदार ओकर कात 'भोर' लिखि वास्तविकताक स्मरण करबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६६ · मोहरबन्द कोठरीक काज

शिक्षकसभक सेवा-अभिलेख राखल कोठरी लेखा-जाँचमे मोहरबन्द होइत अछि। चन्द्रकला देवीक पेंशनमे दू वर्षक सेवा छुटि गेल अछि, मुदा मूल पाँजी भीतर बन्द अछि। अभय आ निर्मला बाहर उपलब्ध प्रमाणसँ पुनर्निर्मित अभिलेख बनबैत छथि। कोठरी खुलला पर मूल आ नब प्रमाण एक-दोसरासँ मिलाओल जाइत अछि। चन्द्रकलाक पेंशन सुधरैत अछि आ हुनकर निजी प्रति सेहो जाँचक स्रोतक रूपमे बचल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १६७ · अनुवादित गाम

अंकीय पता-प्रणाली ‘पिपराही’ आ ‘पिपरही’ नामक दू अलग गामकेँ रोमन अक्षरमे एक्के रूप दैत अछि। एहि कारण सहायता आ जाँचक पत्र गलत ठाम पहुँचैत अछि। मालती आ सुधीर स्थानीय नाम, प्रखण्ड आ स्थान-अंकक सहारे नागरिकक मामिला सुलझबैत छथि। मूल प्रणालीक नाम-चूक लम्बा समय धरि रहैत अछि। हाटमे दूनू गामक अलग पत्र-पेटी आ पूब-पच्छिमक संकेत लोकक वास्तविक बाट सुरक्षित रखैत अछि।

कथा १६८ · छुट्टीक दिनक उपस्थितिक आदेश

पहिनेसँ निर्धारित अनिवार्य पहचान-सत्यापनक दिन राजकीय छुट्टी घोषित होइत अछि। अर्चना झाकेँ छुट्टी आ कार्यालयमे उपस्थिति देबाक विरोधी आदेश मिलैत अछि। छुटल सत्ताइस कर्मचारी लेल दोसर अवसर आ शिविरमे उपस्थित तिरासी कर्मचारी लेल प्रतिपूरक विश्राम स्वीकृत होइत अछि। आगाँ छुट्टी घोषित भेलापर अनिवार्य शिविर बदलबाक नियम बनैत अछि। वास्तविक छुट्टी ओहि दिन स्थापित होइत अछि जखन कार्यालय नहि खोलल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १६९ · शिकायत जे पूछलासँ जन्मल

बाढ़ि-पुनर्वास सहायता लेल चन्द्रकला देवीक आवेदन चारि माससँ लंबित अछि। ओ केवल ओकर वर्तमान स्थिति पूछैत छथि, मुदा यन्त्र प्रश्नकेँ औपचारिक शिकायत मानि मूल आवेदन विवादित करैत अछि। विद्यापति मिश्र आ सहकर्मीसभ जिज्ञासा आ आपत्तिक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। त्रुटिपूर्ण शिकायत बन्द भेला पर सहायता चालू होइत अछि। प्रणालीमे बादमे ‘स्थिति-जिज्ञासा’क अलग विकल्प जोड़ल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७० · स्कैनरक कारी छाँह

सुमित्रा देवीक पारिवारिक पेंशन पुरान सेवा-प्रमाणपत्रक अंकीय छविमे कारी रेखा देखिकऽ रोकल जाइत अछि। माधव झा मूल कागज आ ओही खेपक आन छवि जाँचि बुझैत छथि जे ई रद्दक चिन्ह नहि, स्कैनरमे क्लिपक छाँह अछि। साफ नब छवि बनैत अछि, पुरान छवि प्रमाणक इतिहास लेल बचैत अछि। सुमित्राक बकाया भुगतान जारी होइत अछि। केवल छायाकेँ निर्णयक आधार नहि बनएबाक नियम शुरू होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७१ · बाहर पठाओल भीतरक पत्र

बरखाक समय जिला अभिलेखागारक उत्तरी कोठरी भीजबाक खतरा मे अछि। अभिलेख सरकएबाक आन्तरिक आदेश भूलसँ बाहरी डाकमे चलि जाइत अछि, जाहिसँ कार्यालय अपनहि पत्रक प्रतीक्षा करैत अछि। कागजक औपचारिक यात्रा पूरा होएबासँ पहिनहि कर्मचारीसभ भीजैत गठरी सुरक्षित दक्षिण कक्षमे हटा दैत छथि। बादमे आन्तरिक आ बाह्य पत्रक अलग प्रक्रिया बनैत अछि। कथा वास्तविक संरक्षण आ आदेशक कागजी यात्राक अन्तर देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७२ · नियुक्तिक पहिल दिन

विनयकान्त नियुक्ति-पत्र लऽ भूमि-अभिलेख कार्यालयक पहिल दिन पहुँचैत छथि आ काज शुरू करैत छथि। मुदा कर्मचारी-अंक आ कार्यभार-पाँजिक मेल नहि बैसला सँ हुनकर आधिकारिक नियुक्ति-दिन विवादित होइत अछि। प्रवेशक समय, उपस्थितिक पत्र आ कएल काजक प्रमाण अलग-अलग देखल जाइत अछि। कार्यभार-दिन निर्धारणक नब पाँजी खुलैत अछि। विनयकान्तक अपन निर्णय बाँकी रहितो अगिला कर्मचारीक पहिल दिनक प्रमाण सुरक्षित रखल जाइत अछि।

कथा १७३ · एके नामक दू वेतन

कृषि कार्यालयमे रामनरेश साह नामक दू कर्मचारीक पिताक नाम आ जन्मतिथि सेहो समान अछि। अंकीय यन्त्र हुनका एक व्यक्ति मानि अवकाश, वेतन आ पदोन्नतिक लेखा गड़बड़ करैत अछि। नीलिमा नियुक्ति-वर्ष, गाम, कर्मचारी-अंक आ वास्तविक उपस्थितिक सहायता सँ दूनूकेँ अलग पहिचान दैत छथि। पुरान अभिलेखक क्रमशः सुधार शुरू होइत अछि। प्रणालीमे एके नामक दू मनुष्यकेँ स्वतः एक नहि करबाक चेतावनी जोड़ल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७४ · उपस्थितिक प्रमाण लेल अनुपस्थित

कृषि क्षेत्र-सहायिका पूनम केँ अपन मैदानी उपस्थितिक प्रमाण लेल मुख्यालय जाए पड़ैत अछि। जखन ओ ओतय सत्यापन करबैत छथि तखन निरीक्षण-दल हुनका कार्यक्षेत्रमे अनुपस्थित मानैत अछि। एक्के समय दू ठामक अपेक्षाक विरोधाभास उघड़ैत अछि। मासिक सत्यापनक तिथि अलग-अलग आ आधा दिनक समय-सीमा बनैत अछि। फेरो सत्यापन लेल क्षेत्र छोड़बाक दबाव बचैत अछि, जाहिसँ असली कृषिसेवाक समय घटैत अछि।

कथा १७५ · सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

भूमि-अभिलेखक मूल पृष्ठ काटल नहि जाइत, सभ सुधार अलग पाँजीमे लिखल जाइत अछि। सीता देवी आ रामवृक्षसँ जुड़ल जमीनक अनेक संशोधनक प्रभावी तिथि स्पष्ट नहि रहने वर्तमान स्वामित्व आ पुरान ऋणक उलझन उठैत अछि। नेहा आ सुरेश मूल अभिलेख, सुधार आ लागू होएबाक दिनक्रम मिलबैत छथि। सीता देवीक वर्तमान अधिकार स्पष्ट होइत अछि। प्रमाण बनबैत समय केवल आखिरी नाम नहि, संशोधनक समय सेहो जाँचेबाक नियम बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७६ · प्रेषक-विहीन लिफाफा

सामाजिक सहायता कार्यालयक प्राप्ति-मेज पर एक मोहरबन्द लिफाफा भेटैत अछि जाहि पर प्रेषकक नाम नहि। अंकीय पाँजी अज्ञात व्यक्तिक पत्र स्वीकार नहि करैत अछि। रमा झा आ सहकर्मीसभ अस्थायी प्राप्ति-अंक देलाक बाद पत्र खोलैत छथि। भीतर सात लाभार्थीक गलत अभिलेख सुधरबाक सूचना भेटैत अछि, जे जाँचमे उपयोगी सिद्ध होइत अछि। बादमे अज्ञात प्रेषक लेल अलग खाँचा बनैत अछि, ताकि परिचयक अभावमे सत्यापन योग्य सूचना हराय नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७७ · छायाहस्ताक्षर

सहायता-स्वीकृतिक प्रशिक्षण-प्रारूपमे अधिकारीक पुरान हस्ताक्षरक छवि नमूना रूपमे राखल जाइत अछि। ओ छवि वास्तविक पत्र पर छपि स्वीकृति बुझायल लगैत अछि आ कमला देवी सहित अनेक लाभार्थीकेँ विधिवत निर्णय सँ पहिने भुगतान होइत अछि। अधिकारी मीरा कर्ण स्पष्ट करैत छथि जे हस्ताक्षरक आकार हुनकर अछि, मुदा ओहि पत्रक निर्णय नहि। जाँच पछाति योग्य मामिलाक वास्तविक स्वीकृति देल जाइत अछि आ नमूना-हस्ताक्षर हटाओल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १७८ · क्रमांक ०००

नब वर्षक पहिल आवेदन मालती देवी दैत छथि, मुदा क्रमांकन-प्रणाली हुनका ‘०००’ अंक दैत अछि जे परीक्षण लेल सुरक्षित मानल जाइत अछि। कागज जमा भेलो मान्य पावती नहि बनैत अछि। अर्चना झा प्राप्तिक समय आ सत्यापनक प्रमाण जुटबैत छथि। विशेष निर्णयसँ ‘०००’ वास्तविक आवेदन मानल जाइत अछि आ मालतीक सहायता स्वीकृत होइत अछि। नब नियम बनैत अछि जे सेवा शुरू होएबासँ पहिने यन्त्रक प्रारम्भिक परीक्षण समाप्त रहय।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७९ · जीवितक गवाह

देवनारायण मंडलक अंगुली-चिन्ह साफ नहि उठैत अछि, तेँ वृद्धावस्था सहायताक जीवित-प्रमाण लेल दू गवाह चाही। पहिल गवाह हरिहर अपन प्रमाण दैत छथि, मुदा दोसर गवाहक सत्यापन सँ पहिने हरिहरक मृत्यु होइत अछि। यन्त्र पहिल गवाही अमान्य करैत अछि। रूपा बुझबैत छथि जे गवाहीक वैधता ओकर देल गेल क्षण पर आधारित होएबाक चाही। सुधारक बाद देवनारायणक सहायता चलैत अछि आ मृत गवाहक पहिने देल सत्य प्रमाण सुरक्षित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १८० · बन्द विभागक अन्तिम काज

पुनर्वास प्रकोष्ठ औपचारिक रूपेँ समाप्त भऽ गेल अछि, मुदा कमला देवीक बारह वर्षसँ अटकल जमीन-मुआवजाक अन्तिम निर्णय बाँकी अछि। लिपिक शशिकान्त कार्यालयक नाम, मोहर, अधिकारीक अधिकार आ निष्क्रिय कर्मचारी-अंकक बीच कागज चलबैत छथि। विशेष आदेशसँ कमलाकेँ शेष मुआवजा भेटैत अछि। मुदा शशिकान्तक अपन मानदेय आ औपचारिक सेवा-समाप्ति अटकल रहैत अछि। विभाग बन्द भेलाक बादो ओकर मानवीय दायित्व स्वतः समाप्त नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८१ · दू टिकट

गणेशकेँ दिल्लीमे तीन मासक निर्माण-काज आ पत्नी ललिताकेँ पटनामे स्वास्थ्य-सहायिका प्रशिक्षणक अवसर भेटैत अछि। घरक बचत दुनूक खर्च नहि उठा सकैत। गणेश चुपचाप अपन टिकट घुराकऽ ललिताक शुल्क जमा करैत छथि, आ ललिता सेहो अपन टिकट घुराकऽ गणेशक पंजीयनक खर्च दैत छथि। स्टेशन पर दूनूकेँ एक-दोसराक त्याग बुझाइत अछि। रेलगाड़ी छूटि जाइत अछि, मुदा आगामी अवसरक आशा बचैत अछि। एक-दोसरसँ स्पष्ट बात करबाक महत्त्व सामने अबैत अछि।

कथा १८२ · कंगनक डिब्बा

सरिता माएक देल कंगन बेटी मंजरीक विवाह लेल बरखों सँजोने छथि। सोनारक जाँचमे ओ सोना नहि, सुनहरा परतवला पित्तरि निकलैत अछि। डिब्बाक नीचाँ माएक पत्र आ रसीदसँ बुझाइत अछि जे असली सोना पहिनहि बेचि परिवारक गिरवी पड़ल आँगन आ कोठली छुड़ाओल गेल छल। मंजरी विवाहमे ओ बनौटी कंगन आ पत्रकेँ परिवारक स्मृतिक रूपमे स्वीकार करैत छथि। असली सम्पदा धातुमे नहि, बाँचल घर आ मातृ-त्यागमे अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८३ · लाल स्वेटर

मीरा अपन दिवंगत पिताक पुरान भूरा कम्बल फेंकय नहि चाहैत छथि, कारण ओकर संग बाढ़ि आ बचपनक अनेक स्मृति जुड़ल अछि। सरस्वती देवी सेहो बेटी लेल नव गरम वस्तु चाहैत छथि। दूनू अपन-अपन गुप्त प्रयत्नसँ पुनर्बुनाई केन्द्र पहुँचैत छथि। एक्के कम्बलक ऊनसँ बेटी लेल लाल स्वेटर आ माए लेल हलुक कम्बल बनैत अछि। दूनूमे बचल कारी तन्तु पुरान स्मृतिक जोड़ बनि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८४ · पोखरिक ओहि पार

माधव शहरसँ घुरि पोखरिक ओहि पारक जमीन नापबाक कागज लऽ पिता हरिमोहन झासँ बात करैत अछि। लाल सूतसँ बाँधल सीमापर गामक स्त्री-बच्चा रोज छोट बाटसँ गुजरैत छथि। जमीनक बढ़ैत दाम आ साझा आवागमनक बीच तनाव अछि। पिता माएक पुरान चलन स्मरण करबैत छथि। ढीला खूँटा लग बच्चासभकेँ पार करबैत माधव सूत उठबैत अछि आ खूँटा कठोर माटिमे भीतर गाड़बाक विचार करैत अछि। कथा निर्णायक घोषणाक बदला व्यवहारमे बदलैत संवेदनशीलता देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८५ · तीनटा खाली कुर्सी

अर्चनाक विवाहक भोजमे जनार्दन तीन कुर्सी विशेष रूपेँ अलग रखैत छथि। ई भानसिया रामचरित, पत्तल सम्हारनिहार फुलो काकी आ पानि दैत नन्दू लेल अछि। ओसभ दिनभरि पाहुनक सेवा करैत छथि आ अन्तिम पाँति धरि बैसि नहि पबैत। राति बैसबाक आग्रह भेलो अपन भोजन भानसघरमे करय जाइत छथि। तीनू कुर्सी खाली रहि जाइत अछि। बराबरीसँ बैसेबाक इच्छा आ श्रमिकक अपन आदतिक बीचक दूरी कथा उजागर करैत अछि।

कथा १८६ · बान्ह पर साँझ

नदीक कटाव भाइ जगदीश आ रमाकान्तक खेत निगलि रहल अछि। ओसभ पिता सँ भेटल नाप-डोरी लऽ बचल जमीनक सीमा देखय बान्ह पर अबैत छथि। मुदा टूटैत माटिक सामने खूँटाक पुरान अर्थ घटि जाइत अछि। दूनू लाल चिन्हवला बाँसक खूँटा खेतक सीमा देखेबाक बदला बान्हक नालीक ढहैत माटि थामबाक काजमे लगबैत छथि। अमीनकेँ नाप पानि उतरला धरि टारबाक कहल जाइत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १८७ · अन्तिम लोकल

एकतीस वर्षक नौकरीक बाद उपेन्द्र झा रातिक अन्तिम लोकलसँ घर घुरैत छथि। स्टेशन पर हुनकर भेट माधवसँ होइत अछि, जे पुरान धन्धा छोड़ि नब रातिक काज पकड़य जा रहल छथि। उपेन्द्रक निश्चित रेलयात्रा समाप्त होइत अछि, मुदा घरमे बदलल दिनचर्या अपरिचित अछि। माधवक अनिश्चित नब यात्रा शुरू भऽ रहल अछि। परिवार आ कामक स्मृति बाँटि दुनू एक डब्बामे चलैत छथि; एक गोटे उतरि जाइत छथि आ दोसर अन्हार दिस बढ़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १८८ · आधा गिलास पानि

अस्पतालक प्रतीक्षालयमे जयनारायण आ पत्नी कमला जाँचक परिणाम आ चिकित्सकक निर्णयक प्रतीक्षामे छथि। दुनूक बीच आधा गिलास पानि आ नस्तीक कागज अछि। भीतरी भयक विषय सीधा नहि कहि ओसभ बस, नून-तेल आ घरक साधारण बात करैत छथि। कमला जाँच लेल भीतर जाइत छथि, फेर घुरि आओत छथि; परिणाम एखन स्पष्ट नहि। गिलासक बचल पानि एक-दोसराकेँ देबाक छोट प्रयत्नमे अपनत्व आ चिन्ताक गहिर भाव प्रकट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८९ · ओसाराक बल्ब

रामप्रसाद झाक साझा ओसाराक बल्ब बुझि जाइत अछि। अलग-अलग घरमे रहय लगल बेटा सुरेन्द्र आ नरेश अपन-अपन बल्ब अनैत छथि। समस्या बल्बमे नहि, पुरान साझा तारक ढीला जोड़मे अछि। दुनू मिलि चौकी सरकबैत, प्लास्टर खोलबैत आ तार ठीक करैत छथि। बत्ती जरैत अछि, मुदा फर्शक पुरान बँटवाराक रेखा एखनहुँ फिक्का देखाइत अछि। अन्तमे पिता बल्ब बुझा दैत छथि आ साझा चौकी बीचहि मे रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १९० · दू कट्ठा बालू

नदीक कटावसँ शिवनाथ मंडलक खेतक भाग बालूसँ ढँकि गेल अछि। बेटा बिपिन संग ओ नाप लैत छथि, मुदा सब किछु समाप्त मानि नहि बैसैत। बचल पूबक खेतमे पानि टिकएबाक नाली बनैत अछि। पड़ोसी रामसेवकसँ श्रम आ अतिरिक्त धानक पौधाक साझेदारी होइत अछि। बचल खेतमे रोपनी होइत अछि आ बालूवला भाग खाली रहैत अछि। बिपिन नाप-डोरीक बेकार लगैत गाँठ काटय चाहैत अछि, मुदा पिता रोकैत छथि; हानि मानि आगाँक काज जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९१ · बन्द रेडियो

तीन वर्षसँ बन्द पुरान रेडियो पोता सोनू निकालैत अछि। रघुनाथ बाबू ओकरा नसीम मियाँ सँ मरम्मत करबैत छथि, ताकि मौसम, नदीक जलस्तर आ खेतीक सूचना सुनल जा सकय। खराब डोरी बदलल जाइत अछि, मुदा पुरान टेढ़ पेंच अनावश्यक रूपेँ नहि हटाओल जाइत अछि। घरमे समाचार आ गीत फेर सुनाइत अछि। रघुनाथ बुझबैत छथि जे चलैत वस्तु केवल नब चमक लेल नहि बदलल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा १९२ · छत पर राखल जूता

अभयकेँ सूरतक कपड़ा-कारखानामे काज लेल घर छोड़य पड़त। यात्रासँ पहिने ओ भीजल पुरान जूता छत पर सुखबैत अछि। माए, पिता आ नेहा सामान, टिकट, भोजन आ जूताक टूटल तलवाक बात करैत छथि, मुदा विदाइक दुःख स्पष्ट नहि कहैत। भोरमे अभय ओही जूता पहिरि निकलैत अछि। ओकर गेला बाद पिता छत पर जूताक सुखल निशान देखैत छथि आ ईंटसभ हटबैत छथि। साधारण वस्तु परिवारक मौन बिदाइ बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९३ · एक कप चाय कम

हरिनाथक दोकानमे पहिले बिहान तीन कप चाह बनैत छल; पत्नी सुमित्रा दूध-संग्रह केन्द्रमे पाँजी लिखबाक नब काज पकड़लाक बाद दू कप रहि जाइत अछि। दोकानक उधार आ ग्राहकक सूक्ष्म जानकारीमे हुनकर पुरान श्रमक महत्त्व हरिनाथकेँ अनुभव होइत अछि। ओ धीरे-धीरे अपन ढंगसँ नब पाँजी बनबैत आ ग्राहकक संग व्यवहार सीखैत छथि। उल्टा राखल तेसर कप बदलल दिनचर्याक मौन संकेत बनि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९४ · बाँसक पुल

बरखासँ गामक बाँसक पुल कमजोर भऽ जाइत अछि। बारह वर्षसँ जमीनक बाटक विवादमे नहि बजनिहार हरिप्रसाद आ रामजतन पुलक दू कात पहुँचैत छथि। पानिमे फँसल डाढ़ि हटेबा आ पुलकेँ सहारा देबामे दुनू मिलि काज करैत छथि। बच्चा आ वृद्धाकेँ पार करबैत छथि। अगिला भोर मरम्मत लेल बाँस लऽ फेर भेटैत छथि। पुरान विवाद समाप्त नहि भेल, मुदा संकट साझा श्रमक बाट खोलि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९५ · अधकटल आम

घर बँटला बाद जनार्दन आ माधवक बीच देबाल अछि, मुदा पुरान आमगाछ साझा रहि गेल अछि। छाजन पर झुकल डाढ़ि काटैत समय बरखा भऽ जाएबासँ डाढ़ि आधा कटल रहैत अछि। राति माधव बाँस लगा ओकर भार थामैत छथि। भोरमे दुनू मिलि डाढ़ि सुरक्षित उतरबैत आ काँच आम जुटबैत छथि। अधकटल आमक दू फाँक अलग-अलग घरमे पहुँचैत अछि। गाछक कटल ठाम पर लेप लगबैत दुनू बचल सम्बन्धक सम्भावना राखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९६ · माछक जाल

कमला नदीक कटाव धरनीधरक घर लग बढ़ि रहल अछि। बेटा मोहन ऊँचका बारीमे सुरक्षित ठाम देखैत अछि आ बीआ-सामान सरकबैत अछि, मुदा पिता घर छोड़बाक बात नहि कहय चाहैत छथि। माछ मारय गेलापर नदीक खोखर किनार आ बदलल धार देखाइत अछि। ओसारामे दरार बढ़ला पर धरनीधर नब छाजनक तैयारी स्वीकार करैत छथि। भोरमे ओसभ पहिने माछक जाल ऊँचका बारीमे पसारैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९७ · भोरक धुआँ

मालतीकेँ दूरक केन्द्रमे काज करबाक लेल घर छोड़ि बहिनक लग रहय पड़त। यात्राक भोरमे ओ सास-ससुर आ परिवार लेल रोज जेकाँ भोजन बनबैत छथि। सभ सामान आ बाटक बात करैत छथि, मुदा बदलि रहल घरेलू जीवन पर मौन छथि। सास आगाँक काज सम्हारबाक भरोसा दैत छथि। मालती धानघरक चाबी ओतहि छोड़ि गाड़ीमे बैसैत छथि। चूल्हिक राखि नीचाँ सँ उठैत धुआँ घरक पुरान आत्मीयताक स्मरण बनि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९८ · बिना घंटीक साइकल

माधव झा पुरान साइकल केशो मिस्त्री लग मरम्मत लेल अनैत छथि। ओ रोक, पहिया आ भीतरक नली ठीक करबबैत छथि, मुदा घंटी, टेढ़ सामान-पाटी आ फाटल गद्दी अनावश्यक रूपेँ बदलबय नहि चाहैत। बादमे छड़ी नेने एक स्त्री अबैत छथि आ धीरे-धीरे साइकल फेर चलएबाक प्रयास करैत छथि। ओ बिना घंटी स्वयं आवाज दऽ लोककेँ बाट देबाक कहैत सड़क पर बढ़ि जाइत छथि। पुरान रूप बचबैत गतिशीलता घुरैत अछि।

कथा १९९ · पाँच मिनट देरी

नलकूपक सीमित पानि पाँच घरमे निर्धारित समय अनुसार बाँटल जाइत अछि। महेन्द्र अपन बाछा खोलबाक कारण पाँच मिनट देरीसँ आबैत छथि। बचपनक मित्र दयाकान्त लिखल नियमक आधार पर पानिक धार बदलि देने छथि। महेन्द्रक किछु क्यारी सुखल रहि जाइत अछि आ मित्रतामे ठंढापन अबैत अछि। सोनमाक पालि सेहो समय पर चलबाक अछि। अगिला पटवनमे दूनू फेर समयसँ पहिने एकसंग बैसैत छथि। नियम आ सम्बन्धक बीचक सूक्ष्म तनाव खुलल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–२

कथा २०० · उजड़ल मेड़

भारी बरखासँ देवनाथ आ रघुनाथक खेतक बीच मेड़ तीन ठाम टूटैत अछि। पुरान पानिक विवादसँ दूनू परिवारक मेलजोल बन्द छल। बचल खेती लेल ओसभ एक संग माटि भरैत छथि आ पुरान जलनिकासक मुँहक जगह बाँसक नब बाट बनबैत छथि। नवल आ चन्दा फेर मेड़ परसँ विद्यालय जाए लगैत छथि। मेड़ ठाढ़ रहैत अछि, मुदा पानि आ लोकक गुजरबाक बाटो खुलल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०१ · विद्यालयक जूता

मोती पासवान केँ अधिया पर छओ कट्ठा खेत भेटबाक अवसर भेटैत छनि, मुदा मकईक बीया किनबाक पाइ आ बेटी सरिताक फाटल विद्यालयक जूता बदलबाक खर्च एकसंग नहि जुटैत अछि। सरिताक घिसल एड़ी देखलाक बाद ओ जूता किनबाक निर्णय लैत छथि आ खेत दोसर किसानक हाथ चलि जाइत अछि। बादमे ओही खेतमे मजदूरी करैत हुनका मकई भेटैत छनि, जाहिमे सँ पाँचटा भुट्टा अगिला बोआईक बीया लेल सुरक्षित राखैत छथि। बेटीक पढ़ाइ आ खेतीक भविष्यक बीच हुनकर कठिन चुनाव कथा केँ आकार दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०२ · धानक बोरा

रामबृक्ष यादव पत्नी दुलारीक औषधि लेल टाका जुटेबाक आशामे तेरह बोरा धान सरकारी खरीद केन्द्र लऽ जाइत छथि। नमीयुक्त कहि पूरा खेप घुरा देल जाइत अछि। विवश भऽ ओ एक बोरा कम दाम पर बेचि औषधि किनैत छथि आ बाँकी धान परिवारक संग सुखबैत छथि। दोसर बेर बारह बोरा स्वीकृत होइत अछि, मुदा घटल वजन, ढुलाई आ सस्ता बिक्रीसँ घाटा होइत छनि। रामबृक्ष आर्थिक नुकसानक हिसाब बुझैत छथि, संगहि समय पर औषधि पहुँचबाक आवश्यकताकेँ सेहो स्वीकारैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०३ · पंचायतक नल

पछबरिया टोलाक लेल स्वीकृत सार्वजनिक नल नवलकिशोर सिंहक निजी फाटक भीतर लगा देल जाइत अछि। शुरूआतमे पानि सहज भेटैत अछि, मुदा क्रमशः समयक रोक आ घरक मनमाना नियम स्त्रीसभक दैनिक जीवन बाधित करैत अछि। मालती, शान्ति आ आन स्त्री मिलि तय करैत छथि जे एक गोटाकेँ रोकल जाए तँ सभ संग आवाज उठौत। नवलकिशोर केँ अपन मूँगक फसल बचेबाक लेल ओोही स्त्रीसभक श्रम चाही होइत छनि। बातचीतक बाद बाँसक टाटसँ घरक निजता अलग होइत अछि आ नल तक निर्बाध पहुँच सुनिश्चित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०४ · गोरूक दाम

दुखना यादवक बूढ़ गोरू बसन्त बारह वर्ष धरि परिवारक खेतीक आधार रहल अछि, मुदा आब ओकर पएर खराब अछि आ चारा तथा रबीक जोताइक खर्च बढ़ि रहल अछि। बेटा किशुन ओकरा बेचबाक पक्षमे अछि। दुखना केवल दाम नहि, खरीददार रामसेवकक बथान, पशुक विश्राम आ देखभालक व्यवस्था सेहो जाँचैत छथि। बिक्रीक पाइ सँ खेतक आवश्यक खर्च पूरा होइत अछि। किछु दिन बाद बसन्त केँ हलुक गाड़ी खींचैत, स्वस्थ देखिकऽ दुखना आश्वस्त होइत छथि, यद्यपि पुरान संगक रिक्तता बनल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०५ · मजदूरी

ईंट-भट्ठा पर रामफल सदा आ हुनकर परिवारक मजदूरी हजार ईंटक गिनती पर निर्भर अछि। छोट-छोट बचल ईंटक संख्या पाँजिमे नहि जुड़लासँ परिवारक अर्जित मजदूरी गायब होइत रहल अछि। साँझक पाठशालामे पढ़निहार चन्दा हिसाब कऽ भेद पकड़ैत अछि आ शेष ईंट अलग चिन्हित करैत अछि। आन मजदूर परिवारक सहयोगसँ पूरा हजार आ बाकी गिनती मजदूरक सामने लिखबाक व्यवस्था बनैत अछि। पुरान सभ बकाया नहि भेटैत अछि, मुदा नव हिसाबमे पचास ईंटो बिना दर्ज भेल नहि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २०६ · आधारक औंठा

वृद्धा फुलमन्ती देवीक घिसल अँगुरीक रेखा राशन वितरणक यन्त्र पर नहि पढ़ाइत छनि, फलतः हुनका अनाज नहि भेटैत अछि। पड़ोसी रामचरित अपन औंठा लगा कऽ हुनकर हिस्सा उठेबाक अनौपचारिक उपाय स्वीकार नहि करैत छथि; ओ अस्थायी रूपेँ दू सेर चाउर उधार दैत छथि आ उचित वैकल्पिक सत्यापनक लेल संग जाइत छथि। प्रमाणक आधार पर फुलमन्ती अपन नामसँ राशन पबैत छथि आ उधारो पूरा चुकबैत छथि। अगिला मास असफल औंठाछाप पर वैकल्पिक प्रक्रिया उपलब्ध होइत अछि। कथा अधिकार, स्वाभिमान आ सहायता बीचक अन्तर उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २०७ · मकईक खेत

मकईक खेतमे बनसूअरक उपद्रव रोकबाक लेल महेश्वर महतो राति-राति मचान पर पहरा दैत छथि। हुनकर बेटा रतन विद्यालयक गणित-जाँच आ खेतीक रखवारी बीच फँसि जाइत अछि। महेश्वर किछु कच्चा भुट्टा बेचि नुकसान घटबैत छथि आ नींद तथा थकानक कठिनाइ सहैत रतनकेँ परीक्षाक तैयारी लेल रातिक पहरासँ अलग करैत छथि। कटनीमे अनुमानसँ एक बोरा कम उपज भेटैत अछि, मुदा रतन पढ़ाइ समाप्त कऽ काजमे हाथ बँटबैत अछि। बाबू-पुताक बातचीत खेतीक श्रम आ शिक्षाक साझा उत्तरदायित्व देखबैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २०८ · बाढ़िक ऋण

कमला नदीक बाढ़ि लक्ष्मण महतोक अनाज, बीया आ खेतकेँ क्षति पहुँचबैत अछि। अगिला बोआई लेल लेल गेल ऋणक ब्याज चुकाबय ओ गेहूँक बदला तीन कट्ठामे जल्दी बिकयवला मटर लगबैत छथि। मटरक कमाइसँ ब्याज चुकैत अछि, मुदा मूल ऋण बाँकी रहैत अछि आ गेहूँक उपज घटैत अछि। कटनीक बाद तीन बोरा गेहूँ बेचि पहिल किस्त देल जाइत अछि। आगामी बाढ़िमे बीया बचाबय लक्ष्मण आ सरजू देवी घरक देवाल पर पहिने सँ ऊँच मचान बनबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २०९ · छोट मास्टर

बेरोजगार स्नातक उपेन्द्र गामक पुरान तेलघानीक ओसारमे बच्चासभकेँ पढ़बैत अछि आ लोकक व्यंग्यसँ ‘छोट मास्टर’ कहबैत अछि। नौकरीक परीक्षामे सफलता नहि भेटलासँ ओकर अपन भविष्य अनिश्चित अछि, मुदा ओ गौरी आ आन बच्चाकेँ रटल उत्तरक बदला प्रश्न पुछब, कारण खोजब आ अपन बोलीमे बुझायब सिखबैत अछि। गौरीक बाबू आरम्भमे शंका करैत छथि, बादमे पढ़ाइ जारी रखबाक अनुमति दैत छथि। विवाहक कोलाहलमे सेहो बच्चासभ प्रश्न लऽ उपेन्द्र लग पहुँचैत अछि; ओकर शिक्षकक असल पहिचान ओतहि उभरैत अछि।

कथा २१० · चूल्हिक धुँआ

योजनासँ भेटल गैस-सिलिण्डर जमुना आ हरिनन्दनक घरमे धुँआ रहित भोजनक सुविधा अनैत अछि; वृद्धा महेसरीक खाँसी सेहो कम होइत अछि। मुदा सिलिण्डर खाली भेलाक बाद ओकर महँग रिफिल तुरन्त सम्भव नहि होइत अछि। परिवार फेर लकड़ीक चूल्हि जलबैत अछि आ बरखामे धुँआ बाहर निकालबाक लेल झिर्री पर टीनक ढलान बनबैत अछि। धीरे-धीरे पाइ जोड़ि गैस भराओल जाइत अछि, तथापि दुनू चूल्हि परिस्थिति अनुसार चलैत रहैत अछि। कथा घरेलू स्वास्थ्य, ईंधनक लागत आ असमान सुविधाक व्यावहारिक सन्तुलन देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २११ · एक कट्ठा पोखरि

एक कट्ठाक पोखरिसँ छोट माछ पकड़ि झलो सहनी आ फूलो अपन घरक आवश्यक खर्च चलबैत छथि। डोमन चौधरी रोहू-कतला पालन आरम्भ कऽ पोखरिक घाट बाँस-रस्सीसँ घेरि दैत छथि, जाहिसँ झलोक जीविका प्रभावित होइत अछि। पोखरिमे पानि खराब भेला पर झलो अपन अनुभवसँ निकास आ ताजा पानिक उपाय सुझबैत अछि। डोमन केँ बुझाइत छनि जे पोखरि सम्हारबाक लेल स्थानीय ज्ञान आवश्यक अछि। अन्तमे घाटक किछु भाग खुलैत अछि, छोट माछ पकड़बाक अधिकार आ माछपालन दूनू सीमित सहमतिसँ चलैत अछि।

कथा २१२ · बीजक थैली

श्यामनन्दन महतो बाजारक संकर भिण्डीक बीज जल्दी उपज आ नीक दामक आशामे किनैत छथि; पत्नी दुलारी घरमे सँ बचाओल देसी बीज सेहो रखैत छथि। बरखाक मारिसँ संकर फसलक किछु पाँति नष्ट होइत अछि। दुलारी पुरान बीज अंकुरा कऽ रिक्त ठाममे बोबैत छथि, जाहिसँ देरीसँ सही, उपज चलैत रहैत अछि। संकर बीज पहिल हाटमे लाभ दैत अछि, मुदा देसी बीज संकटमे सहारा बनैत अछि। अगिला मौसम लेल श्यामनन्दन संकरक कम थैली आ घरक देसी बीज दुनूक व्यवस्था चुनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २१३ · दू बकरी

विधवा कमला देवीक दू बकरी धौरी आ कजरी, हुनकर बेटी सुनीताक महाविद्यालयक खर्च पूरा करबाक चल सम्पत्ति छथि। कजरीक मृत्यु आ धौरीक बीमारीसँ भावी आमदनीक आधार डगमगा जाइत अछि। सुनीताक परीक्षा-पत्र भरबाक लेल कमला चारि दिनक मजदूरी अग्रिम लैत छथि आ बादमे श्रम कऽ ओकर हिसाब चुकबैत छथि। सुनीता पढ़ाइक संग धौरीक देखभालमे हाथ बँटबैत अछि। कठिन बचत आ अतिरिक्त मजदूरीक बीच परीक्षा जारी रहैत अछि; कजरीक खाली खूँटा आ बचाओल रस्सी परिवारक क्षतिक साक्षी बनैत अछि।

कथा २१४ · श्रम कार्ड

सूरतक निर्माणस्थल पर काज करनिहार नन्दलाल पासवान आ आन प्रवासी मजदूरक श्रम कार्ड मजदूर-मुखिया जगेसर अपन बाकसमे राखि लैत अछि। एहि सँ मजदूर अपन पहचानक कागज पर पूर्ण अधिकार नहि रखैत छथि। नन्दलाल श्रमिक सहायता-शिविरमे जानैत छथि जे पाँजि सँ प्रति फेर भेटि सकैत अछि आ मूल कार्ड मजदूरक अपन लग रहबाक चाही। ओ नव प्रति हासिल कऽ जगेसरसँ मूल कार्ड घुरबैत छथि। धीरे-धीरे आन मजदूर सेहो अपन कार्ड लैत छथि। काजक शक्ति-सन्तुलन पूरा नहि बदलैत, मुदा पहचानक कागज द्वारा नियन्त्रण घटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २१५ · माटिक घर

जितन पासवानकेँ आवास-सहायताक पहिल किस्त पर नव ईंटक घर बनबाक आशा जगैत अछि, मुदा दोसर किस्त नहि अएला सँ बरखाक पहिने छत अधूर रहि जाइत अछि। पुरान माटिक घरक टूटल कोठरीक बाँस, चौखटा आ खपड़ासँ परिवार नव देबाल भीतर अस्थायी छाहरि बनबैत अछि। आँधी-बरखामे ई उपाय धानक बोरा आ पोथी बचबैत अछि। जितन आ फुलकुमारी बचल सीमेंटसँ देबालक माथ सुरक्षित करबैत छथि। पक्काक स्वप्न अधूर अछि, मुदा पुरान घरक सामग्री नव घरकेँ तात्कालिक आश्रय दैत अछि।

कथा २१६ · कर्जक कागज

सुगना महतो खेती लेल अठारह हजारक ऋण लैत छथि, मुदा ऋणपत्रक शर्त आ ब्याजक हिसाब पढ़ि नहि सकैत छथि। बेटीक सहायता सँ ओ संख्या चिन्हब आ ब्याज जोड़ब सीखैत छथि। मकईक किछु भाग बेचि समय पर किस्त भरैत छथि, बाँकी अनाजक भाव चढ़बाक प्रतीक्षा करैत छथि। नव ऋणमे पुरान बारह हजार जोड़बाक प्रस्ताव एलापर ओ शर्त पढ़वा कऽ ओकरा टारि दैत छथि। अरहर आ गेहूँक कमाइसँ शेष किस्त चुकला पर रसीदक ‘बाकी—शून्य’ स्वयं चिन्हैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २१७ · सामुदायिक धान

सोनबरसा टोलाक सामुदायिक कोठारमे जमा धान संकटग्रस्त परिवारसभक सहारा अछि। सावनमे अनाजक दाम बढ़ला पर किछु सदस्य धान बेचि नगद कोष बनय चाहैत छथि, मुदा मुखिया विमला देवी आ आन लोक भुखायल परिवारक आवश्यकता आगाँ रखैत छथि। संयुक्त हिसाबसँ बुझाइत अछि जे कोठार बेचला सँ गामकेँ जतेक लाभ होएत, परिवारसभकेँ बाहरसँ अनाज किनबामे ताहिसँ बेसी खर्च पड़त। अन्तमे धान उधार बाँटल जाइत अछि, आ कटनी पर बुधनी पहिल बोरा संग निर्धारित अतिरिक्त धान घुरबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २१८ · पहिल फसल

सूरतमे आठ बरख काज कऽ घुरल नयन मंडल खेतीक सभ लागत पाँजिमे लिखि पहिल फसलक योजना बनबैत अछि। ओ बारह मजदूर एक दिनमे भेटबाक अनुमान करैत अछि, मुदा रोपनीक समय पानि आ श्रमिकक उपलब्धता मिलि नहि पबैत अछि। देरिसँ रोपल भागक उपज घटैत अछि। अनुभवी बुधन पासवानसँ नयन सीखैत अछि जे खेतीक श्रम केवल नगद मजदूरी नहि, उपयुक्त समय पर परस्पर हाथ बँटेबाक व्यवस्था सेहो अछि। अगिला मौसमक हिसाबमे ओ ‘बेराबेरी’ आ श्रमक समय केँ स्पष्ट स्थान दैत अछि।

कथा २१९ · मधुबनीक बन्द कोठली

चित्रकार कौशल पासवान केँ अपन बन्द कोठलीक पुरान भित्तिचित्रमे माछक आँखि, कदम्बक डार आ तीन बिन्दु बदलैत देखाइत अछि। शिष्या चन्द्रकला चित्रक वास्तविक स्थिति जाँचैत अछि आ कौशलक हाथ पर ताजा रंगक चिन्ह देखैत अछि। अन्ततः कौशल स्वीकारैत छथि जे रेणुका एहि चित्रमे हुनकासँ बेसी काज कएने छलीह, मुदा ओ हुनकर योगदान दबा कऽ तीन बिन्दु मेटा देने छलाह। कोठली खुलल रहय लगैत अछि। नमी, पुरान रंग आ स्मृतिक कारण चित्रमे होइत देखाइल बदलाव पूर्ण रूपेँ निर्णीत नहि होइत, मुदा कलाकारक दबाओल सत्य प्रकट भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२० · घंटीक आवाज

पुरान हवेलीक देबाल भीतर राति-राति घंटी सन टनकार सुनि शैलकान्त झा बेचैन होइत छथि। आवाज हुनका पुरान अपराध मोन पाड़ैत अछि: सेवक भोला बीमार बेटी पारोकेँ देखय गेल छल, मुदा मालिकक डर सँ शैलकान्त ओकर अनुमति देबाक बात नकारि देने छलाह, जाहिसँ भोलाक नौकरी आ मजदूरी गेल। भतीजीक सहयोगसँ ओ पुरान पाँजिमे सुधार-पत्र लिखि भोला केँ दैत छथि। मरम्मतमे भेटल ढीला जंग लागल तार टनकारक भौतिक कारण सिद्ध होइत अछि, मुदा कागज देलाक बादो तुरन्त क्षमा नहि भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२१ · पोखरिक आँखि

कजराही पोखरिक माछक पहरा देबाक लेल कथावाचक राति मचान पर रहैत छथि। जलघासक बीच कारी गोल चकती केँ ओ पोखरिक ‘आँखि’ मानि भयभीत होइत छथि। अनजान पदचिह्न, पानिक छपाक आ बदलैत गोल घेरा हुनकर संशय बढ़बैत अछि। एक राति मेड़क माटि धँसला पर ओ पाँकमे फँसि बचि निकलैत छथि। बौकू सहनी पुरान सोता आ पानिक भीतरक प्रवाहसँ घटनाक कारण बुझबैत छथि; मेड़ सुधारल जाइत अछि। तथापि जलघास हटला बादो पानिमे उठल गोल घेरा कथावाचकक भय आ अनिश्चितता पूर्णतः समाप्त नहि करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २२२ · दीवार भीतर

पुरान घरक भीजल देबाल मरम्मत करबैत शशिभूषण चौधरी केँ भीतर माटिक सीटीवला चिरै भेटैत अछि। ओ ओकरा अपन बचपन आ मञ्जरीसँ जुड़ल वस्तु मानैत छथि, मुदा बहिन आ पुरान कुम्हारसँ बातचीतमे यादक स्थान, रंग आ घटनासभ पर मतभेद उभरैत अछि। एक स्मृति दोसर स्मृतिसँ गुँथि जाइत अछि, आ वस्तु भेटलाक बाद पुरान दृश्य कतेक बदलि गेल, से तय नहि भऽ पबैत अछि। देबाल फेर बनि जाइत अछि; चिरै तख्ता पर राखल रहैत अछि, मुदा ओकर सत्यापित इतिहास अनिश्चित रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २२३ · कालिख

पुरान रसोईक देबाल पर कालिखक चिन्ह बेराबेरी उभरैत अछि। मालती केँ ओ चिन्ह गौरीक पढ़ाइ आ परीक्षा रोकबाक घटना मोन पाड़ैत अछि। कतेको वर्ष पहिने घरक डर सँ मालती पाछाँक फाटक नहि खोलने छलीह आ गौरी परीक्षा देबाक अवसर गँवा देने छलीह। गौरीसँ फेर भेंट पर ई दबाओल अपराधबोध सामने अबैत अछि। मिस्त्री तेलक पुरान छापक कारण धुँआमे आकृति उभरबाक सम्भावना बतबैत अछि, मुदा नव लेप पर फेर धब्बा उभरि जाइत अछि। कथा पछतावा, स्मृति आ भौतिक संयोगक अस्पष्ट सीमाकेँ खुलल छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२४ · लालटेन

पुरान बीज-भंडारक चौकीदार रामौतार बिजली रहितहुँ हर राति लालटेन जरौने रखैत छथि। सहायक बिरेन्द्र केँ हुनकर भयक कारण तखन बुझाइत अछि, जखन आँधीमे लालटेन बुझला पर रामौतार पुरान राहत-अनाज चोरीक रातिक अपराध सुनबैत छथि। अधिकारीक कहला पर ओ फाटकक चाबी देने, लालटेन बुझौने आ निर्दोष मजदूर लक्ष्मण पर गलत साक्ष्य देने छलाह। फाटकक ढीला कड़ी आ छतक खराबी बादमे ठीक भऽ जाइत अछि, मुदा पुरान घटना हुनकर भीतर बनल रहैत अछि। बिरेन्द्र लालटेन सम्हारबाक अर्थ आब भिन्न रूपेँ बुझैत अछि।

कथा २२५ · सात सीढ़ी

छापाखानाक तरहड़ि धरि सात सीढ़ी अछि, मुदा मालिक नवल केँ सातम सीढ़ीक बाद रहस्यमय ‘ठक’ सुनाइत अछि। आवाज हुनका किशोरावस्थाक घटना मोन पाड़ैत अछि: अपन ममिऔत भाइ गोपालसँ ईर्ष्या कऽ ओ अन्हारमे काल्पनिक आठम सीढ़ीक बात कहलनि, जाहिसँ गोपाल गिरि कलाई घायल कऽ बैसल। वर्तमानमे मिस्त्री पता लगबैत छथि जे ढीला लोखंडी काँटी आ काठक टेक देरिसँ आवाज करैत अछि। मरम्मतक बाद ध्वनि बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा नवलक भीतर अपराधक स्मृति रहि जाइत अछि; ओ सीढ़ी गिनब छोड़ि दैत छथि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २२६ · बन्द घड़ीघर

बेनीपट्टीक घड़ी-सुधारक केँ सामनेक बन्द घड़ीघरक काँटा चारि बजि बारह मिनट पर अटकल देखाइत अछि। एक राति सुनल घंटीक आठ चोट हुनका अठाइस वर्ष पुरान घटना मोन पाड़ैत अछि, जखन हुनकर अनुचित व्यवहारसँ घड़ीघरक कर्मचारी मजीद मियाँ पर दोष लागल छल। निरीक्षणमे ढीला धातुक पट्टी आवाजक सम्भावित कारण भेटैत अछि; दोसर साक्षी एक्के चोट सुनने छल। घड़ीसाज मजीदक बेटा समद केँ अपन पुरान झूठ स्वीकारैत छथि। घड़ीघर चुप रहैत अछि, मुदा हुनकर अन्तर्मनक अँटकल समयक सामना आरम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२७ · सफेद पाँख

बीज-दोकानदारक बन्द कोठलीमे बेराबेरी सफेद पाँख भेटबाक घटना हुनका अस्वस्थ करैत अछि। ओ पाँख गनैत, चिन्ह लगबैत आ राति जागि पहरा दैत छथि, मुदा पाँखक संख्या आ स्थानक स्मृति मेल नहि खाइत अछि। मरम्मत करैत महेन्द्र छतक पुरान नलीमे फँसल मृत कबूतर आ ओकर पाँख देखबैत अछि; छेद बन्द भेला पर नव पाँख आबब रुकैत अछि। तइयो काजरक बिन्दुवला पाँख बादमे पुरान पाँजिमे भेटैत अछि। ओ ओकरा जरा दैत छथि, मुदा अपन नींद आ स्मरणक विश्वसनीयता पर संशय रहि जाइत अछि।

कथा २२८ · अन्तिम चित्र

लहेरियासरायक छायाचित्रकार विनोद झा मृत व्यक्तिसभक अन्तिम चित्र बनबैत छथि। बाबूक पुरान काठक यन्त्रक धुँधला काँचमे एक अनचिन्हार युवकक मुख उभरैत देखिकऽ ओ व्याकुल होइत छथि। काँचक विशेषज्ञ दाग, इजोत आ कोणक कारण आकृति बनबाक बात बुझबैत छथि। नव काँच लगलापर काज सामान्य भऽ जाइत अछि, मुदा पुरान काँच पर मुख फेर देखाइत अछि। विनोद बुझैत छथि जे देखनिहारक मन अस्पष्ट दागमे पहचानक आकार भरि दैत अछि; अन्तिम चित्र बनबैत काल ई अनुभव हुनकर दृष्टि बदलि दैत अछि।

कथा २२९ · तरहड़िक पानि

बाढ़िक पानि उतरला बाद पित्तरि-काँसक कारीगर अमरेश साह केँ अपन तरहड़िमे लगातार बूँद टपकबाक आवाज सुनाइत अछि, जखन कि छत आ देबाल पर नव पानि नहि देखाइत अछि। सहायक जुगल सेहो आवाज सुनैत अछि। नली बन्द करब, बिजलीक बत्ती लगायब आ दिशा चिन्हित करबाक प्रयासक बादो प्रत्येक ध्वनिक कारण स्पष्ट नहि होइत। कौशल्या हुनका निरन्तर माप-जाँचक बेचैनी बुझबैत छथि। अमरेश पाँच साँस लऽ परिस्थिति देखबाक अभ्यास करैत छथि; एक सूखल कटोराक रहस्यमय निशानक बादो ओ अपन काज जारी राखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २३० · रातिक पाँति

मसान-घाटक अस्थायी रात्रि-अभिलेखपाल नीलकण्ठ झा केँ मृतकक पाँजिमे अपन नाम धूसर छापक रूपमे देखाइत अछि। ओ पाँति रद्द करैत छथि, मुदा निरीक्षक समझबैत छथि जे ऊपर राखल कागज पर लिखावट दबला सँ छाप बनि सकैत अछि। सम्भावित स्रोत भेटलाक बादो अक्षरक स्थानक पूरा मिलान नहि होइत। पन्द्रह दिनक सेवा समाप्त कऽ नीलकण्ठ अपन नियमित कार्यालय घुरैत छथि। बादमे मसानक पाँजि देखैत ओ पाबैत छथि जे रहस्यक छाप मद्धिम भेल अछि, मुदा खाली पाँतिक प्रति हुनकर सावधानी बनि रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २३१ · साँकल

सकरीक रूपा-कारीगर दीपनारायण साहक घरक मोट दरवज्जा रातिमे साँकल चढ़ाओल रहितहुँ खुलल भेटैत अछि। चोरीक डर सँ ओ राखि, धागा आ पहराक सहारा लैत छथि। रेलगाड़ीक कम्पनक समय दरवज्जाक बाम भाग हिलैत देखाइत अछि। बढ़ई रामउद्गार घुन खायल काठ आ ढीला धुरीक दोष पकड़ि मरम्मत करैत अछि। दरवज्जा फेर स्थिर रहैत अछि, मुदा रातिक हलुक धातुक ‘टिक’ सुनला पर दीपनारायण धातुक सिकुड़बाक सम्भावना मानैत सेहो साँकलक संग बाम कब्जा जाँचबाक आदति रखैत छथि।

कथा २३२ · धड़कन

चिकित्सक प्रभाकर मिश्र कैँ अपन चिकित्सालयक पछिला बन्द कोठलीमे धड़कन जेकाँ आवाज सुनाइत अछि। ई ताल हुनका पुरान रोगी सरयू आ हुनकर मृत्युक समयक असमाप्त स्मृति दिस घुरबैत अछि। नलसाज नली भीतरक चमड़ाक टुकड़ी आ जंग लागल छल्ला खोजि निकालैत अछि, जकर टकराहटसँ आवाज होइत छल। नली हटला पर कोठली शान्त भऽ जाइत अछि, मुदा घरमे अपन नाड़ी सुनैत प्रभाकर फेर ओही ताल खोजय लगैत छथि। बाहरी आवाजक समाधान हुनकर स्मृतिजन्य प्रश्न समाप्त नहि करैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २३३ · काला दर्पण

मधुबनीक लहठी-सिन्दूर दोकान चलौनिहार मालती देवी केँ पुरान कारी धब्बावला दर्पणमे कखनहुँ प्रतिबिम्ब देरीसँ हिलैत देखाइत अछि। बेटी चन्दा अनेक बेर बतबैत अछि जे मालती अपन हाथ पहिनहि हिला लेने छलीह। काँचक कारीगर पुरान लेप आ दूहरी छायाक कारण बतबैत दर्पण सुधरैत अछि। नब लेपक बादो मालतीकेँ एक क्षणक विलम्ब बुझाइत अछि, मुदा ओ सम्भावना मानैत छथि जे भेद प्रतिबिम्बमे नहि, अपन देखबाक प्रक्रियामे अछि। अन्तमे ओ दर्पणक परीक्षा छोड़ि प्रत्यक्ष व्यक्ति आ हुनकर काज दिस ध्यान दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३४ · छत पर पएर

मृदंग मढ़निहार रामबल्लभ दास केँ रातिमे घरक छत पर भारी पएर पड़बाक आवाज सुनाइत अछि, जखन कि छत तक स्थायी सीढ़ी नहि अछि। राखि पसारि पदचिह्न जाँचल जाइत अछि, मुदा कोनो स्पष्ट चिन्ह नहि भेटैत। बरखाक पानि निकालनिहार पुरान बाँसक पनिहार देबालसँ टकरा आवाज देबाक कारण बुझाइत अछि। बान्हलाक बाद शान्ति होइत अछि, तथापि बीचमे फेर किछु धप सुनाइत अछि। पनिहार पूरा हटला बादो एक राति ध्वनि आ हलुक रगड़ सुनाइत अछि। रामबल्लभ रहस्यक पाछाँ दौड़बाक बदला अपन मृदंगक काजमे घुरि जाइत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २३५ · चिट्ठीक गन्ध

सेवानिवृत्त डाककर्मी शशिनाथ झा केँ पैतृक सन्दूकक पुरान चिट्ठी सँ भिजल सन, माटितेल आ सियाहीक गन्ध बुझाइत अछि। ई गन्ध हुनका डाकघरक पुरान घटनाक स्मरण करबैत अछि, जाहिमे डाक-वस्तु खोलबाक दोष अस्थायी पहरेदार रामफल पर पड़ल आ शशिनाथ भयवश सत्य नहि कहने छलाह। चिट्ठी हवा लगला पर गन्ध घटैत अछि, मुदा बरखा आ आन वस्तुक गन्ध पुरान अपराधबोध फेर जगबैत अछि। शशिनाथ चिट्ठी नहि फेंकैत छथि आ स्मृतिक असहज उपस्थिति स्वीकारैत अपन नियमित काज करैत रहैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३६ · नीलकंठ

मनीगाछीक फूलो देवी नीलकंठ पक्षीक आवाजकेँ अनिष्टक संकेत मानि घरक मखान फोड़बाक आ बाजार जाएबाक काज रोकि दैत छथि। कार्य-विलम्बसँ मालक मात्रा घटैत अछि, मुदा एकटा चोट आ पुरान पारिवारिक स्मृतिसँ हुनकर विश्वास मजबूत रहैत अछि। पुतोहु सरोजा देखैत छथि जे भयक नियम असहमत व्यक्ति सेहो सीखि लैत अछि। एक राति कड़ाहीक दरारसँ उठल आवाज नीलकंठ जेकाँ सुनाइत अछि। अगिला भोर पक्षी सचमुच बाजितहुँ परिवार काज जारी रखैत अछि आ फूलो देवी सेहो चूल्हि नहि बुझबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २३७ · दोसरा कोठली

जयनगरक होटलमे ठहरल कथावाचक केँ अठारह नम्बरक कोठलीक पाछाँ रातिमे एक दोसर किवाड़ देखाइत अछि, जकर नाम भवनक नक्शामे नहि अछि। भीजल देबालक लेप हटला पर मिस्त्री पुरान बन्द कएल किवाड़क आयताकार ईंट-जोड़ देखबैत अछि। नब लेप लगला बाद किवाड़क आकृति विलीन होइत अछि, मुदा फेर बरखामे नमी सँ उभरि जाइत अछि। भीतरसँ पन्ना उलटबाक आवाज सुनाइत अछि, जकर साधारण स्रोत पड़ोसी कोठली सेहो भऽ सकैत अछि। कथावाचक ठोस देबालक ज्ञान आ अनुभूत रहस्य दुनू संग होटल छोड़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३८ · माटिक भीतर

खजौलीक पैतृक घरक धँसल आँगन खोदैत मजदूरसभ केँ जंग लागल धातुक छोट डिब्बा भेटैत अछि। घरक मालिक केँ ओकर कुंडी, स्थान आ भीतरक नील वस्तुक स्मरण असामान्य रूपेँ पहिनहि होइत अछि। ओ अपन बाल्यस्मृति आ अनुमान बीच भेद नहि कऽ पबैत छथि। एक राति देह मानो स्वयं पएर गनि आँगनक दोसर स्थान तक पहुँचैत अछि, मुदा ओतय खोदला पर किछु नहि निकलैत। आँगन समतल भऽ जाइत अछि; डिब्बा तख्ता पर रहैत अछि आ मालिकक भीतर देहक स्मृतिक प्रश्न जीवित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २३९ · मुद्रांक

अंचल कचहरीमे सरकारी मुद्रांकक पित्तरिक गोल मुख गायब भऽ जाइत अछि, जाहिसँ प्रतिलिपि देबाक काज ठप पड़ैत अछि। कर्मचारी, अधिकारी आ सिपाही खोजब आ रपट लिखबमे उलझि जाइत छथि। अन्ततः मुद्रांकक मुख कार्यालयक सुरक्षित नमूना-नस्ती भीतर भेटैत अछि; ढीला पेचक कारण ओ अलग भेल छल। भविष्यक सुरक्षाक नाम पर मुद्रांक मेजसँ छोट साँकलमे बाँधल जाइत अछि। आब ओकरा खिड़की धरि लऽ जाएब सम्भव नहि होइत आ नागरिकक पाँति आरो लम्बा भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २४० · नस्तीक आत्मकथा

सिंचाइ नाला पार करबाक लेल टूटल साँघक मरम्मतिक माँगसँ जन्मल सरकारी नस्ती स्वयं अपन कथा कहैत अछि। सत्ताइस ग्रामीणक छोट निवेदन अलग-अलग शाखा, टिप्पणी, निरीक्षण आ उच्चाधिकारीक आदेशक बीच सात सँ उनसठ पन्नाक भऽ जाइत अछि। ताबत ग्रामीण स्वयं अस्थायी पार-पथ बना लैत छथि। कार्यालयक अन्तिम निर्णय पुनः निरीक्षण धरि सीमित रहैत अछि, आ नस्ती अभिलेखमे चलि जाइत अछि। किछु मास बाद ओही पार-पथक मरम्मति लेल नव निवेदन आबैत अछि। कथा कागजक विस्तार आ नागरिकक वास्तविक आवश्यकता बीचक दूरी पर व्यंग्य करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४१ · कुर्सी नम्बर सत्रह

सिंचाइ कार्यालयक लिपिक बाँकेश्वर झा खिड़की लगक कुर्सी नम्बर सत्रह पाबय चाहैत छथि। एहि आसक्तिमे ओ पदोन्नतिक अवसर धरि छोड़ि दैत छथि। अन्ततः हुनका सत्रह नम्बरक कुर्सी भेटैत अछि, मुदा ताबत खिड़कीक बाहर नव अभिलेख-भंडारक देबाल बनि चुकल रहैत अछि। धूप, हवा आ सड़कक दृश्य सभ हराइ जाइत अछि। नियमक कठोरताक हवाला दऽ ओ फेर बैसार बदलबाक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि आ कुर्सीक लाल अंक नव सियाहीसँ गाढ़ करैत छथि। कथा पद आ स्थानक प्रतीकसँ जुड़ल आत्मप्रवंचना देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४२ · नामक वर्तनी

उद्यान कार्यालयक वार्षिक प्रतिवेदनमे अधिकारी नगेन्द्र झाक नाम ‘नागेन्द्र’ छपि जाइत अछि। एकटा अतिरिक्त मात्राक सुधार लेल समिति पर समिति बनैत अछि, लागतक हिसाब चलैत अछि आ ओलावृष्टिसँ पीड़ित किसानसभक आवेदन अटकैत अछि। अधिकारी स्वयं लिखि सुधार प्रमाणित करला पर काज आगाँ बढ़ैत अछि। शुद्धि-पर्ची आबैत-अबैत अधिकारीक स्थानान्तरण भऽ जाइत अछि। नव अधिकारीक हस्तलिखित नाममे फेर वर्तनीक अन्तर देखाइत अछि, मुदा एहि बेर लिपिक बालेश्वर पहिने आवेदनसभ निपटेबाक निर्णय लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४३ · महान निरीक्षण

माप-तौल कार्यालय निरीक्षणक खबरि पाबि धूर साफ करब, खराब यन्त्र लुकेब आ व्यवस्थित प्रदर्शन बनयबामे जुटि जाइत अछि। जिला निरीक्षक संयोगसँ लगक सहकारी धान-भंडार कैँ कार्यालय बुझि ओतय पहुँचि जाइत छथि। ओ वास्तविक तौल, किसानक शिकायत आ खुलल कार्यप्रणाली देखि प्रशंसात्मक टिप्पणी लिखैत छथि। सरकारी कार्यालय बादमे एहि टिप्पणीकैँ सच बनयब लेल भंडार लग नियमित सेवा आरम्भ करैत अछि। अगिला प्रतिवेदन बनबैत काल अधिकारी प्रदर्शनक बदला वास्तविक कार्यक अनुभव आधार बनबैत छथि।

कथा २४४ · पंखाक प्रस्ताव

अंचल कार्यालयक बिगड़ल पंखा बदलबाक लेल प्रस्ताव सात प्रशासनिक पड़ावसँ गुजरैत अछि। गरमीमे कर्मचारी ओसारामे मेज राखि काज चलबैत छथि, लोक हाथक बेनासँ हवा करैत छथि, मुदा स्वीकृतिमे बेर लगैत अछि। खरीदादेश पहुँचलापर पुरान दर पर पंखा नहि भेटैत, तें नब मूल्यक अनुमति चाही होइत अछि। आसिन धरि नव पंखा लगैत अछि, जखन गरमी घटि चुकल रहैत अछि। कर्मचारी ओसाराक मेज फेर भीतर नहि अनैत छथि, जाहिसँ आम लोकक सुविधा बनल रहय।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४५ · दफ्तरक देवता

अभिलेख कार्यालयक पुरान अलमारी ‘दफ्तरक देवता’ कहल जाइत अछि, कारण जटिल नस्ती ओतय राखला पर मानो गायब भऽ जाइत अछि। नव लिपिक सुदीप मिश्र चन्द्रेश्वर महतोक अटकल नस्ती खोजैत एहिमे शंका करैत अछि। मरम्मतिक समय अलमारी हटौला पर देबालक फाँकसँ एक सय सत्ताइस पुरान नस्ती निकलैत अछि। कार्यालयकेँ अदृश्य बकायाक वास्तविक भार स्वीकारि आवेदन फेर चलाबय पड़ैत अछि। अलमारी देबालसँ अलग राखल जाइत अछि; एक नव नस्ती देखिकऽ वरिष्ठ लिपिक सेहो ओकरा लुकायबाक बदला पढ़य बैसैत छथि।

कथा २४६ · हस्ताक्षर

कुम्हार रामलोचन पण्डित कैँ विद्युत् चाक लेल स्वीकृत सहायता निकालबाक वास्ते जिला शिल्प पदाधिकारीक एक हस्ताक्षर चाही। ओ कार्यालयक अनेक कोठली घूमैत छथि, जखन कि अधिकारी स्वयं सामान्य वेशमे चाह पीबैत भेटि जाइत छथि। परिचय खुलला पर अधिकारी तुरन्त हस्ताक्षर करि दैत छथि; जकर लेल पूरा दिन लागल, ओ काज किछु क्षणमे भऽ जाइत अछि। घुरैत समय रामलोचन देखैत छथि जे चाह बेचयवालाक भुगतानक कागज फेर सत्यापनक नाम पर भटकेबाक अछि। कथा पहुँचक असमानता आ कार्यालयी चक्करक विडम्बना देखबैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २४७ · विशेष टोपी

नव बीज-प्रमाणीकरण पदाधिकारी शम्भुनाथ कर्णक खादी टोपी पर नील धागाक दू टाँका अछि। कर्मचारी हुनकर पदोन्नति आ कार्यकुशलताक रहस्य टोपीमे खोजि एक-जकाँ टोपी बनबाबय लगैत छथि। मुदा पदोन्नति हुनका भेटैत अछि जे टोपी पहिरबे नहि करैत छथि—कर्मठ देवकान्त पासवान केँ। बादमे बुझाइत अछि जे अधिकारी टोपी पुरान घावकेँ धूपसँ बचाबय पहिरैत छलाह आ नील टाँका हुनकर बेटी फाटल धार पर देने छलीह। तथापि कर्मचारी टोपीक प्रतीक छोड़ि नहि पबैत छथि।

कथा २४८ · चाय समिति

जल-निकासी कार्यालयक अधिकारी केँ बरखों सँ चन्द्रकला देवीक दोकानसँ आबयवला चाह पसिन्न नहि पड़ैत अछि। चाहक स्वाद, गन्ध, ताप आ मूल्य जाँचबाक लेल समिति बनैत अछि, जकर पाँच बैसारमे चाह-पान पर भारी खर्च होइत अछि। समिति अंतमे अस्पष्ट सलाह दैत अछि, जखन कि चन्द्रकलाक पुरान बकाया भुगतान एखनहुँ अटकल रहैत अछि। दोकानक चाह लगभग पहिने जकाँ चलैत अछि; मात्रा आ चीनीमे छोट परिवर्तनक बीच समिति-व्ययक बिल पहिने निपटाओल जाइत अछि। कथा व्यर्थ प्रक्रियाक वास्तविक आर्थिक भार देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४९ · बिलायल घंटी

पथराही मध्य विद्यालयक १९५६ सँ लटकल पुरान घंटी गायब भऽ जाइत अछि। प्रधानाध्यापक मनबोध झा आ परिचारक महावीर खोज शुरू करैत छथि, मुदा बीचमे स्थापना-दिवस, दानदाता आ नाम दर्ज करबाक राजनीतिक होड़ उठैत अछि। पता चलैत अछि जे नाप लेबाक बहानासँ घंटी उतारि गोदाममे रखल गेल छल। पक्षसभ दोष आ श्रेय पर बहस करैत रहैत छथि, ताबत महावीर घंटी फेर टाँगि दैत छथि। घंटीक आवाजसँ विद्यालयक दैनिक समय-क्रम बहाल होइत अछि, जखन कि ओसारामे नामक विवाद चलिते रहैत अछि।

कथा २५० · प्रमाणित प्रतिलिपि

बाँसक शिल्पी भुवनेश्वर मण्डल केँ जिला मेलाक स्थान लेल आवेदन करैत समय अपन पुरान शिल्प-परिचयपत्रक प्रमाणित प्रतिलिपि चाही। मूल प्रमाणपत्र सामने रखितहुँ लिपिक प्रतिलिपि आ ओकर प्रमाणन माँगैत छथि; प्रत्येक प्रति लेल नब परिचय-कागज आ चक्कर जोड़ाइत अछि। अन्तमे आवेदन जमा होइत अछि, मुदा कार्यालय हुनकर वास्तविक बुनाइ देखबाक आवश्यकता नहि बुझैत अछि। भुवनेश्वर मूल प्रमाणपत्र आ रसीद सुरक्षित रखैत छथि; अपन हथेलीक कटान आ बुनाइक निशानकेँ प्रमाणित प्रतिलिपिसँ बाहरक सच्चा परिचय बुझैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २५१ · मेजक ऊँचाई

कृषि-यन्त्र कार्यालयक नव पदाधिकारी घुटना टकराएबाक कारण अपन मेज दू इंच ऊँच करबैत छथि। मुदा साधारण बढ़ईगीरीक ई उपाय कर्मचारीसभक बीच पद-प्रतिष्ठाक प्रश्न बनि जाइत अछि। अनेक मेज पर गोटी, गत्ता आ पेंच बदलल जाइत अछि; लोक अपन मेजक ऊँचाई दोसरासँ तुलना करैत छथि। अन्ततः बढ़ई बुधन व्यक्तिगत बैसार आ काजक सुविधा देखिकऽ आवश्यक सुधार करैत अछि। कार्यालयक काज फेर सामान्य होइत अछि, यद्यपि किछु कर्मचारी प्रतीकात्मक ऊँचाई बचौने रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५२ · लाल फीता

‘लाल फीता समाप्ति पखवारा’क सरकारी आदेशमे लंबित नस्ती चिन्हब लेल लाल पट्टी लगाबय कहल जाइत अछि। कर्मचारी फीता किनबाक निविदा आ प्रक्रिया बनाबैत छथि, मुदा लिपिक सुमन किछु अटकल नस्ती सीधे निपटाबय लगैत छथि। अनेक आवेदन आगाँ बढ़ैत अछि, जखन कि हजारो मीटर लाल फीता बादमे पहुँचैत अछि। अन्ततः वास्तविक कार्य प्राथमिक बनैत अछि आ बचल फीता भंडारमे राखल जाइत अछि। ‘अवशिष्ट सामग्री’क पर्ची ओही लाल फीता सँ बन्हल रहैत अछि—प्रक्रियाक विरोधाभासक दृश्य चिन्ह बनि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २५३ · बिसरल आदेश

जयनगरक सामग्री-भंडारमे भारी पाइप मुख्य खुलल फाटकसँ नहि, पोखरिक कातक लम्ब पाछाँ बाटसँ घुमाकऽ आनल जाइत अछि। नव भंडारपाल राघव मिश्र जाँच करैत छथि तँ बुझाइत अछि जे चारि वर्ष पहिलुक अस्थायी प्रतिबन्ध चढ़ान सुधरलाक बादो लागू चलि रहल अछि। मजदूर बेकारक अतिरिक्त श्रम करैत छथि। पुरान आदेश रद्द भेला सम्बन्धी कागज स्पष्ट नहि भेटला पर नव आदेश बनैत अछि आ मुख्य फाटक फेर खोलल जाइत अछि। पुरान दिशा-पट्ट संरक्षणक नाम पर भंडारमे दर्ज भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५४ · सरकारी छाता

पथ-अनुरक्षण विभागक क्रमांक ३८वला छाता बरखों सँ निरन्तर मरम्मति पबैत रहैत अछि। भंडारपाल गोपाल ठाकुर ओकर मरम्मतिक कुल खर्च देखि अचरज करैत छथि, मुदा अधिकारी छाताकेँ सुरक्षित राखब प्राथमिक मानैत छथि। बारम्बारक खर्च रोकबाक लेल छाता टाँगबाक नव खूंटी आ खोल बनाओल जाइत अछि। मुसलधार बरखामे डाकघर जाएवला सेवक सहदेव सरकारी छाता उपयोग करबाक जोखिम नहि लैत आ अपन फाटल छाता लऽ निकलि जाइत अछि। सरकारी छाता पाँजिमे ‘चालू, सुरक्षित’ रहैत अछि, मुदा जनसेवाक उपयोगसँ बाहर।

कथा २५५ · उपस्थिति

सहकारिता कार्यालयमे देरिसँ आबनिहार कर्मचारीक उपस्थिति नियमित करबाक कठोर निर्देश निकलैत अछि। उपायस्वरूप उपस्थिति-पाँजि कर्मचारीसभक घर-घर घुमाओल जाए लगैत अछि, जाहिसँ हस्ताक्षर समय पर भऽ जाइत अछि, मुदा वास्तविक लोक कार्यालयमे देरिसँ पहुँचैत छथि। निरीक्षणक समय पाँजि भरल आ कुर्सी खाली भेटला सँ छल स्पष्ट होइत अछि। पाँजिक बाहर जेबाक व्यवस्था बन्द कएल जाइत अछि। धीरे-धीरे कर्मचारी स्वयं समय सँ पहुँचबाक प्रयास करैत छथि; नरेश परिचारी नियमित रूपेँ पाँजि मेज पर रखैत अछि। कथा दस्तावेजी उपस्थिति आ वास्तविक सेवाक अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५६ · छायाचित्रयुक्त पहचान

कार्यालयमे छायाचित्रयुक्त पहचान-पत्र अनिवार्य होइत अछि आ अनुभवी चौकीदार रामकिशुन कें मुँहक चिन्हानसँ बेसी कागज पर भरोसा करबाक आदेश भेटैत अछि। बिजलीक दोकानदार महेन्द्र नकली परिचय-पत्र देखाकऽ कार्यालय भीतर घुसि जाइत अछि, जखन कि पुरान कर्मचारी सेहो पत्र बिसरला पर रुकैत छथि। घटना प्रकाशमे एलापर नव निर्देशमे छायाचित्र आ वास्तविक मुख मिलाबय कहल जाइत अछि। मुदा भोला झाक पुरान छायाचित्र वर्तमान रूपसँ नहि मिललाक कारण असली कर्मचारी फाटक बाहर अटकि जाइत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५७ · स्वागत द्वार

फुलपरासक जनसेवा केन्द्रक कठिन पहुँच सुधारबाक लेल रंगीन स्वागत-द्वार, पट्ट, बेंच आ दीपक लगाओल जाइत अछि। विभागीय निधिसँ भीतरक कर्मचारी संख्या नहि बढ़ि सकैत अछि, तें एकमात्र सहायक रामउद्गार कें सेवा-खिड़की छोड़ि स्वागत-डेस्क पर बैसायल जाइत अछि। आगन्तुकक संख्या बढ़ैत अछि, मुदा आवेदन स्वीकारबाक काज लगभग रुकि जाइत अछि। विधवा पेंशनक सुधार लेल रमकली देवी बेराबेरी घुरैत छथि। जिला दल स्वागतक प्रशंसा करैत अछि, जखन कि भीतरक बन्द खिड़की मूल समस्या बनल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २५८ · वार्षिक प्रतिवेदन

ग्रामीण निर्माण प्रमण्डलमे वार्षिक प्रतिवेदन समय पर भेजबाक होड़ लागल अछि। अधिकारी अधूरा निर्माणक छायाचित्र, बैसार आ प्रगतिक संख्या व्यवस्थित करैत छथि; किछु आँकड़ा सत्यापनसँ घटैत अछि। प्रतिवेदन ३१ मार्चक समयसीमा भीतर पहुँचि जाइत अछि आ कार्यालय एकरा प्रशासनिक उपलब्धि मानैत अछि। मुदा मजदूर लखन पासवानक भुगतान एक हस्ताक्षर लेल अटकल रहैत अछि, आ हाट-छाजन सहित किछु कार्य अधूर रहैत अछि। प्रकाशित प्रतिवेदनक सुघर पेटी आ प्रतीक्षारत मजदूर बीचक विरोधाभास कथा केँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

कथा २५९ · अनुमति

रघुनन्दन चौधरीक तीन पीढ़ी पुरान घर पर निवास-अनुमति सत्यापनक सूचना चिपकैत अछि। अपना घरमे रहबाक स्वीकृति लेल हुनका अनेक दफ्तरक चक्कर काटय पड़ैत अछि। क्षेत्रीय कर्मचारी आ पड़ोसी हुनकर दशको पुरान निवास प्रमाणित करैत छथि, मुदा बिना सूचना जाँचक समय घर पर नहि भेटला सँ प्रक्रिया फेर दोहराइत अछि। अन्ततः डाकसँ स्थायी निवासक अनुमति ओही घरक पता पर अबैत अछि। रघुनन्दन देखैत छथि जे सरकारी कागजक अनुसार ओ आब स्वीकृतिक दिनसँ एतय रहैत छथि, भले जीवन भरि एतहि रहने होथि।

कथा २६० · प्रतीक्षा कक्ष

अनुमण्डलीय चिकित्सालयमे रोगीक भीड़ घटेबाक लेल रंगीन तीर आ अनेक प्रतीक्षा-कोठलीक नब व्यवस्था बनैत अछि। काँधक दर्द देखबय आएल किसान रामसेवक महतो एक कोठलीसँ दोसरमे चलैत-चलैत थाकि जाइत छथि। चिकित्सक आ रोगी अलग-अलग निर्देश पाबिकऽ एक-दोसराक प्रतीक्षा करैत रहैत छथि। रामसेवक अगिला कोठली जाएब छोड़ि दैत छथि, तखन चिकित्सक अन्ततः हुनका भेटि पाँच मिनटमे जाँच करैत छथि। मुदा औषधि लेबाक लेल फेर छठम प्रतीक्षा-कोठलीमे बैसब पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६१ · नम्बर

जन-अभियोग भवनमे पक्षपात घटेबाक नाम पर शिकायतकर्ता सभकेँ नामक बदला अलग-अलग क्रमांक देल जाइत अछि। खेतक नाला-कार्यक क्षतिपूर्ति माँगय आएल रामलोचन यादव एक दिनमे कएक नम्बर पाबि अपन पहिचानक हिसाबमे उलझि जाइत छथि। भुगतान स्वीकृत भेलापर असली नाम आवश्यक पड़ैत अछि, मुदा पहचान फेर जोड़बाक शाखा बनले नहि अछि। अन्तमे कागज पर पहिनेसँ दबाओल नाम खोलि भुगतान आदेश पूरा कएल जाइत अछि। रामलोचन बुझैत छथि जे संख्या कार्यालयक सुविधा अछि, व्यक्तिक वास्तविक परिचय नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २६२ · खुलल मुकदमा

शिक्षक उदयकान्त पासवान पर विभागीय जाँच शुरू भेलाक पत्र अबैत अछि, मुदा आरोपक विवरण संलग्न नहि भेटैत अछि। ओ आरोप जनबाक आग्रह करैत छथि; कार्यालय आरोप प्राप्तिक स्वीकृति पहिने माँगैत अछि। अनेक चक्कर बाद खुलल लिफाफामे केवल सूचना भेटैत अछि जे मूल आरोप जिला कार्यालयमे राखल अछि। जिला कार्यालय प्रकरणक पंजीकरणक प्रमाण माँगैत अछि, जकरा लेल फेर आरोप चाही। जाँच नव क्रमांकसँ ‘खुलल’ रहैत अछि, आरोप अज्ञात। उदयकान्त ई अनिश्चितता बीच विद्यालयमे नियमित पाठ आ परीक्षा चलबैत रहैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६३ · सीमा

सिरखरिया गाममे प्रशासनिक क्षेत्र ‘क’ आ ‘ख’क नब अदृश्य सीमा बनाएल जाइत अछि। दूध बेचय जाएवला देवनारायण महतो सहित गामक लोककेँ अपन दैनिक आवागमन लेल पर्ची चाही होइत अछि, जखन कि गामक वास्तविक बाट आ परिवार दूनू क्षेत्रमा पसरल अछि। अमीन पुरान पानिक धारसँ सीमा चिन्हबाक प्रयास करैत अछि, मुदा स्पष्ट रेखा नहि भेटैत। अन्ततः सामान्य दैनिक गतिविधि पर्चीसँ मुक्त कएल जाइत अछि, यद्यपि विशेष अवसरक विवाद बचैत अछि। बरखाक पानि बिना रोक दुनू प्रशासनिक क्षेत्र पार बहैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६४ · सत्यापन

बयासी वर्षक तिलक पासवानक वृद्धावस्था पेंशन जीवित-सत्यापनक अभावमे रुकि जाइत अछि। कार्यालयक कहला पर ओ बेराबेरी घर छोड़ि सत्यापन लेल पहुँचैत छथि, मुदा कर्मचारी घर पर नहि भेटला सँ हुनकर स्थिति अस्पष्ट लिखैत अछि। अन्ततः कागजी सूचीमे हुनका मृत मानि प्रमाणपत्र तैयार कएल जाइत अछि। जीवित तिलक स्वयं अपन मृत्यु प्रमाणपत्र लऽ निरस्तीकरणक आवेदन दैत छथि। अगिला सत्यापन लेल फेर घरमे रहबाक निर्देश भेटैत अछि। कथा जीवनक प्रत्यक्ष साक्ष्य आ सरकारी प्रविष्टिक विपरीत चाल देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २६५ · बन्द लिफ्ट

छह-मंजिला सहकारिता भवनक लिफ्टक बटन पर मंजिलक अंक हटाकऽ शाखाक नाम लिखल जाइत अछि। बारम्बार शाखा बदललासँ बटनक नाम वास्तविक मंजिलसँ मेल नहि खाइत अछि। सुरक्षा-परीक्षणमे स्थायी ठहराव-अंक चाही होइत अछि, मुदा अंक हटेबाक प्रशासनिक आदेश बाधा बनैत अछि। आंशिक संशोधन, नब पर्ची आ स्थानान्तरणक स्थगनक बीच लिफ्ट बन्द रहि जाइत अछि। अभिलेखवाहक दीनबन्धु आ आगन्तुक सीढ़ी पर फेर संख्या गनैत छथि, जखन कि लिफ्टक भीतर पुरान अंक एखनहुँ मौजूद अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६६ · खाली मुहर

जिला कुटीर-उद्योग कार्यालयमे बिना अक्षरक रबरक मुहर लगौने कागज आगाँ नहि बढ़ैत अछि। नव कर्मचारी मुकुन्द प्रश्न करैत छथि जे खाली मुहर आखिर कोन बातक प्रमाण अछि। एहि बीच शिल्पकार चम्पा देवीक अनुदानक नस्ती एहि अनोखा नियममे अटकल रहैत अछि। जाँचक बादो अधिकारी पुरान परम्परा बनौने रखबाक निर्णय करैत छथि, आ निरीक्षणक कागज पर स्वयं मुकुन्दसँ खाली मुहर लगेबैत छथि। अर्थहीन छाप फेर कार्यालयक आवश्यक प्रमाण बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६७ · रातिक आदेश

आधि राति आएल प्रशासनिक आदेश एहन अस्पष्ट चिह्नमे लिखल अछि जे गामक कियो ओकर अर्थ नहि बुझि पबैत अछि। तथापि सभकेँ आदेशक पालनक विवरण देबाक कहल जाइत अछि। स्पष्ट निर्देश नहि भेटलासँ लोक साधारण काजो करबाक साहस नहि करैत। स्पष्टीकरणमे कहल जाइत अछि जे सम्भावित आशयक विरुद्ध कोनो काज नहि हो। अगिला राति मैथिलीमे दोसर आदेश अबैत अछि, जाहिमे पहिल आदेश बुझबाक आ ओकर पालन करबाक स्थिति अलग-अलग लिखबाक निर्देश अछि। मुदा पहिल आदेशक अर्थ एखनहुँ अनूदित नहि भेल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६८ · अदृश्य कर

साइकिल मरम्मत करयवला शम्भुनाथ साहक नाम पर ‘समेकित नागरिक सुविधा कर’क माँग अबैत अछि, मुदा ओकर आधार आ गणना कियो स्पष्ट नहि करैत अछि। प्रश्न उठौलापर हुनकर परिवारक नागरिक-सुविधा सम्बन्धी क्रमांक निष्क्रिय कऽ देल जाइत अछि। पुस्तकालय, वृद्धक यात्रा-रियायत, कूड़ा उठेनाइ आ नलक शिकायत—सभ अटकि जाइत अछि। अन्तमे ‘कर शून्य’क प्रमाण भेटैत अछि, मुदा निष्क्रिय क्रमांक चालू करबाक उपाय नहि। करक माँग कागज पर समाप्त होइत अछि, दैनिक असुविधा बनल रहैत अछि।

कथा २६९ · बेठीक जन्मतिथि

बाँसक कुशल कारीगर रामउदित मण्डल वृद्ध शिल्पी सम्मान-राशि लेल आवेदन दैत छथि। अड़तीस बरख पहिनेक पंजीकरणक तिथि गलतीसँ जन्मतिथिक स्थान पर चढ़ि गेल अछि; ताहि कारण कार्यालय हुनकर उमेर मात्र अड़तीस बरख मानैत अछि। अभिलेखक गलती मानल जाइत अछि, मुदा जन्मक दोसर प्रमाण बिना सुधार नहि होइत। दीर्घ अनुभव रहितो ओ वृद्ध शिल्पी-सहायतासँ वंचित रहैत छथि। उलटे कार्यालय हुनका आरम्भिक बाँस-बुनाइ प्रशिक्षणमे सम्मिलित होबाक निमन्त्रण पठबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७० · एक केवाड़ी कम

नन्दकिशोर साहक पुरान घरमे दू टा केवाड़ी अछि, मुदा नगरक स्वीकृत नक्शामे मात्र एकटा देखाओल गेल अछि। ताहि आधार पर पिछला केवाड़ी अवैध ठहरैत अछि। एक विभाग ओकरा बन्द करय चाहैत अछि, दोसर विभाग नाला तक पहुँच बनौने रखबाक आदेश दैत अछि। अन्ततः निचला भाग ईँटसँ चुनि ऊपर खुलल मार्ग छोड़ल जाइत अछि। सरकारी कागजमे दीवालि सीधा आ नियमसंगत बनि जाइत अछि, मुदा घरक लोककेँ ओहि आधा खुलल बाटसँ असुविधा सहित चलय पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २७१ · घुरती

चौबीस बरख सूरतक कारखानामे काज कएलाक बाद देवनारायण मण्डल स्थायी रूपेँ बेलौंचा गाम घुरैत छथि। मुदा पंचायतक नब व्यवस्थामे ‘घुरती निवासी’ पंजीकरण लेल पहिने गाम छोड़बाक सरकारी पर्ची अनिवार्य अछि, जे चौबीस बरख पहिने बनले नहि छल। पुरान डाकिया आ घरक लोकक साक्ष्य सेहो प्रविष्टिक अभाव पूरा नहि कऽ पबैत अछि। अन्तमे कर्मचारी एक्के दिन एक मिनटक अन्तर पर हुनकर ‘निर्गमन’ आ ‘घुरती’ दर्ज करैत अछि। माएक लेल चौबीस बरखक विरह रहैत अछि, सरकारी हिसाबमे परदेसक अवधि मात्र एक मिनट।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७२ · अनुवाद

कमला नदीक पुरान पुल पर भार-सीमाक आदेश चारि भाषामे टाँगल जाइत अछि, मुदा अनुवादसभमे समय आ निषेधक अर्थ अलग-अलग अछि। पुल-रक्षक अपन बुझल अर्थसँ दण्ड लगबैत अछि; घड़ा बेचयवला बुधन सदाय सहित अनेक लोक दण्डित होइत छथि। कार्यालय अर्थभेद मानैत अछि, मुदा अपीलक निर्णय रोकि बकाया वसूली जारी रखैत अछि। संशोधित आदेशमे सेहो अनुवादक गलती रहि जाइत अछि, आ पुरान दण्ड कायम राखल जाइत अछि। पुलक बाट पर नियमक अर्थ बदलैत रहैत अछि, मुदा जुर्मानाक अंक निर्विवाद बनल रहैत अछि।

कथा २७३ · खाली कुर्सीक आदेश

कृषि-बीज कार्यालयक पदाधिकारीक स्थानान्तरण भेला पर हुनकर कुर्सी खाली रहि जाइत अछि। नियमित काज नहि रोकबाक निर्देशसँ कर्मचारीसभ प्रस्ताव राखि, आपत्ति नहि अयला पर खाली कुर्सीक नामसँ आदेश जारी करय लगैत छथि। नब पदाधिकारी अविनाश कुमार आबि पुरान आदेशसभक समीक्षा चाहैत छथि, मुदा तत्काल ओकरा प्रभावी राखबाक हस्ताक्षरित आदेश देलाक बाद प्रशिक्षण लेल बाहर चलि जाइत छथि। कर्मचारी फेर खाली कुर्सीक मेज पर प्रस्ताव जमा करैत छथि। व्यक्तिक अनुपस्थितिमे चलल कार्यालयी आदेश-व्यवस्था आब वैध हस्ताक्षरक आश्रयमे पुनः चालू रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २७४ · प्रवेश-पर्ची

झंझारपुर चिकित्सालयमे घायल मजदूर रामजी पासवान केँ आपात उपचार लेल अनला पर प्रहरी पहिने प्रवेश-पर्ची माँगैत अछि। प्रवेशक समय लिखबाक नियम आ रोगीक वास्तवमे भीतर नहि पहुँचबाक कारण उपचारक प्रक्रिया उलझि जाइत अछि। चिकित्सक अनिरुद्ध आवश्यक सहायता देबैत छथि, जखन कि कर्मचारी पंजीकरणक घड़ीक हिसाब मिलबैत रहैत छथि। जाँचक बाद उपचारकेँ ‘प्रवेश-पूर्व सहायता’ मानबाक टिप्पणी बनैत अछि आ पाँजिक मेज सरका देल जाइत अछि। रामजी बैसाखीक सहारे घर घुरि जाइत छथि, मुदा मानवीय आपात स्थिति आ कागजी प्रवेशक बीचक दूरी बनल रहैत अछि।

कथा २७५ · बन्द खाता

बाँस-कारीगर रामलोचन महतो अपन बेटी सरिताक प्रशिक्षण-शुल्क लेल सहकारी बैंकसँ धन निकालय चाहैत छथि। खातामे बचत रहितो सुरक्षा-जाँचक नाम पर निकासी रोकल गेल अछि। बैंकक व्यवस्था हुनका धन निकालय नहि दैत अछि, मुदा सन्देश-सेवा आ रखरखाव शुल्क काटि लैत अछि तथा ब्याज जोड़ैत रहैत अछि। पुनःसक्रियणक आवेदन अटकल रहैत अछि, आ सुरक्षा-निरीक्षण खाताधारीक एको निकासी नहि होएबकेँ सफल नियन्त्रण मानैत अछि। रामलोचन अन्तमे बुझैत छथि जे खाता हुनका लेल बन्द, मुदा बैंक लेल चालू अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २७६ · अन्तिम मंजूरी

कमला-बाढ़िमे धानक क्षति लेल जगदीश मण्डलक आवेदन हुनकर मृत्युक सात मास बाद अन्तिम रूपेँ स्वीकृत होइत अछि। विधवा सुमित्रा देवी चौदह हजार आठ सय रुपैया पाबय मृत्यु प्रमाणपत्र संग कार्यालय जाइत छथि। मुदा व्यवस्था स्वीकृत लाभार्थीक व्यक्तिगत उपस्थिति माँगैत अछि आ उत्तराधिकारीक भुगतान अलग प्रक्रियामे अटकल रहैत अछि। जगदीशक मृत्यु दर्ज करबाक विकल्प नहि भेटलासँ हुनका बेराबेरी ‘अनुपस्थित’ लिखि नव सूचना पठाओल जाइत अछि। सुमित्रा मंजूरी-पत्र आ मृत पतिक नामक सूचना लऽ घुरैत छथि; स्वीकृत सहायता भुगतानक प्रतीक्षामे रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७७ · निषिद्ध प्रश्न

लघु सिंचाइ कार्यालयमे नहर-मरम्मतिक मजदूरीक सात नस्ती हरियर आवरण नहि रहबाक कारण रोकल गेल अछि। कर्मचारी मधुकान्त मिश्र ई रंग-सम्बन्धी नियमक मूल स्रोत पूछैत छथि। जाँचक क्रममे हुनकर प्रश्न स्वयं अनुशासनक विषय बनि जाइत अछि, आ कार्यालय नब नियम निकालैत अछि जे प्रशासनिक परम्पराक स्रोत पूछबाक लेल पहिने अनुमति चाही। हरियर आवरणक खेप आबि गेलापर कमला देवी सहित मजदूरिनीसभक बकाया भुगतान भऽ जाइत अछि। मुदा मधुकान्तक प्रश्नक उत्तर नहि भेटैत; प्रश्न करबाक प्रक्रियाकेँ मात्र नब नियन्त्रण भेटि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७८ · केवाड़ीक पहरा

करघा-सहकारी समितिक नवीकरण लेल रमेश्वर दास केँ पुरान सहकारिता भवनक ‘प्रवेश चारि’ पर पठाओल जाइत अछि, जाहि केवाड़ी पर ताला आ पहरा लागल अछि। कार्यालय प्रतीक्षा करयवालाक संख्या गनि सेवाक उपलब्धि देखबैत अछि, मुदा भीतर प्रवेशक उपाय नहि बनबैत। लोकक आबनाइ बन्द भेला पर तीस दिनक निष्क्रियताक प्रमाण बनैत अछि आ आवेदन मुख्य फाटक दिस मोड़ल जाइत अछि। रमेश्वरक समितिक नवीकरण अन्ततः होइत अछि, मुदा देरीसँ करघा-परिवारसभक कमाइ घटैत अछि। बन्द केवाड़ी निष्क्रिय घोषित भेलो नव ताला आ पहरा सहित ठाढ़ रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७९ · लहेरियासरायक साँझ

लहेरियासरायमे कार्यालयसँ साँझ देरि घुरैत अरुणेश झा घरक खर्च आ पत्नी कुमुदक हिसाब पुछबाक आदत सँ झुँझलायल रहैत छथि। बजारक एक ठेलाक काज करैत दू व्यक्तिक श्रम देखि हुनका अपन दाम्पत्यक अदेखल श्रम मोन पड़ैत अछि। ओ बुझैत छथि जे कुमुद पढ़ैबाक कमाइक संग घर चलबैत, प्रशिक्षण लेल बचत करैत आ अपन शारीरिक तकलीफ दबा कऽ काज करैत छथि। घर पहुँचि ओ पहिल बेर हुनकर कलाईक पीड़ा पुछैत छथि आ दुनूक आमदनी-खर्चक हिसाब संग बैसि करैत छथि। अंकक बीच दूनूक साझा जीवन स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २८० · पुल पर रोशनी

महाविद्यालयक छात्र नीलाभ तीन बरख पहिने सहपाठी रश्मिसँ भेटल एक अभ्यास-पोथी आ गीतक स्मृतिक आधार पर अपन मनमे प्रेमक कथा गढ़ने रहैत अछि। कमला पुल पर अचानक रश्मि आ हुनकर बहिन नेहासँ भेंट भेला पर ओ रश्मिक वास्तविक जीवन देखैत अछि—प्रयोगशालाक काज, माएक औषधि आ बहिनक जिम्मेवारी। साधारण गप्पमे पुरान संकेतसभक कल्पित अर्थ ढीला पड़ैत अछि। नीलाभ बुझैत अछि जे दोसर व्यक्तिक मन अपन इच्छाक अनुरूप भरि देब प्रेम नहि। ओ रश्मिसँ फेर भेंट चाहैत अछि, मुदा एहि बेर अपन कल्पना सिद्ध करबाक लेल नहि, हुनका मनुष्यक रूपमे जनबाक लेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २८१ · बन्द पुस्तकालय

दरभंगाक पुरान पुस्तकालय वार्षिक पुस्तक-गणनाक कारण बन्द भेटला पर शोधार्थी माधवीक दिनचर्या अचानक रुकि जाइत अछि। पुरान मैथिली पत्रिकामे स्त्रीक निजी लेखन पर पाँच बरखसँ शोध करैत ओ अपन सम्बन्ध, भोजन, कोठली आ बहिन मीना सँ भेंट धरि ‘शोध पूरा भेलाक बाद’ लेल टारैत रहलीह। जिल्दसाज आ हुनकर बेटीसँ भेंट हुनका बुझबैत अछि जे आवश्यक काज करैतो जीवन स्थगित राखब जरूरी नहि। माधवी शोध छोड़ैत नहि छथि; ओ पुस्तकालयसँ लौटि बहिनक घर जेबाक निर्णय करैत छथि। हुनकर शोध आ निजी जीवन पहिल बेर एक्के वर्तमानमे ठाम पबैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २८२ · मेला समाप्त

जनकपुरक मेला उठलाक बिहान पन्द्रह बरखक मिहिर झोरा लऽ चलन्त चकरी-दलक संग नगर-नगर घूमय लेल पहुँचैत अछि। पन्द्रह दिन चाह-दोकानमे काज करैत ओकर मन मेलाक इजोत आ यात्राक आकर्षणमे लागल छल। मुदा दलक लोक मजदूरी, मौसम, कठिन समय-सारिणी आ घरक अनुमतिक व्यावहारिक बात बतबैत छथि। खाली होइत मैदान आ झूला खोलबाक श्रम देखि मिहिर अपन इच्छाक रूप फेर बुझैत अछि। ओ मामा रघुनाथ संग घर घुरैत अछि, मुदा अभ्यास-पोथीमे लिखल दूरक नगरसभक नाम नहि मेटबैत। यात्राक इच्छा बचैत अछि, ओकरा देखबाक दृष्टि बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २८३ · सिनेमा सँ बाहर

मधुबनीमे चलचित्र देखि नवनीत झा नायकक साहसी पलायनसँ प्रभावित भऽ अपन कपड़ा-दोकानक नौकरी छोड़ि दिल्ली जाएबाक कल्पना करैत अछि। राति घर घुरैत रिक्शाचालक महेन्द्र सदायक श्रम, टूटल चेनक मरम्मत आ छोट-छोट खर्चक संघर्ष ओकरा यात्रा आ जीविकाक वास्तविक अर्थ बुझबैत अछि। ओ दिल्ली जाएबाक सम्भावना समाप्त नहि करैत, मुदा कारी चश्मा किनबाक चमकक बदला किराया, रहबाक ठाम, पहिल महीनाक मजदूरी आ पूँजीक हिसाब सोचय लगैत अछि। चलचित्रक नायकक जगह ओकर अपन निर्णयक वास्तविक जिम्मेवारी आगाँ अबैत अछि।

कथा २८४ · ओसाराक बल्ब

दरभंगाक अनिमा झा घरक ओसारामे राति सिलाइ आ कपड़ाक फेरबदल करैत छथि, मुदा पड़ोसी आ परिचितक छोट काज लेल प्रायः दाम नहि लैत छथि। बल्ब बुझि गेलाक एक राति हुनका अपन समय, धागा आ श्रमक लगातार अदेखल रहनाइ बुझाइत अछि। नव बल्ब लगलाक बाद ओ उषाक ब्लाउजक काजक पचास रुपैया लैत छथि, पहिल बेर सिलाइक आमदनी-खर्च अलग लिखैत छथि आ प्रतिदिन तीन सँ छह बजेक निर्धारित समय बनबैत छथि। बेटी रागिनी ओसाराक लेल पट्टी लिखैत छलीह। अनिमा अपन श्रमकेँ घरक सामान्य उपकार नहि, नियत काजक रूप दैत छथि।

कथा २८५ · चाह दोकानक शीशा

लहेरियासरायक शीशावला चाह-दोकानमे बसक प्रतीक्षा करैत अर्थशास्त्रक छात्रा श्रुति झा अपन कमाइसँ किनल आठ सय पचास रुपैयाक नील झोरा पर गर्व करैत छलीह। शीशाक ओहि पार नाली-सफाइक मजदूरिनी मालती आ संगिनीसभक आधा मजूरी, श्रम आ अगिला दिनक अनिश्चितता हुनकर दृष्टि बदलैत अछि। अपन ट्यूशनक कमाइ, घरसँ भेटैत सहारा आ मजदूरिनीक कठिनाईक बीच ओ अन्तर देखैत छथि, बिना अधूरा जानकारीसँ मजदूरीक अंक गढ़ने। बसमे चढ़लापर झोरा ओतबे मूल्यक रहैत अछि, मुदा ओकर अर्थ आब केवल निजी उपलब्धिक कथा नहि रहैत अछि।

कथा २८६ · रेलवे घोषणा

बहत्तरि बरखक साइकिल-मरम्मतकार विनोदनाथ महतो दरभंगा जंक्शन पर रेलक प्रतीक्षा करैत एक युवककेँ जमालपुर जाएवला गाड़ी पकड़बाक भयमे देखैत छथि। दृश्यसँ हुनका अपन यौवनक ओ अवसर मोन पड़ैत अछि जखन प्रशिक्षण लेल गाड़ी सामने रहितो ओ चढ़बाक साहस नहि कएने छलाह। परिवार लग ओ जीवन भरि कहैत रहलाह जे गाड़ी छूटि गेल छल, आ पछिला कारणसभ एहि बातकेँ ढाँपि देने छल। एखन ओ मनहि मन सही करैत छथि—गाड़ी छूटल नहि, ओ स्वयं नहि चढ़ल छलाह। अपन वर्तमान रेलमे बैसैत स्मृतिक एक पुरान वाक्य सच भऽ जाइत अछि।

कथा २८७ · धूपक पट्टी

ज्वरसँ उठि रहल बुन्नकर शिवनन्दन दास कोठलीमे पड़ैत धूपक पट्टीसँ दिनक समय गनय लगैत छथि। व्यापारीक तीसटा गमछाक आदेश पूरा करबाक दबावमे बेटा नवल राति-दिन करघा चलबैत थाकि जाइत अछि। खिड़कीक धूपक सरकैत स्थान आ धरातल पर खींचल रेखा देखैत शिवनन्दन समयक दोसर गति अनुभव करैत छथि। नवलक उलझल ताना आ घिसल एड़ी देखि ओ व्यापारी कें अधूरा गमछा तत्काल देबाक बदला काजक उचित समय तय करैत छथि। अन्तमे ओ गणनाक चिन्तासँ हटि धूपक धीम चाल देखैत रहैत छथि।

कथा २८८ · संगीतक टुकड़ा

एक विवाहक बैंडमे बजल तीन छोट स्वर चौंसठि बरखक शशिकान्त चौधरी केँ तीस बरख पहिनेक बहिनक विवाह याद दिअबैत अछि। ओहि अवसर पर हुनका स्वयं राखल रुपैयाक लिफाफा बिसरि गेल छल आ बाजाबाला नसीम पर चोरीक शंका कएल गेल। शशिकान्त केँ बीचहि मे लिफाफाक सही ठाम मोन पड़ि गेल छल, मुदा अपन प्रतिष्ठाक असुविधासँ बचबाक लेल ओ तुरन्त नहि बाजलाह। नसीमक झोरा दोबारा खँगालल गेल, ओकर अपमान भेल। वर्तमानक संगीत हुनका बुझबैत अछि जे अपन ओहि दस मिनटक चुप्पीक भार तीस बरख बादो बचल अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २८९ · बन्द दोकान

खेलौनाक थोक-वितरण करयवला अनिरुद्ध कर्ण मधुबनीक पुरान बजारमे बाल्यकालक प्रिय लालबाबूक खेल-सामानक दोकान खोजैत छथि। दोकान बन्द भऽ गेल अछि; काठक लट्टू, काँचक गोली आ सुधारी सकयवला खेलौनाक जगह सस्ता प्लास्टिकक नव बजार आबि गेल अछि। अनिरुद्ध स्वयं ओहि नब व्यापारक हिस्सा छथि। गोदाममे टूटल घुमौनाक टुकड़ा देखैत हुनका पुरान वस्तुक स्पर्श आ मरम्मतिक संस्कृति मोन पड़ैत अछि। ओ अपन काज छोड़ैत नहि छथि, मुदा नब खेप सावधानीसँ कम मँगबैत छथि। पुरान दोकानक बन्द पट हुनकर स्मृतिमे अलग-अलग समयक रंग बनि रहैत अछि।

कथा २९० · छज्जा

बरखामे एक छज्जाक नीचाँ ठाढ़ नक्शा बनबयवला अनिरुद्धक भेंट सीमेंटक काज करयवला शिवचरनसँ होइत अछि। छज्जाक धारसँ पानि देबालि दिस घुरैत देखि शिवचरन बतबैत अछि जे बाहरी ढाल आ पानि-तोड़ खाँच नहि छोड़ल गेल अछि। अनिरुद्ध केँ अपन कार्यालयक एहन धारणा मोन पड़ैत अछि जे एहि छोट बातक जानकारी मिस्त्रीकेँ स्वाभाविकेँ रहबाक चाही। ओ अगिला भवनक नक्शामे खाँच आ ढाल स्पष्ट लिखि दैत छथि। वरिष्ठक प्रश्न पर उत्तर दैत छथि जे आवश्यक बात कागज पर रहब नीक। बरखा हुनका श्रम आ नक्शाक बीचक दूरी देखबैत अछि।

कथा २९१ · साइकिल

पच्चीस बरख गाम-गाम जा सिलाइ-यन्त्र सुधारयवला बासुदेव साह नव स्थायी दोकान खोलबाक खर्च लेल अपन पुरान साइकिल बेचबाक निर्णय करैत छथि। बेटी दीपा पाँजिमे ओकर अनुमानित मूल्य नौ सय रुपैया लिखैत छथि। हाटमे साइकिल आठ सय चालीस रुपैयामे बिकैत अछि। एहि बीच बासुदेवक गप्पसँ दीपा बुझैत छथि जे परिवारक कठिन वर्षसभमे साइकिलक मरम्मत टारि कतेको आन जरूरी खर्च पूरा कएल गेल छल। बासुदेव औजारक पेटी बाँधबाक पुरान जूटक डोरी राखि लैत छथि। दीपा मूल्यक हिसाब सुधारैत नव दोकान लेल पिताक मजबूत कुर्सी सेहो जोड़ि दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २९२ · पानिक गिलास

मिथिला लघु उद्यम सम्मेलनक वक्ता अनिरुद्ध चौधरी व्यवस्थामे श्रमिकक भार बुझबाक महत्त्व पर भाषण दैत छथि। अपन भाषणमे पहियावला पानि-गाड़ीक आवाज नहि सुनबाक इच्छा कारण वृद्ध परिचारक रघुनाथ पासवान केँ बेराबेरी सीढ़ी चढ़ि हार्थें गिलास अनय पड़ैत अछि। हुनकर काँपैत हाथ देखि अनिरुद्ध केँ अपन निर्देशक वास्तविक मूल्य बुझाइत अछि। अगिला सत्रमे ओ गाड़ीक स्वाभाविक आवाज नहि रोकबैत छथि आ भाषणक टिप्पणीमे ई प्रश्न जोड़ैत छथि जे श्रमक भार बाँटबाक व्यवस्था के बनबैत अछि। विचार आ व्यवहारक दूरी गिलासक पानिसँ उद्घाटित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २९३ · जुलूस

लहेरियासरायक टावर लग फूलक माला बेचयवाली सरिता आ हुनकर तेरह बरखक बेटा अभय चुनावी जुलूसक कारण बढ़ल बिक्रीसँ उत्साहित छथि। अभय ढोल, झण्डी आ वाहनक चकाचौंध देखि आकर्षित होइत अछि। जुलूस निकललाक बाद बरखा पड़िते फेंकल पर्चा आ प्लास्टिक नाली जाम करैत अछि, आ ठेलाक कात पानि भरय लगैत अछि। अभय बाँसक टुकड़ासँ जाली साफ करैत अछि। अगिला दिन चित्रकक्षामे ओ जुलूसक भीड़ संग बन्द नाली, कूड़ा आ सफाइकर्मी सेहो बनबैत अछि। ओकर चित्रमे सार्वजनिक उत्सवक अदेखल परिणाम सम्मिलित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९४ · छोट अएना

बहत्तरि बरखक हरिनारायण मिश्र बेटा नचिकेत संग पुरान हजामघरमे केश कटबय जाइत छथि। छोट अएनामे हुनका अपन वृद्ध मुखक संग खातामे डूबल बेटाक झुकल माथ देखाइत अछि। हुनका बुझाइत अछि जे बेटाक व्यापारक चिन्ता ओ जनैत छथि, मुदा बेटा हुनकर एकान्तक दिनचर्या पूरा नहि जनैत; संगहि ओ स्वयं बेटाक दोकान पर संग बैसबाक आग्रह पहिले टारि चुकल छथि। केश कटेलाक बाद ओ नचिकेत कैँ गोदाम जाएबाक लेल कहैत अपन दोकान पर किछु बेर बैसबाक निर्णय करैत छथि। गलीक कीच पार करैत पिता-पुत्रक बीच छोट सहारा नव निकटता बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९५ · छत पर कबूतर

छात्रवृत्ति परीक्षाक तैयारी करैत कनक अपन दिनचर्यामे ‘कोनो सहारा नहि’ लिखि सब काज अकेले करबाक प्रण लेने छलीह। छत पर कबूतरक झुंडक उड़ान, सहपाठी रुचिक अभ्यासमे सहायता आ पिताक बस-बाट सम्बन्धी जानकारी हुनका स्वतंत्रताक अर्थ पर पुनर्विचार करबैत अछि। ओ अपन परीक्षा स्वयं देबाक निर्णय कायम रखैत छथि, मुदा उपयोगी जानकारी आ अपनजनक संगकेँ कमजोरी नहि मानैत छथि। परीक्षाक पहिल साँझ ओ पढ़ाइ बीच परिवार संग भोजन करबाक समय निकालैत छथि। कबूतरसभक अलग-अलग दिशा मे संग उड़ान हुनका स्वतंत्रता आ सम्बन्धक सहअस्तित्व बुझबैत अछि।

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा २९६ · घड़ीक काँटा

निजी वित्त-संस्थाक साक्षात्कार लेल प्रतीक्षारत अपूर्व झा देबालक घड़ी आ अपन पिताक सुधारल कलाई-घड़ीक बीच समयक एक मिनटक अन्तर देखैत छथि। घड़ीसाज पिता देवनारायणक वाक्य हुनका मोन पड़ैत अछि—समय देखू, मुदा घड़ीक कहला पर नहि चलू। नौकरीक तैयारीमे ओ अपन रुचि आ घड़ी सुधारबाक कौशल दबा देने छलाह। साक्षात्कारमे ओ रटल उत्तरक बदला अपन वास्तविक अनिश्चितता आ ध्यानक उपयोग करबाक इच्छा बतबैत छथि। चयन होएत कि नहि, स्पष्ट नहि; घर घुरि ओ पिताक दोकानमे घड़ी खोलि देखैत छथि, अपन बाट स्वयं बुझबाक लेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९७ · अन्तिम पन्ना

महिलासभक सिलाइ-एकाई चलबयवाली रजनी चौधरी उपन्यासक अन्तिम पन्ना पढ़ैत अपन माए शैल देवीक अधूरा शिक्षक-प्रशिक्षणक स्मृति फेर बुझैत छथि। माए घरक जिम्मेवारीक कारण स्वयं प्रशिक्षण लेल नहि जा सकलीह, मुदा बेटीकेँ पढ़य पठबैत छलीह। आब रजनी अपन बेटी ईराक रुचिक निर्णयमे शिक्षक-प्रशिक्षण केँ स्वतः उचित मानि रहल छलीह, जखन कि ईरा वस्त्र-संरक्षणक काजो सोचैत अछि। रजनी दुनू विकल्पक अलग बजट बनबैत, बेटी पर अपन अधूरा सपना नहि थोपबाक निर्णय करैत छथि। माएक त्याग आ अगिला पीढ़ीक स्वायत्तताक अर्थ हुनका नव ढंगसँ बुझाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २९८ · सबेरे पहिल बस

सहरसाक पम्प-मरम्मति केन्द्रमे तीन मासक अधिक मजदूरी पाबय कृष्णमोहन पासवान झंझारपुरसँ भोरक पहिल बस पकड़ैत अछि। पत्नी माला यात्रा रोकय नहि चाहैत छथि, मुदा बिना चर्चा कएल घर छोड़बाक निर्णय आ अनुपस्थितिक खर्चक बात उठबैत छथि। बस-पड़ाव पर छात्र-छात्राक दिनचर्या देखैत कृष्णमोहन केँ बुझाइत अछि जे पानि भरब, बच्चाक देखरेख आ घरक काज ओकर बिना आन लोककेँ सम्हारय पड़त। ओ सहरसा जाएबाक निर्णय नहि बदलैत, मुदा अधिक कमाइक हिसाबमे परिवारक अदेखल श्रम आ समयक लागत जोड़बाक आवश्यकता बुझैत अछि।

कथा २९९ · अनन्त पञ्जी

सौराठक पञ्जीकार वाचस्पति झा भीजल पुरान वंश-पञ्जीक प्रति बनबैत आश्चर्यजनक एहन प्रविष्टि भेटैत छथि जाहिमे भविष्यक लोकक नाम लिखल अछि। अपन परिवारमे होमयवला नवजातक लेल सेहो ओहि पञ्जीमे नाम निर्धारित जेकाँ देखाइत अछि। मुदा बेटा नचिकेता आ मृणाल जन्मल बच्चाक नाम अपन निर्णयसँ चुनय चाहैत छथि। वाचस्पति भविष्यवला पाँति सुरक्षित उतारैत, स्पष्ट टिप्पणी जोड़ैत छथि जे काल सत्यापित नहि आ वर्तमान निर्णयक प्रमाण नहि। बच्चाक नाम पूछलापर ओ पहिने ओकरा देखबाक बात कहैत छथि। लिखल नाम आ जियल जीवनक स्वतन्त्रता कथा बीच ठाढ़ रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा-त्रिधारा · खण्ड–३

कथा ३०० · मिथिलाक पुस्तकालय

पोखरि आ गामक स्मृति पर ग्रन्थ लिखयवला ईशान मिश्र दरभंगामे ‘मिथिलाक पुस्तकालय’ नामक विचित्र ठाम पहुँचैत छथि। ओतय लिखल, अलिखल, नष्ट आ अनिश्चित स्रोतसभक अनेक सम्भावित पोथी देखैत हुनका अपन मसौदाक अतिरञ्जना उद्घाटित होइत अछि। वृद्धा शारदा देवीक अनिश्चित स्मृतिकेँ ओ गलत ढंगसँ तीस दिनक बेगारक निश्चित विवरण बनौने छलाह। अगिला दिन वास्तविक अभिलेख आ मूल साक्षात्कार मिलाकऽ ओ असमर्थित संख्या काटि दैत छथि, कमजोर प्रसंग हटबैत छथि आ परस्पर विरुद्ध स्रोतक सीमा अलग लिखैत छथि। ग्रन्थ देरीसँ आ पातर हो सकैत अछि, मुदा ओकर कथन अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा १ · सिद्ध महावीर

विधवा अनमना दीदी नैहरमे अपन छोट घरक लग हनुमानजीक मन्दिर बनबैत छथि। वर्षानुवर्ष अपन पेट काटि मन्दिरक रखरखाव करैत छथि आ ओकर छत ढलबेबाक लेल अपन जमीनक आधा भाग बेचबाक निर्णय लैत छथि। भातिज अपन आप्तता आ धार्मिक भावनाक लाभ उठा कऽ सड़कक कातक जमीन लिखबा लैत अछि। शेष जमीनक बाट बन्द भऽ गेलासँ मन्दिरक निर्माण अधूर रहि जाइत अछि। ठगल अनमना दीदी शेष जमीनो भातिजकेँ लिखि दैत छथि आ धार्मिक चमत्कारपर विश्वास छोड़ि दैत छथि। किछु वर्षक बाद भातिजक हृदयाघातसँ मृत्युकेँ गामक एक पक्ष दैवी दण्ड मानैत अछि, मुदा अनमना दीदी एकरा रोग आ उपचारमे देरीसँ जोड़ैत छथि। हुनकर मृत्युक बाद मन्दिरक उत्सवमे श्रद्धा आ वैज्ञानिक तर्कक दुनू स्वर संग-संग सुनाइत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २ · नवी मुम्बै

नवी मुम्बैमे कार्यरत कथावाचककेँ मैथिली बाजिते सुनि अपन गामक लोक चिन्हि लैत छथि। एहि संयोगसँ फुदो भाइ, हरी भाइ आ आन प्रवासी मैथिलक संघर्ष, पारिवारिक सम्बन्ध आ पुरान गामक स्मृति खुलैत अछि। हरी भाइ गाममे व्यापार चलाबऽ लेल सहयोग नहि पाबि मुम्बैमे मिठाइक दोकान खोलि सफल होइत छथि, मुदा परिवार बीमारी आ आर्थिक संकटसँ जूझैत रहैत अछि। कोरोना महामारीक समय प्रवासी जीवनक आशा आ असुरक्षा आरो तीव्र भऽ उठैत अछि। अस्पतालक बेड, ऑक्सीजन, दवाइ, कालाबाजारी आ असमय मृत्यु कथा भरि छिटकल अछि। फुदो भाइ स्वस्थ होइत छथि, हरी भाइक मृत्यु भऽ जाइत छन्हि। अन्तमे कथावाचक नवी मुम्बैक बन्दी-जकाँ जीवनमे छथि आ दिल्लीमे बेटाक सातम दिनो नहि उतरल ज्वरक समाचारसँ व्याकुल छथि। एहि अनिर्णीत प्रतीक्षामे कथा समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ३ · नई दिल्ली

नववर्षक राति नव दिल्लीक भव्य विमानपत्तनपर कार्यरत कथावाचककेँ गामसँ समाचार भेटैत अछि जे मोहित बाबूक एकमात्र पुत्र अमर सड़क दुर्घटनामे मरि गेल। विमानपत्तनक उजाससँ यमुनापारक अन्हार आ अभाव दिस कथाक यात्रा राजधानीक दू विपरीत रूप देखबैत अछि। पुलिसक प्रक्रिया अनुसार मृतदेह लेबाक लेल मोहित बाबूकेँ गामसँ दिल्ली अबऽ पड़ैत छन्हि। पत्नी आ डेढ़ मासक बच्चाकेँ छोड़ि गेल अमरक निधन परिवारक भविष्यपर प्रश्नचिह्न लगा दैत अछि। यमुनाक कात दाह-संस्कारक विधि, पिताक हाहाकार आ नवविधवाक मौन पीड़ा एक-दोसरमे मिलि जाइत अछि। आधुनिक नगरीक वैभवक पाछाँ प्रवासी श्रमजीवी परिवारक असुरक्षा आ स्त्रीक पुरान सामाजिक नियति जसक तस ठाढ़ रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४ · तस्कर

कवि मधुरापतिक पुत्र केशव बचपनसँ जमसम गामक मालतीक संग गाछी, पोखरि आ बाधमे खेलैत पैघ होइत छथि। दुनूक आत्मीयता प्रेममे बदलैत अछि आ परिवार सेहो विवाहक सम्भावना देखैत अछि। मुदा दरभंगाक महाराज बीरेश्वर सिंह अपन विवाहक प्रस्ताव मालतीक पिता खगनाथ झा लग पठा दैत छथि। राजसत्ताक दबावसँ मालतीक जीवन पराधीन होमऽ लगैत अछि। केशव साहस कऽ विवाहसँ पहिने मालतीकेँ संग लऽ जाइ छथि आ हुनके संग विवाह करैत छथि। अपमानित राजा पञ्जीकारसँ केशवक नामक संग ‘तस्कर’ जोड़बा दैत छथि। दीर्घ समयक बाद बदलि गेल गाममे केशव प्रेमक कोनो निशानी ताकैत छथि; राजाक बनाओल पोखरि, मन्दिर आ शालिग्राम अतीतक साक्षी बचैत अछि। कथा प्रेमक स्वतन्त्रता, जातीय पञ्जी आ राजकीय दमनक टकराव उघारैत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ५ · संघर्ष

सोहागो बालविधवा छथि। ओ अपन एकमात्र बेटा अफेलकेँ कष्ट उठा कऽ पढ़बैत छथि; सरकारी सेवा शुरू कएने किछुए समय भेल रहैत अछि जे ओकर रहस्यमय मृत्यु भऽ जाइत अछि। सोहागो एकरा हत्या मानैत छथि, मुदा अदालतमे गबाह आ प्रमाणक संकट तथा चरित्रपर आरोपक कारण अभियुक्त जटाशंकर बचि जाइत अछि। वृद्धावस्थामे सेहो सोहागो हार नहि मानैत छथि। एखन हुनकर लड़ाइ सेवा-अभिलेखमे गलत लिखल जन्मतिथिक विरुद्ध अछि, जकर कारण हुनकर सेवाक पाँच वर्ष कटि रहल अछि। एकटा युवा अधिकारी धूलि भरल अभिलेख जाँचि प्रमाण जुटबैत छथि आ स्थानान्तरणसँ पहिने आवेदन दाखिल करैत छथि। किछु वर्ष बाद ज्ञात होइत अछि जे सोहागोक आवेदन स्वीकार भऽ गेल। हुनकर अटूट जिद्द अधिकारीकेँ सेहो अपन पराजयक भावनासँ बाहर निकालैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६ · लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी

मादक पदार्थक तस्करीमे पकड़ायल तमिल युवक मुतालिफकेँ देखिते जाँच अधिकारीकेँ संदेह होइत छन्हि जे वास्तविक सूत्रधार कियो आन अछि। हबीबुल्ला द्वारा रोजगारक लोभ देखाकऽ युवककेँ तस्करीमे फँसेबाक वृत्तान्त खुलैत अछि। अधिकारीक खोज मादक पदार्थ, उग्रवादी संगठन, गुप्त सूचना आ सत्ताक बहुस्तरीय जाल धरि पहुँचैत अछि। एक रहस्यमय पत्रक संकेतक पाछाँ जाइत ओ हिंसक संगठनक पकड़मे पड़ि जाइ छथि; मुक्त भेलाक बादो शत्रु आ सहायकक पहचान स्पष्ट नहि रहैत छन्हि। कथा बीच अधिकारीक पुरान दुर्घटना, पुत्र आ परिवारक स्मृति तथा सशस्त्र धमकी क्रमशः उभरैत अछि। पुत्रक मृत्यु अधिकारीक जीवन तोड़ि दैत अछि। अन्ततः ओ संगठनक अड्डापर निहत्था ठाढ़ रहि मुतालिफक निर्णयक प्रतीक्षा करैत छथि। जीत, हारि आ मुक्तिक अर्थ अनिर्णीत रहि जाइत अछि।

कथा ७ · डोमा, बुधन आ...

बुधन अपन छोट भाय डोमाकेँ पढ़ेबाक लेल चण्डीगढ़मे रिक्शा चलबैत छथि। सरकारी निःशुल्क पुस्तक योजना सेहो गामक जातीय शक्ति-सम्बन्धक कारण अपना उद्देश्य धरि नहि पहुँचि पबैत अछि। कालान्तरमे डोमा गाममे शिक्षक बनैत छथि आ बुधनक बेटा पढ़ि-लिखि एकटा पैघ व्यवसायिक संस्थानमे उत्तरदायित्वपूर्ण पद धरैत छथि। कथावाचकक संग बुधनक बेटाक संवादमे अतीतक छुआछूत, विद्यालय, आरक्षण, अन्तर्जातीय विवाह, धार्मिक ग्रन्थक व्याख्या आ आत्मसम्मानक प्रश्न खुलैत अछि। ओ बदलावक उपलब्धि मानैत छथि, मुदा जातिक सामाजिक अस्तित्व आ राजनीतिक जाति-व्यवस्थाक बीच अन्तर सेहो देखबैत छथि। अन्तमे शिक्षा आ आर्थिक साधनक संग मानवीय गरिमाक वास्तविक विस्तारक आकांक्षा कथा केँ आगू बढ़बैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ८ · आत्महत्या

विवाहक बाद सासुरमे कथावाचकक परिचय किशोरी आर्यासँ होइत अछि। आर्याक पिता मद्यपानक कारण घरमे कलह उत्पन्न करैत छथि; परिवार समाजक तिरस्कार आ घर खाली करबाक धमकी सेहो सहैत अछि। किछु समय बाद पिताक मृत्युकेँ आत्महत्या मानल जाइत अछि आ परिवारक जटिल सम्बन्ध आरो उलझि जाइत अछि। आर्याक एक युवकसँ सम्बन्ध, ओकर टूटब आ स्वयं आर्याक आत्महत्याक समाचार कथावाचककेँ विचलित करैत अछि। आर्याक परिचित युवकसँ भेल संवादमे आत्महत्याक प्रत्यक्ष घटना आ ओकर पाछाँक मनोवैज्ञानिक तथा पारिवारिक कारणक पड़ताल होइत अछि। कथा प्रश्न उठबैत अछि जे व्यक्तिगत त्रासदीकेँ केवल एक व्यक्ति अथवा एक घटनाक दोष कहि समेटब कतेक अधूर अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ९ · गंधर्व लेटरबम

गामक कम कदक बालक लेटरा उपहासक पात्र बनैत अछि, मुदा संगीतमे ओकर असाधारण प्रतिभा अछि। परिवारक विवशतामे पिता ओकरा नाटक कम्पनीक हाथ सौंपि दैत छथि। ओतऽ छोट कदक कलाकारक संग रहि लेटरा नाटकसँ शास्त्रीय संगीतक साधना धरि पहुँचैत अछि। गुरु भट्टजी प्रतिभा चिन्हि गहन प्रशिक्षणक अवसर दैत छथि। लेटरबम आगाँ सम्मानित शिक्षक आ कलाकार बनैत छथि। सार्वजनिक भेदभाव आ छोट कदक व्यक्तिक वास्तविक आवश्यकता हुनकर अनुभवमे उभरैत अछि। वृद्धावस्थाक अभिनन्दनमे ओ केवल अपन नहि, समस्त ‘बाणवीर’ समाजक सम्मानक माँग करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १० · मधुबनी मोड्यूल

मधुबनीक युवक अहमद अन्तर्जालक सम्पर्कसँ उग्रवादी संगठनक प्रभावमे आबि स्लीपर सेलसँ जुड़ि जाइत अछि। ओकर पूछताछ करैत अधिकारीकेँ दिल्लीमे अपन पुरान घरक मरम्मतिक समय भेटल कारीगर सभक स्मृति जागैत अछि—नबी बकस, ओकील, सर्फुद्दीन, खलील आ हुनकर परिवार। विशेष रूपसँ नबी बकसक विधवा मायक संघर्ष, भाइ सभक बीच सम्बन्ध आ बाढ़िक त्रासदी कथा केँ मानवीय गहराइ दैत अछि। अधिकारी बुझे लगैत छथि जे वर्तमान अभियुक्तक जीवन एहि पुरान सम्बन्धसँ जुड़ल अछि। अहमदक कथनसँ अन्तर्जालपर कट्टरपन्थी प्रभाव, गुप्त संगठन आ नियोजित हिंसाक सूत्र भेटैत अछि। सूचना पर अभियान चलैत अछि आ 'मधुबनी मोड्यूल' समाप्त कएल जाएबाक घोषणा होइत अछि। मुदा अन्तक संवाद एकटा आन गतिविधिक जटिल आर्थिक जाल खोलैत अछि, जतऽ नाम आ पहचान सेहो स्थिर नहि रहैत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ११ · शब्दशास्त्रम्

नैय्यायिक मितू आ चर्मकार परिवारक आनन्दा एक-दोसरसँ प्रेम करैत छथि। मितूक पिता श्रीकर मीमांसक तालपत्रक प्राचीन पोथी सभक संरक्षण लेल चिन्तित रहैत छथि। आनन्दाक बुद्धिमत्ता आ संरक्षणक कौशल देखिते ओ जातिगत आपत्तिक विरुद्ध दुनूक विवाह स्वीकार करैत छथि। विवाहक बाद आनन्दा घर, परिवार, लोकगीत आ विद्या-परम्पराक संरक्षण करैत छथि; हुनकर बेटी मेधा आ वल्लभा तथा पुत्र मेघ पैघ होइत छथि। वृद्धावस्थामे आनन्दाक मृत्यु भेलापर मितू स्मृति, शब्द, ध्वनि आ भ्रमक प्रश्नमे डूबि जाइ छथि। श्रीकरक दर्शन, मण्डन मिश्र, भामती आ लोकगीतक स्वर हुनकर शोकसँ गुँथि जाइत अछि। बचलू द्वारा स्मरण कएल पुरान घटना आ मितूक मानसिक स्थिति कथा केँ अतीत-वर्तमानमे चलबैत अछि। अन्तमे आनन्दाक स्मृति आ ध्वनि एकरङे जीवित रहैत अछि, आ मितूक मृत्यु हुनकर प्रेमकेँ मार्मिक परिणति दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा १२ · महिसबार ब्राह्मणक गाम

ई एक मनुक्खक नहि, गढ़ नारिकेल गामक सामूहिक कथा अछि। पोखरि, कमला-बलान, कोसी, बान्ह, चौरी, चरागाह आ जमीन्दारीसँ वर्णन गामक सामाजिक जीवन धरि पहुँचैत अछि। महिसबार ब्राह्मणक पशुपालनक संग डोम, धोबी, दुसाध, चर्मकार, मुसलमान आ आन समुदायक श्रम तथा परस्पर निर्भरता उभरैत अछि। जातीय दम्भ, अस्पृश्यता, ऐतिहासिक स्मृति, महामारी आ जमीनक नियन्त्रणपर कथा आलोचनात्मक दृष्टि रखैत अछि। लोकगीत, नाच, कहावत, धान, साग, तरकारी, बाढ़ि आ माछक विवरणसँ गामक सांस्कृतिक भूगोल सजीव बनैत अछि। अन्ततः गाम अपन लोकक बोली, शक्ति, श्रम आ जीवनयापनक माध्यमसँ एक सामूहिक चरित्र बनि उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा १३ · रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर

पटना मे आधा राति दू यात्री पुनाइचक जेबाक लेल रिक्शा ताकैत छथि। रिक्शाचालक एहि डरें मना करैत अछि जे घुरती काल ओकर कमाएल भाड़ा उचक्का छीन लेत। यात्रीक एक संगी मजाकमे कहि दैत छथि जे उचक्का ओ सभ स्वयं छथि। एहि उलट जवाबसँ रिक्शाचालक निश्चिन्त भऽ सवारी करबा लेल तैयार भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४ · नकली नोट

पटना विमानपत्तनपर एकटा यात्री टैक्सीक भाड़ा देबाक लेल अपन एक हजार टाकाक नोट खुदरा करबैत छथि। नोट असली अछि कि नहि, से हुनकेँ पक्का नहि बुझल छन्हि। गाड़ीचालक हुनकर पक्षमे पार्किङकर्मीक आगाँ एतेक विश्वाससँ बाजैत अछि जे अन्ततः नोट बदलि देल जाइत अछि। यात्रीक आशंका आ चालकक अभिनय प्रसंगकेँ हास्यमय बना दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा १५ · पानिबला रोड

बाढ़िक अनुभवसँ अपरिचित अधिकारी कुशेश्वरस्थान क्षेत्रमे पदस्थापित होइत छथि। उग्रतारा स्थान जेबाक लेल ओ बरखा नहि रहल समयकेँ यात्राक अनुकूल मानैत छथि। स्थानीय सम्बन्धी बुझबैत छथि जे एखन टूटल सड़कसँ घंटों लागत, मुदा बाढ़ि एलापर नावसँ बीस-तीस मिनटमे पहुँचल जा सकैत अछि। कथा जलप्लावित क्षेत्रक जीवनानुकूल यात्राबोध उघारैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १६ · जी सर

एकटा कर्मचारी सभ प्रश्नक उत्तर ‘जी सर’ कहि देबाक अभ्यस्त भऽ गेल छथि। कार्यालयक एहि आदति एतेक गहींर जमा गेल छन्हि जे घरमे बेटाक आग्रहपर सेहो अनायास ‘जी सर’ निकलि पड़ैत छन्हि। छोट प्रसंग पदानुक्रमक मनोवैज्ञानिक प्रभाव देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १७ · दू टा कैदी

जेलमे एक कैदी जेलरक मारि-पीटक शिकायत करैत अछि। दोसर कैदी ओकरा चोरी आ छिनतईक मामूली अपराधी बुझि डाँटैत अछि, मुदा ओ आगाँ देखबैत अछि जे जेलर जकर हालचाल श्रद्धासँ पूछि रहल छथि, ओकरापर हत्याक आरोप अछि। व्यवहारक एहि उलटबाँसीसँ जेलक भीतर प्रतिष्ठा आ अपराधक विचित्र सम्बन्ध उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८ · अपन-अपन भाग्य

दू प्रशासनिक अधिकारीक परिवारक सदस्य अपन-अपन कठिन पदस्थापनाक बखान करैत छथि। एक अधिकारीकेँ सूखाग्रस्त पहाड़ी इलाकामे पठाओल गेल, मुदा भूकम्पक बाद राहतक धनसँ ओकर कमाइ बढ़ल। दोसरकेँ बाढ़िक इलाकामे पठाओल गेल, मुदा ओतऽ सूखा पड़ि गेल। प्राकृतिक विपदाक संग अवैध लाभक अपेक्षा जोड़निहार मानसिकतापर कथा व्यंग्य करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९ · प्रवचन

दिल्लीमे प्रसिद्ध स्वामी अपन प्रवचनमे पटनाक राजेन्द्र नगरक सम्बन्धमे मनगढ़न्त प्रसंग सुनबैत छथि। कथावाचककेँ हुनकर यात्रा आ कथनक असंगति बुझा पड़ैत अछि। प्रश्न कएलापर स्वामी स्वीकार करैत छथि जे श्रोतासँ धन पाबऽ लेल एहन बात कहब पड़ैत अछि। धार्मिक प्रवचनक आड़मे प्रदर्शन आ स्वार्थक विडम्बना खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २० · गछल गप

घटक अपन वचनक अनुसार वस्तु नहि देबाक शिकायत गोनर भाइसँ करैत छथि। गोनर भाइ कहैत छथि जे विवाहक धुनमे दोसर लोक जे-जे कहैत गेल, ओ ‘हँ’ कहैत गेलाह; आब कोन वस्तु देबाक वचन देलनि, से यादे नहि अछि। प्रसंग विवाहक समयक अस्पष्ट आश्वासन आ पछिला विवादकेँ हास्यक रूपमे देखबैत अछि।

कथा २१ · भूरा बाल

चारि संगीक गपमे जाति-सम्बन्धी छोट नाम आ पुरान पूर्वग्रहक चर्चा शुरू होइत अछि। एक गोटे अलग-अलग समुदायपर प्रचलित कटाक्ष करैत छथि। दोसर अपन जातिक विषयमे एहन फकड़ा नहि बनल हेबाक कारण ऐतिहासिक पछड़ापन कहैत छथि आ सामाजिक उन्नतिक संग नव फकड़ा बनबाक सम्भावना देखबैत छथि। संवाद जातीय व्यंग्यक भितरी राजनीति देखबैत अछि।

कथा २२ · आत्म-गौरव

यातायातक नियम तोड़लाक बाद सतर्कता विभागक एक पैघ अधिकारी सिपाहीकेँ घूस देबाक प्रयास करैत छथि। हवलदार नोट घुरा दैत अछि आ कहैत अछि जे गाममे ओकर इज्जत अछि। ओ पीयर बत्तीपर गाड़ी बढ़ा देबाक कारण चेतावनी दऽ छोड़ैत अछि, मुदा लाल बत्ती तोड़ितथि तँ नहि छोड़ितय। एक साधारण कर्मचारीक आत्मसम्मान पैघ पदाधिकारीकेँ स्मरणीय पाठ पढ़बैत अछि।

कथा २३ · छाह

एकटा संगी बारम्बार प्रश्न करैत अछि जे कथावाचक अपन फोटो किए बनबेलन्हि आ फ्रेम किए लगबा रहल छथि। कथावाचक चुपचाप फोटो लेल माला किनबाक बात करैत छथि। सुनिनिहार मानि लैत अछि जे चित्र दिवंगत पिताक अछि। एहि एक अनुमानसँ जिबैत लोकक फोटो आ मृतकक स्मृति सम्बन्धी सामाजिक आदति खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २४ · वाटर कूलर

सरदार गुरमीत राहगीरक प्यास बुझेबाक लेल पुरान बजारसँ जलशोधक किनि घरक बाहर लगबैत छथि। किछु दिन बाद माय शिकायत करैत छथि जे शराब पीनिहार लोक पानि पीबि प्लास्टिकक गिलास फेकि जाइत अछि। नि:स्वार्थ सार्वजनिक सुविधाक संग घरक सफाइ करबाक भार बढ़ि जाइत अछि। कथा सदाशयताक अनपेक्षित परिणामपर हँसैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २५ · तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छेँ बाउ

क्रिकेट मैच देखैत एकटा दर्शक बाउण्ड्रीपर ठाढ़ सुरेश रैनाकेँ अपन बाल्यसंगी कहि बेर-बेर आवाज दैत अछि। खिलाड़ी घुरि नहि देखैत छथि। बादमे नव खिलाड़ी विद्युतकेँ सेहो ओ बजबैत अछि; उत्तर नहि भेटलापर कहैत अछि जे ओ एखन एतेक पैघ खिलाड़ी नहि भेल अछि जे ओकरा अनठा दे। दर्शकक आत्मीय दाबी आ आहत प्रतिष्ठा सभकेँ हँसाबैत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा २६ · एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा

एकटा कुशल मानल जाएबला बिजली-मिस्त्री अपन अनोखा कार्यप्रणालीक कारण रोजगारसँ निकालल जाइत अछि। पानिमे ठाढ़ भऽ तार जोड़बाक जोखिम ओकरा सामान्य लगैत अछि, मुदा व्यवस्थापककेँ दुर्घटनाक भय होइत अछि। साक्षात्कारमे बिजलीक गति आ बसक यात्रासमयकेँ एक मानि ओकर उत्तर आरो विसंगति उत्पन्न करैत अछि। कथा व्यावहारिक अनुभवक दाबी आ वैज्ञानिक समझक बीच अन्तर उभारैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २७ · स्निफर डॉग आख्यान

सन्दिग्ध सामानमे मादक पदार्थ हेबाक आशंकासँ प्रशिक्षित सूँघनिहार कुकुर बजाओल जाइत अछि। कुकुर बैग फाड़ि भीतरक मांस खा जाइत अछि। हवलदार एकरा प्रशिक्षणक धनमे भ्रष्टाचारक परिणाम बतबैत अछि। सुरक्षा-अभियानक गम्भीरता एकाएक भूख आ उपेक्षाक व्यंग्यमे बदलि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा २८ · यातायात निअम — भाग ०

पटना मे शिक्षक दिल्लीक सुदृढ़ यातायात व्यवस्थाक प्रशंसा करैत छथि, जतऽ निश्चित गतिसँ चलबापर लगातार हरियर बत्ती भेटबाक बात छल। दिल्ली आबि कथावाचक देखैत छथि जे संकेतक व्यवस्था बदलि गेल, चौराहा सभपर नव रोक-टोक लागि गेल। योजना आ व्यवहारक बदलैत दूरी एहि प्रसंगक केन्द्र अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा २९ · यातायात निअम — भाग १

दिल्लीमे मोटरसाइकिलपर पाछाँ बैसल यात्रीकेँ सेहो हेलमेट पहिराओल जाइत अछि। राज्यक सीमा पार कऽ उत्तर प्रदेश पहुँचिते चालक दुनू हेलमेट उतारि लैत अछि, मानू सुरक्षा नियम सीमा पार करिते अप्रासंगिक भऽ गेल। छोट घटना कानूनक भौगोलिक असंगति आ लोकक सुविधा-आधारित अनुशासन देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३० · यातायात निअम — भाग २

दिल्लीसँ नोएडा गेल कथावाचक मोड़पर संकेतक जरा कऽ गाड़ी घुमबैत छथि, मुदा साइकिलसँ टक्कर होइत-होइत बचैत अछि। स्थानीय निरीक्षक बुझबैत छथि जे एतऽ संकेतक देखिकऽ बाट देबाक भरोस नहि करब; शीशा खोलि हाथसँ संकेत आ हॉर्न दुनू चाही। यातायातक स्थानीय व्यवहार नियमक औपचारिकतासँ अलग अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३१ · यातायात निअम — भाग ३

एक मिनट लेल सड़कक कात गलत ठाम कार रोकलाक बाद कथावाचक घुरैत छथि तँ कार गायब भेटैत अछि। हवलदार कहैत अछि जे चोर लेने होयत तँ पता नहि, मुदा यातायात पुलिस उठेने होयत तँ थानामे भेटत। थानामे कार भेटलापर कथावाचक अपनाकेँ धन्य मानैत छथि जे चोर नहि लेने छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ३२ · जातिवादी मराठी

पुणेमे एक मराठी व्यक्ति प्रश्न करैत अछि जे मिथिला-बिहारक लोक अधिकारी सेहो बनैत छथि आ रिक्शाचालक, रसोइया सेहो—ई केहन बात? सिंह साहेबकेँ अपन सरकारी पद आ भाइकेँ छापाखानाक साधारण काममे कोनो विरोध नहि देखाइत छन्हि। कथावाचक एहि प्रश्नक भितर प्रवासी श्रमक प्रति जातीय आ वर्गीय पूर्वग्रह चिन्हैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३३ · थेथर मनुक्ख

एकटा पक्षीक संगिनी ओहि ठाम नहि रहैत अछि, आ दुइ दिन धरि उदास बैसल पक्षी अन्तमे अपन ठाम छोड़ि चलि जाइत अछि। एहि प्रसंगपर नानी मनुक्खक तुलना करैत छथि—परिजनक मृत्यु आ सम्बन्धक विघटनक बादो मनुक्ख थोड़े दिन शोक कऽ फेर सामान्य भऽ जाइत अछि। मानवीय ‘थेथरपन’ आ जीवक संवेदनाक तुलना कथाक तीख व्यंग्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३४ · बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

एक पुरुषक तेसर पत्नी मरि जाइत अछि। गामक गपमे पहिल दू विवाहसँ सन्तान नहि भेलाक बाद तेसरो विवाहक निर्णयपर प्रश्न उठैत अछि। ओ पुरुष दोष तेसर पत्नीपर थोपैत अछि, मुदा ग्रामवासी हुनके पुरुषत्वक विषयमे कटाक्ष करैत छथि। कथा स्त्रीकेँ सन्तानहीनताक एकल दोषी ठहरायब आ बहुविवाहक सामाजिक क्रूरतापर व्यंग्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३५ · स्त्री-बेटी

छोट बुचिया पिता संग खेबाक चाहैत अछि, मुदा माय ओकरा अलग बैसाबि दैत छथि। पिता आ भाइ सभ नीक तरकारी आ दूध खा चुकैत छथि; बुचिया आ मायक भागमे बचल-खुचल भोजन अबैत अछि। एहि स्मृतिसँ गप स्त्री-बेटीक शिक्षा, भोजन आ सम्मानमे पुरान भेदभाव दिस बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३६ · बिआह आ गोरलगाइ

विवाहमे बेटीकेँ सम्पत्ति आ धन देनिहार पिता आगन्तुक जमायक पएर छुबि प्रणाम स्वीकार करैत छथि। जमाय गोरलगाइक दक्षिणा नहि लेबाक आग्रह करैत छथि। ससुर एक सय टाकाक संग एक टाकाक सिक्का जोड़ि दैत छथि आ अपन पुरान विचारक स्मरण करैत छथि। छोट आदान-प्रदान पीढ़ीक बदलैत सम्बन्ध आ परम्पराक आत्मीयता देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३७ · प्रतिभा

प्रशासनिक सेवाक प्रशिक्षणक समय एक नवचयनित अधिकारी अपन चयनकेँ असाधारण बुद्धिक प्रमाण मानैत अछि। ओकर संगी स्कूलक कमजोर प्रदर्शन आ प्रश्नक नमूनापर कठोर अभ्यासक स्मरण करा दैत अछि। सफलता महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा केवल प्रतियोगिताक तैयारीकेँ जन्मजात प्रतिभाक पर्याय मानि लेब कथाक आलोचनाक विषय अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ३८ · जाति-पाति

पुलिस प्रशिक्षणक एक मद्यपानक सभामे अधिकारी अपन राजपूत जातिक नामपर रोब देखबैत अछि। ओकर दोसर संगी कहैत अछि जे दुनू समान पदपर अछि, मुदा ओ अपन डोम जातिक नाम ताहि तरहें छाती पीटि कऽ नहि बजा सकैत अछि। एहि विरोधसँ जातिगत गर्वक असमान सामाजिक स्वीकृति उजागर होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३९ · अनुकम्पाक नोकरी

एक स्वतंत्रता सेनानीक प्रतिभावान पैघ बेटा असाध्य रोगसँ मरि जाइत अछि। पिता ओकर सेवा करैत-करैत टूटि जाइत छथि। नोकरी पाबऽ लेल आतुर छोट बेटाकेँ पिता मृत भायक शैक्षणिक प्रमाणपत्र दऽ दैत छथि। ओ ओही परिचयसँ कलकत्ताक कम्पनीमे रोजगार पाबि लैत अछि। अनुकम्पाक रोजगारक प्रचलित अर्थ एहि कथामे विचित्र रूपसँ उलटि जाइत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ४० · पैरवी-पैगाम आ हाकिम

एक इमानदार पुलिस अधीक्षकक कुटुम अपन दू पुतोहुक शिक्षक-प्रशिक्षणमे नामांकन लेल पैरवी चाहैत छथि। अधिकारी आन विभागपर अनुचित दबाव देबाक पक्षमे नहि छथि। आग्रही कुटुमकेँ ओ व्यंग्यपूर्वक कहैत छथि जे कॉलेजक गेटपर बम फोड़ि दिअ, तखन प्रधानाचार्य पुलिस लग एताह आ बात भऽ सकत। कुटुमक आग्रह तत्क्षण थमि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४१ · नूतन मीडिआ

नगरमे डकैतीक बाद समाचार माध्यम सभ तुरन्त गिरफ्तारी नहि भेलापर पुलिसकेँ अकर्मण्य ठहरबैत अछि। दबावमे एक व्यक्ति पकड़ायलाक बाद मारि-पीटसँ अपराध स्वीकार करबा लेल बाध्य कएल जाइत अछि। मुदा ओ अपन तीन सहअपराधीक नाम नहि बता सकैत अछि, किएक तँ ओ डकैती कएने नहि छल। सनसनीखेज समाचार आ पुलिसक प्रदर्शन सत्यक खोजकेँ पछाड़ि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ४२ · मिथिलाक उद्योग

गामक प्रभावशाली चौधरीजी यात्राबाहक बस चलाबऽ लगैत छथि। गामक रौब नगरक बस-अड्डाक प्रतिस्पर्धी मालिकक सोझाँ नहि चलैत अछि। चालक-खलासी पिटाइत छथि आ बस बन्द भऽ मन्दिर लग ठाढ़ भऽ जाइत अछि। किछु दिनमे बसपर कदीमाक लत्ती चढ़ि जाइत अछि। एहि दृश्यसँ क्षेत्रीय उद्यमक पथमे बाहुबल, एकाधिकार आ उद्योगहीनताक कथा उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४३ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — भूख (१)

बरियातीमे पप्पू भाइ भरपेट मांस-भात खा चुकल छथि, तैयो घोषणा करैत छथि जे आब विवाहमे नहि जेता, किएक तँ ओतऽ खएबाक लेल किछुओ नहि भेटैत अछि। कथावाचक हुनकर सोझाँ हाड़क ढेरी देखि हँसी रोकि नहि पबैत छथि। भोजनक लालसा आ शिकायतक एहि विरोधाभाससँ हास्य उपजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४४ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — भूख (२)

बहीनक घरमे नवबियाएल महीसक दूध पीबाक आशा लऽ पप्पू भाइ पहुँचैत छथि। स्नेहक गपमे बहीन दूध देनाइ बिसरि जाइत छथि। पप्पू भाइ चूल्हि धरि नमहर साँप देखबाक काल्पनिक वर्णन करैत छथि, जाहिसँ बहीनक ध्यान औंटैत दूधपर जाए। चतुर संकेत सफल होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४५ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — बाढ़ि

कोसीक बाढ़ि खेतमे रेत छोड़ि जाइत अछि आ अन्य अन्नक अभावमे पप्पू भाइकेँ बेर-बेर अल्हुआ खए पड़ैत छन्हि। ताहि समय हरिद्वारसँ भातिजक पत्र अबैत अछि जे ओतऽ वैदिक पाठक बाद खीर-पूड़ी भेटैत अछि। पप्पू भाइ स्वादिष्ट भोजनक आशामे प्रवासक निर्णय लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ४६ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — प्रवासमे वज्रपात

हरिद्वार पहुँचि पप्पू भाइ वैदिक पाठ करैत छथि आ साँझक खीर-पूड़ीक प्रतीक्षा करैत छथि। मुदा पहिनेसँ ओहि भोजनसँ उबाएल पण्डित सभ नियम बदलि अल्हुआ आ दूध देबाक निर्णय लऽ लेने छथि। अपन गामक अभावसँ भागल पप्पू भाइक सोझाँ फेर अल्हुआ आबि ठाढ़ होइत अछि। ई प्रवासक करुण-हास्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४७ · नव-सामन्त

गाममे झगड़ालू स्वभावक एक युवक दिल्ली पहुँचियो सभकेँ गोली मारबाक धमकी दैत रहैत अछि। बीस-चालीस किलोमीटर दूरक लोककेँ दस मिनटमे पहुँचेबाक ओकर माँगक असम्भवता देखाओल जाइत अछि। सामान्य शिक्षा पूरा नहि कऽ सकल युवक अपन ‘स्तर’सँ छोट बुझि नोकरी छोड़ि देने अछि। खोखल दबंगता आ श्रमक प्रति तिरस्कारक आलोचना कथा करैत अछि।

कथा ४८ · चारिम स्थान

नगरक अखाड़ाक पहलमान हाफ मैराथनमे भाग लैत छथि। रस्तामे दू युवक हुनका चारिम स्थानपर बताकऽ उत्साहित करैत अछि। पदक पाबऽ लेल ओ सामर्थ्यसँ बेसी दौड़ि फिनिश लाइन पार कऽ बेहोश-जकाँ भऽ जाइत छथि। परिणाममे आठम स्थान सुनि हुनका ठकबाक बोध होइत अछि। चारिम स्थानक लोभ देखाकऽ कसकऽ खटेबाक विडम्बना कथा उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ४९ · भोट

गढ़ नारिकेल पंचायतक मुखिया चुनावमे पैघ गामसँ सात उमेदवार ठाढ़ होइत छथि, जखन कि छोट पड़ोसी गामसँ एक्केटा। हारिक आशंका देखिकऽ गामक लोक आपसी मतदानसँ एक उम्मीदवार चुनबाक योजना बनबैत छथि। मुदा एक प्रत्याशी सेवानिवृत्त शिक्षककेँ चुनाव आचारसंहिताक भय देखाकऽ व्यवस्था रुकबा दैत छथि। अन्तमे साती उम्मीदवार चुनावमे बनल रहैत छथि आ छोट गामक जीतक सम्भावना बढ़ि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५० · मसुआइ

गाममे खरहा आ आन जन्तुक मांस खेबाक सांस्कृतिक परम्परा एकटा विद्यालयक प्रसंगमे विवाद बनि जाइत अछि। नन्हा बालक विद्यालयक पालतू खरहा घर लऽ जा मसुआइ बना कऽ खेबाक इच्छा प्रकट करैत अछि। शिक्षिका एकरा क्रूरता आ बच्चाक परवरिशक समस्या बुझैत छथि। पिता खानपानक सांस्कृतिक अन्तर बुझबैत छथि, मुदा हुनकर चिन्ता दूर नहि होइत अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ५१ · साइबेरिया कैम्प

अफगानिस्तानसँ विस्थापित भऽ जर्मनीक नागरिक बनल एक सरदारक साइबेरियामे दोकान अछि। हुनकर कटल आंगुर देखिकऽ एक व्यक्ति साइबेरियाक कैम्पक इतिहाससँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि। व्यापारी स्पष्ट करैत छथि जे ओतऽ व्यापार सेहो होइत अछि; अत्यधिक शीतमे नशाक बाद दस्ताना उतारि देलासँ हाथ ठरि कऽ आंगुर कटेबाक नौबत आबि जाइत अछि। पूर्वधारणा आ प्रत्यक्ष अनुभवक अन्तर कथा देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५२ · मीत भाइ श्रृंखला — १. चन्सगर

मीत भाइक विवाहक सम्बन्ध देखबऽ आयल लोकर्कें घटक हुनकर धन-धान्यक बखान करैत छथि। सम्पूर्ण बाध मीत भाइर्कें भेटल अछि, से दावा कएल जाइत अछि। खेतक बीच-बीचमे आरि देखिकऽ प्रश्न उठैत अछि तँ बाढ़ि आ ढालू जमीनक तर्कसँ बात सम्हारल जाइत अछि। विवाहक बाजारमे चतुर वाक्चातुर्यक चित्रण अछि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ५३ · मीत भाइ श्रृंखला — २. गढ़नि

मीत भाइक बहुत गहींर वर्णकेँ लऽ कऽ लोक तरह-तरहक टिप्पणी करैत अछि। विवाहक बाद पत्नी केहन छथिन्ह पुछलापर ओ हुनकर रूपक तुलना प्रसिद्ध अभिनेत्री सँ करैत छथि, मुदा रंग अपनासँ आरो गहींर बतबैत छथि। रूप, रंग आ सामाजिक सौन्दर्य-बोधक अन्तरपर ई छोट हास्यात्मक प्रसंग अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ५४ · मीत भाइ शृंखला — ३. चयन

एक व्यक्ति आश्चर्य करैत अछि जे एतेक पैघ देश भारत छोट-छोट देशसँ खेलमे केना हारि जाइत अछि। मीत भाइ सहज उत्तर दैत छथि जे क्रिकेट आ फुटबॉलमे सम्पूर्ण देश नहि, निर्धारित गोटेक खिलाड़ी खेलैत छथि। जनसंख्याक आकार आ कुशल खिलाड़ी चयनक अन्तर एक वाक्यमे स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५५ · मीत भाइ श्रृंखला — ४. मीत भाइ आ चोर बजार

दिल्लीक चोर बजारमे सस्त आ मूल्यवान जुत्ता भेटबाक लोभ मीत भाइकेँ आकृष्ट करैत अछि। विक्रेता हुनका अनमोल वस्तुक भ्रम देखाकऽ लगभग सभ पाइ लऽ लैत अछि। चारि दिनमे जुत्ताक सोल उखड़ि जाइत अछि। अपन ठकल जेबाक अनुभव सुनबैत मीत भाइ बजारक ठग सभकेँ अद्भुत बुद्धिमान मानि व्यंग्यपूर्वक सम्मानक योग्य ठहरबैत छथि।

कथा ५६ · मीत भाइ श्रृंखला — ५. मास्टरी

मीत भाइ कहैत छथि जे मास्टरीक दरमाहा आ खेतीक आमदनीसँ ओ निरन्तर धन जमा करैत छथि। मुदा कन्याक सम्बन्ध लऽ कऽ जेबाक समय लोक हुनकर आर्थिक क्षमता नहि मानैत अछि। जमा पूँजी अछैत शिक्षकक आयकेँ लऽ कऽ बनेल सामाजिक पूर्वधारणापर हुनकर आक्रोश प्रसंगक मूल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५७ · मीत भाइ शृंखला — ६. पसीझक काँट

मीत भाइ पसीझक काँटक रससँ पोखरिमे माछ मारैत छथि, मुदा अनजाने एक बीमार बच्चाकेँ सेहे रस पिआबाक सलाह दऽ दैत छथि। समयपर चेतावनी भेटलासँ बच्चा बचि जाइत अछि। पश्चात्तापमे मीत भाइ कंठी लैत छथि, मुदा स्वयं माछ खेनाइ नहि छोड़ैत छथि। माछ मारब आ खायबक बीच हुनकर विचित्र तर्क हास्य उत्पन्न करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५८ · मीत भाइ श्रृंखला — ७. टेलीफोन डायरी

गोनर झा बहुत लोकक दूरभाष संख्या लिखल पुस्तिका देखैत छथि। मीत भाइ आशंका जगबैत छथि जे पुलिस एतेक संख्या देखिकऽ हुनका आतंकवादी मानि सकैत अछि। भयभीत गोनर झा तत्काल अपन उपयोगी पुस्तिका फाड़ि फेकि दैत छथि। काल्पनिक भयक कारण वास्तविक हानिक प्रसंग अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ५९ · मीत भाइ शृंखला — ८. गोबर काढ़ब

पोखरि दिस जाइत मीत भाइ जगन्नाथकेँ गोबर काढ़ैत देखैत छथि। उपस्थित पत्नी लग ओ मौन रहैत छथि; बादमे एकान्तमे विवाह आ धनक प्रसंग उठबैत छथि। अपन विवाहमे धन नहि लागल आ पत्नी एतेक दुलारू नहि छथि, तेँ गोबर काढ़बाक विवशता नहि, से कहि ओ घरेलू श्रमपर सामाजिक व्यंग्य करैत छथि।

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ६० · मीत भाइ श्रृंखला — ९. अधिक फलम् डूबाडूबी

अत्यन्त मितव्ययी बच्चा बाबू गुड़क चाह अथवा नेबोक चाहक गुण बखान करैत खर्च घटेबाक प्रयास करैत छथि। मीत भाइ तीर्थस्थलमे कुसियार छोड़ि देबाक अपन प्रतिज्ञा बतबैत छथि आ दूधबला चाहपर अड़ि जाइत छथि। फलतः बच्चा बाबूकेँ खर्च उठाबऽ पड़ैत छन्हि। कंजूसीकेँ चातुर्यसँ परास्त करबाक हास्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६१ · मीत भाइ श्रृंखला — १०. मीत भाइक बेटा

मीत भाइक बेटा घरसँ चलि जाइत छथि, तेँ ओ बेटा आ रोजगारक खोजमे दिल्ली बिदा होइत छथि। रेलमे सहयात्रीसँ झंझट होइत छन्हि आ पुलिस खेसारीक बिड़ियाकेँ गाँजा बताकऽ हुनकर अधिकांश पाइ छीनि लैत अछि। दिल्ली पहुँचला पर बेटाक घर घुरि एबाक समाचार भेटैत अछि। मीत भाइ नोकरीक आशा छोड़ि गाम घुरबाक निर्णय लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ६२ · मीत भाइ शृंखला — ११. भा. प्र.से.

मीत भाइ कलक्टरसँ अपन घनिष्ठ परिचयक बखान करैत ‘भा. प्र.से. प्रशांत’ नाम दोहरबैत छथि। बुझाओल जाइत छन्हि जे भा. प्र.से. व्यक्ति-नामक अंश नहि, भारतीय प्रशासनिक सेवाक संक्षेप अछि। पदनामक बाहरी चमक आ वास्तविक जानकारीक अन्तर एतऽ विनोदमय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ६३ · मीत भाइ शृंखला — १२. महादेवक दूध पीबाक सोर

मीत भाइ तीन कुकुरक कथा सुनबैत छथि, जे एक मिठाइबला लग जा कऽ मारि खेनौ अपन अपमान नुका कऽ सत्कारक झूठ बखान करैत अछि। तकर तुलना ओ शिवलिङ्गक दूध पीबाक अफबाहसँ करैत छथि। स्वयं विपरीत प्रमाण देखलाक बादो लोकक प्रश्नपर चमत्कारकेँ नकारबाक साहस नहि होइत छन्हि। कथा सामूहिक दबाव आ झूठक प्रसार बुझबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ६४ · बिहारी

कार्यालय परिसर साफ करेबाक प्रसंगमे एक कर्मचारी ‘चारिटा बिहारी’ मजदूर बजा देबाक बात कहैत अछि। कथावाचक उत्तर दैत छथि जे तीन गोटे बजाउ, एक बिहारी तँ हम स्वयं छी। संवादमे बिहारी शब्दकेँ केवल मजदूरीक पर्याय बना देबाक मानसिकतापर व्यंग्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

कथा ६५ · फिल्डिंग

एक व्यक्ति क्रिकेट खेलनाइ छोड़ि देबाक कारण बतबैत अछि जे ओकरा सदिखन क्षेत्ररक्षण करऽ पड़ैत छल, बल्लेबाजीक अवसर भेटिते आउट भऽ जाइत छल। कथावाचक क्षेत्ररक्षण आ गेन्दबाजीक महत्त्व उठबैत छथि। कथा केवल बल्लेबाजीकेँ खेल माननिहार दृष्टिकोणक सीमा देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६६ · स्किल

कार्यालयमे एक कर्मचारी तकनीकी प्रक्रियाकेँ जल्दी सम्पन्न कऽ प्रशंसा पबैत अछि। मुदा शिकायत करैत अछि जे लोक आन सभकेँ परिश्रमी आ ओकरा मोबाइलमे लगल मानैत अछि। जकर काज अधिक कुशलतासँ कम समयमे होइत अछि, ओकर श्रमक मूल्यांकन नहि होइब कथाक विडम्बना अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६७ · डिसीप्लीन

एकटा सहकर्मी आश्चर्य करैत अछि जे बॉसक गारि सुनियो दोसर कर्मचारी तामस नहि देखबैत अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे ओकरो तामस होइत अछि आ ओ बॉसकेँ खूब गारि दैत अछि—मुदा केवल मोनमे। बाह्य अनुशासन आ भितरी प्रतिरोधक एहि दूरीमे हास्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ६८ · साइंस — १. साइंस शिक्षा

विद्यालयक अन्तिम दिन विद्यार्थी सभ एक-दोसराक कमीजपर स्मृतिचिह्न लिखैत छथि, मुदा विज्ञान पढ़निहार बेटाक कमीज खाली अछि। बेटा एकरा विज्ञान-वर्गक गम्भीरता बतबैत अछि; कथावाचककेँ ओतऽ उमंगक अभाव आ मानसिक दबाव देखाइत अछि। शिक्षा आ सहज किशोरजीवनक असन्तुलनपर प्रसंग संकेत करैत अछि।

कथा ६९ · साइंस — २. रसायनशास्त्र

चोरी करैत पकड़ायल रसायनशास्त्रक स्नातकक आँखिमे गामक लोक आकक दूध देबाक निर्णय लैत अछि। चोर अपन वैज्ञानिक जानकारीक भरोसे करू तेलसँ आँखि खराप होएबाक बात कहैत अछि, जाहिसँ लोक उनटे करू तेल सेहो दऽ दैत अछि। एक आँखि नष्ट होइत अछि, मुदा दोसर बचि जाइत अछि। कथा हिंसक अन्धविश्वास आ आधा-अधूर बुझाइकेँ विचित्र व्यंग्य बनबैत अछि।

कथा ७० · साइंस — ३. भौतिकी

टिकट बिना यात्रा करैत पकड़ाएल एक भौतिकी स्नातक भागैत काल खेतमे एक चप्पल छोड़ि दैत छथि, मुदा दोसर हाथमे लऽ चलि जाइत छथि। बादमे पहिल चप्पलो लऽ अनैत छथि। गामक लोक अनुमान करैत छथि जे दुनू चप्पल खेतमे छोड़ि देलासँ दोसर चप्पल सेहो कियो उठा लैत। एहि तर्कसँ गाममे विज्ञान पढ़बाक नव उत्साह जागैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा १ · पाँजिक चोर

पुरान वंश-पाँजिक संरक्षण करैत निरंजनकेँ उदयनपुर शाखामे जानि-बुझि खुरचल एक प्रविष्टि भेटैत अछि। शिवकान्तक असहज चुप्पी, हरिनारायणक चिट्ठी आ सुभद्राक मौखिक स्मृतिसँ महेसर नामक एक विस्मृत मनुष्यक संकेत भेटैत अछि। सुभद्रा एक फाटल कागज सेहो अनैत छथि, मुदा ओकरा मूल पाँजिक प्रमाणित अंश मानबाक पर्याप्त आधार नहि अछि। निरंजन सम्भावना आ प्रमाणक अन्तर बचा कऽ मेटाओल प्रविष्टिक तथ्य दर्ज करैत अछि, निश्चित नाँव नहि गढ़ैत अछि। कथामे वंशक इतिहाससँ मनुष्यकेँ मेटेबाक हिंसा उद्घाटित होइत अछि। अन्तमे स्पष्ट होइत अछि जे चोर केवल एक व्यक्ति नहि; सामूहिक चुप्पी सेहो स्मृतिक चोरी करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २ · फेर सँ देखल घर

बड़की काकीक मृत्युक बाद माधवी तीस बरखक अन्तरालपर अपन गामक घर अबैत अछि। बदलल आँगन, बन्द कोठली आ मायक दीपसँ पड़ल धुआँक दाग ओकरा बचपन दिस घुरबैत अछि। पढ़ाइ लेल घर छोड़बाक पुरान संघर्षमे ओ मायकेँ निष्क्रिय मानैत रहल छल, मुदा स्मृति आ परिजनक छोट-छोट बातसँ मायक चुप्पीक भीतर सम्भावित सहयोगक आभास होइत अछि। भाइ अशोक घरक भविष्य आ सम्भावित बिक्रीक प्रश्न उठबैत अछि। माधवी भोरमे घरकेँ बाहरसँ देखैत मायक वाक्यक नब अर्थ पबैत अछि—घरक भीतर रहि कऽ सभक ठाम बुझल नहि जाइत। ओ निश्चित फैसला बिना घुरैत अछि, मुदा माय आ घरकेँ देखबाक ओकर दृष्टि बदलि चुकल रहैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३ · मुक्त राज्यमे

ई कथा परदेसमे श्रम करैत अनेक लोकक जीवनकेँ अलग-अलग नगरक दृश्यसँ जोड़ैत अछि। दिल्लीक अस्पतालमे रातिक रखबारी करैत बिनोदकेँ जाति-गोत्रक पुरान परिचयसँ मुक्ति भेटैत अछि, मुदा प्रवासी जीवनक थकान आ अस्थायित्व ओकरा जकड़ने रहैत अछि। आन श्रमिकसभक कोठली, वेतन, घर पठाओल रुपैया आ घुरबाक अधूर योजना प्रवासक वास्तविक मूल्य देखबैत अछि। कोलकातामे किरण बेटी सोनमक आगाँक पढ़ाइक व्यवस्था सोचैत अछि। कारखानामे काज करैत नरेश घर जेबाक टिकट, अग्रिम ऋण आ कामक दबावक बीच फँसल रहैत अछि। कोमलक लाल फ्रॉक पहिरि स्टेशनपर प्रतीक्षा करबाक सन्देश ओकर अन्तर्द्वन्द्व तीव्र करैत अछि। कथाक ‘मुक्त राज्य’ आर्थिक निर्भरता आ अधूरी स्वतन्त्रताक विरोधाभास बनि उठैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४ · जल समाधि

मालतीक पति सुबोध गायब छथि; नदीक कात साइकिल भेटल, मुदा देह नहि। परिवार हुनका डूमल मानि लेबय चाहैत अछि, जखन कि मालती अनिश्चित सत्यक संग जीबैत अछि। पुरान पारिवारिक पोथीमे चन्द्रकलाक नामक आगाँ ‘जल मानल’ लिखल भेटैत अछि। खोजबीनमे संकेत भेटैत अछि जे चन्द्रकला नदीमे डूमल नहि, सम्भवतः घरसँ बाहर पठाओल गेलीह। सासुक अनुभवसँ मालती बुझैत अछि जे स्त्रीक अनुपस्थितिकेँ जल-समाधिक नाम दऽ परिवार अपन प्रतिष्ठा बचबैत रहल अछि। नदीक स्वर आ भयक बीच मालती घाटपर जाइत अछि, मुदा डूमबाक बदला बस पकड़ि मायघर चलि जाइत अछि। ओ अपन जीवनक अर्थ दोसरक लिखल निर्णयक हाथ नहि छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ५ · जातिक बाहर

एक स्त्रीक परिवारक नाँव प्रतिष्ठित वंश-पाँजिमे नहि अछि, मुदा एक दिन खुरचल प्रविष्टिक खोज ओकर आँगन धरि पहुँचैत अछि। नीलाभक जाँचमे धरनी नामक पूर्वज स्त्रीक संकेत भेटैत अछि, जिनकर जीवनकेँ ऊँच जातिक घरसँ जुड़ल एक विवादित सम्बन्ध धरि सीमित कऽ देल गेल छल। कथावाचिका धरनीक श्रम, सूप बुनबाक कला, बाढ़िमे बालक बचेनाइ आ गीत गेनाइक स्मृति एकत्र करैत अछि। ओ अनुमानकेँ प्रमाण नहि बनबैत अछि आ अपन परिवारक मौखिक परम्पराक सीमा सेहो लिखैत अछि। अन्तमे ‘लोक’ नामक बहीमे ओ वंशक संकीर्ण घेरासँ बाहर रहल लोकसभक नाँव दर्ज करैत अछि। धरनी आब केवल खुरचल प्रविष्टि नहि, पूरा जीवनक स्मृति बनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ६ · ओछाइनक हिसाब

सोनमती बियाहक पहिल रातिएँ बुझि जाइत अछि जे घरमे ओकरा लेल खाटपर सेहो पूरा ठाम नहि। पति मोहनक ‘थोड़ेक सरकू’ सँ शुरू भेल अनुभव समयक संग स्त्रीक श्रम, निजी अधिकार आ परिजनक अपेक्षाक हिसाब बनि जाइत अछि। सोनमती अपन बहीमे खाटक छोट-पैघ बँटवारा लिखैत अछि आ नव पुतोहू रीनाक ठाम बचबैत अपन पुरान अनुभवक पुनरावृत्ति रोकैत अछि। बाबूजीकेँ बीमारीमे अपन खाट स्वेच्छासँ देबाक बाद ओ छीना गेल ठाम आ प्रेमसँ देल ठामक अन्तर बुझैत अछि। मोहनक मृत्युक बाद पूरा खाट भेटितो खालीपन रहैत अछि। अन्तमे नातिन अनन्या लेल ओ अपन इच्छासँ सरकैत अछि; एहि बेर हिसाबमे त्याग संग अपन निर्णयक स्वतन्त्रता लिखल जाइत अछि।

कथा ७ · दोसर बियाह

विधवा पद्माक दोसर बियाहक चर्चा परिवार आ गाममे चलैत अछि, मुदा पद्माक अपन आवाज सभसँ पाछाँ सुनल जाइत अछि। बेटी तृषाक पढ़ाइ, पहिल ससुरारक सम्पत्ति, सासु भवानी देवीक देखभाल आ प्रस्तावित वर चन्द्रकान्तक घरक अपेक्षा अलग-अलग दबाव बनबैत अछि। एहि बीच पद्मा अपन सिलाइक काज बढ़बैत अछि आ दू युवतीकेँ रोजगार दैत अछि। औपचारिक बैठकमे सभ गोटे ओकर भविष्यक अर्थ अपन हिसाबसँ खोलैत छथि। पद्मा सिलाइकक बही, बेटीकेँ पढ़ेबाक पर्ची आ सासुक दवाईक हिसाब सोझाँ राखि अपन वास्तविक जीवनक जिम्मेदारी देखबैत अछि। चन्द्रकान्त पहिल बेर सीधा पूछैत छथि जे ओ की चाहैत अछि। पद्मा बियाहक सहमति दैत अछि, मुदा घर छोड़बाक शर्त अस्वीकार करैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ८ · गजलक बहर

नसीमा बीक जीवन उस्ताद करीम बख्शक शिक्षासँ शुरू भऽ महफिल, रिकॉर्डिंग, व्यावसायिक दबाव आ बदलैत पीढ़ीक बीच पसारैत अछि। गजलक बहर आ रदीफ सिखैत-सिखैत ओ बुझैत छथि जे एकहि पदक अर्थ जीवनक अलग क्षणमे बदलि जाइत अछि। गायिकाक नाँव छोट करबाक, शेर काटबाक आ कलाकारक इतिहासक सीमित प्रस्तुति करबाक प्रयासक ओ प्रतिरोध करैत छथि। बेटी सबाक सामाजिक संकोच आ शिष्यसभक नब आकांक्षा हुनका जीवनमे दोसर संघर्ष आनैत अछि। वृद्धावस्थाक छोट महफिलमे रुखसाना गजल उठबैत छथि आ नसीमा अगिला पीढ़ीकेँ नियम आ बन्धनक अन्तर बुझबैत छथि। कथा स्वरक उत्तराधिकारकेँ स्थिर पुनरावृत्ति नहि, बदलैत अनुभवक जीवित क्रम रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ९ · पाहुनक कोठली

बाबूक मृत्यु पर विदेशसँ घुरल अनामिका अपन पुरान घरक पाहुनक कोठलीमे माय संग राति बितबैत अछि। ओ बरखो सँ एहि कोठलीकेँ अपन घरसँ अलग कऽ देबाक संकेत मानैत रहल छलीह। बातचीतमे स्पष्ट होइत अछि जे पढ़ाइ लेल बाहर जेबाक संघर्षमे मायक गुप्त सहयोग निर्णायक छल आ पाहुनक कोठली ओकर विश्राम लेल चुनल गेल छल। एके घटनाक माय आ बेटी दू भिन्न अर्थ बना लेने छलीह। अनामिका अपन बेटी ईराकेँ सेहो बिना पूछने अलग कोठलीमे राखबाक आदतपर सोचैत अछि। पीढ़ीक बीच गलतफहमी कम होइत अछि, कारण ओ निर्णय सुनयबाक बदला इच्छा पूछबाक महत्त्व बुझैत अछि। कोठली बदलैत नहि; ओकरा देखबाक दृष्टि बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा १० · कुहेस

लम्बा प्रवासक बाद बिनोद दिल्लीक नौकरी छोड़ि गाम घुरैत अछि। कुहेससँ ढाकल बाट, बदलल पोखरि आ नव मकान ओकर स्मृति आ वर्तमानक अन्तर खोलैत अछि। ग्राम-अभिलेख केन्द्रमे निरंजनसँ भेंट होइत अछि, जतय मेटाओल नाँव, अधूर प्रमाण आ लोकक कथा पर बातचीत होइत अछि। बिनोद बुझैत अछि जे पूरा परिचय-पत्रो मनुष्यक पूरा जीवन नहि कहि सकैत। घरमे रेणु ओकर प्रवासक अनिश्चित समाप्ति पर प्रश्न करैत अछि। बिनोद गामक माटिसँ एक गमला भरैत अछि, अस्पतालक पुरान नाम-पट्टी खिड़कीपर राखैत अछि, मुदा रहबाक कोनो पैघ प्रतिज्ञा नहि करैत। कुहेस पूरा नहि हटैत; तथापि घर देखाइत अछि आ ओ दिन गनबाक बदला प्रतिदिनक जीवनक सामना करबाक बाट चुनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ११ · न्यायक सीमा

नव्य-न्यायक अध्येता रत्नेश्वर झाक जीवन नाति अनयक सड़क-दुर्घटनामे मृत्युसँ बदलि जाइत अछि। दुर्घटनाक कारण जाँचैत ओ प्रत्यक्ष तथ्य आ अनुमानकेँ अलग राखबाक आग्रह करैत छथि, मुदा बेटी मृणालक शोकक सोझाँ हुनकर दार्शनिक भाषाक सीमा खुलैत अछि। कागज, जाँच आ विधिक प्रक्रियामे हुनकर सूक्ष्मता उपयोगी सिद्ध होइत अछि, किन्तु कोनो तर्क मृत बालकक अनुपस्थिति नहि मेटा सकैत। बेटी हुनकासँ सिद्धान्त नहि, अपन कात बैसब चाहैत छथि। विश्वविद्यालय घुरलापर रत्नेश्वर ज्ञानक सीमा पर पहिने जकाँ पढ़बैत छथि, मुदा प्रश्नक अधूरापन स्वीकारैत छथि। पाण्डुलिपिक खाली टिप्पणी आब हुनका दोष नहि, मानवीय अनुभवक मर्यादाक चिह्न बुझाइत अछि।

कथा १२ · आखर

सरस्वती देवी अपन नातिन ईरा लेल पुरान मैथिलाक्षरमे चिट्ठी लिखैत छथि, जखन कि ईरा ओ लिपि पढ़ि नहि सकैत अछि। चिट्ठीमे मातृभाषा, लिपि, पीढ़ीक दूरी, बोलबाक साहस आ स्मृतिक अर्थपर नानीक आत्मीय विचार अछि। ओ भाषा बचयबाक आज्ञा नहि दैत छथि; केवल एकटा आखर सीखबाक समय माँगैत छथि। हुनकर मृत्युक बाद ईराकेँ कापीक बीच चिट्ठी भेटैत अछि। काकीसँ पढ़बैत समय ओ यन्त्रमे आवाज कैद करबाक बदला ध्यानसँ सुनैत अछि। अन्तक खाली पाँतिमे ईरा देवनागरीमे लिखैत अछि जे ओ अगिला दिन पहिल आखर सीखत। पुरान लिपि आ नब लिखावट एक पन्नापर आबी पीढ़ीसभक बीच सम्भावित संवादक रूप लेइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १३ · पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)

पंजीकार हरिनारायणक पौत्र ईशानकेँ जमीनक विवादमे पुरान वंश-पाँजिक एक पाँतिक सत्यता जाँचबाक आग्रह होइत अछि। प्रविष्टिमे विमलकेँ दुर्गानन्द आ कमलाक पुत्र कहल गेल अछि। परिवारक आवेदन, पंचक कागज आ साक्ष्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे विमल जन्मसँ कमलाक बहिनक पुत्र छल, मुदा दुर्गानन्द आ कमला ओकरा अपन पुत्र जकाँ पोसने छलाह। पारिवारिक अपनत्व, उत्तराधिकार आ बादमे जोड़ल अभिलेखक बीच जटिल सम्बन्ध बनल अछि। ईशान अपन दादाक लिखल पाँति मेटबैत नहि, बल्कि ओकर समय, आशय आ सीमाकेँ स्पष्ट करैत नव टिप्पणी जोड़ैत अछि। जमीनक अधिकारक निर्णय अलग कागजपर छोड़ल जाइत अछि। एहि संशोधनसँ पाँजिमे दादाक त्रुटि आ पोताक उत्तरदायित्व दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १४ · जुड़वा

मायक शल्य-चिकित्साक समय अमितेश अपन रक्त-समूह आ माता-पिताक समूहमे असामान्य अन्तर देखैत अछि। चिकित्सक जल्दबाजीमे निष्कर्ष नहि निकालबाक चेतावनी दैत छथि। पुरान अस्पतालक अभिलेख खोजैत अमितेशक भेंट एकहि जन्मतिथिवला राघव मण्डलसँ होइत अछि; दुनू परिवारक प्रमाणसभ जन्मक समय शिशु बदलि जेबाक सम्भावना मजबूत करैत अछि। सत्यक असर केवल जैविक सम्बन्धपर नहि, तीन दशकक पालन-पोषण, भाषा, पेशा आ स्नेहपर पड़ैत अछि। दुनू परिवार कोनो एक झटकामे अपन जीवन न बदलैत अछि, न पहिल अभिभावककेँ त्यागैत अछि। अमितेश आ राघव बुझैत छथि जे जन्मक आकस्मिक चूकसँ हुनकर बनल जीवन असत्य नहि होइत। पारिवारिक सम्बन्ध रक्तक प्रमाणसँ व्यापक बनि उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा १५ · गोतिया

दोहामे पैघ भेल अयनकेँ विद्यालयक ‘स्थायी पता’क खानामे लिखल मिथिलाक गाम एक विचित्र पहिचान लगैत अछि। दादा उमाकान्तक मृत्युक बाद पुरखा-घरक नामान्तरण लेल पिता प्रणवकेँ गोतिया लोकक गवाही आ सरकारी वंशावली चाही। भूमि-विवाद, रिश्तेदारक अनिच्छा, पितृपक्ष आ मातृपक्षक अलग स्मृति, सरकारी प्रविष्टिक उलटल अंक—सभ मिलि परिवारक इतिहासकेँ एकरेखीय बनबाक विरोध करैत अछि। प्रक्रिया पूरा होइत अयन बुझैत अछि जे प्रमाणपत्रक नाँव आ अपनत्वक सम्बन्ध समान वस्तु नहि। गामक सुभद्रा काकी, विवाद करयवला जगदीश काका आ अपन माय सभ ओकर परिचयमे छथि। दोहा घुरैत ओ स्थायी पताक अर्थ फेर सोचैत अछि—घर ओतहु अछि जतय लोक फॉर्म बिना ओकरा मोन रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा १६ · छिपल शाखा

नव विवाहिता कीर्तिकेँ ससुरारक सीढ़ीक नीचाँ बन्द पेटीमे पुरान चिट्ठी आ फोटो भेटैत अछि। पत्रसभमे मंजरी, सुधा आ दीपकक उल्लेख एक एहन पारिवारिक शाखा दिस संकेत करैत अछि जकर चर्चा घरमे दबा देल गेल छल। कीर्ति आ परिवारक आन सदस्य कागज क्रमसँ पढ़ैत छथि; हर अधूर पाँतिक झटपट अर्थ निकालबाक बदला सम्बन्धित लोकक निजताक सम्मान करैत छथि। दीपक धरि पहुँचनाइ सम्भव भेलापर पत्र लिखि सम्पर्कक प्रस्ताव राखल जाइत अछि, उत्तर देबाक स्वतन्त्रता हुनकेँ छोड़ल जाइत अछि। अन्ततः विस्मृत सम्बन्धक नब बातचीत शुरू होइत अछि, मुदा पुरान दूरी एकाएक समाप्त नहि होइत। चिट्ठीसभ सुरक्षित रखि बीचमे खाली पन्ना जोड़ल जाइत अछि, ताकि नव पीढ़ी अपन कथा स्वयं लिखि सकय।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा १७ · दत्तक

शम्भुनाथ आ रमानाथ दुइ भाइक परिवारमे अभिनवक पालन-पोषण आ जन्मसम्बन्ध सम्पत्तिक विवादक कारण बनैत अछि। अपन सन्तान नहि बचलापर शम्भुनाथ-गौरी अभिनवकेँ पुत्रवत् पोसने छलाह; जन्मदाता रमानाथक पुत्र अरविन्दक मृत्युपछि पुरान निर्णय पर नव आक्रोश उठैत अछि। अदालतमे विद्यालय, विवाह, अस्पताल आ पाँजिक अभिलेख परिवारक दीर्घ स्वीकृतिक साक्षी बनैत अछि, मुदा वंशक सामाजिक मान्यता आ जमीनक कानूनी स्वामित्व अलग प्रश्न सिद्ध होइत अछि। मध्यस्थता आ बातचीतक बाद विवाद घटैत अछि। अभिनव अपन दू पिता आ दू मायक बीच ककरो अस्वीकार नहि करैत अछि। अन्तमे ओकर नामक संग दुनू सम्बन्ध दर्ज होइत अछि, आ साझा स्मृति सम्पत्तिक बँटवारासँ पैघ ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १८ · जाति-पार

चन्दन झा आ नीलिमा पासवान अपन बेटी ईराक नाँवसँ जातिसूचक उपनाम हटबैत छथि। एहि निर्णयसँ दादा भवेश्वरक वंश-बोध आ नीलिमाक मायक परिवारक अदृश्य इतिहासक प्रश्न उठैत अछि। नीलिमा बेटी लेल दुनू परिवारक लोक, श्रम, गीत, फोटो आ ज्ञात-अज्ञात तिथि सँ ‘हमर लोक’ बही तैयार करैत अछि। पुरान पाँजिमे बेटी आ मातृवंशक सीमित स्थान देखलासँ सम्बन्धक भीतरक असमानता खुलैत अछि। ईरा अपन नानी-दादी आ दादासभसँ प्रश्न करैत, मिलल साक्ष्यक सीमा बुझैत आ नव परिवारक कल्पना करैत पैघ होइत अछि। विद्यालयक काजमे ओ अपन परिचय ‘ईरा नीलिमा-चन्दन’ लिखैत अछि, संगहि भविष्यक सम्बन्ध लेल खाली ठाम छोड़ैत अछि। वंश अपनत्वक खुलल क्रम बनैत अछि, जन्मसँ बनल एकटा बन्द घेरा नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा १९ · डायरी

पंजीकार देवकीनन्दनक मृत्युक बाद पोती मृणालिनीकेँ हुनकर ‘घरक हिसाब’ नामक बही भेटैत अछि, जे असलमे निजी डायरी अछि। निष्पक्ष पंजीकारक प्रतिष्ठाक पाछाँ भगवती देवीक बासडीह-अधिकार विवाद, धानक लेन-देन आ दादाक अपन संशयक जटिल इतिहास खुलैत अछि। मृणालिनी निजी लिखावटकेँ अन्तिम सत्य मानबाक बदला अदालतक दस्तावेज, आन हिसाब आ मौखिक साक्ष्यक संग मिलबैत छथि। किछु बात प्रमाणित होइत अछि, किछु सम्भावित रहि जाइत अछि। सार्वजनिक पुस्तकालयमे डायरीक प्रति सन्दर्भ सहित राखल जाइत अछि, संगहि भगवतीक संघर्षक स्वतंत्र परिचय देल जाइत अछि। कथा देखबैत अछि जे अभिलेख बनबयवला हाथो अपन समय, पक्षधरता आ सीमासँ मुक्त नहि होइत।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २० · नकली वंश

बेटा नवलक बियाहक लेल रामबिलास मण्डलसँ सात पीढ़ीक वंशावली माँगल जाइत अछि। पुरखा लोकक पूरा नाँव नहि जनलाक संकोचमे ओ कम्प्यूटरसँ बनल चमकदार वंश-वृक्ष बनबबैत छथि, जाहिमे अप्रमाणित जानकीनाथकेँ पुरखा मानि लेल जाइत अछि। एहि कागजसँ विवाहक प्रतिष्ठाक अतिरिक्त जमीनपर गोतियाक दावा सेहो उठि जाइत अछि। नवल झूठक आधारपर बियाह करबाक विरोध करैत अछि, आ परिवार धीरे-धीरे त्रुटिक सार्वजनिक सुधार करैत अछि। जाँचसँ स्पष्ट होइत अछि जे जानकीनाथक नाम एक भू-चिह्न छल, प्रमाणित पूर्वज नहि। अन्तमे नवलक विवाह ज्ञात माता-पिता आ पुरखा लोकक साधारण परिचयसँ होइत अछि। रामबिलास अज्ञात नाँवक खाली ठामकेँ लाज नहि, सत्यक मर्यादा बुझय लगैत छथि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २१ · परदेशी जड़ि

टोरन्टोमे पिता शैलेशक मृत्युक बाद कनाडामे जन्मल अर्णव हुनकर गाम कुसुमपुरक खोजमे मिथिला अबैत अछि। संगमे पुरान चाभी, फोटो, अधूर पता आ पिताक मैथिली स्वरक छोट ध्वनि-स्मृति अछि। गामक कुन्ती देवीसँ ओकरा पिताक बालपनक एहन बात सुनबाक अवसर भेटैत अछि जे कोनो वंश-पाँजिमे दर्ज नहि। अर्णव बुझैत अछि जे पिताक जड़ि खोजनाइ आ अपन जीवनमे एहि जड़िक ठाम तय करनाइ अलग बात अछि। ओकर माय मीरा अपन वैवाहिक जीवनक भाषाई आदान-प्रदानसँ एहि भेदकेँ स्पष्ट करैत छथि। अर्णव अपन बेटी लीनाकेँ कुसुमपुरकेँ परिवारक एक ठाम रूपमे चिन्हयबाक स्वतन्त्रता दैत अछि। अपूर्ण प्रमाणक बीचो सम्बन्धक अनुभूति बचल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २२ · पुरोहिताई

गामक मधुकान्तेश्वर स्थानक पुरोहिताई लेल रुद्रनाथ झाक मृत्यु-पछाति दुनू पुत्र शिवनाथ आ विद्यानाथक नाँव आबैत अछि। पैघ भाइ शिवनाथ बरखोसँ नित्य पूजा सम्हारैत छथि, जखन कि छोट भाइक शास्त्रीय विद्या बेसी अछि, मुदा गाममे नियमित रहबाक सामर्थ्य सीमित। समिति उत्तराधिकारी चुनबाक प्रक्रिया शुरू करैत अछि आ परिवारक पुरान त्याग आ शिकायत बाहर अबैत अछि। पिताक टिप्पणीमे पुरोहिताईकेँ वंशगत पद नहि, सेवा आ पहरुआई कहल गेल भेटैत अछि। एक नामक जीतक बदला पूजा, व्यवस्था, प्रशिक्षण आ देखभालक काज साझा करबाक बाट निकलैत अछि। भाइसभक सभ मतभेद नहि मेटैत, मुदा मन्दिरक निरन्तर दीप ओकरा सभकेँ सामूहिक जिम्मेदारीक महत्त्व बुझबैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २३ · रागिनी-वंश

वृद्ध गायक माधवेश्वर झाक स्वर-संसारक उत्तराधिकार पर शिष्या किरण आ शिष्य आदित्यक अलग दृष्टि अछि। किरण मौखिक परम्परा आ गायनक जीवित लय सम्हारैत छथि, आदित्य ध्वनि-प्रति, स्वर-लिपि आ स्रोतक इतिहास सुरक्षित करैत अछि। गुरु एक अज्ञात गायिकाक पुरान रील सुनबैत कहलनि जे जकर नाँव निश्चित नहि, ओकरा अनुमानसँ भरब उचित नहि। हुनकर मृत्यु-पछाति दुनू शिष्य संगीतक संरक्षण आ प्रस्तुति बीच सहयोगक नब ढंग खोजैत छथि। नव किशोरी साक्षीक गायनमे नानी चन्द्रकलाक स्वर भेटैत अछि, जकर नाम दर्ज करबाक आवश्यकता ओ सभ बुझैत छथि। कथा रागिनी-वंशकेँ केवल गुरु-शिष्यक सीधा पाँति नहि, अनेक लोकक स्वर, श्रम, स्मृति आ परिवर्तनसँ बनल खुलल जाल रूपमे देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २४ · मातृवंश

चारि पीढ़ीसँ मायसँ बेटी लग चलैत पुरखा-घरक चाभी नानी उर्मिला देवी अपन नातिन ईशानीकेँ देबय चाहैत छथि। ईशानी स्त्रीसभक नाम बचेलिहार एहि परम्पराक महत्त्व बुझैत छथि, मुदा जेठ बेटीपर घर सम्हारबाक अनिवार्य भार थोपबाक विरोध करैत छथि। पुरान बहीमे मातृवंशक उपलब्धिक संग पढ़ाइ, प्रशिक्षण आ स्वतन्त्र जीवनक छूटि गेल अवसर सेहो दर्ज अछि। रिद्धि घरकेँ शिल्पक सामूहिक उपयोग लेल खोलबाक विचार अनैत अछि; परिवारक पुरुषसभ अपन हिस्साक जिम्मेदारीक प्रश्नक सामना करैत छथि। अन्ततः चाभीक एकाधिकारक स्थानपर साझा पहुँच आ सहमतिक व्यवस्था बनैत अछि। ईशानी घर छोड़ैत नकल चाभी स्वीकार करैत छथि, मुदा ओ आब आदेश नहि, घुरि सकबाक स्वतन्त्र सम्भावना होइत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २५ · प्रमाण

सरस्वती देवीक चानीक हँसुली हराएलापर गामक लोक गरीब रामजीतकेँ तुरन्त चोर मानि लैत अछि। मुखिया उमा देवी आरोपक आधार जाँचय लगैत छथि आ प्रत्यक्ष देखल, सुनल बात, अनुमान आ पहिनेसँ बनल धारणा अलग करबैत छथि। हँसुलीक वास्तविक हानि स्पष्ट अछि, मुदा ताला, चाभी आ उपस्थित लोकक बयानसँ रामजीतक दोष सिद्ध नहि होइत। बादमे हँसुली देवीस्थानक दीपघरमे भेटैत अछि, किन्तु ओकरा ओतय के रखलक, ई अज्ञात रहि जाइत अछि। सरस्वती देवी रामजीतक मायक घर जाइत छथि; दू परिवारक बीच संवादक छोट अवसर बनैत अछि। उमा देवी अभिलेखमे घटना आ बचल अनिश्चितता दुनू दर्ज करैत छथि। कथा प्रमाणक मर्यादा आ सामूहिक पूर्वग्रहक अन्याय उद्घाटित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा २६ · माया

हरिनारायण झार्कें एगारह बरख पुरान एक निवेश-धोखाधड़ीक आंशिक क्षतिपूर्ति भेटैत अछि। नातिन अन्वीकेँ ओ अपन पुरान अनुभव सुनबैत छथि—चमकदार कार्यालय, बैंकमे शुरुआती लाभ, परिचित लोकक भरोसा आ नव निवेशक जोड़बाक लोभ मिलि हुनका भ्रममे फँसा देने छल। पत्नी सुशीलाक ‘रुपैया कोन स्रोतसँ आबैत अछि’ प्रश्न ओ पहिने अनसुना केने छलाह। कम्पनी बन्द भेलापर परिवारक आर्थिक आ सामाजिक क्षति भेल, मुदा शिकायत लिखैत हरिनारायण आरोपीसभक भूमिकाक विषयमे अज्ञात बात गढ़बाक अस्वीकार करैत छथि। अन्वीकेँ ओ बुझबैत छथि जे देखाइत वस्तु अपन जगह वास्तविक होइतो ओकर गलत अर्थ माया बनि सकैत अछि। दीपक असली लौ आ काँचक प्रतिबिम्ब एहि भेदक मूर्त उदाहरण बनैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २७ · रस

निर्देशक उदयकान्त आ अभिनेत्री माधवी बाढ़िमे लापता बेटीकेँ खोजैत मायक नाटकक अभ्यास करैत छथि। उदयकान्त शास्त्रीय करुण रसक अवयवसँ दृश्य बुझबैत छथि, मुदा माधवी मानैत छथि जे पात्रक अनुभूति मात्र पूर्वनिर्धारित नियममे नहि समाइत। अभ्यासक समय निजी स्मृति, अभिनयक शिल्प आ दर्शकक अलग अनुभवक प्रश्न उठैत अछि। एक वृद्ध दर्शिका दृश्य देखिकऽ केवल करुणा नहि, खोज रोकि देनिहार व्यवस्थापर क्रोध अनुभव करैत छथि। एहि प्रतिक्रियासँ दुनू कलाकार बुझैत छथि जे एके प्रस्तुतिक रस सभक भीतर समान नहि होइत। अन्तमे श्यामपटपर ‘करुण’क संग ‘ककर भीतर?’ आ ‘ककर संग?’ लिखल जाइत अछि। कला आ अनुभवक बहस खुलल रहैत अछि, मुदा दुनू अपन दृष्टिक सीमा स्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २८ · नियति

शशिभूषण झा जुएमे हारल रुपैयाक दोष बेराबेरी नियतिपर दैत छथि। पत्नी ललिता घरेलू आर्थिक हानिक बही बनबैत छथि आ हुनकर चयनक वास्तविक असर दर्ज करैत छथि। कर्ज, झूठ, क्षणिक सुधार आ फेर दाँव लगेनाइ सँ परिवारक विश्वास घायल होइत अछि। मायक दुर्घटना आ वर्षाक क्षति जकाँ घटना शशिभूषणकेँ सोचबय बाध्य करैत अछि जे सभ दुःख अपन चयनसँ नहि होइत, मुदा सभक दोष भाग्यपर देबो उचित नहि। धीरे-धीरे ओ कर्ज चुकबैत आ अपन दाँवक जिम्मेदारी स्वीकारैत छथि। तैओ बेटी रागिनीक आहत विश्वास आ बेटा नन्दनक खर्च करबाक भय तुरन्त नहि मेटैत। अन्तमे ओ नियति आ अपन निर्णयक बीच अन्तर लिखैत छथि, पूर्ण मुक्ति घोषित नहि करैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा २९ · शब्द-ब्रह्म

वृद्ध कवि विनयकान्त मिश्र अपन छोट भाइक मृत्यु-पछाति शब्दक अपूर्णतासँ व्याकुल भऽ लिखब छोड़ि दैत छथि। ‘सरल मनुष्य’, ‘पानि’ वा ‘नीक’ जकाँ शब्द हुनका मनुष्य आ अनुभवक पूरा सत्य कहबाक लेल अपर्याप्त लगैत अछि। पत्नी जानकीक दैनन्दिन बातचीत—दालि जरब, कप चिन्हब, बेटीकेँ स्वास्थ्यक खबरि देब—ओकरा देखबैत अछि जे भाषा एक बेरमे सभ नहि कहैत; लोक प्रश्न करैत आ अर्थ आगाँ बढ़बैत अछि। पुरान काव्य-पाठ सुनि ओ अपन पूर्व विश्वासक पुनः परीक्षा करैत छथि। अन्ततः नव लिखावटमे खाली ठाम स्वीकार करैत छथि आ बुझैत छथि जे सीमित होयब व्यर्थ होयब नहि। फेर लिखबाक सम्भावना खुलैत अछि, यद्यपि कवि अपन संशयक अन्तिम समाधान नहि पबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३० · अनित्य

सुधा देवीक पुरान घर असुरक्षित भेलाक कारण तोड़ि नव बनाओल जा रहल अछि। हथौड़ाक प्रत्येक चोट हुनका विवाह, सन्तान, मृत्यु आ दैनन्दिन श्रमक स्मृति दिस घुरबैत अछि। बेटा मधुकान्त आ नातिन मृणाल पुरान घरक चिन्हसभ बचबैत छथि, मुदा सुधा देवी सभ ईंट वा तुलसीक पुरान चबुतरा बचेनाइ आवश्यक नहि मानैत छथि। जे वस्तु उपयोगी अछि ओकरा पुनः लगाओल जाइत अछि; जे टूटि गेल, ओकरा मलबामे छोड़ल जाइत अछि। नव घरमे रहैत सुधा देवी बुझैत छथि जे परिवर्तनक दुःख वास्तविक अछि, मुदा दुःखक कारण वर्तमान जीवन रोकल नहि जा सकैत। नातिनकेँ ओ स्मृति बनबयसँ पहिने जीबाक बात कहैत छथि। नव आँगनमे सरकैत उजास अनित्यताक शान्त अनुभव बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३१ · आत्म-अनात्म

अभिनेता अनिरुद्ध ‘दामोदर’ नामक वृद्ध पात्रक अभिनय करैत-करैत ओकर चाल, साँस आ चुप्पी अपन घर धरि लऽ अबैत छथि। पत्नी आर्या देखैत छथि जे भूमिकाक अभ्यास हुनकर अपन व्यवहार बदलि रहल अछि। निर्देशक शेखर आ वरिष्ठ अभिनेत्री हुनका अभिनयक संसारमे प्रवेशक संग ओहिसँ बाहर निकलबाक उपाय सेहो सिखबैत छथि। अनिरुद्ध बुझैत छथि जे निजी स्मृति कलाकारक काजमे प्रवेश करैत अछि, मुदा पात्र आ व्यक्ति एक नहि होइत। नाटक समाप्त भेलाक बादो पात्रक किछु बानि स्मृतिमे बचल रहैत अछि; ओ एकरा भयक कारण नहि मानैत छथि। बेटी ताराक प्रश्नपर ओ समयक संग बदलैत ‘हम’क अर्थ सोचैत छथि। दीपक हिलैत छाया आत्मक स्थिर पहिचानक दावापर प्रश्न बनि रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३२ · कार्य-कारण

बरखा आ नालाक कटावक बीच पिप्राक पुरान पुलिया धँसि जाइत अछि। मालवाहक गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त होइत अछि, लोक घायल होइत छथि आ रामसखी देवीक मृत्यु भऽ जाइत अछि। आरम्भमे लोक चालकक चूक, बरखा, कर्मफल वा प्रशासनकेँ अलग-अलग जिम्मेवार मानैत छथि। तकनीकी जाँच कमजोर आधार, माटिक क्षरण, पुरान दरार आ समयपर निरीक्षण नहि होयबाक सम्मिलित कारण देखबैत अछि; किछु आरोपक पुष्टि नहि होइत। पंचायत घटना, हानि आ निष्कर्षकेँ अलग-अलग दर्ज करैत अछि आ नब पुलिया बनबैत निरीक्षणक व्यवस्था करैत अछि। रामसखी देवीकेँ केवल दुर्घटनाक आँकड़ा बनयबाक विरोध सेहो उठैत अछि। कथा बतबैत अछि जे दुःखक पूरा अर्थ नहि भेटलासँ कारणक खोज व्यर्थ नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३३ · मौन

हरिनाथ झा अधिक सुनबाक उद्देश्यसँ तीस दिनक मौन-व्रत आरम्भ करैत छथि। शिष्य सदानन्द हुनकर चुप्पीकेँ आध्यात्मिक संकेत मानि लोकसभक सामने अपन अर्थ बताबय लगैत छथि। परिवारक आर्तनाद, पार्वतीक व्यावहारिक प्रश्न आ आश्रमक बढ़ैत प्रचारसँ स्पष्ट होइत अछि जे मौन कखनो-कखनो उत्तर नहि देबाक अन्याय बनि सकैत अछि। एक्कैसम दिन सदानन्द रामवती देवीक जमीनक विषयमे मौनक सहमतिक दावा करैत छथि। हरिनाथ स्पष्ट ‘नहि’ कहि व्रत तोड़ैत छथि। पछाति ओ आश्रमक प्रचार सुधारैत छथि आ अपन बहीमे लिखैत छथि जे चुप रहब आ ध्यानसँ सुनब एक बात नहि। उत्तर देबाक आवश्यक क्षणमे वाणी त्यागब आध्यात्मिकता नहि, जिम्मेदारीसँ पाछाँ हटब बनि सकैत अछि।

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३४ · स्वप्न

ईशानकेँ बाल्यकालसँ एक रहस्यमय पुलक स्वप्न बेराबेरी देखाइत अछि। पैघ भेलापर स्वप्नमे पुस्तकालय, अगिला दिनक तिथि आ परिचित लोकक विचित्र उपस्थितिसँ ओकरा स्वप्न आ जागरणक अन्तरपर संशय होइत अछि। ओ अपन अनुभवक बही बनबैत, स्मृतिक प्रमाण खोजैत आ नचिकेताक संग छोट परीक्षण करैत अछि। किछु स्वप्न वास्तविक घटनासँ मेल नहि खाइत, किछु स्मृति जागल अवस्थाक अनुभवसँ गुँथल रहैत अछि। ईशान न एहि सभकेँ अलौकिक सत्य घोषित करैत अछि, न समस्त अनुभवकेँ झूठ कहैत अछि। अन्तमे ओ प्रत्येक अनुभवपर पहिने सँ अन्तिम नाम रखबाक आदत छोड़ैत अछि। भोरक एक साधारण वाक्य लिखब ओकर लेल अनावश्यक निश्चिततासँ मुक्ति बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३५ · संशय

शैलेश मास्टर विद्यालयमे बच्चासभकेँ ग्रहणक वैज्ञानिक कारण समझबैत ‘प्रश्न करब असम्मान नहि’ सिखबैत छथि। मुदा अपन पिताक श्राद्धक समय मायक विश्वास, परम्परागत विधि आ अपन तर्कवादी दृष्टिक बीच कठिन स्थिति उत्पन्न होइत अछि। पुरोहित कृष्णमोहनसँ संवादमे ओ अप्रमाणित दावाक उच्चारण अस्वीकार करैत छथि, मुदा स्मरण लेल सामूहिक रूपेँ समय देबाक मानवीय अर्थकेँ नकारैत नहि। हुनका भय अछि जे परम्पराक नामपर खर्च, जाति आ दबावकेँ वैधता भेटि सकैत अछि; पुरोहित सेहो मानैत छथि जे विधिक अयोग्य भागक आलोचना आवश्यक अछि। शैलेश अन्तमे मृतकपर कर्मक प्रभाव विषयमे अज्ञान स्वीकारैत छथि, संगहि जीवित लोकक अनुभवक महत्त्व दर्ज करैत छथि। संशय अहंकार नहि, सावधानी बनि उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३६ · मोक्ष

वृद्ध दयाकान्तक जीवनक अन्तिम दिनसभमे बेटी शुभदा, बेटा नचिकेता आ शशांक, पोती ईरा आ आन परिजन हुनकर देखभाल करैत छथि। खिड़कीसँ देखाइत पोखरिक जल, पत्नी कमलाक स्मृति, अधूर चिट्ठी आ परिवारक पुरान मतभेद हुनकर जीवनक अनेक तह खोलैत अछि। अन्तिम संस्कारक स्थान आ रीति पर घरक लोक प्रश्न करैत छथि, मुदा दयाकान्त अपन मृत्युकेँ ककरो निश्चित अर्थमे बाँधि देबाक आग्रह नहि करैत छथि। हुनकर मृत्यु-पछाति घरक सभ मनमुटाव चमत्कारिक रूपेँ नहि मिटैत, तथापि संवाद फेर शुरू होइत अछि। शुभदा स्मृति आ वर्तमान जीवनक बीच अपन बाट खोजैत छथि। कथा मोक्षकेँ एक निश्चित दार्शनिक उत्तरमे नहि समेटैत; छोड़ब, स्वीकारब आ अधूर प्रश्नक संग जीबाक सम्भावना देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ३७ · छठ

पिप्राक छठ-घाट समितिमे चारि बाँस आ रस्सीसँ बाट अलग करबाक प्रस्तावपर विवाद उठैत अछि। समिति व्यवस्था आ सुरक्षा कहैत अछि, मुदा सुखदेव सहनी आ चम्पा लोकक पुरान जातिगत विभाजन आ घाटपर बराबर प्रवेशक प्रश्न उठबैत छथि। स्त्रीसभक आवाज आ श्रमक वास्तविक महत्त्व प्रारम्भिक बैठकमे कम सुनल जाइत अछि। अर्घ्यक भीड़मे एक वृद्धाकेँ सहारा देबाक लेल रस्सी खोलल जाइत अछि; बाँस सीमा बनेबाक बदला सहायता देबाक साधन बनैत अछि। माइक बन्द भेलापर नदी आ सामूहिक गीतक स्वर उभरैत अछि। पछाति समिति दान वा पदक आधारपर आरक्षित बाट नहि रखबाक, स्त्री-दलक भागीदारी आ श्रमिकक सुरक्षाक व्यवस्था करबाक निर्णय करैत अछि। घाटकेँ सभक बनयबाक काज घोषणासँ आगाँ बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३८ · राग

छठ बीतलापर पिप्राक घाटपर हरिहर महतो अपन पुरान गीतक स्वर उठबैत छथि। ध्वनि-संग्रह लेल आयल नैना हुनकर गायन अभिलिखित करय चाहैत छथि, मुदा हरिहर प्रश्न उठबैत छथि जे एक मिनटक ध्वनिमे बीस बरखक साधना कोना समायत। पुरान कैसेटमे हुनकर दिदिया कुसुमाक स्वर भेटैत अछि, जकर नाँव पहिल सूचीमे छूटल छल। नैना स्रोतक नाम, अनुमति आ अलग गायन-रूप सुरक्षित करबाक महत्त्व बुझैत छथि। अभ्यासमे ओ हरिहरक लय सीखैत अपन स्वरक नव मोड़ खोजैत छथि। पछाति मुन्नीक गायनमे सेहो ओ परिवर्तन प्रवेश करैत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे परम्परा बचेनाइ केवल ध्वनि हूबहू राखब नहि; जीवित अभ्यासमे अन्तर के चूक आ के नव बाट, से सुनि कऽ बुझबाक काज अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३९ · अदालत

पिप्राक घाटलग एक विवादित जमीनक पट्टी पर अधिकारक प्रश्न अदालत पहुँचैत अछि। कथाक रूप अलग-अलग गवाहीसँ बनल अछि। घाट-समितिक प्रतिनिधि सामूहिक उपयोगक इतिहास कहैत छथि, जमीनक दावेदार अपन सीमा आ अधिकारक कागज प्रस्तुत करैत छथि, आ चम्पा पासवान स्मरण करबैत छथि जे पुरान ‘सार्वजनिक’ घाटपर सभक प्रवेश बराबर नहि छल। शिक्षकक बनाओल नकाशा सामाजिक माध्यमपर भ्रामक प्रमाण बनल, जकर सीमा स्वयं शिक्षक स्पष्ट करैत छथि। स्थल-परीक्षणमे वर्तमान नदीक धारा, पुरान नकाशा, मौखिक स्मृति आ उपयोगक चिन्ह एकरेखीय निष्कर्ष नहि दैत। कथा स्वामित्वक अन्तिम निर्णय थोपैत नहि; अनेक साक्ष्यक परस्पर विरोधक बीच न्यायिक सत्य बनबाक कठिन प्रक्रिया उद्घाटित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४० · डाकिया

तीस बरखक सेवाक बाद पिप्राक डाकिया दीनबंधु पासवान सेवानिवृत्त होइत अछि। पत्र, मनीऑर्डर, परीक्षा-सम्बन्धी कागज आ न्यायिक सूचना पहुँचबैत ओ गामक बदलैत लोक, घर आ बाटक इतिहास स्मरण रखने अछि। अपूर्ण पतावला चिट्ठीसभ देखबैत छथि जे व्यक्तिक जीवन बदलि जाइत अछि, जखन कागजपर पुरान चिन्ह रहि जाइत अछि। विदाइ समारोहमे लोक हुनकर सावधानी आ मानवीय व्यवहारक छोट स्मृति सुनबैत छथि। दीनबंधु नव डाकिया विवेक लेल वितरण-मार्गक सूची तैयार करैत अछि, मुदा ओकरा केवल पता गनबाक बदला लोकसँ पुष्टि करबाक सीख दैत अछि। अगिला दिन विवेक एक पुरान दीवारक नामपर आयल पोस्टकार्ड लऽ वास्तविक प्राप्तकर्ताक खोज शुरू करैत अछि। डाक पहुँचेनाइ सम्बन्धक जिम्मेदारी बनि उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४१ · परदेस

परदेशमे रातिक पाली करैत एक श्रमिक अपन गाम पिप्राक कमला घाटकेँ चिट्ठी लिखैत अछि। घाटक कोनो डाक-पता नहि, तैओ ओहि निर्जीव ठामकेँ सम्बोधित करब घरक लोकसँ नहि कहि सकल अनेक बात खोलबाक उपाय बनैत अछि। मोबाइलक छोट पर्दापर देखल छठ, बदलल नदी, लाल कुर्सी आ सीढ़ीक स्मृति ओकरा अपन अनुपस्थितिक भार बुझबैत अछि। घरक छत, पढ़ाइ, उपचार आ ऋणक आवश्यकता ओकर कमाइपर निर्भर अछि; एहि कारण घुरबाक तिथि बेराबेरी आगाँ बढ़ैत अछि। ओ घरक प्रति प्रेम आ आर्थिक जिम्मेदारीक बीच कोनो सरल समाधान नहि पबैत। अन्तमे चिट्ठी अपन संग राखबाक निश्चय करैत अछि, ताकि घुरि सकला पर वास्तविक घाट आ स्मृतिक घाटक अन्तर स्वयं देखि सकय।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४२ · डूम

कमलाक बाढ़िक समय सुमित्रा अपन घर आ नौ बरखक बेटा नीलूक सुरक्षाक तैयारी करैत अछि। पानि बढ़ैत अछि आ नीलू लापता भऽ जाइत अछि; ओकर देह नहि भेटैत। कागजमे ‘लापता’, लोकक बोलमे ‘बाढ़िमे गेल’ आ मायक जीवनमे ओकर अनुपस्थिति अलग-अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि। सुमित्रा भीजल कपड़ा धोइत, घरक कादो हटबैत आ बेटाक वस्तु सम्हारैत शोकक संग दैनन्दिन श्रम जारी रखैत अछि। अगिला बरख बरखा आबिते भय फेर जागैत अछि, मुदा ओ जलसँ बचबाक व्यावहारिक तैयारी नहि छोड़ैत। बेटा घुरि नहि अबैत, तैओ मायक जीवन केवल एक निष्कर्षपर रुकैत नहि। अन्तमे लालटेनक उजासमे ओ नाली साफ कऽ अगिला भोरक भोजन लेल चाउर नापैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४३ · भूत

रातिक रिक्शा चलबैत जगदीश एक धूसर आँचरवाली स्त्रीकेँ बेराबेरी पुरान मन्दिर धरि पहुँचबैत अछि। स्त्री सीढ़ीक ओटमे अदृश्य भऽ जाइत छथि, आ गाममे तुरन्त भूतक कथा फैलि जाइत अछि। लोक अपन-अपन कल्पनासँ चेहरा, साड़ी आ पुरान मृत्यु जोड़ैत छथि, मुदा जगदीश केवल देखल बात कहबाक आग्रह करैत अछि। ओ मन्दिरक बाट आ सम्भावित निकास खोजैत अछि, किछु साधारण संकेत भेटैत अछि, तथापि स्त्रीक पहिचान निश्चित नहि भऽ पबैत। स्त्रीक आबनाइ बन्द भेलापर सेहो अफवाह चलैत रहैत अछि। जगदीश 'भूत'क नाम पर अनदेखल घटनाक निर्णय करब अस्वीकार करैत अछि। ओकर रिक्शाक छोट बत्ती जतेक बाट देखबैत अछि, ओतेक सत्यक मर्यादापर ओ भरोसा करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४४ · मास्टर साहेब

पिप्रा उच्च विद्यालयक शिक्षक जगन्नाथ मिश्र चालीस बरखक सेवाक बाद विदा लैत छथि। अन्तिम दिन विद्यार्थीक स्मृति हुनका कठोर अनुशासन, न्याय, गलती आ स्नेहक अनेक रूप सामने अनैत अछि। एक पूर्व विद्यार्थी अपन अपमानक अनुभव साझा करैत अछि, दोसर अपन जीवनमे भेटल शिक्षाक सहारा स्मरण करैत अछि। जगन्नाथ बाबू बुझैत छथि जे शिक्षकक प्रभाव केवल पाठ्यक्रम वा परीक्षाफलमे नहि नपैत। विद्यालयसँ भेटल घड़ी घरमे टँगलापर समयक नब अर्थ खुलैत अछि; विद्यालयक घंटी आ उपस्थिति-पञ्जीक क्रम समाप्त भऽ चुकल अछि। अगिला भोर पुरान आदतसँ झोरा उठा लैत छथि, मुदा ओहिमे एक पूर्व विद्यार्थीक आवश्यक कागज अछि। छुट्टी भेलो हुनकर सीखब आ लोकक काजमे लगबाक यात्रा समाप्त नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४५ · चित्रकार

पिप्राक उर्मिला देवी अपन मिथिला चित्रमे पारम्परिक माछ-कमलक संग मोबाइल टावर, साइकिल आ छठ-घाटक लाल कुर्सी सेहो बनबैत छथि। दिल्लीक प्रदर्शनीमे चित्र पहुँचैत हुनका अपन रचनाक प्रस्तुति, नामक शुद्ध श्रेय आ चित्रक किनार ढँकला सँ अर्थ बदलबाक अनुभव होइत अछि। व्यापारक अपेक्षा आ नकलक आग्रहक बीच ओ स्पष्ट करैत छथि जे एक विषय फेर बना सकैत छथि, मुदा पहिल अनुभवक हूबहू प्रति नहि। बेटी रूपा आ आयोजक ईराक संग हुनकर संवादसँ कला पर कलाकारक अधिकार आ दर्शकक भिन्न दृष्टि दूनू उभरैत अछि। अन्तमे ओ रातिक घाटक एक नब चित्र बनबैत छथि, जाहिमे खाली कुर्सी आ दूरक लाल बत्ती अछि। नब चित्र एखन बाजारक आदेशसँ अलग, हुनकर अपन दृष्टिक अधूर यात्रा अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ४६ · घुरनाइ

बीस बरख बाद रेणुका पिता देवकान्तक मृत्यु पर पिप्रा घुरैत अछि। बियाहक बाद घर छोड़बाक ओकर पुरान निर्णयपर गाममे अनेक परस्पर विरोधी कथा चलैत रहल अछि। भाइ अरुण, भाउज मीना आ भतीजा अंशु ओकर आगमनकेँ अपन-अपन भय, जिज्ञासा आ स्मृतिसँ देखैत छथि। जमीनक हिस्सा, घरक देखभाल आ पुरान कागजक बात उठैत अछि, मुदा रेणुका अपन जीवनकेँ ककरो तैयार व्याख्यामे नहि समेटय चाहैत अछि। ओ वापस शहर जाइत समय अंशुकेँ एक कोठरीक चाभी दैत अछि—चाभी ओकर हाथमे, उपयोगक जिम्मेदारी सभक। अंशु बुझैत अछि जे बुआक सम्बन्ध कानूनी हिस्सा, ठाम आ अपन जीवनक चुनावक संग जुड़ल अछि। मनुष्यकेँ एक शब्दमे पूरा नहि बाँधल जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४७ · नाह

गोपी आ झुनकी नदीक ओ पार जेबाक उत्सुकतामे केराक थमसँ बेड़ा बनबैत अछि। पैघ लोकक मनाहीक कारण बुझबाक बदला दुनू अपनहि धारमे उतरि जाइत अछि। किनारक पानि सहज लगैत अछि, मुदा बीच धारमे बाँस तल धरि नहि पहुँचैत आ बेड़ा बहबय लगैत अछि। भय आ संघर्षक बाद जब्बार आ नाविक बिसुन हुनका सभकेँ सुरक्षित घुरबैत छथि। मित्रसभ रोमाञ्चक कथा सुनय चाहैत अछि, मुदा झुनकी नदीक वास्तविक जोखिमकेँ कोनो काल्पनिक मगरसँ सजाबय नहि चाहैत। बिसुन हुनका सभकेँ असली नाह, भार, चप्पू आ धारक ज्ञान सिखबैत अछि। दुनू अपन बेड़ाक नाँव ‘फेर-आब’ रखैत अछि—ओ पार पहुँचबाक सफलतासँ बेसी जीवित घुरबाक बोधक रूपमे।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४८ · छठ फेर सँ

पिप्राक अगिला छठमे पिछला बरखक घाट-विवादसँ सीखल बदलाव लागू देखाइत अछि। बाँसक पुरान विभाजन हटि चुकल अछि, सहायता-पथ बनल अछि आ स्त्री-दलक प्रतिनिधि निर्णयमे सम्मिलित छथि। मुदा बद्री काकाक मृत्युपछि हुनकर लाल कुर्सी स्मृति आ सार्वजनिक उपयोगक नब प्रश्न उठबैत अछि। कुर्सी खाली राखब कि थाकल लोककेँ बैसायब—एहि छोट बहसमे शोक आ व्यवहारिक आवश्यकताक अन्तर खुलैत अछि। माइकक आवाज, सफाई आ सहायता जकाँ नव समस्या सेहो उत्पन्न होइत अछि, मुदा एहि बेर लोक जल्दी समाधान खोजैत छथि। अन्तमे कुर्सी अपन घर घुरैत अछि आ घाट फेर साधारण दिनक उपयोगमे चलि जाइत अछि। परिवर्तन न सम्पूर्ण अछि, न घोषित विजय; ओ व्यवहारमे धीरे-धीरे जगह बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

इजोत—जनम-जनमक कथा

कथा ४९ · विदेह

जगदम्बा देवीक घरक पुरान सन्दूकमे नाँव, चिट्ठी, स्मृति आ अधूर लेखनक सामग्री भेटैत अछि। नैना आ अनुपमा एहि निजी संग्रहकेँ लोकक आवाजसँ जोड़बाक सोचैत छथि, मुदा पीड़ाक प्रदर्शन, बिना अनुमति कथन प्रकाशित करब आ अभिलेखकेँ अन्तिम सत्य मानबाक खतरा बुझैत छथि। देवनाथक पुरान खाली लिफाफापर लिखल ‘विदेह’ शब्द नब प्रकाशनक नाँव बनैत अछि; हुनकर अधूर सपनाकेँ अनिवार्य उत्तराधिकार नहि बनाओल जाइत। अनेक लोक अपन अनुभव दैत छथि, सुधार करैत छथि, किछु बात छपेबाक अनुमति नहि दैत छथि। ‘विदेह’क अंकसभ स्थानीय जीवनक विविधता आ असहमति संग प्रकाशित होइत अछि। अगिला अंकक खाली पन्ना नैना जानि-बुझि नहि भरैत अछि—आगाँ बजयवला व्यक्तिक सहमति आ अपन स्वर लेल ठाम बचा कऽ।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १ · दू जनकपुर

कमला देवीक निधनक बाद पुत्र अमरेश झा जनकपुरमे माएक नैहर खोजय पहुँचैत छथि। माए देल संकेत आ पित्तारिक चाभी सँ घरक ठेकान नहि भेटैत छनि, मुदा नगरक एक नकाशा पर वर्तमान जनकपुरक संग स्मृतिमे बाँचल दोसर जनकपुर देखाइत अछि। सावित्री देवी आ पुरान सर्वेक्षणक सहायतासँ ओ माएक बचपनक बाट आ तीन अलग-अलग ‘घर’क अर्थ बुझैत छथि। देहरीक निश्चित प्रमाण नहि भेटलाक बादो अमरेश अनुभव करैत छथि जे घर लोकक स्मरण, सम्बन्ध आ आवाजमे जीवित रहैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २ · भूलल शास्त्रार्थ

पाण्डुलिपि-संरक्षिका नीलिमा झा केँ जलधारक अधिकार पर लिखल पुरान शास्त्रार्थ भेटैत छनि। कनकपुरमे जमीन आ पानिक बाट लऽ विवाद चलैत अछि, तेँ पोथीक अधूर सूचना प्राचीन निर्णयक प्रमाण मानि पसरि जाइत अछि। जाँचमे नीलिमा पबैत छथि जे शास्त्रार्थ सम्भवतः विद्यार्थीक अभ्यास लेल रचल कल्पित संवाद अछि। पंचायतमे ओ ई भेद स्पष्ट करैत छथि, मुदा फुलकुमारी देवी ध्यान दिअबैत छथि जे संवादक प्रश्न वास्तविक समस्या पर लागू होइत अछि। लोक जमीनक नापी, जलप्रवाह, हानि आ सामूहिक रखरखाव पर विचार करबाक बाट पकड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३ · समयक पोखरि

माएक मृत्यु सँ दुखी मृदुला ननिहालक पोखरि पर सम्भावित भविष्यक दृश्य देखैत छथि, जाहिमे नचिकेतक संग नव जीवन देखाइत अछि, मुदा पुत्र आदित्यक उपस्थिति अस्पष्ट अछि। ई अनुभव हुनका दोसर विवाहक निर्णयसँ भयभीत करैत अछि। जानकी मामीक बात आ आदित्य तथा नचिकेतक परिवारक संग संवाद हुनका बुझबैत अछि जे भविष्यक आभास अन्तिम सत्य नहि। ओ दुनू बच्चाक इच्छा आ आशंका केँ मान दैत धीरे-धीरे साझा जीवन बनयबाक प्रस्ताव रखैत छथि। फेर पोखरि पर घुरि ओ पानि हिला दैत छथि, कारण आब भविष्य देखबाक बदला ओकर निर्माण करबाक निर्णय कऽ चुकल छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४ · अक्षरक नगर

नगर-नियोजक निरुपमा कर्ण कैँ सिद्धपुरक पुस्तक-मेला लेल स्पष्ट नकाशा बनयबाक जिम्मेवारी भेटैत छनि। आधुनिक सड़क-संख्या आ दिशासूचक चिन्ह पुरान नगरक जटिल बाट बुझयमे अपर्याप्त सिद्ध होइत अछि। बाबूजी हेमकान्तक पथ-संकेत आ भाषा-सम्बन्धी स्मृति सँ निरुपमा जानैत छथि जे मैथिली, हिन्दी आ नेपालीमे एक्के नगरक बाट अलग ढङ्गसँ खुलैत अछि। ओ बहुभाषिक संकेतक व्यवस्था बनबैत छथि; परीक्षणमे सभ समूह गन्तव्य पहुँचैत अछि। मुदा एक बालक अनदेखल साँघुर बाट देखबैत अछि। निरुपमा बुझैत छथि जे कोनो नकाशा नगरक सभ सम्भावित अनुभव समेटि नहि सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५ · अन्तिम टीका

पोथी-संरक्षण केन्द्रक रघुनन्दन साह ‘प्रमाण-विवेक’ नामक प्राचीन ग्रन्थक जीर्ण पृष्ठ सम्हारैत एक पातर पट्टी पबैत छथि जकरा सभ बादक टीका मानैत छल। कागज, स्याही आ पाठक जाँचसँ संकेत भेटैत अछि जे पट्टीक प्रश्न मुख्य ग्रन्थसँ पहिने लिखल गेल हो सकैत अछि। एहन स्थितिमे मूल ग्रन्थ आ टीकाक स्थापित सम्बन्ध उलटि जाइत अछि। विद्वान निश्चित निष्कर्ष थोपबाक बदला उपलब्ध प्रमाणक सीमा स्वीकार करैत छथि। प्रदर्शनीमे पट्टी केँ स्वतन्त्र महत्त्व देल जाइत अछि आ ओकर प्रश्न पाठक केँ विचारक आरम्भ पर फेर सोचबाक प्रेरणा दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६ · नकाशा जे बढ़ैत रहल

इतिहासकार रमापति झा कैँ कमला नदीक किनारक बस्तीक ऐतिहासिक नकाशा बनयबाक काज भेटैत छनि। सरकारी अभिलेख सँ बनल नकाशा स्थानीय लोकक स्मृति, बदलल नदी, विस्थापित गाम आ स्त्रीसभक पुरान बाटक सामने अपूर्ण सिद्ध होइत अछि। साक्ष्य आ समयक परत जोड़ैत गेलासँ नकाशा निरन्तर पैघ होइत जाइत अछि। रमापति एक प्रवेश-नकाशा आ विस्तृत काल-पट तैयार करैत छथि, जाहिमे लिखित प्रमाण आ लोकक अनुभवक भेद सुरक्षित रहैत अछि। संग्रहालयमे बालक अगिला भाग पूछैत अछि, तखन ओ भविष्यक प्रमाण लेल खाली पट्टी छोड़ि दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७ · एक लेखक, दू जन्म

लेखिका अनघा कर्णक पुरस्कृत कथा ‘रेखा’ पर आरोप उठैत अछि जे ओकर शब्द दू सय बरख पुरान तिरहुता पाठसँ मिलैत अछि। जाँचमे नानीक कापी, मौखिक परम्परा आ गोविन्ददासक पुरान कथा बीच जटिल सम्बन्ध सामने अबैत अछि। शब्द समान रहितो पुरान पाठमे धनेश्वरीक काज सामाजिक सीमा तोड़बाक चेतावनी रूपेँ देखल गेल छल, जखन कि अनघाक दृष्टिमे ओ बाट आ सम्बन्ध बचबैत अछि। सार्वजनिक पठनमे पाठकसभक अलग-अलग अर्थ उभरैत अछि। कथा रचनाक स्वामित्वक प्रश्न केँ सरल उत्तर नहि दैत; समान शब्द समय आ दृष्टिक परिवर्तनसँ नव अर्थ पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८ · स्मृतिक शब्दकोश

वृद्ध शब्दकोशकार मालती मिश्र विसराइत मैथिली शब्द सहेजबामे जीवन लगौने छथि। ‘ओसरा’ शब्दक अर्थ लिखैत हुनका अपन बाबूजी-माएक स्मरण धुँधला बुझाइत अछि। कापीमे दर्ज पुरान उदाहरण आ आबक याद एक-दोसरासँ भिन्न होएबाक कारण ओ स्मृतिक विश्वसनीयता पर प्रश्न करैत छथि। नातिन ईरा हुनका पुरान पंक्ति मेटबाक बदला बदलल स्मरण सेहो लिखबाक सलाह दैत अछि। अन्तमे मालती बुझैत छथि जे शब्दक जीवन केवल कोशक परिभाषामे नहि, लोकक सहज प्रयोगमे अछि। ईरा ओसरा पर बैसि हवा नीक हेबाक बात कहैत अछि, तखन मालती शब्द केँ जीबाक सुख पबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९ · शून्य अध्याय

जिला पुस्तकालयक सुधा झा कैँ ‘बारह कोठरी’ उपन्यासक भीतर छिपल ‘अध्याय शून्य’ भेटैत छनि। एहि अध्यायक संकेत पाठक कैँ घटना आरम्भ हेबाक स्थान पर प्रश्न करय लेल विवश करैत अछि। सुधा आ नचिकेता अलग-अलग क्रममे उपन्यास पढ़ि पात्र सरिताक काजक भिन्न अर्थ निकालैत छथि। एहि बीच सुधाक बहिन सीमासँ माएक मृत्यु आ पारिवारिक कागज लऽ मतभेद अछि। घटनाक क्रम बदलि देखला पर सुधा बुझैत छथि जे ककरो निर्दोष ठहरौनाइ उद्देश्य नहि, बल्कि पहिल कारणक अपन धारणा जाँचनाइ जरूरी अछि। ओ नव पाठिका कैँ कथा अपन प्रश्नक ठामसँ आरम्भ करबाक स्वतंत्रता दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १० · प्रतिलिपिकार

लोक-पोथी संरक्षण कक्षमे प्रतिलिपिकार सुधीन्द्र दास केँ रामदुलारी देवीक ‘सात आँगनक गीत’ उतारबाक जिम्मेवारी भेटैत छनि। पुरान पोथीमे अनेक हस्तक्षेप, अस्पष्ट अक्षर आ बादक संशोधन देखिकऽ ओ बुझैत छथि जे ‘मूल’ सेहो अनेक हाथक इतिहास अछि। साफ प्रतिलिपि बनयबाक हुनकर प्रवृत्ति कखनो अनिश्चित शब्द केँ निश्चित बना दैत अछि। अन्तिम पृष्ठक अधमेटायल पाँति पर ओ अनुमानसँ रिक्त स्थान भरि सकैत छलाह, मुदा एहन नहि करैत छथि। प्रदर्शनीमे ओ अधूरा पाठ जस्ताक तस्ते रखैत छथि। जिम्मेवार प्रतिलिपि लेल किछु ठाम नहि लिखब सेहो सत्यक रक्षा अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ११ · तीसर इतिहास

बेलवाघाटक १९२७ क अकालकालीन ‘अन्नक राति’ पर शताब्दी-स्मारकक अभिलेख लिखबाक जिम्मा मणिकान्त मिश्र केँ भेटैत छनि। कोठारसँ धान बाहर निकलबाक घटनाक दू प्रचलित इतिहास अलग-अलग नायक आ उद्देश्य बतबैत अछि। पुरान नाटक, लोकस्मृति आ लेखा-बही जाँचला पर ओ पबैत छथि जे बादक कथासभ एक-दोसराकेँ प्रभावित कएने अछि। ककर भूमिका निश्चित नहि, ई स्वीकार करैत ओ स्मारक पर प्रमाणित घटना लिखब चुनैत छथि—लोक जुटल छल आ अन्न बाहर आयल छल। कथा इतिहासक ईमानदारी अनिश्चितता केँ सुरक्षित रखबामे देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १२ · अनुवादक

फारसी पत्रक एक वाक्यक मैथिली अनुवाद करैत नसीम आरा केँ घर, परदेस, देहरी आ बदलैत बोलीक सम्बन्ध पकड़ब कठिन लगैत अछि। १९८३ सँ दशकसभ धरि ओ नव-नव शब्द चुनैत छथि; जीवनक अनुभव, परिवारक बातचीत आ अलग पीढ़ीक उच्चारण पुरान अनुवाद केँ चुनौती दैत अछि। प्रकाशनक समय ओ एक्के वाक्यक अनेक कालक रूप आ अपन निर्णयक कारण सामने रखैत छथि। युवा पाठक पुनः नव अर्थ पबैत छथि, आ नसीम ‘घुरि आयल आवाज’ केँ अपन मानबाक भाव पर पहुँचैत छथि। ओ एहि रूप केँ अन्तिम नहि कहैत छथि, कारण भाषा आ घर दुनू निरन्तर बदलैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १३ · नामहीन देवता

लोककथा-संग्रह करय कचनारिया पहुँचल विभा झा केँ एक एहन देवताक कथा सुनय भेटैत छनि जकर नाम कथाकार जानि-बुझि नहि उच्चरित करैत छथि। विभा प्रथम दृष्टिमे एहि मौन केँ अपूर्ण सूचना मानैत छथि। देवनाथ सँ निजी रूपेँ नाम सुनलाक बाद ओ बुझैत छथि जे कथाक सामूहिक परम्परामे नामक स्थान पर ठहरल मौन स्वयं अर्थपूर्ण अछि। विद्यालयक बालक नील कथा आगाँ बढ़बैत नामक ठाम चुप रहबाक विधान अपनबैत अछि। विभा ध्वनि-संग्रहमे विराम केँ सुरक्षित रखैत छथि, मुदा नामक रिक्त स्थान नहि भरैत छथि। कथा लोकस्मृतिक संरक्षण आ ओकर गोपनीय मर्यादाक सम्बन्ध उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १४ · समयक पगडंडी

पैतृक जमीन बाँटबाक लेल सिरसिया घुरल नीलिमा आ हुनकर भाइ शेखरक बीच पुरान पगडंडीक अधिकार लऽ मतभेद अछि। बाट पर चलैत नीलिमा अलग-अलग कालक दृश्य अनुभव करैत छथि, जाहिमे बाढ़ि, मायक संघर्ष आ बचपनक सम्बन्ध फेर सामने अबैत अछि। समयक एहि यात्रासँ ओ बुझैत छथि जे बाट केवल जमीनक रेखा नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलल साझा जीवन अछि। घर घुरला पर ओ शेखर सँ पुरान स्मृतिक भिन्नता स्वीकार करैत छथि। दुनू अपन-अपन भागक सीमा-पत्थर थोड़े हटबैत छथि, जाहिसँ पगडंडी पर दू गोटे संग चलि सकथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १५ · दर्पणक वंश

सौराठक पञ्जीकार माधवी झा लग कौशिकीक विवाहक सम्बन्धमे दू वंशक मेल जाँचबाक प्रस्ताव अबैत अछि। पुरान पाँजिमे भेटल ‘दर्पण’क संकेत सँ रक्तसम्बन्ध, आश्रय आ घरमे शामिल लोकक इतिहास उलझि जाइत अछि। विवाद विवाहक संग पुरान बारीक अधिकार धरि पहुँचैत अछि। माधवी अभिलेखक अस्पष्ट चिन्ह केँ वंश वा सम्पत्तिक निश्चित प्रमाण बनयब सँ इनकार करैत छथि। बूढ़ परिवारजनक स्मृति सुनि ओ अलग विवरण दर्ज करैत छथि, जाहिमे छवि आ रक्तवंशक भेद स्पष्ट अछि। अन्तमे तीन पल्लाक दर्पण मनुष्यक सम्बन्धक दायित्व, संग आ आश्रयक रूपक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १६ · अदृश्य पुस्तक

रेणुका कर्ण केँ 'साझा दीप' नामक कथित प्राचीन पुस्तकक मूल प्रति खोजबाक जिम्मेवारी भेटैत छनि। पुस्तकक अनेक उद्धरण प्रचलित अछि, मुदा मूल पोथी ककरो लग नहि; लेखक, रचनाकाल आ पाठक स्वरूप पर मतभेद अछि। रेणुका अलग-अलग कापी, विद्यालयी पुस्तिका, घरेलू बही आ शोध-पत्रक उद्धरण जाँचि पबैत छथि जे एकटा सुसंगत मूल ग्रन्थ पुनर्निर्मित करबाक प्रमाण पर्याप्त नहि अछि। ओ अनुमानित पाठ केँ मूलक नाम पर प्रकाशित करबाक विरोध करैत छथि आ उद्धरणसभक स्रोत आ अनिश्चितता अलग-अलग देखबैत छथि। प्रदर्शनीक खाली काँच-पेटी प्रमाणक सीमा स्वीकार करबाक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १७ · सातम दिशा

अनुजा झा केँ लोक-स्मृति केन्द्रमे ‘सातम दिशा’ नामक नकाशा भेटैत छनि। एहि नकाशाक लाल रेखासभ भौतिक दूरी नहि, एक स्मृतिसँ दोसर स्मृति धरि पहुँचबाक क्रम देखबैत अछि। लोकक गन्ध, आवाज, परिवार आ विसराइल ठाम एहन क्रम केँ अलग-अलग रूप दैत अछि। अनुजा नकाशाक प्रदर्शनी तैयार करैत ‘सातम दिशा’क लेल अतिरिक्त तीर बनयबाक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि। अपन बहिन मीराक बाल्यकाल सँ वर्तमान आवाज धरि पहुँचैत ओ अनुभव करैत छथि जे स्मृति केवल अतीत दिस नहि लऽ जाइत; ओ जीवित सम्बन्ध धरि सेहो घुरा सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १८ · अन्तिम पाठक

सोनबरसाक पुरान जनवाचनालय आगिमे जड़ि जाइत अछि आ जीवनभरि ओतय पढ़निहार रघुपति मिश्र पुस्तकसभ केँ स्मरणसँ फेर लिखबाक प्रयास करैत छथि। मुदा जखन बाँचल प्रतिसभ भेटैत अछि, तखन अनेक कथाक स्मृति मूल रचनासँ भिन्न निकलैत अछि। रघुपति, मधवी आ नव पीढ़ीक पाठकसभ मूल पाठ, स्मरण आ नव सृजनक भेद पर विचार करैत छथि। वाचनालय फेर खुलैत अछि आ रघुपति अपन स्मृतिसँ जन्मल लेखन केँ हराएल पुस्तकक नकल कहबाक बदला नव पुस्तक मानैत छथि। युवती नेहाक रचना संग पढ़ैत ओ बुझैत छथि जे पढ़बाक परम्पराक कोनो अन्तिम पाठक नहि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा १९ · पोखरिक घटना

बरैला पोखरिक नवनिर्मित घाट पर किशोरी गुंजा खसि पड़ैत छलीह आ मुन्ना पासवान हुनका पानिसँ निकालैत छथि। दुर्घटनाक बाद गाममे गुंजाक असावधानी, अधूर निर्माण, लाल डोरी, ठेकेदार आ स्थानीय विरोध लऽ भिन्न कथा चलि पड़ैत अछि। पंचायतक जाँचमे प्रत्यक्ष देखल बात आ अनुमानित बातक भेद स्पष्ट होइत जाइत अछि। घाट हिलैत छल, प्रभावी रोक नहि छल आ अनेक छोट निर्णय मिलि जोखिम बढ़ेने छल। गुंजा ककरो एकटा दोषी ठहरयबाक अपेक्षा दुर्घटनाक पूरा परिस्थिति बुझब आवश्यक मानैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २० · दरबारक राति

रतनपुरक पुरान दरबारमे लागल आगि केँ राजकीय इतिहास ‘बाहरी उपद्रवीसभक षड्यन्त्र’ कहैत अछि। नव अभिलेख-अधिकारी अर्चना झा एहि निष्कर्षक आधार खोजैत सैनिक, स्त्री-महल, पुरोहित, व्यापारी आ राज्य-वृत्तक अलग-अलग साक्ष्य जाँचैत छथि। प्रत्येक व्यक्तिक देखबाक स्थान, स्वार्थ आ असमर्थता अलग छल; कोनो एक कथनसँ आगिक कारण निश्चित नहि होइत। अर्चना आरोपात्मक पुरान पट्ट बदलि विवादित कारणक बात लिखबैत छथि आ प्रदर्शनीमे अनेक आवाज लेल स्थान बनबैत छथि। सब स्रोत जोड़ि देलासँ एकटा निर्विवाद पूर्ण सत्य स्वतः नहि बनैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २१ · चोरीक मूर्ति

अमराहीक भुवनेश्वरी स्थानसँ मूर्ति गायब भेलापर गाममे आस्था, सुरक्षा, प्रतिष्ठा आ चोरीक आरोप एक संग उठैत अछि। पहरेदार बलदेव पासवान अपन अनुपस्थितिक बारह मिनट पहिने नुकेबैत छथि, मुदा बादमे सत्य कहबाक साहस करैत छथि। जाँचमे मूर्तिक पुरान मरम्मति, कारीगरक स्मृति आ अलग-अलग लोकक हित सामने अबैत अछि। मूर्ति घुरि अयलाक बादो सन्देह आ चोट तुरन्त समाप्त नहि होइत। मन्दिरक सुरक्षा-व्यवस्थामे पहरेदारक बुनियादी आवश्यकतासमेत मानल जाइत अछि। कथा विश्वासक संग श्रम, गरीबी, चूक आ सामूहिक जिम्मेवारीक अनेक परत देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २२ · सीमाक गोली

रेखापुरक सीमा लग सरकल पत्थरक आधार पर जवान अरुण तामाङ किसान सदानन्द कैँ खतरा मानि गोली चलबैत छथि। नाला, खेत, पाइप आ चेतावनीक आवाज सम्बन्धी सैनिक, किसान, अधिकारी आ बालिका रानीक कथन एक-दोसरासँ पूरा मेल नहि खाइत अछि। जाँच सँ स्पष्ट होइत अछि जे पत्थर अपन मूल ठाम पर नहि छल आ भयक अनुभूति वास्तविक खतरा सिद्ध नहि करैत। क्षतिपूर्ति, सीमाचिन्हक सुधार आ प्रशिक्षणक बदलाव होइत अछि, मुदा स्मृतिक मतभेद रहि जाइत अछि। कथा प्रक्रियाक स्मरण आ घटित घटनाक सत्य, सुनल आ कहल, तथा सीमा आ खेतीक भेद पर विचार करबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २३ · विवाहक विवाद

माधवी आ सौरभक विवाहक मण्डप सजल रहितो पैसाक लेन-देन, नौकरी, विवाह बादक निवास आ परिवारक अपेक्षा पर विवाद उठैत अछि। वर-कन्या, हुनकर माएसभ, सहेली आ बिचौलिन कौशल्या प्रत्येक घटनाक अलग कारण बतबैत छथि। माधवीक चिन्ता केवल रकम नहि, अपन जीवनक निर्णयमे बराबर सहभागिता अछि; सौरभ माएक दायित्व आ नव घरक प्रश्न स्पष्ट नहि कऽ पबैत छथि। विवाह स्थगित भेलाक बाद पत्राचारमे दुनू अपन अनिश्चितता स्वीकार करैत छथि। कथा एकटा जटिल सम्बन्धक रुकबाक कारण एक अफवाहमे समेटल नहि जा सकैत अछि, से देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २४ · बाढ़िक नाव

बेलही गामक बाढ़िमे राहत लऽ जा रहल ‘मुक्ति’ नाव पलटि जाइत अछि। दुर्घटनाक कारण पूछला पर नाविक, शिक्षिका, ठेकेदार, यात्री आ जाँच-अधिकारी अलग-अलग चूक पर जोर दैत छथि। क्षमता सँ बेसी यात्री, अनाजक बोरा, मरम्मतिक कमी, तेज धार, आकस्मिक मोड़ आ दोसर नावक अनुपस्थिति एक संग असर करैत अछि। एक व्यक्तिक निर्णय कें दोष दऽ समस्त जोखिम बुझल नहि जा सकैत। अगिला बाढ़िमे नावक क्षमता, सुरक्षा-कवच, अतिरिक्त नाव आ यात्रीक अनुशासन पर ध्यान देल जाइत अछि। भयभीत तारा बदलल व्यवस्थाक बीच सुरक्षित यात्रा करैत सामूहिक सुरक्षाक अर्थ बुझैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २५ · चित्रकारक मृत्यु

चित्रकार नचिकेत मिश्रक मृत्यु बारह बरख बादो रहस्य बनल अछि। हुनकर बेटी ईरा घर बिकबाक पहिने अधूर चित्र, पुरान मचान आ परिवारजनक दैनिकी जाँचैत छथि। दुर्घटना, आत्महत्या, खराब मचान, झगड़ा आ थकान—प्रत्येक सम्भावनाक पक्षमे किछु संकेत भेटैत अछि, मुदा निर्णायक प्रमाण नहि। कला-जगत कलाकारक महानता आ मृत्यु केँ सनसनीखेज कथा बनाबय चाहैत अछि। ईरा स्रोतसभक सीमा स्वीकार करैत छथि आ बुझैत छथि जे चारि दैनिकी चारि मृत्यु नहि, चारि व्यक्तिक दृष्टि देखबैत अछि। कथा मृत व्यक्तिक जीवन पर जल्दबाजीमे निर्णय देबाक नैतिक संकट सामने अनैत अछि।

कथा २६ · पुरान मुकदमा

इतिहासकार अनामिका मिश्र अपन परिवार आ मण्डल परिवारक बीच बरियार पट्टीक पुरान भूमि-मुकदमा जाँचैत छथि। न्यायालयक निर्णय, पुरान नापी, खेतीक चलन, पयरबाट आ मौखिक स्मृति अलग-अलग प्रकारक अधिकार देखबैत अछि। परिवारक हित अनामिकाक अपन दृष्टिकेँ प्रभावित करैत अछि, से बात ओ सेहो स्वीकार करैत छथि। ओ स्रोतक कथन, ओकर प्रमाण आ ओकर सीमा अलग-अलग दर्ज करैत छथि। पुरान मुकदमाक कानूनी निष्कर्ष रहितो जमीनक सामाजिक उपयोगक स्मृति समाप्त नहि होइत। सीमा-खूँटी, पयरबाट आ गाछक ठूँठ कैँ अलग नामसँ दर्ज करैत अनामिका देखबैत छथि जे एक रेखा सम्पूर्ण भू-इतिहास नहि होइत।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २७ · मेला राति

बसहा मेलामे चौबीस बरखक मंजरी कर्ण अचानक लापता भऽ जाइत छथि। घर आ गाममे अपहरण, प्रेम, भागि जाएब आ विवाहसँ भय धरि अनेक अफवाह चलि पड़ैत अछि। पुलिस आ परिवारक खोजमे बस, ठहरबाक घर, परिचय-पत्र आ प्रत्यक्षदर्शीक साक्ष्य सँ धीरे-धीरे हुनकर यात्रा स्पष्ट होइत अछि। मंजरी अपन काज आ जीवनक निर्णय लेल घरसँ निकलने छलीह, मुदा हुनकर आंशिक पत्र सेहो पूरा मनोदशा नहि बतबैत। घुरलाक बाद ओ पत्र सुरक्षित रखैत छथि, मुदा ओकरा ‘पूर्ण कथा’ नहि मानैत छथि। कथा स्त्रीक स्वायत्तता आ दोसर लोक द्वारा ओकर जीवनक अर्थ निर्धारित करबाक प्रवृत्तिक टकराव देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २८ · वीरक कथा

कजराघाटक पुरान संघर्ष पर संयुक्त सांस्कृतिक प्रस्तुति बनबैत रंगनिर्देशिका अदिति कुमारी केँ दू गामक परस्पर विरोधी वीर-गीत भेटैत छनि। एक परम्परामे वीरनाथ नायक छथि, दोसरमे हरिकेशक भूमिका केन्द्रीय अछि; एक्के क्रिया ककरो लेल वीरता आ ककरो लेल अपराध बनल अछि। अदिति गीतक शब्द बदलि कृत्रिम मेल नहि बनबैत छथि। ओ दुनू रूपक प्रस्तुति आ प्रसंग स्पष्ट करैत छथि। ऐतिहासिक साक्ष्य सीमित अछि, तेँ कार्यक्रम व्यक्तिक एकल महिमामण्डनक बदला दू वीर-परम्परा केँ स्थान दैत अछि। कथा लोकगीतक बदलैत पाठ आ स्मृतिमे वीरता निर्माणक प्रक्रिया देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा २९ · अन्तिम भोजन

देवकी देवी अपन सम्पत्तिक एक हिस्सा बालिका विद्यालय केँ देबाक विचार प्रकट करैत छथि। परिवारमे मतभेदक बाद एक भोजनक राति हुनकर मृत्यु भऽ जाइत अछि, आ चटनीमे विषक अंश भेटलासँ सन्देह गहिराइत अछि। खाद्य-सामग्रीक दूषण, औषधि, स्वास्थ्य, उत्तराधिकार आ पारिवारिक झगड़ाक प्रश्न जाँचमे उठैत अछि; मुदा अपराधक निर्णायक साक्ष्य नहि भेटैत। परिवार बादमे बाग, घर, गोदाम आ अन्य अधिकारक समझौता करैत अछि। वर्षों बाद पुनः भोजन पर बैसला परो देवकीक खाली कुर्सी रहैत अछि। अनुत्तरित मृत्यु पर जीवित लोक अपन-अपन कारण थोपैत छथि, मुदा सभ कारण पूर्ण सत्य नहि बनैत।

कथा ३० · कवि आ राजा

शोधार्थी ईरा झा केँ सोनवर्षा दरबारसँ कवि हरिनाथक निर्वासनक कारण खोजैत विरोधी वृत्तान्त भेटैत छनि। कविता, पत्र, प्रतिद्वन्द्वीक शिकायत आ राजकीय आदेश अलग-अलग अर्थ दैत अछि। एक पुरान मसौदासँ ज्ञात होइत अछि जे दरबारमे अनेक आरोप विचाराधीन छल, मुदा राजा ककरा सत्य मानलनि, ई निश्चित नहि। ईरा घटना आ ओकर बादक व्याख्याक भेद स्पष्ट करैत छथि। ओ देखबैत छथि जे सत्ता ककर कथा सबसँ बेसी सुनाइ देत, से प्रभावित करैत अछि; मुदा तथ्यक प्रतिरोधक कारण इतिहास मनमाना नहि। कविक निर्वासन अर्थक स्वामित्व पर संघर्षक रूप लऽ लैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३१ · दुर्घटनाक मोड़

नवलखा मोड़ पर गाड़ी आ साइकिलक टक्करमे अनिल मिश्र घायल होइत छथि। निगरानीक यन्त्रमे दुर्घटनाक निर्णायक एगारह सेकण्ड अनुपस्थित अछि, तेँ चालक सुरेश, साक्षी कमली आ आन लोकक कथन पर विवाद बढ़ैत अछि। समाचार आ अफवाह अधूर दृश्य केँ अपन सुविधा अनुसार भरैत अछि। जाँचमे सड़कक बनावट, ठाढ़ वाहन, संकेत, गति आ देखबाक सीमाक संयुक्त भूमिका उभरैत अछि। बादमे मोड़ पर सुरक्षा-सुधार होइत अछि, मुदा छुटल एगारह सेकण्ड नहि भेटैत। कथा प्रमाणक रिक्त स्थानक प्रति सावधानी आ व्यक्ति-विशेष पर समस्त दोष थोपबाक सीमाक उद्घाटन करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३२ · झूठक पुरस्कार

कथाकार अरुणेश मिश्रक पुरस्कृत ‘माटिक आवाज’ कथा लेल मौलिकताक विवाद उठैत अछि। बाढ़ि-पछात लोकगीत, स्रोत-पाठ आ सम्पादकीय सामग्रीक श्रेयक प्रश्न सँ लेखक, सम्पादक आ शोध-सहायक सभक भूमिका जाँचक विषय बनैत अछि। पुरान लेखनमे अरुणेश स्वयं सेहो उद्धरणक एक चूक स्वीकार करैत छथि। सार्वजनिक विमर्शमे ‘निर्दोष महान लेखक’ आ ‘चोर लेखक’क एकतरफा कथासभक बदला प्रभाव, अनुवाद, स्मृति आ साझा श्रमक सम्बन्ध सामने अबैत अछि। पुरस्कारक संग स्रोत-सूची आ भूलक स्वीकारोक्ति राखि अरुणेश बुझैत छथि जे दोसरक योगदान पहचानब रचनाक निजत्व कम करब नहि अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३३ · गामक आगि

सिमरियाक दक्षिण टोलामे सुगिया देवीक घर जरि जाइत अछि। तारक चिनगारी, चूल्हाक राखि, जरल पात आ जमीन-विवादसँ जुड़ल आगजनी—गाममे अनेक अनुमान पसरैत अछि। जाँच पहिल चिनगारीक निश्चित स्रोत नहि खोजि पबैत, मुदा आगि जल्दी पसरबाक कारणमे खराब तार, सँकरा बाट, पानिक अभाव आ राहतक देरीक भूमिका स्पष्ट होइत अछि। सुगियाक पोती रूपा एहि अनुभव पर निबन्ध लिखैत अछि, जाहिमे दोषी खोजबाक संग व्यवस्था सुधारबाक आग्रह अछि। सुगिया याद दिअबैत छथि जे लोकक आवाजो असमान रूपेँ सुनाइत अछि। कथा आपदा आ सामाजिक शक्तिक संयुक्त सन्दर्भ देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३४ · नदीक पार

कमला नदीक पानि घटला पर पत्थरक पुरान सीढ़ी-जेकाँ अवशेष बाहर अबैत अछि। एक समूह ओकरा मन्दिर, दोसर बौद्धकालीन घाट, तेसर जैन परम्पराक स्थल मानैत अछि। शोधकर्ता आ स्थानीय नाविकसभक साक्ष्य जाँचला पर पता चलैत अछि जे स्थल अनेक कालमे पारावार, व्यापार, पूजा आ यात्रासँ जुड़ल रहल हो सकैत अछि, मुदा एकल धार्मिक परिचय प्रमाणित नहि। नव पुल बनैत अछि, तइयो नावक यात्रा चलैत रहैत अछि। नदी पार करैत अनामिका अनुभव करैत छथि जे ‘एहि पार’ आ ‘ओहि पार’ देखनिहार पर निर्भर अछि; नदीक साझा इतिहास एक दावामे बन्द नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३५ · राजमिस्त्रीक गिरावट

समृद्धि सदनक निर्माण-स्थल पर राजमिस्त्री बुधन सदा मचानक टूटल बाँस आ भीजल जोड़क खतरा पहिने बतबैत छथि। प्रभावी रोक नहि लगला पर ओ जोखिमपूर्ण मचान पर चढ़ैत छथि आ दुर्घटना होइत अछि। प्रबन्धक, अभियन्ता, मुंशी आ मजदूरक निर्णयक अलग-अलग भूमिका जाँचमे खुलैत अछि। मजदूरक ‘स्वेच्छा’ केँ रोजी-रोटी आ शक्ति-सम्बन्धसँ अलग कऽ नहि बुझल जा सकैत। दुर्घटनाक बाद निरीक्षण, लिखित रोक आ सुरक्षा-पर्यवेक्षणमे बदलाव अबैत अछि। बुधनक परिवारक पीड़ा नहि मिटैत, मुदा सामूहिक जिम्मेवारी कहबाक अर्थ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व मिटेनाइ नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३६ · पुरान तस्वीर

घर खाली करैत नीलम झा केँ एक पुरान छायाचित्र भेटैत छनि, जाहिमे बीचक युवक केँ अलग-अलग परिवार अपन-अपन पुरखा वा सम्बन्धी मानैत अछि। छायाचित्रक अनेक प्रति, पाछाँ लिखल नाम, पुरान यात्रा आ पारिवारिक स्मृति जाँचला पर पहचानक उलझन बढ़ैत अछि। नीलम बुझैत छथि जे एक छायाचित्र अनेक घरमे पहुँचि सकैत अछि आ बादक पीढ़ी ओकरा अलग नाम देबैत अछि। छायाचित्र व्यक्ति उपस्थित हेबाक संकेत दैत अछि, मुदा नाम, नाता आ परिस्थिति स्वयं नहि बतबैत। अन्तमे ओ पाछाँक प्रश्नचिह्न मेटैत नहि छथि; अनिश्चितता केँ प्रमाणक ईमानदार हिस्सा मानैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ३७ · रातिक आवाज

पुरान हवेली बिकबाक आगाँक राति झा परिवारक लोक अन्हारमे रहस्यमय आवाज सुनैत छथि। ककरो ओ पुकार जेकाँ लगैत अछि, ककरो बितल सम्बन्धीक नाम; परिवारक पुरान मौन आ अपराधबोध जागि उठैत अछि। नचिकेत आवाजक मार्ग जाँचैत छथि आ घरक भीति, गली आ दालानक बनावट सँ ध्वनि बदलबाक सम्भावना पबैत छथि। मुदा एक्के आवाजमे सभ गोटे अलग शब्द किएक सुनलनि, तकर उत्तर केवल ईंटमे नहि भेटैत। हवेली टूटला पर ध्वनि बदलि जाइत अछि, स्मृति नहि। कथा सुनल अनुभवमे घरक बनावट आ मनक इतिहास दुनू योगदान देखबैत अछि।

कथा ३८ · ककर दोष

विद्यालयक पन्द्रह बरखक छात्र आदित्यक मृत्यु भेलापर समाचार आ सन्देश-समूहसभमे शिक्षक, पिता आ मित्रक नाम दोषी रूपमे घुमय लगैत अछि। दैनिकी, शैक्षणिक दबाव, अपूर्ण परामर्श-व्यवस्था आ सहपाठीक व्यवहार जाँचक विषय बनैत अछि। जाँच ककरो एक व्यक्तिकेँ मृत्यु कारण नहि ठहरबैत, मुदा शिक्षकक सार्वजनिक टिप्पणी, सहायता-व्यवस्था आ संवादक कमीक सुधार आवश्यक बतबैत अछि। शोकग्रस्त परिवार बुझैत अछि जे दोष आ जिम्मेवारीक प्रश्न अलग होइत अछि। कथा आगाँक विद्यार्थीक मौन सँ सावधानीपूर्वक संवाद करब आ समय पर सहायता देबाक सामूहिक दायित्व पर केन्द्रित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथा ३९ · मखानक गन्ध

नव घरमे मखान भुजैत माधवी केँ अपन मायकेक रसोई आ माएक आवाज याद अबैत अछि। सासुरक भोजनमे माएक बताओल ढङ्ग अपनबैत ओ पहिने संकोच अनुभव करैत छथि, मुदा सासुजी ओ स्वाद केँ सम्मान दैत छथि। मायकेसँ आयल मखानक डिब्बा परिवार आ पड़ोसक बीच बाँटल जाइत अछि। धीरे-धीरे एक घरक सीख दोसर घरक दिनचर्यामे समा जाइत अछि। माधवी अनुभव करैत छथि जे मायकेक स्मृति बचाबय लेल सासुरसँ दूरी आवश्यक नहि, आ सासुरमे अपन ठाम बनयबाक लेल पुरान गन्ध मेटेबाक आवश्यकता नहि। मखानक गन्ध स्मृति आ नव अपनत्वक सम्बन्ध बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४० · पीयर फूल

अनामिका घरेलू श्रमिक सुशीलाक बेटी छथि आ रेवती चौधरीक घरक बगैचामे काज करैत छथि। बगैचाक छोट पीयर फूल सँ हुनकर विशेष लगाव अछि, मुदा घरक सौन्दर्यक प्रशंसामे हुनकर श्रम आ नाम प्रायः ओझर रहैत अछि। छायाचित्र-प्रदर्शनी आ बगैचाक देखभालक अनुभव हुनका अपन परिचय, वेतन आ निर्णयक अधिकार पर सोचबाक प्रेरणा दैत अछि। ओ जिम्मेवारी लिखित करबैत छथि आ अपन श्रम कैँ अदृश्य नहि रहय दैत छथि। अन्तमे छायाचित्रमे फूलक बदला हुनकर चेहरा आ माटि लगल हाथ स्पष्ट देखाइत अछि। पीयर फूल श्रमक गरिमा आ आत्मस्वीकृतिक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४१ · दुपहरियाक मेज

प्रभा झाक घरमे चारि पुरान सहेली दुपहरियाक भोजन पर जुटैत छथि। पुरान आत्मीयता आ सहज बातचीतक बीच आय, पेशा, घरक काज आ सामाजिक हैसियतक असमानता धीरे-धीरे उभरैत अछि। घरेलू श्रमिक रमा आ हुनकर बेटी काजलक उपस्थिति भोजन-कक्षक अदृश्य व्यवस्था केँ दृश्य बना दैत अछि। सहेलीसँ भेटल सलाह, छात्रवृत्तिक प्रक्रिया आ छोट सहायताक प्रस्तावक अर्थ प्रत्येकक स्थितिसँ बदलैत अछि। प्रभा अपन घरक काजक समय आ अधिकार पर फेर विचार करैत छथि। कथा आत्मीय मेज पर राखल हँसीक नीचाँ सेहो श्रम, वर्ग आ अवसरक असमान निशान देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४२ · काजर

इतिहास शिक्षिका बनि विद्यालय जाएबाक पहिल दिन ईरा अपन आँखिमे काजर लगबैत छथि। दादी शारदा देवी हुनका काजरक रेखा खींचि दैत अपन युवावस्थाक शिक्षक-प्रशिक्षणक अधूर प्रयास याद करैत छथि। एहि बातचीतमे दू पीढ़ीक आशा, छूटल अवसर आ अपन बाट चुनबाक साहस उजागर होइत अछि। ईरा गेलाक बाद शारदा वर्षों बाद अपन आँखिमे काजर लगबैत छथि। रेखा एक दिस कने टेढ़ रहितो ओ ओकरा मेटैत नहि। कथा देखबैत अछि जे नव पीढ़ीक आरम्भ पुरान पीढ़ीक भीतर सेहो अपन वर्तमान अस्तित्वक चेतना जगाबि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४३ · नव परदा

आरती झा बैठकमे झीना नव परदा लगबैत छथि आ पुरान परदा घरेलू श्रमिक सविता कें दऽ दैत छथि। सविता अपन छोट घरक नाप अनुसार भारी परदा काटि लगबैत छथि; हुनका लेल ओकर महत्त्व सजावटक संग हवा आ निजीपन सेहो अछि। आरतीक घरमे नव परदाक चित्र बनैत समय सविताक हाथ अनचाहल रूपमे छविमे आबैत अछि। बादमे आरती हुनकर उपस्थिति कें हटयबाक बदला स्वीकार करैत छथि। सविता अनुभव करैत छथि जे परदा केवल ढाकबाक वस्तु नहि; एकर अर्थ ईहो अछि जे कोन जीवनक दृश्य देखबैत छी आ ककर श्रम अदृश्य बनबैत छी।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४४ · सुगन्ध

दिल्लीमे रहनिहार नीलिमा केँ सहकर्मी देल एक सुगन्धित शीशी अचानक पिपरा गामक पुरान आँगन याद दिअबैत अछि। ओ बेराबेरी ओ गन्ध लगबैत छथि, मुदा प्रत्येक बेर अलग दृश्य उभरैत अछि—कखनो विद्यालय, कखनो विवाह, कखनो अस्पताल, आ कखनो किछुओ नहि। माएक बीमारीक समय गाम घुरलापर ओ वर्तमान आँगनक अपन गन्ध अनुभव करैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे स्मृति ककरो शीशीमे बन्द स्थिर घर नहि, बल्कि वर्तमान मन आ देहक संग बदलैत अनुभव अछि। अन्तमे ओ अतीत खोजबाक बदला वर्तमानक गन्धो स्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४५ · चाँदीक कटोरी

मंजरी देवीक घरमे चाँदीक कटोरीसभ विशेष अतिथि लेल सुरक्षित राखल जाइत अछि। कटोरीक देखभालक जिम्मेवारीक नाम पर ओ घरक श्रमिक पार्वती पर भरोसा नहि करैत छथि। बहू सुमेधा आ रोजक व्यवहारक बीच मंजरी अपन माएक समयसँ आयल अविश्वासक परम्परा पर विचार करैत छथि। वस्तुक मूल्य आ व्यक्ति पर भरोसाक प्रश्न अलग अछि, ई बुझैत ओ पार्वती केँ कटोरी सम्हारबाक अधिकार दैत छथि। एहि छोट बदलावमे घरक कामक मर्यादा आ श्रमिकक प्रति दृष्टि बदलबाक संकेत अछि। चाँदीक चमक सँ बेसी महत्त्व ओहि अविश्वासक कम होएबक अछि जे वर्षों सँ कटोरीक संग सँचारित होइत रहल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४६ · बाल सुकबैत

बरखा थमलापर किरण आ पैघ बहिन मृणालिनी छत पर बाल सुकबैत विवाह आ स्वतंत्रताक बात करैत छथि। किरणक विवाहक प्रस्ताव आयल अछि, मुदा ओ अपन सहमति देबासँ पहिने नौकरी, निवास आ निर्णयक अधिकार स्पष्ट करय चाहैत छथि। मृणालिनी अपन विवाहमे परिवारक ‘हँ’ केँ अपन ‘हँ’ मानि लेबाक अनुभव बाँटैत छथि। बहिनक सहयोगसँ किरण अभिषेकसँ अलग बातचीत करबाक अवसर पबैत छथि, मुदा भेटक बादो तुरन्त निर्णय नहि लैत छथि। आधा भीजल बाल जेकाँ ई अनिर्णीत अवस्था अपूर्णता नहि, अपन समयमे निर्णय बनबाक स्वाभाविक प्रक्रिया ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४७ · सफेद फूल

मौसी सुषमा देवीक अन्त्येष्टि सँ घुरैत रागिनी केँ बाटक सफेद फूल सुन्दर लगैत अछि, आ शोकक बीच सौन्दर्य देखबाक कारण अपराधबोध होइत अछि। माए अपन पुरान शोकक अनुभव सुनबैत बुझबैत छथि जे शरीरक अनुभूति आ मोनक दुःख सदा एक्के लयमे नहि चलैत। रागिनी मौसीक पसिन्न नारंगी फूल आनैत छथि आ ओहि समय रोअय लगैत छथि। बादमे जीवित फूल, मौसीक हँसी आ आँखिक नोर एक संग स्मृतिमे अबैत अछि। कथा शोकक लेल एकटा निश्चित व्यवहारक नियम मानबाक बदला भावक सहअस्तित्व स्वीकार करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४८ · छोट पार्टी

धनी घरक ‘छोट पार्टी’मे पन्द्रह बरखक सोनाली अपन माए सुशीला संग सहायता करय अबैत अछि। जन्मदिनक सजावट आ उपहारक बीच सोनाली बच्चासभक आनन्द देखैत छथि, मुदा अपन आ माएक श्रमक कारण ओहि दुनियासँ दूरी सेहो अनुभव करैत छथि। चित्र बनयबाक रुचि राखनिहार सोनाली पार्टीक दृश्य बनबैत छथि, जाहिमे रसोई, झाड़ू, पानि आ श्रमिकक हाथक स्थान केक आ गुब्बारासँ कम नहि। घरक मालिकिन हुनकर काजक अलग पारिश्रमिक दैत छथि। सोनाली बुझैत छथि जे उत्सवक आकार ओहि लोकक श्रमसँ सेहो निर्धारित होइत अछि जे प्रायः दृश्यसँ बाहर राखल जाइत छथि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ४९ · रेशमी दुपट्टा

इतिहास शिक्षिका सुधा अपन लेल बैंगनी रेशमी दुपट्टा किनैत छथि, मुदा विद्यालयमे भेटल एक पुरुष सहकर्मीक टिप्पणीक बाद ओकरा पहिरबासँ संकोच करय लगैत छथि। बेटी ईशानी संग बातचीत हुनका दोसरक दृष्टिक बदला अपन पसिन्न पर भरोसा करबाक साहस दैत अछि। फेर दुपट्टा पहिरलापर प्रशंसा आ साधारण दिनचर्या दुनू ओकर संग जुड़ैत अछि। कक्षामे चॉकक दाग पड़ला पर सेहो सुधा ओकरा अनिष्ट नहि मानैत छथि। दुपट्टा आब केवल बजारक सुन्दर वस्तु नहि, अपन देह, काज, बेटी आ अनुभवक संग जीयल वस्तु बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५० · खिड़कीक वर्षा

वर्षाक एक दुपहरिया रमा पति अरविन्द सँ अपन लेल चाह बनयबाक आग्रह करैत छथि। सामान्य जेकाँ लगैत एहि आग्रहसँ घरमे बरखों सँ बनल काज-विभाजन आ रमा छोड़ि देल शिक्षण-पेशक बात खुलैत अछि। अरविन्द स्पष्ट रोक कखनो नहि लगौने छलाह, मुदा घर, बच्चा आ जिम्मेवारीक चिन्ता रमा कैँ लगातार पाछाँ धकेलने छल। संवादक बाद रमा पुरान प्रमाणपत्र निकालि पड़ोसक बच्चासभ पढ़ेनाइ आरम्भ करैत छथि। अरविन्द सेहो सहयोग करय सीखैत छथि। दोसर वर्षाक दिन रमा चाह अस्वीकार करबो सहज अनुभव करैत छथि। कथा विवाहमे सुनबाक आ उत्तर लेल स्थान छोड़बाक महत्त्व बतबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५१ · नींबूक स्वाद

बीमार देवकी देवी केँ बेटी संध्या नींबूक रस दैत छथि आ अचानक बचपनमे माएसँ सुनल वैह आदेश अपन मुँहसँ निकलि जाइत अछि। देखभालक भूमिका उलटला सँ दुनू पीढ़ीक बीच स्नेहक संग असहजता सेहो अबैत अछि। माए अपन काज स्वयं करय चाहैत छथि, जखन कि बेटी हुनका बचेनाइ चाहैत छथि। धीरे-धीरे संध्या बुझैत छथि जे देखभालक अर्थ सब निर्णय अपना हाथमे लेनाइ नहि; दोसरक सामर्थ्य स्वीकार करब सेहो अछि। घुरबाक समय माए बेटी केँ नींबू दैत छथि। ओकर बदलैत खट्टापन स्मृति आ सम्बन्धमे समयक बदलल अनुपातक अनुभव करबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५२ · गुलाबी कप

कार्यालयमे एक गुलाबी कप माधवीक रोजक चाह आ पाँच मिनटक निजी विश्रामसँ जुड़ि गेल अछि। कप कखनहुँ दोसरक हाथमे देखला पर हुनका अपन छोट पसिन्नक अवहेलना बुझाइत अछि। नव सहकर्मी आ प्रशिक्षु संग बातचीत सँ ओ निजी चाहत, साझा वस्तु आ स्पष्ट अधिकारक भेद बुझैत छथि। समीरा अपन कप पर नाम लिखैत अछि; माधवी गुलाबी कप पर नाम नहि लिखैत छथि, कारण आब ओ अपन पसिन्न स्पष्ट कहि सकैत छथि। एक दिन उज्जर कपमे चाह पीबितो पाँच मिनट हुनके रहैत अछि। कथा आत्मसम्मान केँ वस्तुक एकाधिकारक बदला अपन आवश्यकता कहबाक क्षमतासँ जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५३ · धूपक गन्ध

कमला देवी पुरान बक्सासँ मृत पैघ बहिन मंजरिक बैंगनी साड़ी निकालि धूपमे पसारैत छथि। साड़ीक गन्ध हुनका बहिनक हँसी, छोट झगड़ा आ अधूर स्मृति याद दिअबैत अछि। बहूक कहला पर कमला पहिल बेर साड़ी स्वयं पहिरैत छथि। दिनभरि उपयोगक बाद कपड़ामे पुरान गन्धक संग वर्तमान देहक गन्ध मिलि जाइत अछि। ओ बुझैत छथि जे स्मृति एकदम अपरिवर्तित चीज नहि, आ किछु सम्बन्धक अधूर वाक्यक समाधान आवश्यक नहि। साड़ी बक्साक अन्हारमे फेर बन्द करबाक बदला ओ आलमारीमे टाँगि दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५४ · कानक बाली

घरेलू श्रमिक गौरी अपन बचतसँ छोट सुनहला बाली खरीदैत छथि। मालिकिन सुधा देवी पहिने आश्चर्य करैत छथि जे गौरी अपन लेल एहन वस्तु कोना किनलनि, मुदा बातचीत सँ अपन पूर्वधारणा पहचानैत छथि। गौरीक सहज उत्तर अछि जे बाली हुनका पसिन्न छल। सुधा केँ अपन पहिल तनखाहक चाँदीक बाली आ ओहि समयक पारिवारिक टिप्पणी याद अबैत अछि। दुनू स्त्री अपन पसिन्नक अधिकार साझा करैत छथि, मुदा हुनकर आर्थिक स्थिति आ घरक शक्ति-सम्बन्ध समान नहि भऽ जाइत। कथा श्रमिक केँ केवल अभावक प्रतीक बना देबाक बदला ओकर स्वतंत्र रुचि आ व्यक्तित्व देखबाक आग्रह करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५५ · लाल नेलपॉलिश

रुचिका सहेली सँ भेटल लाल नेलपॉलिश अपन नखमे लगबैत छथि, जाहि सँ घरमे पैघ होएब, मर्यादा आ व्यक्तिगत पसिन्न पर विवाद उठैत अछि। माए-पिताक संकोच आ दादीक सहज समर्थनक बीच रुचिका अपन निर्णयक अधिकार समझय लगैत छथि। दादी स्वयं नख रंगबैत छथि, आ धीरे-धीरे माए सेहो रंग चुनैत छथि। परिवारक व्यवहारमे छोट परिवर्तन अबैत अछि। बादमे रुचिका एक दिन नख बिना रंग रखने प्रसन्न रहैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे स्वतंत्रताक अर्थ केवल अपन मनसँ रंग लगेनाइ नहि, मन नहि भेलापर नहि लगेनाइ सेहो अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५६ · झीना परदा

शल्यक्रिया बाद अस्पतालक कक्षमे अनामिका आ दोसर रोगिणी सरिताक बीच झीना परदा लटकल अछि। परदा आवाज आ छाया नहि रोकैत, मुदा दुनू स्त्रीक बीच एक आवश्यक मर्यादा बनबैत अछि। ओ एक-दोसरक चिन्ता अनुभव करैत छथि, तइयो निजी बीमारीक विवरण जबरदस्ती नहि पूछैत। विदाइक समय छोट शुभकामना पर्याप्त होइत अछि। घर घुरलापर अनामिका बेटी केँ सरिताक निजी बात नहि सुनबैत छथि। कथा देखबैत अछि जे सहानुभूति सदिखन गहिर प्रश्नसँ बनैत नहि; कखनो सुनि सकबाक बादो हस्तक्षेप नहि करब निजताक असल सम्मान अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५७ · इलायची

हरिनारायण झा चालीस बरख सँ पत्नी सुधाक इलायचीवाली चाह पर शिकायत करैत छथि। सुधा बाहर गेलाक बाद ओ अनुभव करैत छथि जे चाहक परिचित स्वादमे किछु कमी अछि। पुरान स्मृति, खर्चक पर्ची आ पति-पत्नीक बातचीत सँ पता चलैत अछि जे रुचि आ शिकायत दुनू समयक संग आदत बनि गेल छल। सुधा घुरला पर दुनू अलग-अलग इलायचीक मात्रा चाहबाक बात खुलि कऽ कहैत छथि, आ अन्ततः अपन कप बदलि लैत छथि। एहि छोट अदला-बदलीमे दाम्पत्यक गहिर बात उभरैत अछि—भूमिका, स्वाद आ पसिन्न स्थिर नहि रहैत; संग रहबामे फेर-फेर सुनब आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५८ · फूलदान

शैलजा देवीक घरमे पुरान काँचक फूलदान टूटला पर परिवारक लोक एक-दोसर पर दोष लगाबय लगैत छथि। आठ बरखक ईरा वस्तुक टूटन, मेजक डगमगाहट आ मुरझाएल फूलक अलग-अलग पक्ष देखैत अछि, जखन कि दादीक लेल फूलदान पचास बरखक इतिहास अछि। परिवार टूटल टुकड़ा जोड़ैत अछि आ मेजक पाँव सेहो सुधारैत अछि। जोड़ल फूलदानक उपयोग पहिने जेकाँ नहि रहैत, मुदा ओकर महत्त्व समाप्त नहि होइत। बच्ची बुझैत अछि जे प्रत्येक व्यक्ति दृश्यक एक हिस्सा देखैत अछि; दादी, माए आ बच्चाक अनुभव जोड़ला परो सब किछु एक्के नजरिमे नहि समाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ५९ · सूखल कमला

अठहत्तर बरखक कथावाचक अपन दिवंगत भाइ गोपी कें मनमे सम्बोधित करैत सूखल कमला नदीक पुरान धार लग घुरैत छथि। बदलल खेत, बाँध, घर आ लोकक बीच हुनका भाइ संग बिताओल जीवन टुकड़ा-टुकड़ामे याद अबैत अछि। स्थानीय युवकसभक वर्तमान जानकारी हुनकर पुरान स्मृतिकें पूरा करैत सेहो अछि आ प्रश्नो उठबैत अछि। ओ बुझैत छथि जे पुरान धार सूखल होइतो पूरी नदीक अस्तित्व समाप्त नहि, मुदा जे सचमुच नष्ट भेल, ओकरा बाँचल कहि देब उचित नहि। भाइकें मनमे विदा दैत कथावाचक स्वीकार करैत छथि जे अन्ततः पयर जीवित कें उठेबाक होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६० · बालुकाक घर

सुभद्रा देवी परिवार संग कोसीक बालुकामे अपन बिला गेल पुरान गामक ठाम खोजय अबैत छथि। बेटा प्रभाकर, बेटी कावेरी आ नातिन मीता सामने अलग-अलग आकारक आँगन, दुआर आ गाछ याद करैत छथि। बालुकापर बनल घरक रेखासभ बारम्बार बदलिएत अछि; कियो अपन स्मृतिकेँ सर्वमान्य नकाशा नहि बना पबैत। सुभद्रा नातिन केँ कथा स्मरण रखबाक आदेश नहि दैत छथि, केवल जतेक स्वयं मोन रहय ओतेक बचयबाक कहैत छथि। घुरैत समय परिवार बालुका या ईंट नहि लऽ जाइत, मुदा घरक अनेक रूप हुनकर भीतर रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६१ · बाँसक आवाज

पुरान घर बेचबाक पहिने एक राति बितबैत शिवनाथ केँ बाँसक रगड़ाहटमे दिवंगत बाबूक लाठीक आवाज सुनाइ पड़ैत अछि। एहि ध्वनिसँ हुनकर मृत्यु-रातिक पछतावा जागैत अछि—ओ बाबूक दूरभाष जानि-बुझि नहि उठौने छलाह। पत्नी नीलम सँ ई बात कहला पर शिवनाथ पहिल बेर वर्षोंक भार बाँटैत छथि। बहिन आ परिवारक संग घर, बाँस आ लाठीक भविष्य पर बातचीत होइत अछि। ओ बुझैत छथि जे बाँसक आवाजक अपन भौतिक कारण अछि आ अपराधबोधक अपन इतिहास। दुनू केँ एक बनाबय बिना सेहो बाबूक स्मृति सँ जुड़ल रहल जा सकैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६२ · धूलिक पगडंडी

पैंतीस बरख बाद गाम लौटल दिवाकर केँ अपन पुरान पगडंडी पहिचानमे नहि अबैत, मुदा लोक हुनकर बाबू शशिभूषण मिश्रक नाम चिन्हैत अछि। बाटमे भेटल वृद्ध, महिला आ किशोरसभ अलग-अलग सम्बन्ध, श्रम आ छोट स्मृति सुनबैत छथि। दिवाकर बाबूक एहन रूप जानैत छथि जे पारिवारिक स्मृतिमे अनुपस्थित छल—ककरो नाम लिखब सिखेनिहार, ककरो बाट बतौनिहार। ओ अनेक लोकक नाम कापीमे लिखैत छथि, मुदा सूची केँ पूर्ण इतिहासक शीर्षक नहि दैत। पगडंडी चलैत रहैत अछि आ ओकर स्मृति निरन्तर बदलैत; नाम गामक साझा व्यवहारमे सेहो जीवित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६३ · खाली पोखरि

नरेश गाम घुरि पबैत छथि जे बचपनक पोखरि पूरा सुखा गेल अछि। घाट पर बैसल वृद्धसभ ओकर भीतरक पुरान डूबन, खेल आ लोकक नाम एखनहुँ वर्तमान कालमे सुनबैत छथि। नरेश अलग-अलग कथाक मेल खोजैत छथि, मुदा ककरो स्मरण अधूर होएत तऽ ओकरा पक्का तथ्य नहि बनबैत छथि। बालक अनमोल सूखल तल्लामे चलैत ओही पुरान घटना पर प्रश्न करैत अछि। पोखरि आब पानिक बदला पयरबाट बनल अछि, मुदा गामक बोलीमे ओकर पुरान पानि बाँचल अछि। कथा स्थानक भौतिक परिवर्तन आ भाषामे बचल जीवनक सहअस्तित्व देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६४ · कटान

कमला नदीक कटान रामलोचनक परिवारक पुरान समाधिसभक नजदीक पहुँचि जाइत अछि। पोता अविनाश नाप-पट्टी सँ घटैत जमीन देखैत अछि, जखन कि रामलोचन पुरखा-स्मृति आ स्थानक मर्यादा बचयबाक चिन्तामे छथि। बचावक उपाय सीमित होइत अछि; परिवार नाम, पुरान ईंट आ जतेक सम्भव ततेक सामग्री सुरक्षित ठाम लऽ जाइत अछि। नदीक पुरान मोड़ फेर बदलला पर समाधिक ठीक ठाम निश्चित नहि रहैत। परिवार अनुमान कैं श्रद्धाक नाम पर तथ्य नहि बनबैत। कथा देखबैत अछि जे कटान माटिक संग निश्चितता सेहो हरैत अछि, मुदा स्मृतिक प्रति ईमानदारी सम्भव रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६५ · माटिक गन्ध

शहरक पहिल बरखामे उठल भीजल माटिक गन्ध सुधांशु कें दिवंगत माएक अनेक स्मृति याद दैत अछि। एहि स्मृतिमे स्नेहक संग पुरान झगड़ा, पछतावा आ अन्तिम समयक अधूर प्रश्न सेहो अछि। बहिन शोभा संग बातचीत सँ ओ बुझैत छथि जे एक्के माएक जीवन दुनू कें अलग-अलग रूपमे मोन अछि। सुधांशु माटिक गन्ध कें हूबहू माए मानबाक बदला स्मृतिक एक सम्भावित दुआर मानैत छथि। जे घटना निश्चित नहि, ओकरा कल्पनासँ भरबाक बदला ओ खाली छोड़ैत छथि। अन्तमे बरखा बिना सेहो माए याद अबैत छथि—स्मृति अपन आरम्भिक गन्धसँ स्वतंत्र भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६६ · बिना छत घर

अठारह बरख बाद गाम घुरल घरेश्वर झा अपन पैतृक घरक छत उड़ल देखैत छथि। घरक मरम्मत, जमीनक कागज आ बेचबाक सम्भावनाक संग पुरान मित्र, शिक्षक आ पड़ोसिक समाचार हुनका भेटैत जाइत अछि। अनेक परिचित लोकक मृत्यु आ बदलल जीवनसँ ओ जानैत छथि जे व्यापारमे व्यस्त रहैत गामक बात पूछनाइ छोड़ि देने छलाह। घरेश्वर पूरा घर तात्कालिक रूपेँ नव नहि बनबैत छथि; पहिने एक कमरा बचबैत, फाटक सुधारैत आ देखभालक व्यवस्था करैत छथि। दूर रहितो ओ घरक वर्तमान हाल पूछनाइ सीखैत छथि। बिना छतक घर अनुपस्थित अतीतक संग जीवित सम्बन्धक अधूर, मुदा सम्भव रूप बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६७ · नदी बोलल

बागमतीक वृद्ध नाविक जतन सहनी कहैत छथि जे नदी लोकक नाम पुकारैत अछि। घाटक लोक एहि बात केँ रहस्य, कल्पना आ बूढ़ कानक भूल—अनेक रूपमे सुनैत अछि। जतन स्वयं नदीक आवाजमे कखनो मृत लोकक नाम, कखनो अपन नामक आशंका अनुभव करैत छथि। पत्नी देवकी संग बातचीत आ रोजक नाविक-जीवन हुनका ध्वनि, भय आ कथाक भेद बुझबैत अछि। नदी नाम लेलक कि नहि, एकर निर्णायक प्रमाण नहि। अन्तमे जतन अस्पष्ट ध्वनिकेँ निश्चित पुकार घोषित नहि करैत, आ डर रहितो जीवनक सामान्य काज चलबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६८ · धसान

रातिक धसानमे कौशल्या देवीक पुरान घरक आँगन धँसि जाइत अछि। परिवार सुरक्षित स्थान पर जाएबाक संग घरक बनावट, तुलसी चौरा, खाट आ पुरान वस्तुक ठाम याद करैत अछि। दिनेश, राघव, सरोज आ मीरा सभक स्मरण अलग-अलग अछि; कौशल्या सेहो समय अनुसार बदलाव स्वीकार करैत छथि। घरक किछु हिस्सा बचाओल जाइत अछि आ नब घर बनैत अछि। मीरा पुरान आ नव स्मृति अलग-अलग लिखैत छथि, कोनो पुरान कथन मेटैत नहि। कथा देखबैत अछि जे घरक भौतिक धसानक बाद स्मृतिमे घर फेर बनैत अछि, मुदा स्मृति धँसल जमीन भरबाक माटि नहि बनि सकैत।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ६९ · कासक मैदान

तारामणि कासक मैदानमे एक बच्चीक पुकार सुनि अपन बहुत पहिने गुम भेल फुलिया कैं मोन करैत छथि। गाममे आवाजक स्रोत आ फुलियाक अन्तिम दिन पर अलग-अलग अनुमान उठैत अछि, मुदा निर्णायक उत्तर नहि भेटैत। भतीजी नीलिमा संग बातचीतमे तारामणि स्वीकार करैत छथि जे हर बच्चीक आवाज कैं फुलिया बनाबि देनाइ उचित नहि। कासक मैदानक बदलल रूपमे सेहो गुम व्यक्तिक निश्चित निशान नहि बाँचल अछि। तारामणि फुलिया कैं कखनो बच्ची, कखनो सम्भावित वृद्धा, कखनो केवल नामक रूपमे स्मरण करैत छथि। कथा गुमशुदगीक अनुत्तरित दुःख कैं झूठा अन्त देबाक बदला ओकर अधूरापन स्वीकार करैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७० · तिरहुतक धूलि

चौरासी बरखक गाड़ीवान जगेसर तिरहुतक बाट दूरीक पत्थर सँ नहि, अपन बैलगाड़ी पर कखनो यात्रा कएने दिवंगत लोकक नामसँ नापैत छथि। नातिन मुनिया हुनका संग चलैत पुरान यात्रीसभक छोटी-छोटी स्मृति सुनैत अछि, जकर किछु नाम बचल अछि, किछु आवाज मात्र। सड़क पक्का होइत अछि आ समयक संग गाड़ी बदलैत अछि। परिचित जाहिदक निधन भेलापर जगेसर ओकर नाम सेहो बाटमे जोड़ैत छथि। मुनिया अपन नाम गिनबाक प्रश्न करैत अछि, तखन दादा कहैत छथि जे जीवितक नाम गिनल नहि, पुकारल जाइत अछि। कथा मृत स्मृति आ वर्तमान सम्बोधनक भेद स्थापित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७१ · तीन कब्र

नदीक कटान सँ नसीमक परिवारक परदादा, दादा आ पिता—तीन पीढ़ीक कब्र एक-एक कऽ गुम भऽ जाइत अछि। नसीम, रुबीना, जैनब बीबी आ आलिया पुरान कब्रक ठाम खोजैत, अलग-अलग पीढ़ीक स्मरण दर्ज करैत छथि। परिवार गुम कब्रक बदला मनगढ़न्त स्थान वा प्रतीकात्मक निश्चितता स्थापित नहि करैत। कापीमे तीन नाम आ जतेक सही जानकारी अछि ओतेक राखल जाइत अछि। पिताक गरम चाहक छोट स्मृति सेहो अनमोल ठहरैत अछि। स्थान नष्ट भेला बाद किछु स्मृति बचि सकैत अछि, मुदा सभ किछु बचब सुनिश्चित नहि; बचल ‘किछु’ केँ सेहो पर्याप्त मानल जा सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७२ · बाढ़िक निशान

अदितिक घरक भीत पर बाढ़िक पुरान भूरा निशान वर्षों सँ सुरक्षित अछि। घरक मरम्मत आरम्भ होइत ओकरा बचाबय कि रंगि देब, एहि प्रश्न पर परिवारक अलग-अलग स्मृति खुलैत अछि। शान्ति देवी, पिता-माए आ पड़ोसिक कथनमे बाढ़िक पानि, बचाव आ सहायता सम्बन्धी विवरण पूरा समान नहि। अदिति प्रत्यक्ष स्मृति, सुनी कथा आ अनिश्चित विवरण अलग रखैत छथि। अन्तमे भीत नव रंगसँ उज्जर भऽ जाइत अछि, मुदा परिवारक व्यवहार आ संवादमे बाढ़िक अनुभव बाँचल रहैत अछि। अगिला पीढ़ी कैँ अदिति केवल पक्का बात कहैत छथि आ बाकी प्रश्न आगाँ पूछबाक लेल छोड़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७३ · छोड़ल इनार

विश्वविद्यालयमे पढ़ैत नित्या गामक पन्द्रह बरख सँ बन्द पुरान इनारक इतिहास जानय चाहैत छथि। नानी कमला देवी रातिमे इनार लग सुनाइ देबयवला आवाजसँ बिसरल लोकक नाम आ पुरान घटना मोन करैत छथि। नित्या इनारक बनावट, बन्द हेबाक कारण आ सुरक्षाक उपाय जाँचैत छथि। सकीना, विमला आ आन स्त्रीसभक बातचीतसँ खुलैत अछि जे इनार केवल पानिक स्रोत नहि, गामक समाचार आ सामूहिक सम्बन्धक ठाम छल। अन्तमे इनारक मुँह सुरक्षित जालीसँ ढाँपल जाइत अछि। नित्या बुझैत छथि जे प्रत्येक आवाजक पछाँ कोनो कथा होयब आवश्यक नहि, मुदा स्मृतिमे लोकक नाम इनारसँ बाहर सेहो जीवित रहि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७४ · मकईक सूखल पात

खेतमे मकईक सूखल पातक खड़खड़ाहट हरिनारायण महतो केँ पुरान अकालक बरखमे घुरा दैत अछि। पोती चन्दा संग बातचीतमे पीयर बैल हीरा, सगुनी काकी, बहिन फूलो आ संकटमे बाँटल अन्नक स्मृति खुलैत अछि। चन्दा घटनासभ लिखैत काल दादासँ पूछैत छथि जे अकालक समय भेल मृत्यु आ अकालक कारण भेल मृत्युमे अन्तर कोना राखल जाए। हरिनारायण अपन अनुमानक सीमा स्वीकार करैत छथि आ अकालक बीचो बचल सहयोगक बात कहैत छथि। नव फसलक हरियर पातमे ओहि दुखद आवाजक पुनरावृत्ति नहि होइत अछि। स्मृति केवल दुखक पुनरागमन नहि, भोजनक सम्मान, पशुक देखभाल आ उपकार स्मरण करबाक व्यवहार सेहो अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७५ · अन्तिम नाव

नदी पर पुल बनिते वृद्ध नाविक रामधनीक नावक नियमित यात्री समाप्त भऽ जाइत छथि। पुलसँ उपचार, विद्यालय आ बाजार धरि पहुँचनाइ सहज भेल अछि, तेँ रामधनी ओकर उपयोगिता सँ इनकार नहि करैत; मुदा रोजगारक संग हुनकर देहक अभ्यास आ नाविकक पहचान सेहो संकटमे पड़ैत अछि। कुसुमक सहयोगसँ सीमित सुरक्षात्मक नाव-शिक्षण आरम्भ होइत अछि आ दिनकर हुनकासँ धार, हवा आ नाव सम्हारबाक ज्ञान सीखैत छथि। धीरे-धीरे रामधनी स्वयं नाव चलायब छोड़ि निर्देश देब सीखैत छथि। अन्तमे खाली नाव लग बैसलो हुनका अपन अस्तित्व सिद्ध करबाक चिन्ता नहि रहैत अछि। कथा परिवर्तनकेँ जीत-हारक निर्णय नहि, जीवन-व्यवहारक रूपान्तरण मानैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७६ · गाछक ठूँठ

नव बस-परिचालक नवल केँ यात्रीसभ ‘पीपल लग’ उतारबाक आग्रह करैत छथि, जखन कि सरकारी सूचीमे ओहि ठामक नाम ‘पूर्वी चौक’ अछि। खोजबीनमे हुनका बुझाइत अछि जे पुरान पीपरक गाछ कटि गेल, मुदा ओकर ठूँठ आ ठामक नाम लोकक चलनमे बाँचल अछि। बसक ठहराव बदललासँ पैदल बाट, चाह बेचैत फुलो देवीक रोजगार आ छोटूक नव दोकान पर अलग-अलग प्रभाव पड़ैत अछि। नव सूचना-फलकमे आधिकारिक आ प्रचलित दुनू नामक स्थान बनैत अछि। नवल बुझैत छथि जे गाछक अनुपस्थितिसँ ठामक सामाजिक अर्थ स्वतः समाप्त नहि होइत; लोकक पयर, स्मृति आ रोजीक हिसाबेँ ओकर नाम आगाँ बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७७ · धुँआ

चाहक दोकान पर बैसल वृद्ध कथावाचक खेतसँ उठैत धुँआ देखि ओहि भोर केँ स्मरण करैत छथि, जखन सात युवक रोजीक खोजमे गाम छोड़ि बस पर चढ़ल छलाह। तिनकर यात्रा, कमाइ, असफलता, घर घुरनाइ आ परिवारक प्रतीक्षा अलग-अलग रूपमे हुनकर स्मृतिमे खुलैत अछि। धुँआ ककरो भाग्यक भविष्यवाणी नहि छल; ओ केवल बीतल अनुभवक दुआर खोलैत अछि। साँझमे दू नव युवक बसक समय पूछय अबैत छथि, जिनका कथावाचकक पोता अपन ढंगसँ सहायता करैत अछि। वृद्ध बुझैत छथि जे पलायनक कथा धुँआसँ पैघ अछि, आ प्रत्येक पीढ़ी यात्रा करबाक नब ढंग चुनैत अछि। ओ अगिला भोर नव यात्रासभ दिस देखबाक निश्चय करैत छथि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७८ · मौन गाम

चौबीस बरख बाद देवनाथ अपन पुरान गाममे एक राति रहय अबैत छथि। घरक फाटल भीत आ खसैत छतसँ बचल काठ निकालबाक काजक बीच हुनका बन्द घर, जंग लागल ताला आ सुनसान गल्ली देखाइत अछि। पहिने ओ एहि नीरवता केँ मृत गामक चुप्पी मानैत छथि, मुदा क्रमशः बुझैत छथि जे बहुत घरक लोक जीवित छथि; ओ सभ बाहर काज करैत, पर्वमे घुरैत आ दूरसँ घरक समाचार लैत छथि। पुरान चौखट अलग राखि घर बन्द करैत काल देवनाथ अनुपस्थित लोकक बदला स्वयं उत्तर बनायब छोड़ैत छथि। कथा गामक खाली पड़ल घर आ ओकर बाहर पसरल जीवनक बीचक भेद खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ७९ · तीन बरखाक बीच

अड़सठ बरखक अनिमा देवी अपन ‘अनिमा लेखन सेवा’ दोकानमे पुरान टंकणयन्त्र आ नातिन नेहाक संगणकक बीच बैसि जीवनक तीन उमेर स्मरण करैत छथि। अठारह बरखमे इतिहास पढ़बाक इच्छा छल; सैंतीस बरखमे लिखबाक श्रमक पाँच रुपैया मूल्य स्वीकार करब सीखलनि; आब दोकान बेचब अथवा बन्द करब प्रश्न बनल अछि। नेहाक संग बातचीतक बाद ओ सप्ताहमे दू दिन दोकान खोलबाक सम्भावना चुनैत छथि, मुदा एकर अन्तिम निर्णय निश्चित नहि करैत छथि। अपन बदलल उँगुरी, अभ्यास आ चुप्पीमे ओ बीतल बरखक छाया अनुभव करैत छथि। कथा देखबैत अछि जे जीवनक किछु स्मरणीय दिन ओकर बीचक पूरा समयक अर्थ नहि समेटि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८० · घुरबाक कारण

उनसठि बरखक माधवी झा विदेशसँ दरभंगाक पुरान घर बेचबाक काज लेल घुरैत छथि। भाइ विनोद आ बेटी आर्या संग बातचीतमे हुनकर सतरह बरखक प्रवेश-परीक्षा, घर छोड़बाक निर्णय आ परिवारमे प्रचलित ओकर अधूरा विवरण सामने अबैत अछि। माधवी बुझैत छथि जे ओ पहिले अपन लेल बाट खोजैत छलीह, बादमे ओहि निर्णयक अर्थ; एखन बेटी केँ गलत कथा विरासतमे नहि देब हुनकर मुख्य उद्देश्य अछि। ओ पुरान प्रसंग स्पष्ट करैत छथि, मुदा ककरो सम्पूर्ण दोषी अथवा निर्दोष सिद्ध नहि करैत छथि। घरसँ विदा लैत काल अपन किशोर उमेरक हस्ताक्षरवाली खाली कापी संग लैत छथि। कथा देखबैत अछि जे घुरबाक कारण कखनो घर नहि, अपूर्ण पारिवारिक कथा होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८१ · बहिनसभ

दशकसभक दूरीक बाद बहिन मृदुला आ नीरा एक विद्यालयक लोक-शिल्प शिविरमे फेर मिलैत छथि। कढ़ाइक एक पुरान बेलक रूप आ ओकर मौलिक रचनाकारक नाम लऽ हुनका दुनूक बीच भेल मतभेद एखनहुँ पूरी तरह समाप्त नहि भेल अछि। किशोरीसभ केँ सुई-सूत सिखबैत काल नानीक पुरान कढ़ाइ, समूहक श्रम आ नव पीढ़ीक अपन रूप-विकास सामने अबैत अछि। आरुषिक नब त्रिकोण दुनूकेँ बुझबैत अछि जे कोनो आकृति एक्के हाथक सम्पत्ति नहि रहैत। बहिनसभ अपन-अपन पक्ष पूर्णतः नहि छोड़ैत छथि, मुदा एक-दोसरक उपस्थिति स्वीकार करैत छथि। मृदुला अन्तमे नव रेखा बनबैत बीचमे किछु ठाम खाली छोड़ि दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८२ · पुरान डॉक्टर

अड़सठ बरखक वसुधा नतिनी ईरा संग पुरान बजारक ओहि गल्लीमे अबैत छथि जतय युवावस्थामे चिकित्सक चन्द्रनाथ झासँ हुनकर भेंट भेल छल। ओ चिकित्सकक कहने एक वाक्य पछिला जीवनमे बेटीक पढ़ाइ आ स्वतन्त्र निर्णयक पक्षमे बोलबाक साहस देने रहनि। मुदा फेर स्मरण करैत वसुधा बुझैत छथि जे चिकित्सकक सलाह संग ओहि समयक लाज, बाबूजीक चिन्ता आ माएक नियमित परिश्रम सेहो छल। पुरान चिकित्सक ठीक बात कहने होइतो सम्पूर्ण निर्दोष मनुष्य नहि छलाह; माएक चुपचाप देखभाल सेहो कम महत्त्वपूर्ण नहि छल। कथा एक स्मरणीय वाक्यक चारूकात लुकल अनेक जनक श्रम आ जटिलता केँ फेर सामने आनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८३ · घर नम्बर पाँच

‘घर नम्बर पाँच’क उत्तर देवालमे बनल एक खिड़की विभिन्न बरखमे विभिन्न स्त्रीक जीवनसँ जुड़ैत अछि। देवकीक समयक दुआर बादमे चन्द्रकलाक लेल बन्द करबाक सीमा, सरिताक लेल मसालाक पुड़िया बेचबाक पटिया, नीलिमाक माएक लेल सड़कसँ संवादक ठाम आ अनामिकाक पिताक लेल हवा-बातक सहारा बनैत अछि। प्रत्येक परिवर्तन ओहि समयक अलग आवश्यकता सँ उपजैत अछि; एक निर्णयक रचनाकार दोसरक परिचय सेहो नहि जनैत। खिड़की लग रहनिहार लोक अपन उपयोगक आधार पर ओकर अर्थ बनबैत छथि। कथा देखबैत अछि जे एक्के घरक इतिहास स्मारक वा एकल स्वामित्वसँ नहि, अनजान लोकक अलग-अलग श्रम आ दिनचर्यासँ बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८४ · फोटो एल्बम

अस्सी बरखक कमला देवीक जन्मदिन पर बेटी चन्द्रिमा आ नतिनी अन्विता पुरान छायाचित्रक पोथी सँ चित्र चुनबाक काज आरम्भ करैत छथि। चित्रसभ समयक सीधा क्रममे नहि, वस्तु आ अनुभवक अप्रत्याशित जोड़मे राखल अछि। तिथि आ घटनाक पड़तालसँ खुलैत अछि जे घर बनबामे स्त्रीसभक धन, नीरजक साइकिलमे बहिनक छात्रवृत्ति आ निर्मलाक अधूर कहल पढ़ाइ-नौकरीक इतिहास सेहो सम्मिलित अछि। परिवारक स्थापित कथन नव स्मृतिसँ जटिल होइत अछि। अन्तमे प्रदर्शनीमे चित्रसभक संग संक्षिप्त, सावधान वाक्य राखल जाइत अछि; मूल पोथीक क्रम नहि बदलल जाइत। कथा स्मृति सँ अर्थ निकालब आ ओहि अर्थ केँ घटना मानि लेबक बीच अन्तर स्थापित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८५ · एक निर्णय

बीस बरख बाद बजारमे आमक अचारक शीशी देखि सीमा कें अपन युवावस्थाक एक निर्णय याद अबैत अछि। पढ़ाइक प्रवेश-शुल्क जुटेबाक लेल ओ माए सावित्री देवी कें हुनकर बनाओल अचार भंडारक नामसँ बेचबाक सलाह देने छलीह। पैसा सँ पढ़ाइ सम्भव भेल, मुदा माएक श्रमक नाम व्यापारिक चिह्नसँ हटि गेल। बेटी आर्या संग माएक घर पहुँचि सीमा अचारक बदलल स्वाद आ पुरान निर्णयक अनेक पक्ष बुझैत छथि। ओ फैसला कें पूरा सही अथवा गलत नहि ठहरबैत छथि। आर्या नानीसँ अचार बनायब सीखि अपन कापी पर सावित्री देवीक नाम लिखैत छथि। कथा आवश्यक कमाइ, श्रमक स्वीकृति आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित ज्ञानक सम्बन्ध देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८६ · मित्रक बेटी

नगर पुस्तकालयमे सरोजिनी झाक भेंट पुरान मित्र विनीता मिश्रक बेटी दीपासँ होइत अछि। दीपाक बातचीत हुनका चालीस बरख पहिने टूटल विवाह-प्रस्तावक घटना याद दिअबैत अछि, जकर दोष ओ सदिखन विनीताक एक वाक्य पर रखैत रहलीह। दीपा अपन माएसँ सीखल बात सुनबैत छथि—सत्य जानब आ ओ सत्य कहबाक अधिकार आ ढंग बुझब अलग विषय अछि। एहि भेटक बाद सरोजिनी स्वीकार करैत छथि जे मित्रक वाक्य, परिवारक प्रतिक्रिया आ अपन जीवनक इच्छासभ मिलि पुरान निर्णय बनौने छल। विनीता संग छोट सन्देश फेर शुरू होइत अछि। कथा एकल दोषारोपणक बदला सम्बन्धक जटिलता आ सत्यक जिम्मेदार प्रयोगक प्रश्न उठबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८७ · बस-ठाम

किरण मिश्रक स्मृतिमे एक बस-ठहराव नरेन ठाकुर संग तीन अलग समयक भेटक साक्षी अछि। अठारह बरखक उमेरमे किरण जानि-बुझि बस छोड़ि हुनकासँ बात करैत छथि; बहुत बरख बाद दुनूक फेर भेट होइत अछि, मुदा सम्पर्कक बाट खुलल रहितो कियो आगाँ नहि बढ़ैत। तेसर संयोगमे दुनू अपन-अपन जीवन, परिवार आ नहि पुछल गेल प्रश्नक पछतावा स्वीकार करैत छथि। किरण बुझैत छथि जे नरेनसँ विवाह नहि भेनाइ हुनकर पश्चात्तापक विषय नहि; अधूर प्रश्नक स्मृति मात्र अछि। वर्तमान जीवन सँ मुँह फेरबाक बदला ओ अपन पति सुभाष केँ एहि भेटक बात कहबाक निश्चय करैत छथि। कथा संयोग आ चुनावक अलग-अलग अर्थ खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८८ · विवाहक बाद

विवाहक तीस बरख बाद सुधा आ देवेश कें पुरान घरक छत मरम्मत करायब कि बेटी अर्चना लग जा बसब, एहि पर निर्णय लेब अछि। बातचीतमे पछिला दशकसभक एहन घटना उभरैत अछि जखन एक जण दोसरसँ बिना पूछने फैसला कएने छल आ बादमे दोसर सेहो ओही भूल दोहरौने छल। शोधवृत्ति, बच्चाक देखभाल आ घरक जिम्मेदारीक स्मृति दुनूक अपन भार स्पष्ट करैत अछि। ओ अलग-अलग कागज पर अपन इच्छा लिखि एक-दोसरक बात पढ़ैत छथि। अन्तिम स्थान-परिवर्तनक निर्णय नहि होइतो छतक मरम्मत पर विचार साझा बनैत अछि। कथा विवाहक परिपक्वता कें एक्के उत्तर पर पहुँचनाइ नहि, प्रश्नमे दुनूक बराबर उपस्थिति मानैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ८९ · माएक मित्र

माए सरोजक निधनक दू मास बाद अपर्णा हुनकर पुरान मित्र लीला देवी सँ भेंट करय जाइत छथि। लीला बतबैत छथि जे दुनू एक समय एक्के कोठरीमे रहि स्त्रीसभक पढ़ाइ आ काजमे लागल रहथि, मानदेय लऽ मतभेदो भेल छल। सरोजक साहस, भूल, डर आ छोट घरेलू आदतसभक कथा सुनि अपर्णा बुझैत छथि जे बेटी होयबाक कारण ओ माएक पूरा जीवन नहि जानैत छलीह। लीला कोनो गुप्त निर्णायक सत्यक स्वामिनी नहि, एक समयक सहयात्री छलीह। अपर्णा कैँ माए पहिल बेर केवल परिचित मातृरूप नहि, अपन संघर्ष आ कमजोरीवाली मनुष्य बुझाइत छथि। कथा अपन जन्मसँ पहिनेक माएक जीवनकैँ स्वतन्त्र अस्तित्व दैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९० · पत्र जे भेजल नहि गेल

सेवानिवृत्तिसँ पहिने शिक्षिका सुधा अपन दराजमे तीस बरख पुरान एकटा एहन पत्र पबैत छथि जे कहियो पठाओल नहि गेल। तेइस बरखक उमेरमे ओ दूरक विद्यालयमे नियुक्तिक विरोधमे पत्र लिखने छलीह। बादमे शिक्षिका नीलमक स्थानान्तरण-आवेदन देखैत ओहि अनुभवक अर्थ बदलि गेल; व्यक्तिगत कठिनाई बुझब आवश्यक छल, मुदा विद्यालयक व्यवस्था सेहो सम्हारब छल। सेवानिवृत्तिक अवसर पर पुरान विद्यालयक परिस्थिति देखला सँ सुधा बुझैत छथि जे एक्के पत्र अलग समयमे अलग प्रश्न उठबैत अछि। ओ पत्र एखनहुँ नहि पठबैत छथि, मुदा पछतावा सेहो नहि करैत छथि। कथा कागजक स्थिर शब्द आ मनुष्यक बदलैत नैतिक दृष्टिक अन्तर खोलैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९१ · दू शहर

दिल्लीमे अट्ठाइस बरख सँ रहैत अर्चना केँ एक सरकारी प्रपत्रमे ‘स्थायी पता’ लिखैत काल असमञ्जस होइत अछि। जन्मगाम दरभंगाक पुरान घर बदलि चुकल अछि, मुदा दिल्लीक घर, पड़ोस आ दिनचर्या हुनकर देहक अभ्यास बनि गेल अछि। पिता-माएक स्मरण, दू शहरक यात्रासभ आ बेटी नूपुरक प्रश्न हुनका देखबैत अछि जे अपन ठामक परिचय एकमात्र पतेसँ निर्धारित नहि होइत अछि। ओ कागज पर आवश्यक जानकारी भरैत छथि, मुदा जीवनमे दुनू शहरक सम्बन्ध जीवित रखैत छथि। कथा घरकेँ केवल स्थायी अथवा वर्तमान ठेकानक बीच चुनबाक वस्तु नहि, अनेक अनुभवसँ बनल सम्बन्ध मानैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९२ · बीस बरख बाद

विद्यालय छोड़लाक बीस बरख बाद मृदुला, श्वेता, नीलिमा, अरुण आ मीनाक्षी पुनर्मिलनमे भेटैत छथि। पुरान परीक्षा-कक्ष देखिते मीनाक्षी पर नकलक आरोप लगबाक घटना सभक स्मृतिमे फेर उठैत अछि। घटना समय कियो की देखलक, कियो चुप रहल, कियो बादमे सहायता कएलक—एहि सभ पर विवरण एक-दोसरसँ फरक अछि। स्वयं मीनाक्षीक स्मृतिमे आरोपसँ बेसी माएक कीचड़ लागल चप्पल बचल अछि। कियो पूर्ण निर्दोष अथवा दोषी घोषित नहि होइत; पुरान मौन आ बादक व्यवहार दुनू महत्त्व पबैत अछि। अन्तमे सामूहिक चित्र खिंचैत कथा देखबैत अछि जे सत्य रहितो ककरो एक्के स्मृतिमे पूरा नहि समाइत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९३ · मौसीक घर

बत्तीस बरख बाद सुधा मालती मौसीक घर घुरैत छथि आ देखैत छथि जे पुरान पछिला दुआर आब मुख्य फाटक बनि गेल अछि। बाल्यकालमे हुनका प्रिय बखार पढ़बाक कोठरी बनल छल; युवावस्थामे एही घरसँ ओ अपन प्रशिक्षण लेल जाएबाक निर्णयक घोषणा कएने छलीह। ओ मौसी केँ अपन विद्रोहक स्पष्ट समर्थक मानैत रहलीह, मुदा मंजरी संग बातचीतसँ घटना अधिक जटिल देखाइत अछि। घरक कोठरी आ दुआर जेना उपयोग अनुसार बदलल, तहिना सुधाक अपन निर्णयक अर्थ सेहो बदलल अछि। अन्तमे ओ नब मुख्य फाटकसँ बाहर निकलैत स्वीकार करैत छथि जे परिवर्तनसँ पुरान अनुभव झूठ नहि होइत, ओकर सीमा मात्र स्पष्ट होइत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९४ · लाल पेटी

मालती पुरान कोठरी खाली करैत छथि तँ भारी लाल पेटी फेर सामने अबैत अछि। जानकी देवी एहि पेटीमे अपन सिलाइ-काजक नाप, सूत आ कमाइक हिसाब राखैत रहथि; बादमे मालतीक पुस्तक, प्रमाणपत्र आ परिवारक आन वस्तु ओहिमे समाएल। आब तेसर पीढ़ीक रश्मि विद्युत-उपकरण मरम्मतक अपन नव काज लेल ओ पेटी उपयोगमे आनय चाहैत छथि। पेटीक जंग आ ताला सुधारल जाइत अछि, मुदा ओकर पुरान रंग अनावश्यक रूपसँ नहि मेटाओल जाइत। रश्मि पेटी केँ केवल पारिवारिक धरोहर कहबाक बदला तीन पीढ़ीक अलग-अलग काजक साथी मानैत छथि। कथा वस्तुक महत्त्व ओकर निरन्तर उपयोग आ स्त्रीसभक श्रमसँ बनैत देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९५ · संगीत शिक्षक

महिला कौशल केन्द्रमे विद्युत-मरम्मतक व्यावहारिक परीक्षाक समय छोट कदक शबनम खातून ऊँच पट्टी धरि सहज नहि पहुँचि पबैत छथि। केन्द्र प्रमुख नलिनी झा केँ तीस बरख पहिनेक संगीत-शिक्षिका शारदा दी याद अबैत छथि, जे स्वरक शुद्धता बनाए रखने हारमोनियमक पट्टी नलिनीक गला अनुसार बदलने छलीह। नलिनी शबनम लेल काठक पाटी रखबा दैत छथि आ निरीक्षक केँ स्पष्ट करैत छथि जे कार्यक कसौटी समान रहत, साधन आवश्यकतानुसार बदलि सकैत अछि। बादमे ओ समस्त प्रशिक्षण-कक्षमे पहुँच आ सुरक्षा जाँचबाक व्यवस्था प्रस्तावित करैत छथि। कथा समान अवसर आ एकसमान भौतिक व्यवस्थाक बीचक आवश्यक भेद उजागर करैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९६ · अलग बाट

विद्यालयक समय मालती आ सुषमाक अंक लगभग बराबर छल, मुदा आगाँ पढ़ाइ आ पेशाक बाट अलग भऽ गेल। वर्षसभ बाद हुनका जीवनमे काज, विवाह, परिवार, यात्रा आ देखभालक जिम्मेदारी तरह-तरहक रूपमे जुड़ैत अछि। पुरान भेटक समय एक-दोसरक चुनावक बारेमे कहल कठोर बात सेहो सामने अबैत अछि। नव पीढ़ीक काजल आ आन युवतीसभक प्रश्न पर दुनू स्वीकार करैत छथि जे कोनो एक सही जीवन-पथक सूची नहि देल जा सकैत अछि। कतेको निर्णय समयसँ बदलैत, कखनो राहत तँ कखनो कठिनाई बनैत अछि। अन्तमे दुनू अलग दिशा चलैत छथि, मुदा अलग बाट मित्रताक विरुद्ध नहि ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९७ · खोआइल वर्ष

अनिमा झा अपन नातिन अदिति संग पारिवारिक समय-रेखा बनबैत काल १९९८ सँ २००३ धरि पाँच बरखक घटना ठीक-ठीक लिखि नहि पबैत छथि। ओहि समयमे नौकरी, किरायाक घर, बाल-बच्चाक देखभाल आ दिनचर्याक अथाह श्रम रहल, मुदा कोनो एक चमकदार घटना नहि बचल। बेटी नीलिमा, बेटा सौरभ आ पति देवेन्द्रक अलग-अलग स्मृतिसँ ओ बरखसभक किछु रूप सामने अबैत अछि। अनिमा खाली ठाम गढ़ल घटनासँ नहि भरैत छथि; समय-रेखामे बसक आ दूधक हिसाबक दू स्मृति रखि शेष भाग अधूर छोड़ैत छथि। कथा देखबैत अछि जे कम याद होयब समय निष्फल बितबाक प्रमाण नहि; किछु बरख दोसरक जीवन आ अपन व्यवहारमे बचैत अछि।

स्मृतिक दोसर दिस

कथा ९८ · अन्तिम यात्रा

चौहत्तरि बरखक शशिप्रभा दरभंगासँ दिल्ली बेटा लग जाड़ बिताबय रेलयात्रा करैत छथि। पड़ोसिक ‘फेर घुरब ने’ प्रश्न हुनका विवाहक विदाइ, बेटी रचनाकेँ छात्रावास छोड़बाक दिन आ माए कौशल्या देवीक आँखिक उपचार लेल आरम्भ भेल साधारण यात्राक स्मृति दैत अछि। माएक ओ यात्रा दू मासक लेल छल, मुदा उपचार आ बदलल परिस्थितिक कारण ओ पुरान घरमे फेर पहिनेक रूपमे नहि घुरि सकलीह। शशिप्रभा बुझैत छथि जे जकरा सभ ‘अन्तिम विदाइ’ कहैत अछि, से प्रायः घटना समय पहिचानमे नहि अबैत। अपन वर्तमान यात्राकेँ ओ अन्तिम घोषित नहि करैत छथि। कथा विदाइक अर्थ समय बीतलाक बाद खुलबाक सूक्ष्म अनुभव प्रस्तुत करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

सम्पूर्ण कथासार · ८३७ कथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १ · काल-स्थान विस्थापन (1/2)

धौम्य अपन पाँच विद्यार्थी—अपाला, श्वेतकेतु, रैक्व, सत्यकाम आ घोषा—केँ एकायामी आ द्विआयामी संसारक उदाहरणसँ स्थानक भिन्न-भिन्न आयाम बुझबैत छथि। समयकेँ चारिम आयाम मानि ओ सभ एहन बाट खोजए लगैत छथि, जाहिसँ काल-स्थानक वक्रता उपयोग कऽ दूरस्थ बिन्दुकेँ जोड़ल जा सकए। श्वेतकेतु आ रैक्व स्थान-कालक खोह, अपाला ब्रह्माण्डीय डोरी आ सत्यकाम अतिरिक्त आयामक सम्भावनापर काज करैत छथि। घोषा प्रयोगक नैतिक मर्यादा निश्चित करैत छथि: भूतकालमे पहुँचियो कोनो घटना बदलबाक चेष्टा नहि कएल जाए।

दीर्घ परिश्रमक बाद ‘पुष्पक’ नामक विमान बनैत अछि। पहिल यात्राक जोखिम धौम्य स्वयं लैत छथि। अन्तरिक्षमे स्थान-कालक असाधारण मोड़ आ एक विशाल कारी गह्वर लग पहुँचि हुनका दूरक स्थान निकट बुझाए लगैत अछि; मुदा विमानक भीतरक समय आ बाहरी समयक गतिमे भयङ्कर अन्तर देखलापर ओ पृथ्वी घुरबाक निर्णय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १ · काल-स्थान विस्थापन (2/2)

पृथ्वीपर घुरलाक बाद धौम्यकेँ अपन प्रयोगशाला वा विद्यार्थी नहि भेटैत छथि। सामने सन् ३१०० क संसार अछि, जतए काल-स्थान यात्रा सामान्य व्यवस्था बनि चुकल अछि। हुनका लेल किछु घड़ी बीतल, मुदा पृथ्वीपर प्रायः हजार बरख। अपन खोजक यश पूछबाक बदला ओ पहिने पुस्तकालय देखए चाहैत छथि—बीतल समयमे मनुष्य की सीखलक, से जानबाक लेल। कथा ज्ञानक जिज्ञासा, समयक सापेक्षता आ वैज्ञानिक उत्तरदायित्वकेँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा २ · बैसाखीपर जिनगी (1/2)

अभियान्त्रिकी प्रवेश-परीक्षाक केन्द्रपर पुरान सहपाठी रतीश आ फूल अठारह बरख बाद भेटैत छथि। दुनू अपन-अपन बेटाकेँ परीक्षा दिअए अनने छथि। प्रतीक्षाक समय विद्यालयक स्मृति सँ आरम्भ भेल गप फूलक परिवारक कठिन जीवनानुभव धरि पहुँचैत अछि। फूल अपन छोट भाए आ हुनकर जीवनसंगिनीक शारीरिक भिन्नता, समाजक दयाभाव आ अपमानजनक दृष्टिक चर्चा करैत छथि। दुनू विवाहमे समानता आ परस्पर सम्मान चाहैत छलाह, रक्षक आ आश्रितक सम्बन्ध नहि।

फूलक छोट भाए आ भाभी सन्तानक जन्म आ असमय मृत्यु सहित अनेक आघात सहैत जीवन आगाँ बढ़बैत छथि। एहि अनुभवसभक बीच फूल कहैत छथि जे देहक कोनो सीमा मनुष्यक सम्पूर्ण परिचय नहि बनि सकैत। रतीश परिवारक कथा सुनैत रहैत छथि, मुदा फूल अपन बेटाक शारीरिक कठिनाइक चर्चा नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा २ · बैसाखीपर जिनगी (2/2)

परीक्षा समाप्त भेलापर फूलक बेटा बैसाखीक सहारे तेजीसँ बाहर अबैत अछि। दुर्घटनामे पएरक स्नायु क्षतिग्रस्त भेलो ओ विज्ञान, गणित आ अभियन्ता बनबाक आकांक्षासँ भरल अछि। रतीशक प्रश्नपर फूल स्पष्ट करैत छथि जे बेटाक रुचि, प्रश्न पूछबाक स्वभाव आ भविष्यक सपना ओकर परिचयक मुख्य अंश अछि; बैसाखी मात्र एक अंश। कथा विकलाङ्गताक प्रति दयाक बदला सम्मान, अवसर आ व्यक्तिक स्वाधीन अस्तित्वपर बल दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ३ · हम नै जाएब विदेश (1/2)

पर्यावरण अभियान्त्रिकी पढ़बाक लेल सौरभकेँ विदेशक छात्रवृत्ति भेटैत अछि। विज्ञानप्रेमी सौरभ एहि अवसरसँ उत्साहित अछि, मुदा प्रस्थान निकट अएलापर अपन गाम, भाषा, परिवार आ बाढ़िसँ जूझैत लोकक स्मृति ओकरा भीतर प्रश्न उठबैत अछि। लाल काकाक संग ओ इतिहासविद् द्विजेन्द्र काकासँ भेटैत अछि। द्विजेन्द्र अपन विद्वत्ता आ यात्राक संग मातृभूमि तथा माएक प्रतीक्षा सँ दूर रहबाक पश्चात्ताप सुनबैत छथि, मुदा विदेश जाएबकेँ अनुचित नहि कहैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे अध्ययनक विस्तार सम्बन्धक धागा नहि तोड़ए।

विदेश जाएसँ ठीक पहिने तेज वर्षा होइत अछि। विद्यालयक जलमापक यन्त्रसँ सौरभ बुझैत अछि जे धारक पानि असामान्य रूपसँ बढ़ि रहल अछि। शिक्षकक सहायता सँ पंचायतकेँ समयपर सूचना भेटैत अछि आ नीचला टोलक लोक अपन परिवार आ मवेशी सुरक्षित ठाम पहुँचा दैत अछि। सौरभकेँ प्रत्यक्ष अनुभव होइत अछि जे ओकर ज्ञान एखनहिसँ अपन गामक काज आबि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ३ · हम नै जाएब विदेश (2/2)

ओ अपन निर्णयसँ एहि बरख विदेश नहि जाएबाक ठानैत अछि। स्थानीय विश्वविद्यालयमे पढ़ि तीन गाम धरि पसरि रहल जलमापन आ चेतावनीक योजनाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। भविष्य मे आवश्यक भेलापर विदेशमे अध्ययन करबाक बाट ओ बन्द नहि करैत। कथाक मूल बात विदेश-विरोध नहि; भीड़क अपेक्षाक बदला अपन जिज्ञासा, कर्तव्य आ परिस्थितिक अनुरूप जीवनक दिशा स्वयं चुनबाक साहस अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ४ · प्रवास (1/2)

बाबूजीक पदस्थापनक कारण नवम वर्गक नचिकेत मधुबनीसँ हल्दिया आबैत अछि। नोनगर हवा, औद्योगिक नगर, बंगला भाषा आ अपरिचित विद्यालय ओकरा असगर बना दैत अछि। अपन सहपाठीक हँसीयो ओ कखनो अपन विरुद्ध बुझैत अछि। विज्ञान-प्रयोगशालामे तापससँ ओकर मित्रता होइत अछि। तापस यन्त्र बनबामे निपुण अछि, मुदा मंचपर बजबामे झिझकबाक कारण दलमे ओकर योगदानकेँ उचित मान्यता नहि भेटैत अछि।

दुनू समुद्री पवनसँ ऊर्जा जमा करए आ जलस्तर बढ़लापर चेतावनी देबएवला नमूना बनबैत अछि। वरिष्ठ छात्र देवदत्त पहिने अपन अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा समुद्री झंझावातक समय एहि विचारकेँ वास्तविक उपयोगक अवसर भेटैत अछि। शिक्षकक सलाह अनुसार विद्यार्थीसभ स्वयं बाहर नहि निकलि, स्थानीय स्वयंसेवकक लेल बाँस, बोतल, घंटी आ बैटरीसँ बनबाक सरल चेतावनी-व्यवस्था भेजैत अछि। देवदत्तो सहयोग करैत अछि। एक बस्तीमे जलस्तर बढ़लाक सूचना लोककेँ सुरक्षित ठाम जाएबामे सहायक होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ४ · प्रवास (2/2)

विज्ञान-मेलामे संयुक्त दलकेँ प्रथम पुरस्कार नहि, मुदा स्थानीय उपयोगिताक विशेष प्रशंसा भेटैत अछि। तापस अपन काज स्वयं प्रस्तुत करैत अछि आ नचिकेत धीरे-धीरे बंगला, मित्रता आ नव परिवेशमे अपन स्थान बना लैत अछि। ओकरा बुझाइत अछि जे प्रवास केवल घर छोड़ब नहि; समानता, सहयोग आ भाषा-संवादसँ नव ठामकेँ सेहो घर बनायब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ५ · हराहरी (1/2)

जिला पुस्तकालयमे छात्रवृत्तिक कागजक सहायता लेबए आएल अनयक भेट चन्दन चौबेसँ होइत अछि। अनय ओकरा तीन बरख पहिने दरभंगामे भेल प्रतिभा-परीक्षासँ चिन्हि लैत अछि। तखन अनय चुप, संकोची आ असगर छल; चन्दन हँसमुख, गप्पी आ सहज मित्र बनएवला। चन्दन ओहि दिन अनयकेँ समोसा खुआओने छल। आब दुनूक स्वभाव जेना उलटि गेल अछि: अनय वाद-विवादमे सक्रिय अछि आ चन्दन कम बजैत अछि।

चन्दन बतबैत अछि जे बाबूजीक काज छुटलाक बाद घर बदलल, विद्यालय बदलल आ दोकानमे सहायता करैत पढ़ाइ जारी राखए पड़ल। बारम्बार नव परिचय बनायब आ घरक भार सम्हारब ओकर गपक सहजता घटा देलक। अनय अपना विषयमे कहैत अछि जे शिक्षकक प्रोत्साहनसँ मंचक भय घटल आ ओकर आवाज खुलल। दुनू बुझैत अछि जे ‘शान्त’, ‘गप्पी’ अथवा ‘लजकोर’ सन शब्द मनुष्यक स्थायी परिचय नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ५ · हराहरी (2/2)

ओ सभ पुस्तकालयमे किशोरसभ लेल ‘खुलल मेज’ आरम्भ करैत अछि, जतए बजबाक आ सुनबाक समान अवसर अछि। चन्दन फेर अपन विचार व्यक्त करबाक साहस करैत अछि। अगिला प्रतिभा-परीक्षाक दिन दुनू सहायता-मेज लगबैत अछि आ दू नव विद्यार्थीक मित्रता आरम्भ होइत देखैत अछि। ‘हराहरी’ एक-दोसराक स्वभावक साधारण अदला-बदली नहि, परिस्थितिसँ बदलैत मनुष्यकेँ पुरान मित्रताक सहारे फेर चिन्हबाक कथा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ६ · पोखरिक तरे भोरुक तारा (1/2)

कातिकक एक भोर कुसुम, मिहिर, अंशु आ ऋचा तारापोखरिक पानि आ जलजीवक अवलोकन करए पहुँचैत छथि। कुसुमकेँ पानिक भीतर एकटा चमकैत उज्जर बिन्दु देखाइत अछि। ओकर आजी कहैत छलीह जे भोरुक तारा एहि पोखरिमे पानि पीबए अबैत अछि। चारू मित्र पहिने विस्मित होइत अछि, मुदा कंकड़सँ उठल तरङ्गमे चमक टुटब आ बाँस उतारलापर कोनो वस्तु नहि भेटब हुनका सभकेँ नव प्रश्न दिस लऽ जाइत अछि।

विज्ञान-शिक्षिका मालती दी अनुमान आ देखल तथ्यक अन्तर बुझा कऽ कएक भोर धरि समय, दिशा आ दर्शकक स्थान लिखबाक सलाह दैत छथि। अलग-अलग ठामसँ चमक अलग स्थानपर बुझाइत अछि। प्रयोगशालामे पानिमे दीपक प्रतिबिम्ब देखि ओ सभ प्रकाशक व्यवहार बुझैत अछि। अन्तमे गाछक फाँकसँ ऊपर चमकैत शुक्र ग्रह देखाइत अछि। ओकर प्रतिबिम्ब पानिक गहिराइमे तारा सन बुझाइत छल; वृक्षक डारिसँ मूल ग्रह सीधा नहि देखाइत छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ६ · पोखरिक तरे भोरुक तारा (2/2)

कुसुम आजीक लोककथा त्यागैत नहि, ओकर स्मृतिक मूल्य बुझैत अछि। खेतिहर आ मल्लाहक भोरक समयबोधसँ पोखरिक नाम जुड़ल होएबाक सम्भावना सामने अबैत अछि। मित्रसभ शुक्रक दिशा, पानिक अवस्था आ लोकस्मृति सहित भोर-दैनिकी बनबैत अछि। कथा देखब, मानब आ जाँचबक अन्तर सिखबैत लोकपरम्परा आ विज्ञानक संवाद रचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ७ · गामक पुरान पुस्तकालय (1/2)

गामक बीच बन्द पड़ल पुरान भवनकेँ मयंक, नेहा आ इन्द्रनील पुस्तकालयक रूपमे फेर चिन्हैत अछि। नेहाक आजी बतबैत छथि जे पहिने ओतए विद्यार्थी, शिक्षक आ गामक लोक एक संग पढ़ैत छल। पुस्तकालयक रखवाला रघुनाथ काकाक निधन, भवनक जीर्ण दशा आ पंचायतमे कुंजी बिसरि जाएबाक कारण भवन बन्द भऽ गेल छल। तीनू मित्र प्रधानाध्यापक सुधाकर झा आ पंचायत सचिवक अनुमति लऽ पुरान अभिलेखमे कुंजी तकैत अछि।

इन्द्रनीलक लोहार बाबाक बताओल बनावटसँ मिलैत कुंजी भेटैत अछि आ ताला खुलैत अछि। भीतर पुरान पंजी, विज्ञानक पोथी, मानचित्र, हस्तलिखित सामग्री आ स्मृतिचित्र भेटैत अछि। पंजीमे किशोर सुधाकर झाक नाम देखायलापर बुझाइत अछि जे पुस्तकालय हुनकर ज्ञान-रुचिक विकासमे सेहो महत्त्वपूर्ण छल। नेहाक आजी पुरान सदस्यक चित्रमे अपन रूप चिन्हैत छथि। तीनू मित्र आब मात्र सफाइ नहि, गामक पाठकीय स्मृतिक संरक्षण करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ७ · गामक पुरान पुस्तकालय (2/2)

पंचायत छत सुधरबैत अछि, विद्यालयक छात्र आ गामक लोक पोथी दान दैत छथि, आ घुमाउर स्वयंसेवक-व्यवस्था बनैत अछि। पुनः आरम्भक दिन नेहाक आजी सभसँ छोट पाठककेँ पहिल पोथी दैत छथि। पुरान ताला स्मृति बनि रहैत अछि, मुदा पुस्तकालय फेर खुलि जाइत अछि। कथा बतबैत अछि जे विस्मरणक ताला स्मृति, सामूहिक परिश्रम आ निरन्तर उपयोगसँ खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ८ · खस्सी घंटीक रहस्य (1/2)

रमापति काकाक उज्जर खस्सी ‘चाँद’क पित्तरिक घंटी आधा रातिक बाद पुरान आमक बाग दिससँ सुनाइत अछि, जखन कि भोरमे खस्सी अपन गोहालमे बान्हल भेटैत अछि। गाममे भूत आ अनचिन्हार शक्तिक अटकल उठैत अछि। प्राची, नील, विहान आ मधुप अनुमानक बदला गोहालक फाटक, खुरक निशान, सींगक घिसल भाग आ घंटीक भिन्न स्वर जाँचैत अछि। नीलक बाबा आ रमापति काकाक देखरेखमे सुरक्षित निगरानीक योजना बनैत अछि।

निशानसँ सिद्ध होइत अछि जे चाँद सींगसँ फाटकक कुंडी उठाए बाहर निकलैत अछि आ घुरि सेहो अबैत अछि। ओकर पाछाँ गेलापर सभकेँ दुलारी काकीक पुरान कोठरी भेटैत अछि। काकी बतबैत छथि जे चाँद छोट रहैत अनाथ भऽ गेल छल आ ओ अपने हाथसँ ओकरा दूध पिआ कऽ पोसने छलीह। अस्वस्थ भेलापर ओकर पालन रमापति काका लग चलि गेल, मुदा चाँद पुरान स्नेह आ बाट नहि बिसरल।

नव पाँखि

कथा ८ · खस्सी घंटीक रहस्य (2/2)

रातिक जोखिम रोकबाक लेल फाटकक कुंडी सुधारल जाइत अछि आ चाँदकेँ दिनमे दुलारी काकीक लग लऽ जाएबाक व्यवस्था बनैत अछि। विद्यालयमे प्राची अनुमान, निशान आ प्रत्यक्ष अवलोकनक क्रम लिखैत अछि। कथाक रहस्य अन्धविश्वाससँ नहि, प्रमाणसँ खुलैत अछि; ओकर अन्तिम अर्थ पशुक स्मृति आ मनुष्यक स्नेहक सम्बन्धमे भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ९ · बाढ़िमे बचल पोथी (1/2)

सावनक लगातार वर्षासँ नदी उफनैत अछि आ गामक पुरान पोथीघरमे पानि घुसबाक भय होइत अछि। ईशान, अर्पिता, नीरज आ सोनालीकेँ पोथीबाबा विद्याभूषण झासँ बुझाइत अछि जे नीचला कोठलीमे गामक पुरान पंजी, हस्तलिखित पोथी आ बाढ़िक विवरण राखल अछि। किशोरसभ अकेले जोखिम नहि लैत; पंचायतक नाव, ईशानक पिता आ पोथीबाबाक संग अनुमति आ सुरक्षा-व्यवस्थाक भीतर उद्धारमे भाग लैत अछि।

भारी पेटारकेँ पटरा आ रस्सीक सहायतासँ नावधरि सरकाओल जाइत अछि। लाल कपड़ामे बान्हल भीजल पोथी सेहो बचाओल जाइत अछि। ई पोथी पोथीबाबाक परदादाक बाढ़ि-विवरण अछि, जाहिमे पुरान जलस्तर आ सुरक्षित ठामक संकेत भेटैत अछि। विद्यालयमे पोथी सुखबैत समय एक पुरान पीपर लग पहुँचबाक जलचिह्नक जानकारी पंचायतकेँ देल जाइत अछि। एहि तुलनाक आधारपर नीचला ठामक परिवार समयसँ हटाओल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ९ · बाढ़िमे बचल पोथी (2/2)

बाढ़ि उतरला पर पोथीघरमे ऊँच ताक बनैत अछि, महत्त्वपूर्ण पन्नाक प्रतिलिपि राखल जाइत अछि आ किशोरसभ ‘हमर गामक जल-स्मृति’ प्रदर्शनी तैयार करैत अछि। भीजल पोथीक दाग स्मृतिक चिह्न बनि रहैत अछि। कथा दिखबैत अछि जे सुरक्षित राखल पुरान लेखा केवल अतीतक चिन्ह नहि, आगूक सङ्कटक समय उपयोगी ज्ञानो भऽ सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १० · नेनाक विज्ञान-मेला (1/2)

विद्यालयक वार्षिक विज्ञान-मेलामे प्रत्येक दलकेँ गामक वास्तविक समस्या चुनबाक निर्देश भेटैत अछि। माधव, मीनाक्षी, अरिन्दम आ सलोनी साधारण सामग्रीसँ दू प्रयोग बनबैत अछि—कंकड़, बालू, कोइला आ कपड़ासँ मटमैला पानि छानबाक व्यवस्था तथा पुरान साइकिलक चक्का आ डायनमोसँ छोट दीप जरएब। विज्ञान-शिक्षक सत्यनारायण गुरुजी विद्युत्-सुरक्षा आ नाप-जोखपर विशेष ध्यान दैत छथि।

पहिल प्रयासमे ढीला तारक कारण दीप नहि जरैत, फेर पट्टा खसैत अछि। पानि सेहो अपेक्षित रूपसँ स्वच्छ नहि होइत। चारू मित्र प्रत्येक त्रुटि लिखि तार कसैत, पहियाक स्थिति सुधारैत आ छाननक परत बदलि परीक्षण दोहरबैत अछि। ओ सभ विशेष रूपसँ स्पष्ट करैत अछि जे देखबामे फरिछ पानि रोगाणुरहित अथवा पीबाक योग्य मानल नहि जा सकैत। मेलामे छोट नेनासँ लऽ कऽ निर्णायक सभ धरि प्रयोगक सीमा आ उपयोगिता समझाओल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १० · नेनाक विज्ञान-मेला (2/2)

दलकेँ प्रथम स्थान नहि, ‘सर्वश्रेष्ठ जन-बुझान प्रयोग’क विशेष सम्मान भेटैत अछि। पुरस्कारसँ बेसी आनन्द हुनका सभकेँ तखन होइत अछि, जखन छोट विद्यार्थी स्वयं सुरक्षित ढंगसँ प्रयोग करबाक इच्छा देखबैत अछि। एक दिनक प्रदर्शन आगाँ ‘हाथसँ विज्ञान’ नामक साप्ताहिक बैसार बनैत अछि। कथा असफलता नहि नुकाबि सत्यनिष्ठ अवलोकन आ सामान्य लोकधरि विज्ञान पहुँचएबाक महत्त्व प्रतिपादित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ११ · आमक गाछक निर्णय (1/2)

गामक पुरान पोखरिक कात ठाढ़ विशाल ‘बड़ आम’ गाछसँ लोकक अनेक पीढ़ीक स्मृति, हाटक छाहरि आ पाँखिक बसेरा जुड़ल अछि। मुख्य पथ चौड़ा करबाक प्रस्तावमे गाछ कटबाक सम्भावना उठैत अछि। सुगन्धा, अनूप, शशांक आ ईशानी केवल भावनात्मक विरोध नहि करैत; प्रधानाध्यापकक सलाह अनुसार गाछक घेरा, छाहरिक तापमान, वर्षाक पानिक बहाव, पक्षीजीवन आ गामक लोकक उपयोगक लेखा जुटबैत अछि।

चारू किशोर पुरान मानचित्रमे पोखरिक पाछाँसँ निकलबाक वैकल्पिक पथ देखैत अछि। पथ कनेक नमगर होएत आ जलनिकास सुधारए पड़त, मुदा गाछ बचि सकैत अछि। गामसभामे ओ सभ स्पष्ट करैत अछि जे पथक आवश्यकता सेहो वास्तविक अछि। एकर लागत आ गाछक स्वास्थ्यक जे प्रश्न हुनका सभक सामर्थ्यसँ बाहर अछि, तकरा विशेषज्ञसँ जाँच करएबाक आग्रह करैत अछि। अभियन्ता आ वृक्ष-सम्बन्धी कर्मचारी जाँचि मोड़वला सुरक्षित मार्ग स्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा ११ · आमक गाछक निर्णय (2/2)

नव पथ बनैत अछि, गाछ बचि जाइत अछि आ ओकर सूखल डारि सावधानीसँ हटाओल जाइत अछि। हाट फेर छाहरिमे सजैत अछि; आमक बीजसँ चारि नव बिरबा रोपल जाइत अछि। एहि निर्णयसँ कथा सिखबैत अछि जे विकास आ पर्यावरणकेँ अनिवार्य शत्रु नहि मानि तथ्य, विकल्प आ दीर्घकालीन उत्तरदायित्वसँ एक संग विचारल जा सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १२ · मोबाइल बिनु एक दिन (1/2)

अनिरुद्ध गुरुजी नवम वर्गकेँ अपन आदत जाँचबाक लेल स्वेच्छासँ एक दिन मोबाइल बिनु रहबाक प्रस्ताव दैत छथि। ई मोबाइल-विरोध नहि, ध्यान आ समयपर अपन अधिकार बुझबाक प्रयोग अछि। ईशान, ललिता, मयंक, सुजाता आ नील परिवारकेँ पहिनहि खबरि दऽ आवश्यक स्थितिक लेल वैकल्पिक सम्पर्कक व्यवस्था राखैत छथि। रविदिन मोबाइल दूर राखिते ईशानकेँ बेर-बेर जेब आ तकियाक बगलमे हाथ जाएबाक अपन आदत देखाइत अछि।

ईशान पंछीक स्वर सुनैत, पढ़ाइमे ध्यान दैत आ साइकिलक उतरि गेल जंजीर स्वयं चढ़बैत अछि। ललिता माएक मुँहसँ नानिसँ आएल पुरान विवाहगीत सुनि ओकर शब्द लिखैत अछि। मयंक आ नील मैदानमे मित्रक प्रतीक्षा करैत स्वयं खेलक सामग्री बना लैत अछि। सभ साँझक मेघक रंग चित्र नहि खेंचि किछु काल अपन आँखिसँ देखैत अछि। मुदा मित्रसभकेँ समन्वय आ आवश्यक सूचनाक लेल मोबाइलक वास्तविक उपयोगो बुझाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १२ · मोबाइल बिनु एक दिन (2/2)

अगिला दिन विद्यार्थीसभ अनुभव तुलना कऽ भोजन, पढ़ाइ, निद्रा आ पारिवारिक गपक समय मोबाइलक उपयोगक स्वैच्छिक नियम बनबैत अछि। ईशान मोबाइल फेर खोलैत अछि, मुदा सभ सूचना तुरन्त देखबाक हड़बड़ी नहि रहैत। कथाक आग्रह यन्त्र त्यागब नहि, अपितु ओकर उपयोगक उद्देश्य, सीमा आ समय स्वयं निश्चित करब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १३ · चिरैयाँ गिननिहार बालक (1/2)

माधव भोरमे पोखरि आ गाछ-बगीचामे चिरैयाँक नाम, संख्या, ध्वनि आ आवागमन लिखैत अछि। ई रुचि ओकरा आजीसँ भेटल अछि, जे वृद्धावस्थामे स्वयं कम चलि सकैत छथि। विद्यालयक प्रकृति-अवलोकनक काजमे गुरुजी एकहि समय आ एकहि ठाम लगातार गिनती करबाक सलाह दैत छथि। माधव अपन मित्र नील, तान्या आ ललितकेँ संग लैत अछि। पहिने मजाक करएवला नील सेहो भोरक चिरैयाँ चिन्हबाक जिज्ञासासँ भरि जाइत अछि।

पोखरिक कात आ घनगर बगीचाक अलग-अलग अवलोकनसँ बुझाइत अछि जे प्रजाति आ संख्या ठाम, मौसम, खेतक काज आ झाड़ीक अनुसार बदलैत अछि। ललित मानचित्र बनबैत अछि, तान्या ध्वनि चिन्हैत अछि आ सभ जे अनिश्चित अछि से अनुमानक रूपमे अलग लिखैत अछि। बगीचाक खोखर गाछ आ झाड़ी लग अधिक चिरैयाँ देखलापर मित्रसभ विवाह-मण्डप बनौनिहारसँ विनम्रतासँ गप करैत अछि। मण्डपक ठाम कनेक बदलल जाइत अछि आ घोंसला-बला भाग बचि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १३ · चिरैयाँ गिननिहार बालक (2/2)

विवाहक बाद चिरैयाँक संख्या घटैत अछि, फेर किछु दिनमे बढ़ैत अछि; माधव एक दिनक आँकड़ासँ निष्कर्ष नहि निकालैत। विद्यालयमे दल अपन सीमासहित निष्कर्ष रखैत अछि। अन्तमे माधव अनचिन्हार चिरैयाँक नाम तुरन्त गढ़बाक बदला ओकर रंग, दिशा आ स्वर लिखैत अछि। कथा धैर्य, बारम्बार अवलोकन आ प्रकृतिक प्रति संवेदनशील व्यवहारक महत्त्व प्रत्यक्ष करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १४ · माटिक रोबोट (1/2)

खेतक मेड़पर दादाकेँ हाथसँ सरिसबक बीज बोइत देख नचिकेताकेँ एहन यन्त्र बनएबाक विचार अबैत अछि, जे नरम माटिमे चलि निश्चित दूरीपर बीज छोड़ि सकए। आर्या, कनक, उदयन आ शैलजाक संग ओ विद्यालयक विज्ञान-शिक्षिका अपर्णा दीदीसँ सहयोग लैत अछि। पुरान मोटर, पहिया आ दूरी-संवेदकक संग स्थानीय कुम्हार काकाक सलाहसँ बाँसक ढाँचा आ पकाओल माटिक हटाओल जा सकएवला खोल तैयार होइत अछि।

पहिल नमूना एक कात झुकि पड़ैत अछि; पहिया, भार आ माटिक मोटाइ सुधारल जाइत अछि। दोसर प्रयासमे बीज एके ठाम खसैत अछि, तखन बदलएवला छेद-पट्टी बनैत अछि। खेतक गड्ढामे पानि देखबाक सीमा बुझलापर बाँस आ पुरान तारसँ स्पर्श-दण्ड जोड़ल जाइत अछि। समूह अपन सभ विफलता, सुधार आ सीमा स्पष्ट रूपसँ लिखैत अछि। रोबोट एखन सूखल मेड़ आ किछु बीज लेल परीक्षणधीन अछि; मनुष्यक निरीक्षण आवश्यक रहैत अछि।

नव पाँखि

कथा १४ · माटिक रोबोट (2/2)

विज्ञान-प्रदर्शनीमे विशेष सम्मान भेटलाक बादो दल दादाक खेतमे प्रयोग जारी राखैत अछि। कुम्हार माटिक फाटल टुकड़ा फेर बनबैत छथि आ दादा खेतक अनुभवसँ सुधार सुझबैत छथि। कथा नव तकनीककेँ पुरान स्थानीय कौशलक विरोधी नहि, ओकर संग सहयोग करैत विकसित होइत साधनक रूपमे देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १५ · जंगलक बाट, घरक गप (1/2)

विद्यालय जाएबाक जंगलक पुरान पएदल बाटपर नीरज, सुमि, आफरीन आ ललित गाछसभपर लाल चिह्न देखैत अछि। गामसँ हाट आ अस्पताल धरि पक्की सड़क बनेबाक प्रस्ताव अछि, मुदा चिन्हित दिशा जंगलक अनेक गाछ काटि सकैत अछि। विज्ञान-शिक्षिका कल्पना दीदी हुनका सभकेँ केवल विरोध नहि, पथक आवश्यकता सेहो बुझबाक सलाह दैत छथि। किशोरसभ गाछ, झाड़ी, जलधारा, ढलान आ लोकक उपयोगक अवलोकन आरम्भ करैत अछि।

चरवाहा रघुनाथ काकासँ हुनका सभकेँ एकटा पुरान बैलगाड़ी-पथक जानकारी भेटैत अछि। ओ बाट कनेक नमगर अछि, मुदा पैघ गाछ कम कटत। बरखामे दलदल बनेबाक कारण बन्द नाली अछि; जलनिकास आ छोट पुलियाक सम्भावना जाँचल जाइत अछि। बीस परिवारसँ गप करैत ओ सभ जानैत अछि जे लोककेँ वर्षभरि भरोसेमन्द सड़क चाही, जंगलक बीचेसँ मात्र सड़क नहि। गामसभामे आँकड़ा आ मानचित्र रखलाक बाद अभियन्ता आ वनकर्मीसँ जाँच कराओल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १५ · जंगलक बाट, घरक गप (2/2)

अन्ततः मुख्य सड़क पुरान बैलगाड़ी-पथ दिस मोड़ल जाइत अछि आ जंगलक पएदल बाट बचि जाइत अछि। किशोरसभ नव पौधाक देखरेख आ कूड़ा नहि फेकबाक काज अपनबैत अछि। कथा कहैत अछि जे जंगल गामसँ अलग नहि; ओकर जल, माटि, पंछी आ छाहरि गामक जीवनसँ जुड़ल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १६ · गाछ पर बनल पाठशाला (1/2)

नयन, मेघा, ईशान आ रेवा पोखरिक लग पुरान पीपलक गाछक छाहरिमे बैसि पोथी पढ़ैत-पढ़ैत गाछक बीच मचानपर अध्ययन-ठाम बनएबाक विचार करैत अछि। गाछकेँ कील ठोकि चोट नहि देबाक लेल विज्ञान-शिक्षक आ बढ़ई बिसेसर काकासँ सलाह लैत अछि। गाछक तना वा डारिपर भार नहि दऽ चारि बाँसक खम्भा धरतीमे गाड़ि मचान बनैत अछि। सीमित चढ़ाइ, मजबूत निसेनी, वयस्कक संग छोट नेना आ आँधी-बरखामे बन्द रखबाक नियम बनैत अछि।

मचानपर पोथी, पाँखि, पात आ पोखरिक पानिक अध्ययन आरम्भ होइत अछि। ऊपरक डारिमे अण्डावला घोंसला देखाइते किछु दिन पाठशाला बन्द करैत, फेर पाँखिक सक्रिय समयमे चढ़ाइ रोकि बैसबाक ठाम बदलल जाइत अछि। वृद्ध लोक आ कारीगर अपन अनुभव सुनबैत छथि, जकर अप्रमाणित अंश लोक-स्मृतिक रूपमे अलग राखल जाइत अछि। छोट नेनासभक लेल गाछ तर अलग अध्ययन-वृत्त बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १६ · गाछ पर बनल पाठशाला (2/2)

आँधीक बाद मचान ठाढ़ रहलो बिना जाँच चढ़बाक अनुमति नहि भेटैत; ढीला रोक-डाँड़ सुधरलाक बादे फेर पाठशाला खुलैत अछि। विद्यालयक प्रदर्शनीमे विद्यार्थी मानैत अछि जे मचान बनबासँ पैघ उपलब्धि सुरक्षा, प्रकृति आ सभक अवसरक सम्बन्धमे निरन्तर प्रश्न उठायब अछि। एहि पाठशालामे गाछक छाहरिक संग धरती, पाँखि, लोकज्ञान आ सामूहिक उत्तरदायित्व सभ शिक्षक बनि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १७ · सूरुजघड़ी बनौने बालिका (1/2)

नेहा भोरक छाह सरकैत देख आ आजीक पुरान समयबोध सुनि सूरुजघड़ी बनेबाक निश्चय करैत अछि। मीनाक्षी, कौशल आ रितेशक संग ओ विद्यालयक खुलल मैदानमे डाँड़ गाड़ि बारह बराबर खण्ड बनबैत अछि। मुदा छाह ओकर अनुमानित रेखाक अनुसार नहि चलैत। विज्ञान-शिक्षिका अर्चना दीदी पृथ्वीक घूर्णन, स्थानक अक्षांश, उत्तर-दक्षिण दिशा आ छाह देबएवला डाँड़क झुकावक सम्बन्ध बुझबैत छथि।

दल दिशा जाँचैत, डाँड़ सुधारैत आ अनेक धूपगर दिनमे निश्चित समयपर छाहक स्थान अंकित करैत अछि। बादरक दिन छाह नहि भेटनाइ आ नागरिक घड़ीसँ स्थानीय सूरुज-समयक अन्तर सेहो ओ सभ लिखैत अछि। कुम्हार हरिनारायण काका टिकाउ पकाओल माटिक पाटी बनबैत छथि। ओहि पाटीपर चिन्ह लगाकऽ नेहा छोट नेनासभकेँ छाह, पृथ्वीक गति आ मौसमक परिवर्तन बुझबैत अछि।

नव पाँखि

कथा १७ · सूरुजघड़ी बनौने बालिका (2/2)

विज्ञान-मेलामे नेहा स्पष्ट करैत अछि जे सूरुजघड़ी रातिमे वा घनगर मेघमे काज नहि करत आ प्रत्येक मिनटक नागरिक समयो नहि देखाओत। विद्यालय ओकरा विज्ञान-बागमे स्थायी ठाम दैत अछि। आजीक अनुभूति आ नव नाप-जोख मिलि नेहाकेँ सिखबैत अछि जे घड़ी समयक अंक दैत अछि, मुदा सूरुजघड़ी समयक चालक कारण बुझबाक जिज्ञासा जगबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १८ · नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली (1/2)

कोशीक पुरान धारक तटपर प्लास्टिक आ मलिन वस्तु बढ़ैत देख मीना अपन मित्र आरव, सोनम, तमय आ काव्याक संग नदीक अवस्था बुझबाक निश्चय करैत अछि। विज्ञान-शिक्षिका मालती दीदी हुनका सभकेँ नदीक पाँच अलग ठामपर तिथि, पानिक रंग-गन्ध, तैरैत कचरा, जलचर आ तटवनस्पतिक लेखा बनेबाक विधि सिखबैत छथि। साधारण विद्यालयी जाँचक सीमासँ ओ सभ परिचित रहैत अछि; सम्पूर्ण नदी सुरक्षित वा असुरक्षित घोषित नहि करैत।

नाविक, धोबिन, खेतिहर आ तटवासी लोकक अनुभव सुनि बुझाइत अछि जे हाट, घरक नाला आ बरखाक बहाव सभ नदीमे गन्दगी आनैत अछि। पंचायत आ बड़ लोकक सहयोगसँ सुरक्षित तट-सफाइ होइत अछि। हाटमे कपड़ाक झोरा आ मजबूत कूड़ा-संग्रह पात्रक व्यवस्था बनैत अछि। नालाक समस्या पर किशोरसभ अपने अवरोध बनएबाक बदला लिखित प्रमाण पंचायतकेँ दैत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित अधिकारी निरीक्षण आरम्भ करैत छथि।

नव पाँखि

कथा १८ · नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली (2/2)

बरखाक बाद कटावग्रस्त सुरक्षित तटपर स्थानीय वनस्पतिक रोपनी आ नियमित अवलोकन जारी रहैत अछि। किछु सुधार देखाइतो दल नदीकेँ पूर्ण स्वच्छ घोषित नहि करैत। मीना आ ओकर मित्र बुझैत अछि जे नदी बचायब एक दिनक सफाइ नहि, लोकक आदत, स्थानीय व्यवस्था, वैज्ञानिक धैर्य आ भविष्यक प्रति निरन्तर दायित्व अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १९ · चाँदनी रातिक मानचित्र (1/2)

रातिक आकाशसँ दिशा बुझबाक जिज्ञासामे अन्वी अपन मित्र नील, माधव, चम्पा आ राघवक संग विज्ञान-शिक्षक सुधांशु सरक देखरेखमे ताराक अवलोकन आरम्भ करैत अछि। पोखरिक बाँधपर अभिभावकक संग सुरक्षित ठाम चुनल जाइत अछि। शिक्षक सप्तर्षिक सहायतासँ ध्रुवतारा चिन्हबाक ढंग सिखबैत छथि। ध्रुवतारा लगभग उत्तर दिशा देखबैत अछि, किन्तु एकदम सटीक उत्तर नहि—ई सावधानी पहिल पाठ बनैत अछि।

अन्वी कागजपर ताराक मानचित्र बनबैत अछि, मुदा आजीक प्रश्नसँ बुझैत अछि जे रातिभर पृथ्वीक घूर्णनक कारण आकाशक दृश्य बदलैत बुझाइत अछि। दल चारि सप्ताह धरि निश्चित ठाम आ समयपर चन्द्रमाक उजास, बादर, कुहेस आ ताराक स्थितिक लेखा राखैत अछि। लोकक पुरान आकाशज्ञानकेँ आदरसँ लिखैत अछि, मुदा ओकरा वैज्ञानिक नापसँ अलग चिन्हित करैत अछि। प्रदर्शनीमे अन्वी कहैत अछि जे एहि अभ्यास-मानचित्रक भरोसे अनचिन्हार ठाम यात्रा करब सुरक्षित नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा १९ · चाँदनी रातिक मानचित्र (2/2)

पुरान नाविक देवकान्त काका सम्झबैत छथि जे नदीमे दिशा बुझबाक लेल तारा मात्र नहि, धारा, पवन आ परिचित तटचिह्न सेहो आवश्यक छल। अन्वीकेँ बुझाइत अछि जे मानचित्र समयक एक क्षणक स्मृति अछि; परिस्थिति बदलला पर ओकर उपयोगक सीमा सेहो बदलैत अछि। कथा आकाशक ज्ञानकेँ प्रमाण, सावधानी आ धरतीसँ जुड़ल विवेकक संग जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा २० · हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी (1/2)

विद्यालयक हँसमुख पहरुआ बिसेसर काकाक कुंजीक गुच्छासँ अभिलेख-कोठलीक पिअर डोरीवाली पित्तरिक कुंजी हराइ जाइत अछि। वार्षिक पोथी-दर्शनक तैयारी अटकि जाइत अछि। मीना, ईशान, रञ्जना आ तुषार काकाक पछिला साँझक काज एक-एक कऽ पूछैत अछि, मुदा ककरो चोरीक आशङ्का नहि करैत। गुच्छाक फैलल लोहक घेरा आ ओहिमे अटकल पिअर सूतक रेशा सँ बुझाइत अछि जे कुंजी खसि सकैत छल।

तुषार चुम्बकसँ खोजबाक विचार दैत अछि, मुदा शिक्षिका बुझबैत छथि जे पित्तरि सामान्य चुम्बकसँ नहि खिंचैत। काल्हि काका एकटा पुरान काठक आसन नीम तर रखने छलाह। ओतुक्का बाहर निकलल काँटीमे पिअर सूत भेटैत अछि। छोट नेनासभ भोरमे आसनक ठाम बदलने छल; ओहि घटनाक क्रम जोड़ि किशोरसभ आसनक पाटी आ आधारक बीच नुकायल कुंजी निकालैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

नव पाँखि

कथा २० · हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी (2/2)

कुंजी भेटलाक बाद सभ केवल हँसि नहि रहि जाइत। मजबूत घेरा, सुरक्षित खूँटी, रंगीन डोरी आ कुंजी लेब-घुरेबाक लेखापोथी बनैत अछि। प्रधानाध्यापकक सोझाँ किशोरसभ अपन सीख कहैत अछि—वस्तुक गुण बुझू, ककरो पर आरोप लगएबाक पहिने प्रमाण जाँचू, आ छोट त्रुटि दोहराए नहि ताहि लेल व्यवस्था सुधारू। कथा हास्यक संग तर्कपूर्ण खोजक अभ्यास दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/